ॐ

स्वामी शरण कृत

यजुर्वेद

सरल पाठ, सम्पूर्ण संहिता

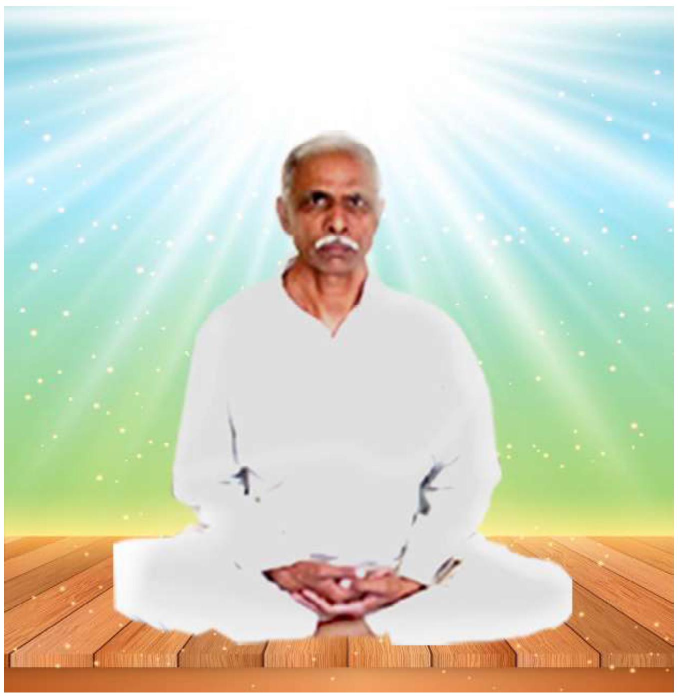

प्रकाशक

पालीवाल प्रकाशन

पुस्तक प्राप्ति स्थान :

गायत्री साहित्य केन्द्र

पालीवाल भवन, 117/एच-1/02, पाण्डु नगर,
जे. के. मन्दिर के सामने, कानपुर - 208005
वेबसाइट - vedayan.simplesite.com
मो. 9839105629, 8687849004, 7985402016

संस्करण : मार्गशीर्ष पूर्णिमा, 2070 वि., 5115 युगाब्द
(दिसम्बर 2013 ई.)
सर्वाधिकार : स्वामी शरण सहयोग राशि : पाँच सौ रुपये

ॐ

यजुर्वेद

सरल पाठ, सम्पूर्ण संहिता

अनुक्रम

निवेदन			04
प्रथमो अध्यायः,	(1) सूक्त 1	म. 1,	11
द्वितीयो अध्यायः,	(9) सूक्त 1	म. 32,	22
तृतीयो अध्यायः,	(19) सूक्त 1	म. 66,	33
चतुर्थो अध्यायः,	(35) सूक्त 1	म. 129,	48
पञ्चमो अध्यायः,	(46) सूक्त 1	म. 166,	59
षष्ठो अध्यायः,	(59) सूक्त 1	म. 209,	74
सप्तमो अध्यायः,	(67) सूक्त 1	म. 246,	85
अष्टमो अध्यायः,	(78) सूक्त 1	म. 294,	100
नवमो अध्यायः,	(91) सूक्त 1	म. 357,	118
दशमो अध्यायः,	(99) सूक्त 1	म. 397,	131
एकादशो अध्यायः,	(106) सूक्त 1	म. 431,	143
द्वादशो अध्यायः,	(124) सूक्त 1	म. 514,	165
त्रयोदशो अध्यायः,	(147) सूक्त 1	म. 631,	190
चतुर्दशो अध्यायः,	(160) सूक्त 1	म. 689,	206

पञ्चदशो अध्यायः,	(168) सूक्त 1	म. 720,	219
षोडशो अध्यायः,	(183) सूक्त 1	म. 785,	238
सप्तदशो अध्यायः,	(197) सूक्त 1	म. 851,	255
अष्टादशो अध्यायः,	(220) सूक्त 1	म. 950,	277
एकोनविंशो अध्यायः,	(238) सूक्त 1	म. 1027,	300
विंशो अध्यायः,	(259) सूक्त 1	म. 1122,	322
एकविंशो अध्यायः,	(279) सूक्त 1	म. 1212,	342
द्वाविंशो अध्यायः,	(290) सूक्त 1	म. 1273,	361
त्रयोविंशो अध्यायः,	(295) सूक्त 1	म. 1307,	373
चतुर्विंशो अध्यायः,	(309) सूक्त 1	म. 1372,	388
पञ्चविंशो अध्यायः,	(317) सूक्त 1	म. 1415,	398
षड्विंशो अध्यायः,	(327) सूक्त 1	म. 1459,	410
सप्तविंशो अध्यायः,	(333) सूक्त 1	म. 1485,	416
अष्टाविंशो अध्यायः,	(342) सूक्त 1	म. 1530,	426
एकोनत्रिंशो अध्यायः,	(353) सूक्त 1	म. 1576,	441
त्रिंशो अध्यायः,	(365) सूक्त 1	म. 1636,	454
एकत्रिंशो अध्यायः,	(372) सूक्त 1	म. 1658,	461
द्वात्रिंशो अध्यायः,	(378) सूक्त 1	म. 1680,	466
त्रयात्रिंशो अध्यायः,	(382) सूक्त 1	म. 1696,	470
चतुर्त्रिंशो अध्यायः,	(405) सूक्त - 1	म. 1793,	490
पञ्चत्रिंशो अध्यायः,	(416) सूक्त - 1	म. 1851,	503
षड्त्रिंशो अध्यायः,	(420) सूक्त - 1	म. 1873,	508

सप्तत्रिंशो अध्यायः, (425) सूक्त - 1 म. 1897, 513
अष्टात्रिंशो अध्यायः, (431) सूक्त - 1म. 1918, 518
एकोनत्रिंशो अध्यायः, (438) सूक्त - 1म. 1946, 525
चत्वारिंशो अध्यायः,(442) सूक्त - 1 म. 1959, 529

ॐ

निवेदन

वेद विश्व का प्राचीनतम साहित्य तथा भारतीय धर्म - संस्कृति का मूल स्त्रोत है। वेद का पाठ तथा स्वाध्याय करना हमारा परम धर्म है। हमारी मान्यताएं, चिन्तन तथा आचार - विचार वेद के अनुकूल होना चाहिए। वेदमन्त्रों के अनेक प्रकार के पाठ प्रचलित हैं। सरल पाठ में मन्त्र का सन्धियों से मुक्त सरल पाठ प्रस्तुत किया जाता है। इसका अर्थ है कि पदान्त में अन्य पद की सन्धि नहीं होती है। सरल पाठ में क्रिया विभक्ति अथवा नामिक विभक्ति के पश्चात् कोई शब्द या पद सन्धि के द्वारा नहीं मिलाया जाता है। इसी प्रकार अव्यय आदि शब्दों में जहाँ विभक्ति का लोप होता है, उनके अन्त में भी किसी पद या शब्द या शब्दांश की सन्धि नहीं होती है। इस प्रकार सरल पाठ में सभी पद पृथक् तथा स्पष्ट होते हैं। वेद मन्त्रों का सरल पाठ जनसाधारण के लिए, विशेष रूप से विद्यार्थियों के लिए वेद पाठ तथा अर्थ समझने के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ है।

यजुर्वेद आकार में भी बहुत विशाल नहीं है। यह सामवेद की तुलना में कुछ ही अधिक है। इसके मन्त्रों का पाठ धार्मिक कर्मकाण्डों में सबसे अधिक होता है। अधिक प्रचलन के कारण ही इसके अर्थ तथा भाष्य अनेक प्रकार से किये गये हैं। वास्तव में अनेक भाष्यकारों कर्मकाण्ड में प्रयोग काल की उपयोगिता के आधार पर अनेक सन्दर्भ जोड़ दिये हैं। कर्मकाण्ड के समय उनकी उपयोगिता भी अवश्य होती होगी, परन्तु उन सन्दर्भों तथा टिप्पणियों को मन्त्र का अर्थ मान लेने

से भ्रम भी उत्पन्न होते रहे हैं। मूल मन्त्र पर ध्यान देते ही मूल आध्यात्मिक अर्थ स्पष्ट हो जाता है तथा इस प्रकार के भ्रमों के लिए कोई अवकाश नहीं रह जाता है। इसकी शत शाखायें कही जाती हैं। यह धार्मिक कार्यों में अनुप्रयोग के अनुसार प्रस्तुतीकरण अथवा सम्पादन के ही कारण है। मन्त्रों को प्रमुखतः अध्याय तथा सूक्त के रूप में व्यवस्थित किया गया है। यजुर्वेद में चालीस अध्याय हैं। अध्याय - सूक्त क्रम सरल, व्यवस्थित तथा व्यवहारिक भी है।

इस संस्करण में मूल सरल पाठ ही दिया गया है। हमसे वेदभाष्य का जो भी प्रयास बन सका है, उसमें हमने मन्त्रार्थ में मन्त्र का यथासम्भव शाब्दिक अनुवाद देने का प्रयास किया है। वेदमन्त्र के किस पद के लिए भाषा में किस पद का प्रयोग किया गया है, यह भी पूर्णतः स्पष्ट है। मन्त्र का पद यथावत् देकर भाषा में अर्थ दिया गया है। संस्कृत में बहुधा वर्तमान काल की सहायक क्रियाएं अस्ति (है) आदि का लोप होता है, अर्थात् इनके विना वाक्य पूर्ण हो जाता है। भाषा में इनका प्रयोग आवश्यक होता है। हमने प्रयास किया है कि उनको भी कोष्ठक में दिया जाये जिससे यह स्पष्ठ रहे कि यह शब्द वेदमन्त्र में नहीं है तथा वाक्य पूरा करने के लिए भाषा में लिखना पड़ा है। इसी प्रकार संयोजक शब्दों (अथवा, तथा आदि) भी वाक्य पूर्ण करने के लिए इसी रूप में दिये गये हैं। इस प्रकार हमने मन्त्रार्थ में तटस्थता, निष्पक्षता, वस्तुनिष्ठता तथा प्रामाणिकता का ध्यान रखने का पूर्ण प्रयास किया है। फिर भी यदि कोई भूल-चूक रह गयी होगी तो विद्वानों के मार्गदर्शन के अनुसार भविष्य में संशोधन-परिष्कार किया जा सकता है।

भावार्थ में मन्त्र के भाव तथा सन्देश को स्पष्ट करने का प्रयास

किया गया है। यह वेदार्थ नहीं है, भावार्थ है। इसमें हमारे विवेक की सीमा है तथा मतभेद के लिए पर्याप्त अवकाश भी है। इससे वेदमन्त्र तथा वेदार्थ की प्रामाणिकता प्रभावित नहीं होती है। प्रवचनकर्ता इसमें अपने विवेक के अनुसार परिवर्तन-परिष्कार के लिए स्वतन्त्र हैं।

पदार्थ में मुख्यतः धातुज शब्दों में धातु स्पष्ट करना आवश्यक माना गया है। अन्य पदों सर्वनाम, अव्यय, संख्या, उपसर्ग आदि के अर्थ को लेकर कोई मतभेद नहीं है। संज्ञा, सर्वनाम तथा क्रियाएं धातुज हैं। उनमें धातु स्पष्ट कर देने से वास्तविक शाब्दिक अर्थ स्पष्ट हो जाता है। कुछ धातुएं अनेकार्थी भी होती हैं। मन्त्र में जिस अर्थ की उपयोगिता हो, उसे ग्रहण कर सकते हैं। धातु के एक से अधिक अर्थो के अनुसार भी यदि मन्त्र का अर्थ हो सकता है तो श्लेष के रूप में स्वीकार्य है। इसमें विचारधारा को लेकर कोई दुराग्रह नहीं होना चाहिए। हमें वेद के विचारों को महत्व देना चाहिए, वेदमन्त्रों का अर्थ अपने विचार के अनुसार करने का दुराग्रह उचित नहीं है। वेदमन्त्रों का सरल स्वाभाविक शाब्दिक अर्थ सभी अध्येता सहज रूप से जानें तथा उसका चिन्तन-मनन कर स्वयम् अपने विवेक के अनुसार विचार विकसित करें। इसके पश्चात् भावार्थ तथा व्याख्या प्रत्येक व्यक्ति अपने विवेक के अनुसार स्वतन्त्र रूप से कर सकता है।

वेदार्थ करने में अनेक विद्वान् अपने विचार को वेद में दर्शाने का प्रयास करते हैं। इसके लिए अनेक शब्द ही नहीं वाक्यांश तथा कई वाक्य तथा वेदमन्त्र का अर्थ करते समय जोड़ देते हैं जिनके लिए कोई शब्द या पद वेदमन्त्र में होता ही नहीं है। इसे अध्याहार कहा जाता है। कहा जाता है कि अध्याहार मन्त्र का अर्थ स्पष्ट करने के लिए दिया जाता है। स्पष्ट है कि इस प्रकार विद्वान् मन्त्रार्थ के स्थान

पर भावार्थ करते हैं। कई विद्वान् तो पदार्थ में भी अध्याहार के नाम ऐसी टिप्पणियां तक दे देते हैं जिनको उचित नहीं माना जा सकता है। हम उनकी आलोचना नहीं करना चाहते हैं। उन्होंने जो भी प्रयास किये, उससे ही वेद के अध्ययन को दिशा मिली तथा हम इस प्रकार निष्पक्ष प्रामाणिक वेदार्थ करने का प्रयास कर पा रहे हैं। भविष्य में विद्वान् अधिक उत्तम, निष्पक्ष तथा प्रामाणिक वेदार्थ प्रस्तुत करेंगे, ऐसी आशा - अपेक्षा करना स्वाभाविक है।

हमारा यह पवित्र कार्य प्रारम्भ ही न हो पाता यदि डॉ. उमेश पालीवाल जी ने यह पवित्र संकल्प न लिया होता। उन्होंने पालीवाल प्रकाशन के रूप में आधुनिक सुविधाओं से सम्पन्न कार्यालय उपलब्ध कराया तथा समय-समय पर पर्याप्त आर्थिक सहयोग भी प्रदान किया। यह सम्पूर्ण कार्य इसी से हो पा रहा है। यह कार्य जितना कुछ भी बन सकेगा, मेरे जीवन काल में अथवा उसके पश्चात् हमारे सहयोगी युवा देवमण्डल के माध्यम से, उसका श्रेय डॉ. उमेश पालीवाल जी को मिलना ही चाहिए। इस वेंदसेवा तथा शोधकार्य के प्रकाशन तथा प्रचार-प्रसार की क्षमता तथा सामर्थ्य व्यावहारिक रूप में डॉ. उमेश पालीवाल जी में ही है, अतः इसका दायित्व तथा अधिकार स्वाभाविक रूप से उनका है ही। हमारे सभी युवा सहयोगी उनकी छत्रछाया में दायित्व का निर्वाह करने में सक्षम हैं। हम तो उनको धन्यवाद दे पाने की स्थिति में भी नहीं हैं।

डॉ. कृष्णदत्त जी भी कठिन समय में महत्वपूर्ण सहयोग देकर हमारा मनोबल बनाये रखने का कार्य किया है, इसके लिए हम उनके अतीव आभारी हैं। हम अपने अन्य सभी उदारमना सहयोगियों के प्रति भी आभार व्यक्त करना अपना कर्तव्य समझते हैं।

वेद तथा संस्कृत भाषा को सरल एवम् जन साधारण के लिए बोधगम्य बनाने के हमारे इस पवित्र कार्य में युवा सहयोगी श्री गौरव श्रीवास्तव जी का भी अमूल्य योगदान है। जिस तरह उन्होंने निष्ठा, समर्पण तथा परिश्रम पूर्वक इस अमृत विद्या को सीखा-समझा तथा कार्य किया, उससे हमारी आशा - अपेक्षा बढ़ी है। धात्वादि कोश तथा सविता पाठ के सम्पादन में उन्होंने जिस योग्यता तथा निष्ठा का परिचय दिया है, उससे उनपर हमारा विश्वास बढ़ा है। हमें पूर्ण विश्वास है कि श्री गौरव जी इस कार्य को आगे बढ़ायेंगे तथा चारो वेदों का इसी रूप में निष्पक्ष एवम् प्रामाणिक भाष्य प्रस्तुत करेंगे। परम पिता परमात्मा इस कार्य के लिए उनको आवश्यक संसाधन, मनोबल तथा योग्यता-क्षमता प्रदान करे, यही प्रार्थना है।

पुस्तकों के प्रकाशन तथा प्रचार-प्रसार का दायित्व तथा अधिकार इन सभी सहयोगियों को समान रूप से है, मात्र संशोधन-परिवर्तन में श्री गौरव जी की भूमिका अधिक महत्वपूर्ण मानी जानी चाहिए। महत्वपूर्ण यह है कि कार्य आगे बढ़ते रहना चाहिए, यथासम्भव मिलकर कार्य करना उत्तम है, आवश्यक प्रतीत हो तो सभी सहयोगी स्वतन्त्र रूप से भी संगठन, प्रकाशन तथा प्रचार-प्रसार का कार्य कर सकते हैं। आशा है, आप सभी का सहयोग हमारे युवा देवमण्डल को इस वेदकार्य को पूर्णता प्रदान करने के लिए प्राप्त होता रहेगा।

स्वामी शरण

ॐ

यजुर्वेद

सरल पाठ

अथ प्रथमो अध्यायः

(1) सूक्त 1

1. इषे त्वा ऊर्जे त्वा वायव स्थ,
देवो वः सविता प्रार्पयतु,
श्रेष्ठतमाय कर्मण आ प्यायध्वम्,
अघ्न्या इन्द्राय भागम्,
प्रजावतीः अनमीवा अयक्ष्मा,
मा व स्तेन ईशत माघशंसो ,
ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीः,
यजमानस्य पशून् पाहि ॥1॥

2. वसोः पवित्रम् असि द्यौः असि पृथिवि असि,
मातरिश्वनो घर्मो असि विश्वधा असि
परमेण धाम्ना दृंहस्व, मा ह्वाः,
मा ते यज्ञपतिः ह्वार्षीत् ॥2॥

3. वसोः पवित्रम् असि शत धारम्,
वसोः पवित्रम् असि सहस्रधारम्।
देवः त्वा सविता पुनातु,
वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः ॥3॥

(2) सूक्त 2

4. सा विश्वायुः, सा विश्वकर्मा, सा विश्वधायाः।
इन्द्रस्य त्वा भागम् सोमेन आ तनच्मि,
विष्णो हव्यम् रक्ष ॥4॥

5. अग्ने व्रतपते व्रतम् चरिष्यामि,
तत् शकेयम् तत् मे राध्यताम्।
इदम् अहम् अनृतात् सत्यम् उप एमि ॥5॥

6. कः त्वा युनक्ति, स त्वा युनक्ति।
कस्मै त्वा युनक्ति, तस्मै त्वा युनक्ति।
कर्मणे वाम्, वेषाय वाम् ॥6॥

7. प्रति उष्टम् रक्षः, प्रति उष्टा अरातयो,
निष्टप्तम् रक्षो, निष्टप्ता अरातयः।
उरु अन्तरिक्षम् अनु एमि ॥7॥

(3) सूक्त 3

8. धूः असि धूर्व धूर्वन्तम्,
धूर्व तम् यो अस्मान् धूर्वति,
तम् धूर्व यम् वयम् धूर्वामः।
देवानाम् असि वह्नितमम्,
सस्नितमम् पप्रितमम्,
जुष्टतमम् देवहूतमम् ॥8॥

9. अह्रुतम् असि, हविर्धानम् दृंहस्व,
मा ह्वाः, मा ते यज्ञपतिः ह्वार्षीत्।
विष्णुः त्वा क्रमताम् उरु वाताय,
अपहतम् रक्षो यच्छन्ताम् पञ्च ॥9॥

10. देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे,
अश्विनोः बाहुभ्याम्, पूष्णो हस्ताभ्याम् ॥
अग्नये जुष्टम् गृह्णामि,
अग्नीसोमाभ्याम् जुष्टम् गृह्णामि ॥10॥

(4) सूक्त 4

11. भूताय त्वा न अरातये,
स्वः अभि विख्येषम्,
दृंहन्ताम् दुर्याः पृथिव्याम्,
उरु अन्तरिक्षम् अनु एमि।
पृथिव्याः त्वा नाभौ सादयामि,
अदित्या उपस्थे अग्ने हव्यम् रक्ष ॥11॥

12. पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ,
सवितुः वः प्रसवे उत् पुनामि,
अच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः।
देवीः आपो अग्रे गुवो अग्रे पुवो,
अग्र इमम् अद्य यज्ञम् नयत,
अग्रे यज्ञपतिम् सुधातुम्,
यज्ञपतिम् देवयुवम् ॥12॥

13. युष्मा इन्द्रो अवृणीत वृत्रतूर्ये
यूयम् इन्द्रम् अवृणीध्वम् वृत्रतूर्ये,
प्रोक्षिता स्थ।
अग्नये त्वा जुष्टम् प्रोक्षामि,
अग्नीषोमाभ्याम् त्वा जुष्टम् प्रोक्षामि।
दैव्याय कर्मणे शुन्धध्वम्,
देवयज्यायै यत् वो अशुद्धाः,
पराजघ्नुः इदम् वः तत् शुन्धामि ॥13॥

(5) सूक्त 5

14. शर्म असि अवधूतम् रक्षो,
अवधूता अरातयो अदित्याः,
त्वक् असि प्रति त्वा अदितिः वेत्तु।
अद्रिः असि वानस्पत्यो, ग्रावा असि पृथुबुध्नः,
प्रति त्वा अदित्याः त्वक् वेत्तु ॥14॥

15. अग्ने तनूः असि वाचो विसर्जनम्,
देववीतये त्वा गृह्णामि,
वृहद् ग्रावा असि, वानस्पत्यः स इदम्,
देवेभ्यो हविः शमीष्व, सुशमि शमीष्व।
हविष्कृत् एहि, हविष्कृत् एहि॥15॥

16. कुक्कुटो असि मधु जिह्व,
इषम् ऊर्जम् आ वद,
त्वया वयम् संघातम् संघातम् जेष्म,
वर्ष वृद्धम् असि प्रति त्वा वर्ष वृद्धम् वेत्तु,
परापूतम् रक्षः, परापूता अरातयो,
अपहतम् रक्षो, वायुः वो वि विनक्तु,
देवो वः सविता हिरण्यपाणिः,
प्रति गृभ्णातु अच्छिद्रेण पाणिना॥16॥

17. धृष्टिः असि अप अग्ने,
अग्निम् आमादम् जहि,
निः क्रव्यादम् सेध आ देवयजम् वह।
ध्रुवम् असि पृथिवीम् दृंह,
ब्रह्मवनि त्वा क्षत्रवनि सजातवनि
उप दधामि भ्रातृव्यस्य वधाय॥17॥

(6) सूक्त 6

18. अग्ने ब्रह्म गृभ्णीस्व,
धरुणम् असि अन्तरिक्षम् दृंह,
ब्रह्मवनि त्वा क्षत्रवनि सजातवनि,
उप दधामि भ्रातृव्यस्य वधाय।
धर्त्रम् असि दिवम् दृंह,
ब्रह्मवनि त्वा क्षत्रवनि सजातवनि,
उपदधामि भ्रातृव्यस्य वधाय।
विश्वाभ्यः त्वा आशाभ्य उप दधामि,
चित स्थ ऊर्ध्व चितो भृगूणाम् अङ्गिरसाम्,
तपसा तप्यध्वम्॥18॥

19. शर्म असि अवधूतम्,
रक्षो अवधूता अरातयो,
अदित्याः त्वक् असि,
प्रति त्वा अदितिः वेत्तु।
धिषणा असि पर्वती,
प्रति त्वा अदित्याः त्वक् वेत्तु,
दिवः स्कम्भनीः असि, धिषणा असि,
पार्वतेयी प्रति त्वा पर्वती वेत्तु॥19॥

20. धान्यम् असि धिनुहि देवान्,
प्राणाय त्वा, उदानाय त्वा, व्यानाय त्वा।
दीर्घाम् अनु प्र सितिम् आयुषे धाम्,
देवो वः सविता हिरण्यपाणिः प्रति गृभ्णातु,
अच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वा,
महीनाम् पयो असि॥20॥

(7) सूक्त 7

21. देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे,
अश्विनोः बाहुभ्याम् पूष्णो हस्ताभ्याम्।
सम् वपामि सम् आप ओषधीभिः,
सम् ओषधयो रसेन।
सम् रेवतीः जगतीभिः पृच्यन्ताम्,
सम् मधुमतीः मधुमतीभिः पृच्यन्ताम्॥21॥

22. जनयत्यै त्वा सम् यौमि,
इदम् अग्नेः इदम् अग्नीषोमयोः,
इषे त्वा घर्मो असि विश्वायुः,
उरु प्रथा उरु प्रथस्व उरु।
ते यज्ञपतिः प्रथताम्,
अग्निः ते त्वचम् मा हिंसीत्,
देवः त्वा सविता श्रपयतु,
वर्षिष्ठे अधि नाके॥22॥

23. मा भेः मा सम् विक्था अतमेरुः,
यज्ञो अतमेरुः यजमानस्य,
प्रजा भूयात् त्रिताय त्वा,
द्विताय त्वा एकताय त्वा॥23॥

24. देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे,
अश्विनोः बाहुभ्याम् पूष्णो हस्ताभ्याम्॥
आ ददे अध्वर तकृतम् देवेभ्य,
इन्द्रस्य बाहुः असि दक्षिणः,
सहस्त्र भृष्टिः शततेजा वायुः,
असि तिग्मतेजा द्विषतो वधः॥24॥

25. पृथिवि देवयजनि ओषध्याः,
ते मूलम् मा हिंसिषम्,
व्रजम् गच्छ गोष्ठानम् वर्षतु,
ते द्यौः बधान देव सवितः,
परमस्याम् पृथिव्याम् शतेन पाशैः,
यो अस्मान् द्वेष्टि, यम् च वयम् द्विष्मः,
तम् अतो मा मौक्॥25॥

(8) सूक्त 8

26. अप अररुम् पृथिव्यै,
देव यजनात् वध्यासम्,
व्रजम् गच्छ गोष्ठानम् वर्षतु,
ते द्यौः बधान देव सवितः,
परमस्याम् पृथिव्याम् शतेन पाशैः,
यो अस्मान् द्वेष्टि,
यम् च वयम् द्विष्मः,
तम् अतो मा मौक्।
अररो दिवम् मा पप्तो द्रप्सः ते द्याम् मा स्कन्,
व्रजम् गच्छ गोष्ठानम् वर्षतु,
ते द्यौः बधान देव सवितः,
परमस्याम् पृथिव्याम् शतेन पाशैः,
यो अस्मान् द्वेष्टि, यम् च वयम् द्विष्मः,
तम् अतो मा मौक्॥26॥

27. गायत्रेण त्वा छन्दसा परिगृह्णामि,
त्रैष्टुभेन त्वा छन्दसा परिगृह्णामि,
जागतेन त्वा छन्दसा परिगृह्णामि।
सुक्ष्मा च असि, शिवा च असि,
स्योना च असि, सुषदा च असि,
ऊर्जस्वती च असि पयस्वती च॥27॥

28. पुरा क्रूरस्य विसृपो, विरप्शिन्,
उत् आदाय पृथिवीम् जीवदानुम्।
याम् ऐरयन् चन्द्रमसि स्वधाभिः,
ताम् उ धीरासो अनुदिश्य यजन्ते।
प्रोक्षणीः आ सादय द्विषतो वधो असि॥28॥

29. प्रति उष्टम् रक्षः, प्रति उष्टा अरातयो,
निष्टप्तम् रक्षो, निष्टप्ता अरातयः।
अनिशितो असि सपत्नक्षित् वाजिनम्,
त्वा वाज इध्यायै सम् मार्ज्मि।
प्रति उष्टम् रक्षः प्रति उष्टा अरातयो,
निष्टप्तम् रक्षो निष्टप्ता अरातयः।
अनिशिता असि सपत्नक्षित् वाजिनीम्,
त्वा वाज इध्यायै सम् मार्ज्मि॥29॥

30. अदित्यै रास्ना असि विष्णोः वेष्पो असि,
ऊर्जे त्वा अदब्धेन त्वा चक्षुषा अव पश्यामि।
अग्नेः जिह्वा असि सु हूः देवेभ्यो,
धाम्ने धाम्ने मे भव यजुषे यजुषे॥30॥

31. सवितुः त्वा प्रसव उत् पुनामि,
अच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः।
सवितुः वः प्रसव उत् पुनामि,
अच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः।
तेजो असि शुक्रम् असि,
अमृतम् असि धाम नाम असि,
प्रियम् देवानाम् अनाधृष्टम्,
देव यजनम् असि ॥31॥

इति प्रथमो अध्यायः

ॐ

अथ द्वितीयो अध्यायः

(9) सूक्त 1

32. कृष्णो असि आखरेष्ठो,
अग्नये त्वा जुष्टम् प्रोक्षामि,
वेदिः असि बर्हिषे त्वा जुष्टम् प्रोक्षामि,
बर्हिः असि स्रुग्भ्यः त्वा जुष्टम् प्रोक्षामि ॥1॥

33. अदित्यै वि उन्दनम् असि, विष्णो स्तुपो असि,
ऊर्णम्रदसम् त्वा स्तृणामि स्वासस्थाम्,
देवेभ्यो भुवपतये स्वाहा, भुवनपतये स्वाहा,
भूतानाम् पतये स्वाहा ॥2॥

34. गन्धर्वः त्वा विश्वावसुः परिदधातु, विश्वस्य अरिष्ट्यै,
यजमानस्य परिधिः असि अग्निः इडः ईडितः।
इन्द्रस्य बाहुः असि दक्षिणो, विश्वस्य अरिष्ट्यै,
यजमानस्य परिधिः असि अग्निः इडः ईडितः।
मित्रावरुणौ त्वा उत्तरतः परिधत्ताम्,
ध्रुवेण धर्मणा विश्वस्य अरिष्ट्यै,
यजमानस्य परिधिः असि अग्निः इड ईडितः ॥3॥

(10) सूक्त 2

35. वीतिहोत्रम् त्वा कवे,
द्युमन्तम् सम् इधीमहि।
अग्ने बृहन्तम् अध्वरे॥4॥

36. समित् असि सूर्यः त्वा पुरस्तात्,
पातु कस्याः चित् अभिशस्त्यै।
सवितुः बाहू स्थः ऊर्ण म्रदसम् त्वा,
स्तृणामि स्वासस्थम् देवेभ्य आ त्वा
वसवो रुद्रा आदित्याः सदन्तु॥5॥

37. घृताची असि जुहूः नाम्ना सा इदम्,
प्रियेण धाम्ना प्रियम् सद आ सीद,
घृताची असि उप भृत् नाम्ना सा इदम्,
प्रियेण धाम्ना प्रियम् सद आ सीद,
घृताची असि ध्रुवा नाम्ना सा इदम्,
प्रियेण धाम्ना प्रियम् सद आ सीद।
प्रियेण धाम्ना प्रियम् सद आ सीद,
ध्रुवा असदन् ऋतस्य योनौ ता विष्णो,
पाहि पाहि यज्ञम्, पाहि यज्ञपतिम्,
पाहि माम् यज्ञन्यम्॥6॥

(11) सूक्त 3

38. अग्ने वाजजित् वाजम् त्वा,
सरिष्यन्तम् वाजजितम् सम् मार्ज्मि।
नमो देवेभ्यः, स्वधा पितृभ्यः,
सुयमे मे भूयास्तम्॥7॥

39. अस्कन्नम् अद्य देवेभ्य,
आज्यम् सम् भ्रियासम्,
अङ्घ्रिणा विष्णो मा त्वा,
अव क्रमिषम् वसुमतीम्,
अग्ने ते छायाम् उप स्थेषम्,
विष्णो स्थानम् असि,
इत इन्द्रो वीर्यम् अकृणोत्,
ऊर्ध्वो अध्वर आ अस्थात्॥8॥

40. अग्ने वेः होत्रम्, वेः दूत्यम्,
अवताम् त्वाम् द्यावापृथिवी,
अव त्वम् द्यावापृथिवी,
स्विष्टकृत् देवेभ्य इन्द्र
आज्येन हविषा भूत्
स्वाहा सम् ज्योतिषा ज्योतिः॥9॥

41. मयि इदम् इन्द्र इन्द्रियम् दधातु,
अस्मान् रायो मघवानः सचन्ताम्।
अस्माकम् सन्तु आशिषः सत्या,
नः सन्तु आशिष उपहूता,
पृथिवी माता उप माम्,
पृथिवी माता ह्वयताम्,
अग्निः आग्नीध्रात् स्वाहा॥10॥

42. उपहूतो द्यौः पिता,
उप माम् द्यौः पिता,
ह्वयताम् अग्निः आग्नीध्रात् स्वाहा।
देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे अश्विनोः,
बाहुभ्याम् पूष्णो हस्ताभ्याम्,
प्रति गृह्णामि अग्नेः त्वा
आस्येन प्र अश्नामि॥11॥

(12) सूक्त 4

43. एतम् ते देव सवितः यज्ञम्,
प्र आहुः बृहस्पतये ब्रह्मणे।
तेन यज्ञम् अव, तेन यज्ञपतिम्,
तेन माम् अव॥12॥

44. मनो जूतिः जुषताम् आज्यस्य,
बृहस्पतिः यज्ञम् इमम् तनोतु,
अरिष्टम् यज्ञम् सम् इमम् दधातु।
विश्वे देवास इह मादयन्ताम्,
ओम् प्र तिष्ठ॥13॥

45. एषा ते अग्ने समित्,
तया वर्धस्व च आ च प्यायस्व।
वर्धिषीमहि च वयम्,
आ च प्यासिषीमहि।
अग्ने वाजजित् वाजम् त्वा,
ससृवांसम् वाजजितम् सम् मार्ज्मि॥14॥

46. अग्नीषोमयो उत् जितिम् अनु उत् जेषम्,
वाजस्य मा प्र सवेन प्र ऊहामि।
अग्नीषोमौ तम् अप नुदताम्,
यो अस्मान् द्वेष्टि यम् च वयम् द्विष्मो,
वाजस्य एनम् प्र सवेन अप ऊहामि।
इन्द्राग्न्योः उत् जितिम्, अनु उत् जेषम्,
वाजस्य मा प्र सवेन प्र ऊहामि।
इन्द्राग्नी तम् अप नुदताम्,
यो अस्मान् द्वेष्टि, यम् च वयम् द्विष्मो,
वाजस्य एनम् प्र सवेन अप ऊहामि॥15॥

47. वसुभ्यः त्वा रुद्रेभ्यः त्वा,
आदितेभ्यः त्वा सम् जानाथाम्,
द्यावापृथिवी मित्रावरुणौ,
त्वा वृष्ट्या अवताम्।
व्यन्तु वयो अक्तम् रिहाणा,
मरुताम् पृषतीः गच्छ,
वशा पृश्निः भूत्वा दिवम् गच्छ,
ततो नो वृष्टिम् आ वह।
चक्षुष्पा अग्ने असि, चक्षुः मे पाहि ॥16॥

(13) सूक्त 5

48. यम् परिधिम् परि अधत्था,
अग्ने देव पणिभिः गुह्यमानः।
तम् त एतम् अनु जोषम्,
भरामि एष न इत् त्वत्,
अप चेतयाता अग्नेः,
प्रियम् पाथो अपीतम् ॥17॥

49. सम् स्रव भागाः स्थ इषा बृहन्तः,
प्रस्तरेष्ठाः परिधेयाः च देवाः।
इमाम् वाचम् अभि विश्वे गृणन्त,
आ सद्य अस्मिन् बर्हिषि,
मादयध्वम् स्वाहा वाट् ॥18॥

50. घृताची स्थो धुर्यौ पातम्,
सुम्ने स्थः सुम्ने माधत्तम्।
यज्ञ नमः च त उप च यज्ञस्य
शिवे सम् तिष्ठस्व,
स्विष्टे मे सम् तिष्ठस्व ॥19॥

51. अग्ने अदब्धायो अशीतम,
पाहि मा दिद्योः, पाहि प्र सित्यै,
पाहि दुरिष्ट्यै, पाहि दुरद्मन्या,
अविषम् नः पितुम् कृणु।
सुषदा योनौ स्वाहा वाट्,
अग्नये संवेशपतये स्वाहा,
सरस्वत्यै यशोभगिन्यै स्वाहा ॥20॥

52. वेदो असि,
येन त्वम् देव वेद,
देवेभ्यो वेदो अभवः,
तेन मह्यम् वेदो भूयाः।
देवा गातु विदो गातुम्,
वित्वा गातुम् इत ॥
मनसः पत इमम् देव,
यज्ञम् स्वाहा वाते धाः ॥21॥

(14) सूक्त 6

53. सम् बर्हिः अङ्क्ताम् हविषा घृतेन,
सम् आदित्यैः वसुभिः सम् मरुद्भिः।
सम् इन्द्रो विश्वदेवेभिः अङ्क्ताम्,
दिव्यम् नभो गच्छतु यत् स्वाहा॥22॥

54. कः त्वा वि मुञ्चति, स त्वा विमुञ्चति,
कस्मै त्वा विमुञ्चति, तस्मै त्वा विमुञ्चति।
पोषाय रक्षसाम् भागो असि॥23॥

55. सम् वर्चसा पयसा सम् तनूभिः,
अगन्महि मनसा सम् शिवेन।
त्वष्टा सुदत्रो वि दधातु रायो,
अनु मार्ष्टु तन्वो यत् वि लिष्टम्॥24॥

56. दिवि विष्णुः वि अक्रंस्त जागतेन छन्दसा,
ततो निः भक्तो यो अस्मान् द्वेष्टि यम् च वयम् द्विष्मो,
अन्तरिक्षे विष्णुः वि अक्रंस्त त्रैष्टुभेन छन्दसा,
ततो निः भक्तो यो अस्मान् द्वेष्टि यम् च वयम् द्विष्मः,
पृथिव्याम् विष्णुः वि अक्रंस्त गायत्रेण छन्दसा,
ततो निः भक्तो यो अस्मान् द्वेष्टि यम् च वयम् द्विष्मो,
अस्मात् अन्नात् अस्यै प्रतिष्ठाया,
अगन्म स्वः सम् ज्योतिषा अभूम॥25॥

(15) सूक्त 7

57. स्वयम्भूः असि श्रेष्ठो रश्मिः,
वर्चोदा असि वर्चो मे देहि।
सूर्यस्य आ वृतम् अनु आ वर्ते॥26॥

58. अग्ने गृहपते सु गृहपतिः त्वया,
अग्ने अहम् गृहपतिना भूयासम्,
सु गृहपतिः त्वम् मया
अग्ने गृहपतिना भूयाः।
अस्थूरि णौ गार्हपत्यानि,
सन्तु शतम् हिमाः,
सूर्यस्य आ वृतम् अनु आ वर्ते॥27॥

59. अग्ने व्रतपते व्रतम् अचारिषम्,
तत् अशकम् तत् मे अराधि इदम्,
अहम् य एव अस्मि सो अस्मि॥28॥

60. अग्नये कव्यवाहनाय स्वाहा,
सोमाय पितृमते स्वाहा।
अपहता असुरा रक्षांसि वेदिषदः॥29॥

(17) सूक्त 8

61. ये रूपाणि प्रति मुञ्चमाना,
असुराः सन्तः स्वधया चरन्ति।
परापुरो निपुरो ये भरन्ति,
अग्निः तान् लोकात् प्रणुदाति अस्मात्॥30॥

62. अत्र पितरो मादयध्वम्,
यथा-भागम् आ वृषा-यध्वम्।
अमीमदन्त पितरो,
यथाभागम् आवृषायिषत॥31॥

(18) सूक्त 8

63. नमो वः पितरो रसाय,
नमो वः पितरः शोषाय,
नमो वः पितरो जीवाय,
नमो वः पितरः स्वधायै,
नमो वः पितरो घोराय,
नमो वः पितरो मन्यवे,
नमो वो पितरः,
पितरो नमो वः,
गृहान् नः पितरो दत्त,
सतो वः पितरो देष्म,
एतत् वः पितरो वासः॥32॥

64. आ धत्त पितरो गर्भम्,
कुमारम् पुष्कर स्त्रजम्।
यथा इह पुरुषो असत्॥33॥

65. ऊर्जम् वहन्तीः अमृतम् घृतम्,
पयः कीलालम् परिस्त्रुतम्।
स्वधाः स्थ तर्पयत मे पितृन्॥34॥

इति द्वितीयो अध्यायः

ॐ

अथ तृतीयो अध्यायः

(19) सूक्त 1

66. सम् इधा अग्निम् दुवस्यत,
घृतैः बोधयत अतिथिम्।
आ अस्मिन् हव्या जुहोतन॥1॥

67. सु समिद्धाय शोचिषे,
घृतम् तीव्रम् जुहोतन।
अग्नये जात-वेदसे॥2॥

68. तम् त्वा सम् इद्भिः अङ्गिरो,
घृतेन वर्द्धयामसि।
बृहत् शोचा यविष्ठ्य॥3॥

69. उप त्वा अग्ने हविष्मतीः,
घृताचीः यन्तु हर्यत।
जुषस्व सम् इधो मम॥4॥

(20) सूक्त 2

70. भूः भुवः स्वः, द्यौः इव भूम्ना,
पृथिवी इव वरिम्णा।
तस्याः ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठे,
अग्निम् अन्नादम् अन्नाद्याय आ दधे॥5॥

71. आ अयम् गौः पृश्निः अक्रमीत्,
असदन् मातरम् पुरः।
पितरम् च प्रयन् स्वः॥6॥

72. अन्तः चरति रोचना,
अस्य प्राणात् अपानती।
वि अख्यत् महिषो दिवम्॥7॥

73. त्रिंशत् धाम वि राजति,
वाक् पतङ्गाय धीयते।
प्रति वस्तोः अह द्युभिः॥8॥

(21) सूक्त 3

74. अग्निः ज्योतिः, ज्योतिः अग्निः स्वाहा,
सूर्यो ज्योतिः, ज्योतिः सूर्यः स्वाहा।
अग्निः वर्चो, ज्योतिः वर्चः स्वाहा,
सूर्यो वर्चो, ज्योतिः वर्चः स्वाहा।
ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा॥9॥

75. सजूः देवेन सवित्रा,
सजू रात्र्या इन्द्र-वत्या।
जुषाणो अग्निः वेतु स्वाहा।
सजूः देवेन सवित्रा,
सजूः उषसा इन्द्र-वत्या।
जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा॥10॥

76. उप प्रयन्तो अध्वरम्,
मन्त्रम् वोचेम अग्नये।
आरे अस्मे च शृण्वते॥11॥

77. अग्निः मूर्द्धा दिवः ककुत्,
पतिः पृथिव्या अयम्।
अपाम् रेतांसि जिन्वति॥12॥

(22) सूक्त 4

78. उभा वाम् इन्द्राग्नी आहुवध्या,
उभा राधसः सह मादयध्यै।
उभा दातारौ इषाम् रयीणाम्,
उभा वाजस्य सातये हुवे वाम्॥13॥

79. अयम् ते योनिः ऋत्वियो,
यतो जातो अरोचथाः।
तम् जानन् अग्न आ रोह,
अथा नो वर्द्धया रयिम्॥14॥

80. अयम् इह प्रथमो धायि धातृभिः,
होता यजिष्ठो अध्वरेषु ईड्यः।
यम् अप्नवानो भृगवो वि रुरुचुः,
वनेषु चित्रम् विभ्वम् विशेविशे॥15॥

81. अस्य प्रत्नाम् अनु द्युतम्,
शुक्रम् दुदुह्रे अह्रयः।
पयः सहस्रसाम् ऋषिम्॥16॥

(23) सूक्त 5

82. तनूपा अग्ने असि तन्वम् मे पाहि,
आयुः दाः अग्ने असि आयुः मे देहि,
वर्चो-दाः अग्ने असि वर्चो मे देहि।
अग्ने यत् मे तन्वा ऊनम् तत् म आ पृण॥17॥

83. इन्धानाः त्वा शतम् हिमा,
द्युमन्तम् सम् इधीमहि।
वयस्वन्तो वयस्कृतम्,
सहस्वन्तः सहस्कृतम्।
अग्ने सपत्नदम्भनम्,
अदब्धासो अदाभ्यम्।
चित्रावसो स्वस्ति,
ते पारम् अशीय॥18॥

84. सम् त्वम् अग्ने सूर्यस्य वर्चसा,
अगथाः सम् ऋषीणाम् स्तुतेन।
सम् प्रियेण धाम्ना सम् अहम् आयुषा,
सम् वर्चसा सम् प्रजया
सम् रायस्पोषेण ग्मिषीय॥19॥

85. अन्धः स्थ अन्धो वो भक्षीय,
मह स्थ महो वो भक्षीय,
ऊर्ज स्थ ऊर्जम् वो भक्षीय,
रायः पोष स्थ रायः पोषम् वो भक्षीय॥20॥

(24) सूक्त 6

86. रेवती रमध्वम् अस्मिन् योनौ,
अस्मिन् गोष्ठे, अस्मिन् लोके, अस्मिन् क्षये।
इह एव स्त मा अप गात॥21॥

87. सम् हिता असि विश्व-रूपी,
ऊर्जा मा आ विश गौ पत्येन।
उप त्वा अग्ने दिवे दिवे,
दोषावस्तः धिया वयम्।
नमो भरन्त एमसि॥22॥

88. राजन्तम् अध्वराणाम्,
गोपाम् ऋतस्य दीदिविम्।
वर्धमानम् स्वे दमे॥23॥

89. स नः पितेव सूनवे,
अग्ने सु उपायनो भव।
सचस्वा नः स्वस्तये॥24॥

(25) सूक्त 7

90. अग्ने त्वम् नो अन्तम उत,
त्राता शिवो भवा वरूथ्यः।
वसुः अग्निः वसुश्रवा अच्छा,
नक्षि द्युमत्तमम् रयिम् दाः॥25॥

91. तम् त्वा शोचिष्ठ दीदिवः,
सुम्नाय नूनम् ईमहे सखिभ्यः।
स नो बोधि श्रुधी हवम्,
उरूष्या णो अघायतः समस्मात्॥26॥

92. इड आ इहि, अदित आ इहि,
काम्या आ इत॥
मयि वः कामधरणम् भूयात्॥27॥

93. सोमानम् स्वरणम्,
कृणुहि ब्रह्मणस्पते।
कक्षीवन्तम् य औशिजः ॥28॥

94. यो रेवान् यो अमीवहा,
वसु-वित् पुष्टि-वर्द्धनः।
स नः सिषक्तु यः तुरः ॥29॥

(26) सूक्त 8

95. मा नः शंसो अररुषो,
धूर्तिः प्रणङ् मर्त्यस्य।
रक्षा णो ब्रह्मणः पते ॥30॥

96. महि त्रीणाम् अवो अस्तु,
द्युक्षम् मित्रस्य अर्यम्णः।
दुराधर्षम् वरुणस्य ॥31॥

97. नहि तेषाम् अमा चन,
न अध्वसु वारणेषु।
ईशे रिपुः अघशंसः ॥32॥

98. ते हि पुत्रासो अदितेः,
प्र जीवसे मर्त्याय।
ज्योतिः यच्छन्ति अजस्रम् ॥33॥

(27) सूक्त 9

99. कदा चन स्तरीः असि,
न इन्द्र सश्चसि दाशुषे।
उप उप इत् नु मघवन् भूय,
इत् नु ते दानम् देवस्य पृच्यते ॥34॥

100. तत् सवितुः वरेण्यम्,
भर्गः देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात् ॥35॥

101. परि ते दूडभो रथो,
अस्मान् अश्नोतु विश्वतः।
येन रक्षसि दाशुषः ॥36॥

(28) सूक्त 10

102. भूः भुवः स्वः सुप्रजाः प्रजाभिः स्याम्,
सुवीरो वीरैः सुपोषः पोषैः।
नर्य प्रजाम् मे पाहि, शंस्य पशून् मे पाहि,
अथर्य पितुम् मे पाहि ॥37॥

103. आ अगन्म विश्व-वेदसम्,
अस्मभ्यम् वसुवित्तमम्।
अग्ने सम्राट् अभि द्युम्नम्,
अभि सह आ यच्छस्व ॥38॥

104. अयम् अग्निः गृहपतिः,
गार्हपत्यः प्रजाया वसुवित्तमः।
अग्ने गृहपते अभि द्युम्नम्,
अभि सह आ यच्छस्व॥39॥

105. अयम् अग्निः पुरीष्यो,
रयिमान् पुष्टिवर्द्धनः।
अग्ने पुरीष्य अभि द्युम्नम्,
अभि सह आ यच्छस्व॥40॥

106. गृहा मा बिभीत मा वेपध्वम्,
ऊर्जम् बिभ्रत आ इमसि।
ऊर्जम् बिभ्रत् वः सुमनाः सुमेधा,
गृहान् आ एमि मनसा मोदमानः॥41॥

107. येषाम् अध्येति प्रवसन्,
येषु सौमनसो बहुः।
गृहान् उप ह्वयामहे,
ते नो जानन्तु जानतः॥42॥

(29) सूक्त 11

108. उपहूता इह गाव,
उपहूता अजावयः।
अथो अन्नस्य कीलाल,
उपहूतो गृहेषु नः।
क्षेमाय वः शान्त्यै प्रपद्ये,
शिवम् शग्मम् शंयोः शंयोः॥43॥

109. प्र घासिनो हवामहे,
मरुतः च रिशादसः।
करम्भेण सजोषसः॥44॥

110. यत् ग्रामे यत् अरण्ये,
यत् सभायाम् यत् इन्द्रिये॥
यत् एनः चकृमा वयम्,
इदम् तत् अव यजामहे, स्वाहा॥45॥

111. मो षू ण इन्द्र अत्र पृत्सु देवैः,
अस्ति हि ष्मा ते शुष्मिन् अवयाः।
महः चित् यस्य मीढुषो यव्या,
हविष्मतो मरुतो वन्दते गीः॥46॥

112. अक्रन् कर्म कर्मकृतः,
सह वाचा मयोभुवा।
देवेभ्यः कर्म कृत्वा,
अस्तम् प्र इत सचा-भुवः ॥47॥

(30) सूक्त 12

113. अवभृथ निचुम्पुण,
नि-चेरुः असि निचुम्पुणः।
अव देवैः देवकृतम् एनो अयासिषम्,
अव मर्त्यैः मर्त्यकृतम्,
पुरु-राव्णो देव रिषः पाहि ॥48॥

114. पूर्णा दर्वि परापत,
सुपूर्णा पुनः आ पत।
वस्ना इव वि क्रीणावहा,
इषम् ऊर्जम् शत-क्रतो ॥49॥

115. देहि मे ददामि ते,
नि मे धेहि नि ते दधे।
निहारम् च हरासि मे,
निहारम् निहराणि ते स्वाहा ॥50॥

(31) सूक्त 13

116. अक्षन् अमीमदन्त हि,
अव प्रिया अधूषत।
अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया,
मती योजा नु इन्द्र ते हरी ॥51॥

117. सुसन्दृशम् त्वा वयम्,
मघवन् वन्दिषीमहि।
प्र नूनम् पूर्ण-बन्धुरः, स्तुतो यासि,
वशान् अनु योजा नु इन्द्र ते हरी ॥52॥

(32) सूक्त 14

118. मनो नु आ ह्वामहे,
नाराशंसेन स्तोमेन।
पितृणाम् च मन्मभिः ॥53॥

119. आ न एतु मनः पुनः,
क्रत्वे दक्षाय जीवसे।
ज्योक् च सूर्यम् दृशे ॥54॥

120. पुनः नः पितरो मनो,
ददातु दैव्यो जनः।
जीवम् व्रातम् सचेमहि ॥55॥

121. वयम् सोम व्रते तव,
मनः तनूषु बिभ्रतः।
प्रजावन्तः सचेमहि ॥56॥

(33) सूक्त 15

122. एष ते रुद्र भागः सह,
स्वस्रा अम्बिकया तम्,
जुषस्व स्वाहा एष ते,
रुद्र भाग आखुः ते पशुः ॥57॥

123. अव रुद्रम् अदीमहि,
अव देवम् त्र्यम्बकम्।
यथा नो वस्यसः करत्,
यथा नः श्रेयसः करत्,
यथा नो वि अवसाययात् ॥58॥

124. भेषजम् असि भेषजम्,
गवे अश्वाय पुरुषाय भेषजम्।
सुखम् मेषाय मेष्यै ॥59॥

(34) सूक्त 16

125. त्र्यम्बकम् यजामहे,
सुगन्धिम् पुष्टि-वर्धनम्।
उर्वारुकम् इव बन्धनात्,
मृत्योः मुक्षीय मा अमृतात् ॥
त्र्यम्बकम् यजामहे,
सुगन्धिम् पति-वेदनम्।
उर्वारुकम् इव बन्धनात्,
इतो मुक्षीय मा अमुतः ॥60॥

126. एतत् ते रुद्र अवसम् तेन,
परो मूजवतो अतीहि।
अवतत धन्वा पिनाकावसः,
कृत्तिवासा अहिंसन् नः शिवो अतीहि ॥61॥

127. त्रि आयुषम् जमदग्नेः,
कश्यपस्य त्रि आयुषम्।
यत् देवेषु त्रि आयुषम्,
तत् नो अस्तु त्रि आयुषम् ॥62॥

128. शिवो नाम असि स्वधितिः ते पिता,
नमः ते अस्तु, मा मा हिंसीः॥
नि वर्तयामि आयुषे, अन्नाद्याय प्रजननाय,
रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय॥63॥

इति तृतीयो अध्यायः

ॐ

अथ चतुर्थो अध्यायः

(35) सूक्त 1

129. आ इदम् अगन्म देव-यजनम् पृथिव्याः,
यत्र देवासो अजुषन्त विश्वे।
ऋक्सामाभ्याम् सम् तरन्तो,
यजुर्भी रायस्पोषेण सम् इषा मदेम।
इमा आपः शम् उ मे सन्तु देवीः,
ओषधे त्रायस्व स्वधिते मा एनम् हिंसीः॥1॥

130. आपो अस्मान् मातरः शुन्धयन्तु,
घृतेन नो घृतप्वः पुनन्तु।
विश्वम् हि रिप्रम् प्र वहन्ति देवीः,
उत् इत् आभ्यः शुचिः आ पूतः एमि,
दीक्षा-तपसोः तनूः असि ताम् त्वा,
शिवाम् शग्माम् परि दधे भद्रम् वर्णम् पुष्यन्॥2॥

131. महीनाम् पयो असि,
वर्चोदा असि, वर्चो मे देहि॥
वृत्रस्य असि कनीनकः,
चक्षुर्दा असि, चक्षुः मे देहि॥3॥

132. चित् पतिः मा पुनातु,
वाक्पतिः मा पुनातु,
देवो मा सविता पुनातु,
अच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः।
तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य,
यत् कामः पुने तत् शकेयम्॥4॥

133. आ वो देवास ईमहे,
वामम् प्रयति अध्वरे।
आ वो देवास आशिषो,
यज्ञियासो हवामहे॥5॥

(36) सूक्त 2

134. स्वाहा यज्ञम् मनसः स्वाहा,
उरोः अन्तरिक्षात् स्वाहा॥
द्यावापृथिवीभ्याम् स्वाहा,
वातात् आरभे स्वाहा॥6॥

135. आ-कूत्यै प्रयुजे अग्नये स्वाहा,
मेधायै मनसे अग्नये स्वाहा,
दीक्षायै तपसे अग्नये स्वाहा,
सरस्वत्यै पूष्णे अग्नये स्वाहा।
आपो देवीः बृहतीः विश्व शम्भुवो,
द्यावा-पृथिवी उरो अन्तरिक्ष।
बृहस्पतये हविषा विधेम स्वाहा॥7॥

136. विश्वो देवस्य नेतुः,
मर्तो वुरीत सख्यम्।
विश्वो राय इषुध्यति,
द्युम्नम् वृणीत पुष्यसे स्वाहा॥8॥

(37) सूक्त 3

137. ऋक्-सामयोः शिल्पे स्थः,
ते वाम् आरभे ते,
मा पातम् आ अस्य यज्ञस्य उत् ऋचः।
शर्म असि शर्म मे यच्छ,
नमः ते अस्तु मा मा हिंसीः॥9॥

138. ऊर्क् असि आङ्गिः असि,
ऊर्ण-म्रदा ऊर्जम् मयि धेहि।
सोमस्य नीविः असि, विष्णोः शर्म असि,
शर्म यजमानस्य, इन्द्रस्य योनिः असि,
सुसस्याः कृषीः कृधि।
उत् श्रयस्व वनस्पते ऊर्ध्वो मा पाहि अंहसः
आ अस्य यज्ञस्य उत् ऋचः॥10॥

139. व्रतम् कृणुत, अग्निः ब्रह्म,
अग्निः यज्ञो, वनस्पतिः यज्ञियः।
दैवीम् धियम् मनामहे,
सुमृडीकाम् अभिष्टये,
वर्चोधाम् यज्ञ-वाहसम्,
सुतीर्था नो असत् वशे।
ये देवाः मनो-जाता,
मनो-युजो दक्ष-क्रतवः,
ते नो अवन्तु, ते नः पान्तु,
तेभ्यः स्वाहा ॥ 11 ॥

(38) सूक्त 4

140. श्वात्राः पीता भवत यूयम् आपो,
अस्माकम् अन्तः उदरे सुशेवाः ॥
ता अस्मभ्यम् अयक्ष्मा अनमीवाः अनागसः
स्वदन्तु देवीः अमृताः ऋतावृधः ॥ 12 ॥

141. इयम् ते यज्ञिया तनूः,
अपो मुञ्चामि न प्रजाम् ॥
अंहोमुचः स्वाहा-कृताः पृथिवीम्,
आ विशत पृथिव्या सम्भव ॥ 13 ॥

142. अग्ने त्वम् सु जागृहि,
वयम् सु मन्दिषीमहि।
रक्षा णो अप्र-युच्छन्,
प्रबुधे नः पुनः कृधि ॥ 14 ॥

143. पुनः मनः पुनः आयुः म आ अगन्,
पुनः प्राणः पुनः आत्मा म आ अगन्,
पुनः चक्षुः पुनः श्रोत्रम् म आ अगन्।
वैश्वानरो अदब्धः तनूपा अग्निः,
नः पातु दुरितात् अवद्यात् ॥ 15 ॥

(39) सूक्त 5

144. त्वम् अग्ने व्रतपा असि,
देव आ मर्त्येषु आ।
त्वम् यज्ञेषु ईड्यः।
रास्व इयत् सोमा भूयो भर देवो नः,
सविता वसोः दाता वसुः अदात् ॥ 16 ॥

145. एषा ते शुक्र तनूः एतत् वर्चः,
तया सम्भव भ्राजम् गच्छ।
जूः असि धृता मनसा जुष्टा विष्णवे ॥ 17 ॥

146. तस्याः ते सत्य-सवसः प्रसवे,
तन्वो यन्त्रम् अशीय स्वाहा।
शुक्रम् असि चन्द्रम् असि,
अमृतम् असि वैश्वदेवम् असि ॥ 18 ॥

(40) सूक्त 6

147. चित् असि मना असि,
धीः असि दक्षिणा असि,
क्षत्रिया असि यज्ञिय असि,
अदितिः असि उभयतः शीर्ष्णी।
सा नः सु प्राची सु प्रतीची एधि,
मित्रः त्वा पदि बध्नीताम्
पूषा अध्वनः पातु, इन्द्राय अध्यक्षाय ॥19॥

148. अनु त्वा माता मन्यताम्,
अनु पिता अनु भ्राता,
सगर्भ्यो अनु सखा सयूथ्यः।
सा देवि देवम् अच्छ इहि,
इन्द्राय सोमम् रुद्रः त्वा आ वर्तयतु,
स्वस्ति सोमसखा पुनः आ इहि॥20॥

(41) सूक्त 7

149. वस्वि असि, अदितिः असि,
आदित्या असि, रुद्रा असि चन्द्रा असि।
बृहस्पतिः त्वा सुम्ने रम्णातु
रुद्रो वसुभिः आ चके॥21॥

150. अदित्याः त्वा मूर्द्धन्, आ जिघर्मि देवयजने,
पृथिव्या इडायाः पदम् असि घृतवत् स्वाहा।
अस्मे रमस्व अस्मे ते बन्धुः, त्वे रायो मे रायो,
मा वयम् रायस्पोषेण, वि यौष्म तोतो रायः॥22॥

151. सम् अख्ये देव्या धिया,
सम् दक्षिणया उरु चक्षसा।
मा म आयुः प्र मोषीः,
मो अहम् तव वीरम्,
विदेय तव देवि सम् दृशि॥23॥

(42) सूक्त 8

152. एष ते गायत्रो भाग इति मे सोमाय ब्रूतात्।
एष ते त्रैष्टुभो भाग इति मे सोमाय ब्रूतात्।
एष ते जागतो भाग इति मे सोमाय ब्रूतात्।
छन्दोनामानाम् साम्राज्यम् गच्छ,
इति मे सोमाय ब्रूतात्।
आस्माको असि शुक्रः ते ग्रह्यो,
वि चितः त्वा वि चिन्वन्तु॥24॥

153. अभि त्यम् देवम् सवितारम्,
ओण्योः कवि-क्रतुम् अर्चामि,
सत्य-सवम् रत्न-धाम्,
अभि प्रियम् मतिम् कविम्।
ऊर्ध्वा यस्य अमतिः भाः, अदिद्युतत् सवीमनि,
हिरण्य-पाणिः अमिमीत, सु-क्रतुः कृपा स्वः।
प्रजाभ्यः त्वा प्रजाः त्वा अनु-प्राणन्तु,
प्रजा त्वम् अनु-प्राणिहि॥25॥

154. शुक्रम् त्वा शुक्रेण क्रीणामि,
चन्द्रम् चन्द्रेण अमृतम् अमृतेन।
सग्मे ते गोः अस्मे ते चन्द्राणि,
तपसः तनूः असि।
प्रजापतेः वर्णः परमेण पशुना,
क्रीयसे सहस्त्र-पोषम् पुषेयम्॥26॥

155. मित्रो न आ इहि सुमित्रध,
इन्द्रस्य उरुम् आ विश,
दक्षिणम् उशन् उशन्तम् स्योनः स्योनम्।
स्वान भ्राज अङ्घारे बम्भारे,
हस्त सुहस्त कृशानो,
एते वः सोमक्रयणाः,
तान् रक्षध्वम् मा वो दभन्॥27॥

(43) सूक्त 9

156. परि मा अग्ने दुश्चरितात्,
बाधस्व आ मा सुचरिते भज।
उत् आयुषा सु आयुषा,
उत् अस्थाम् अमृतान् अनु॥28॥

157. प्रति पन्थाम् अपद्महि,
स्वस्ति गाम् अनेहसम्॥
येन विश्वाः परि द्विषो,
वृणक्ति विन्दते वसु॥29॥

158. अदित्याः त्वक् असि,
अदित्यै सद आ सीद।
अस्तभ्नात् द्याम् वृषभो अन्तरिक्षम्,
अमिमीत वरिमाणम् पृथिव्याः।
आसीदत् विश्वा भुवनानि सम्राट्,
विश्वा इत् तानि वरुणस्य व्रतानि॥30॥

(44) सूक्त 10

159. वनेषु वि अन्तरिक्षम् ततान,
वाजम् अर्वत्सु पय उस्त्रियासु।
हृत्सु क्रतुम् वरुणो विक्षु अग्निम्,
दिवि सूर्यम् अदधात् सोमम् अद्रौ॥31॥

160. सूर्यस्य चक्षुः आ रोह,
अग्नेः अक्ष्णः कनीनकम्।
यत्र एतशेभिः ईयसे,
भ्राजमानो विपश्चिता॥32॥

161. उस्त्रौ आ इतम् धूर्षाहौ युज्येथाम्,
अनश्रू अवीरहणौ बह्मचोदनौ।
स्वस्ति यजमानस्य गृहान् गच्छतम्॥33॥

162. भद्रो मे असि प्र च्यवस्व,
भुवः पते विश्वानि अभि धामानि।
मा त्वा परि परिणो विदन्,
मा त्वा परि पन्थिनो विदन्,
मा त्वा वृका अघायवो विदन्।
श्येनो भूत्वा परापत,
यजमानस्य गृहान् गच्छ,
तत् नौ संस्कृतम्॥34॥

(45) सूक्त 11

163. नमो मित्रस्य वरुणस्य चक्षसे,
महो देवाय तत् ऋतम् सपर्यत।
दूरे दृशे देवजाताय केतवे,
दिवः पुत्राय सूर्याय शंसत॥35॥

164. वरुणस्य उत्तम्भनम् असि,
वरुणस्य स्कम्भ सर्जनी स्थो।
वरुणस्य ऋत सदनी असि,
वरुणस्य ऋतसदनम् असि।
वरुणस्य ऋतसदनम् आसीद॥36॥

165. या ते धामानि हविषा यजन्ति,
ता ते विश्वा परिभूः अस्तु यज्ञम्॥
गयस्फानः प्रतरणः सुवीरो,
अवीरहा प्र चरा सोम दुर्यान्॥37॥

इति चतुर्थो अध्यायः

ॐ

अथ पञ्चमो अध्यायः

(46) सूक्त 1

166. अग्नेः तनूः असि विष्णवे त्वा,
सोमस्य तनूः असि विष्णवे त्वा,
अतिथेः आतिथ्यम् असि विष्णवे त्वा,
श्येनाय त्वा सोमभृते विष्णवे त्वा,
अग्नये त्वा रायस्पोषदे विष्णवे त्वा ॥1॥

167. अग्नेः जनित्रम् असि,
वृषणौ स्थ उर्वशी असि,
आयु असि, पुरूरवा असि।
गायत्रेण त्वा छन्दसा मन्थामि,
त्रैष्टुभेन त्वा छन्दसा मन्थामि,
जागतेन त्वा छन्दसा मन्थामि ॥2॥

168. भवतम् नः समनसौ,
सचेतसौ अरेपसौ।
मा यज्ञम् हिंसिष्टम्,
मा यज्ञपतिम् जातवेदसौ,
शिवौ भवतम् अद्य नः ॥3॥

(47) सूक्त 2

169. अग्नौ अग्निः चरति प्रविष्टः,
ऋषीणाम् पुत्रो अभिशस्ति पावा।
स नः स्योनः सुयजा यज इह
देवेभ्यो हव्यम् सदम् अप्रयुच्छन् स्वाहा ॥4॥

170. आ पतये त्वा परि पतये गृह्णामि,
तनू-नप्त्रे शाक्वराय शक्वने ओजिष्ठाय।
अनाधृष्टम् असि अनाधृष्यम् देवानाम् ओजो,
अनभिशस्ति अभिशस्तिपा अनभि-शस्तेन्यम्,
अञ्जसा सत्यम् उप गेषम् सु इते मा धाः ॥5॥

171. अग्ने व्रतपाः त्वे व्रतपा,
या तव तनूः इयम् सा मयि,
यो मम तनूः एषा सा त्वयि।
सह नौ व्रतपते व्रतानि,
अनु मे दीक्षाम् दीक्षापतिः
मन्यताम् अनु तपः तपस्पतिः ॥6॥

(48) सूक्त 3

172. अंशुः अंशुः ते देव सोम,
आ प्यायताम् इन्द्राय एक धन-विदे।
आ तुभ्यम् इन्द्रः प्यायताम्,
आ त्वम् इन्द्राय प्यायस्व।
आ प्यायय अस्मान् सखीन् सन्या मेधया,
स्वस्ति ते देव सोम सुत्याम् अशीय।
एष्टा रायः प्र इषे भगाय ऋतम्,
ऋतवादिभ्यो नमो द्यावा-पृथिवीभ्याम्॥7॥

173. या ते अग्ने अयः शया,
तनूः वर्षिष्ठा गह्वरेष्ठा।
उग्रम् वचो अप अवधीत्,
त्वेषम् वचो अप अवधीत् स्वाहा।
या ते अग्ने रजः शया,
तनूः वर्षिष्ठा गह्वरेष्ठा।
उग्रम् वचो अप अवधीत्,
त्वेषम् वचो अप अवधीत् स्वाहा॥
या ते अग्ने हरिशया तनूः,
वर्षिष्ठा गह्वरेष्ठा।
उग्रम् वचो अप अवधीत् त्वेषम्,
वचो अप अवधीत् स्वाहा॥8॥

174. तप्तायनी मे असि, वित्तायनी मे असि,
अवतात् मा नाथितात् अवतात् मा व्यथितात्।
विदेत् अग्निः नभो नाम अग्ने,
अङ्गिर आयुना नाम्ना आ इहि,
यो अस्याम् पृथिव्याम् असि,
यत् ते अनाधृष्टम् नाम यज्ञियम् तेन त्वा दधे।
विदेत् अग्निः नभो नाम अग्ने,
अङ्गिर आयुना नाम्ना आ इहि,
यो द्वितीयस्याम् पृथिव्याम् असि,
यत् ते अनाधृष्टम् नाम यज्ञियम् तेन त्वा दधे।
विदेत् अग्निः नभो नाम अग्ने,
अङ्गिरः आयुना नाम्ना आ इहि,
यः तृतीयस्याम् पृथिव्याम् असि,
यत् ते अनाधृष्टम् नाम यज्ञियम् तेन त्वा दधे।
अनु त्वा देववीतये॥9॥

(49) सूक्त 4

175. सिंही असि सपत्नसाही देवेभ्यः कल्पस्व,
सिंही असि सपत्नसाही देवेभ्यः शुन्धस्व,
सिंही असि सपत्नसाही देवेभ्यः शुम्भस्व॥10॥

176. इन्द्रघोषः त्वा वसुभिः पुरस्तात् पातु।
प्रचेताः त्वा रुद्रैः पश्चात् पातु।
मनोजवाः त्वा पितृभिः दक्षिणतः पातु,
विश्वकर्मा त्वा आदित्यैः उत्तरतः पातु,
इदम् अहम् तप्तम् वाः,
बहिर्धा यज्ञात् निः सृजामि ॥11॥

177. सिंही असि स्वाहा,
सिंही असि आदित्यवनिः स्वाहा।
सिंही असि ब्रह्मवनिः क्षत्रवनिः स्वाहा।
सिंही असि सु-प्रजावनी रायस्पोषवनिः स्वाहा।
सिंही असि आ वह देवान्,
यजमानाय स्वाहा भूतेभ्यः त्वा ॥12॥

(50) सूक्त 5

178. ध्रुवो असि पृथिवीम् दृंह,
ध्रुवक्षित् असि अन्तरिक्षम् दृंह,
अच्युत् क्षित् असि दिवम् दृंह,
अग्नेः पुरीषम् असि ॥13॥

179. युञ्जते मन उत युञ्जते धियो,
विप्रा विप्रस्य बृहतो विपश्चितः।
वि होत्रा दधे वयुनावित् एक इत्,
मही देवस्य सवितुः परिष्टुतिः स्वाहा ॥14॥

180. इदम् विष्णुः विचक्रमे,
त्रेधा नि दधे पदम्।
सम् ऊढम् अस्य पांसुरे स्वाहा ॥15॥

181. इरावती धेनुमती हि भूतम्,
सु यवसिनी मनवे दशस्या।
वि अस्कभ्ना रोदसी विष्णो एते,
दाधर्थ पृथिवीम् अभितो मयूखैः स्वाहा ॥16॥

182. देवश्रुतौ देवेषु आ घोषतम्,
प्राची प्रेतम् अध्वरम्,
कल्पयन्ती ऊर्ध्वम् यज्ञम्,
नयतम् मा जिह्वरतम्।
स्वम् गोष्ठम् आ वदतम् देवी,
दुर्ये आयुः मा निर्वादिष्टम्
प्रजाम् मा निर्वादिष्टम्,
अत्र रमेथाम् वर्ष्मन् पृथिव्याः ॥17॥

(51) सूक्त 6

183. विष्णोः नु कम् वीर्याणि प्र वोचम्,
यः पार्थिवानि विममे रजांसि।
यो अस्कभायत् उत्तरम् सधस्थम्
विचक्रमाणः त्रेधा उरुगायो विष्णवे त्वा ॥18॥

184. दिवो वा विष्णो उत वा पृथिव्या,
महो वा विष्णो उरोः अन्तरिक्षात्।
उभा हि हस्ता वसुना पृणस्व,
आ प्रयच्छ दक्षिणात्, आ उत सव्यात्,
विष्णवे त्वा ॥19 ॥

185. प्र तत् विष्णुः स्तवते वीर्येण,
मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः।
यस्य उरुषु त्रिषु वि क्रमणेषु,
अधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा ॥20 ॥

186. विष्णो रराटम् असि, विष्णोः श्नप्त्रे स्थो,
विष्णो स्यूः असि, विष्णोः ध्रुवो असि।
वैष्णवम् असि विष्णवे त्वा ॥21 ॥

(52) सूक्त 7

187. देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे,
अश्विनोः बाहुभ्याम् पूष्णो हस्ताभ्याम्।
आददे नारी असि इदम् अहम्,
रक्षसाम् ग्रीवा अपि कृन्तामि।
बृहन् असि बृहद्रवा,
बृहतीम् इन्द्राय वाचम् वद ॥22 ॥

188. रक्षोहणम् वल-गहनम् वैष्णवीम्।
इदम् अहम् तम् वल-गम् उत् किरामि,
यम् मे निष्ट्यो यम् अमात्यो नि चखान।
इदम् अहम् तम् वल-गम् उत् किरामि,
यम् मे समानो यम् असमानो नि चखान।
इदम् अहम् तम् वल-गम् उत् किरामि,
यम् मे सबन्धुः यम् अस-बन्धुः नि चखान।
इदम् अहम् तम् वल-गम् उत् किरामि,
यम् मे सजातो यम् असजातो नि चखान।
उत् कृत्याम् किरामि ॥23 ॥

189. स्व-राट् असि सपत्न-हा,
सत्र-राट् असि अभिमाति-हा।
जन-राट् असि रक्षोहा,
सर्वराट् असि अमित्र-हा ॥24 ॥

190. रक्षो-हणो वो वलग-हनः,
प्र उक्षामि वैष्णवान्,
रक्षो-हणो वो वलग-हनः,
अव नयामि वैष्णवान्,
रक्षो-हणो वो वलगहनः,
अव स्तृणामि वैष्णवान्,
रक्षो-हणौ वाम् वलग-हनौ,
उप दधामि वैष्णवी,
रक्षो-हणौ वाम् वलगहनौ,
परि ऊहामि वैष्णवी,
वैष्णवम् असि वैष्णवाः स्थ ॥25॥

191. देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे,
अश्विनोः बाहुभ्याम् पूष्णो हस्ताभ्याम्।
आ ददे नारि असि,
इदम् अहम् रक्षसाम् ग्रीवा अपि कृन्तामि ॥
यवो असि, यवय अस्मत् द्वेषो, यवय अरातीः,
दिवे त्वा, अन्तरिक्षाय त्वा, पृथिव्यै त्वा,
शुन्धन्ताम् लोकाः पितृषदनाः, पितृसदनम् असि ॥26॥

192. उत् दिवम् स्तभान,
आ अन्तरिक्षम् पृण,
दृंहस्व पृथिव्याम्,
द्युतानः त्वा मारुतो मिनोतु,
मित्रावरुणौ ध्रुवेण धर्मणा।
ब्रह्म-वनि त्वा क्षत्र-वनि
रायस्पोष-वनि परि ऊहामि,
ब्रह्म दृंह, क्षत्रम् दृंह,
आयुः दृंह, प्रजाम् दृंह ॥27॥

(53) सूक्त 8

193. ध्रुवा असि ध्रुवो अयम् यजमानो,
अस्मिन् आयतने प्रजया पशुभिः भूयात्।
घृतेन द्यावापृथिवी पूर्येथाम्,
इन्द्रस्य छदिः असि विश्व-जनस्य छाया ॥28॥

194. परि त्वा गिर्वणो गिर,
इमा भवन्तु विश्वतः।
वृद्ध आयुम् अनु वृद्धयो,
जुष्टा भवन्तु जुष्टयः ॥29॥

195. इन्द्रस्य स्यूः असि,
इन्द्रस्य ध्रुवो असि।
ऐन्द्रम् असि वैश्वदेवम् असि ॥30॥

196. विभूः असि प्र-वाहणो,
वह्निः असि हव्य-वाहनः ॥
श्वात्रो असि प्रचेताः,
तुथो असि विश्व-वेदाः ॥31॥

(54) सूक्त 9

197. उशिक् असि कविः,
अङ्घारिः असि बम्भारिः,
अवस्यूः असि दुवस्वान्,
शुन्ध्यूः असि मार्जालीयः।
सम्राट् असि कृशानुः,
परिषद्यो असि पवमानो,
नभो असि प्रतक्वा,
मृष्टो असि हव्य-सूदन,
ऋत-धामा असि स्वः ज्योतिः ॥32॥

198. समुद्रो असि विश्व-व्यचा,
अजो असि एकपात्,
अहिः असि बुध्न्यो, वाक् असि,
ऐन्द्रम् असि, सदो असि,
ऋतस्य द्वारौ मा मा सम् ताप्तम्,
अध्वनाम् अध्वपते प्र मा तिर,
स्वस्ति मे अस्मिन् पथि देवयाने भूयात् ॥33॥

199. मित्रस्य मा चक्षुषा ईक्षध्वम्,
अग्नयः सगराः सगराः स्थ,
सगरेण नाम्ना रौद्रेण
अनीकेन पात मा
अग्नयः पिपृत मा,
अग्नयो गोपायत मा,
नमो वो अस्तु, मा मा हिंसिष्ट ॥34॥

200. ज्योतिः असि विश्व-रूपम्,
विश्वेषाम् देवानाम् सम् इत्।
त्वम् सोम तनूकृद्भ्यः द्वेषोभ्यः,
अन्य-कृतेभ्यः उरु यन्ता असि।
वरूथम् स्वाहा, जुषाणो अप्तुः,
आज्यस्य वेतु स्वाहा ॥35॥

(55) सूक्त 10

201. अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्,
विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोधि अस्मत् जुहुराणम् एनो
भूयिष्ठाम् ते नम उक्तिम् विधेम ॥36॥

202. अयम् नो अग्निः वरिवः कृणोतु,
अयम् मृधः पुर एतु प्र-भिन्दन्।
अयम् वाजान् जयतु वाजसातौ,
अयम् शत्रून् जयतु जर्हृषाणः स्वाहा॥37॥

203. उरु विष्णो विक्रमस्व,
उरु क्षयाय नः कृधि।
घृतम् घृत-योने पिब,
प्र प्र यज्ञपतिम् तिर स्वाहा॥38॥

(56) सूक्त 11

204. देव सवितः एष ते सोमः,
तम् रक्षस्व मा त्वा दभन्।
एतत् त्वम् देव सोम,
देवो देवान् उप अगा,
इदम् अहम् मनुष्यान्,
सह रायस्पोषेण स्वाहा,
निः वरुणस्य पाशान् मुच्ये॥39॥

205. अग्ने व्रतपाः ते व्रतपा,
या तव तनूः मयि अभूत्, एषा सा त्वयि,
यो मम तनूः त्वयि अभूत्, इयम् सा मयि।
यथायथम् नौ व्रतपते व्रतानि,
अनु मे दीक्षाम् दीक्षापतिः,
अमंस्त अनु तपः तपस्पतिः॥40॥

206. उरु विष्णो विक्रमस्व,
उरु क्षयाय नः कृधि।
घृतम् घृतयोने पिब,
प्र प्र यज्ञपतिम् तिर स्वाहा॥41॥

(57) सूक्त 12

207. अति अन्यान् अगाम्,
न अन्यान् उप अगाम्,
अर्वाक् त्वा परेभ्यो,
अविदम् परो अवरेभ्यः।
तम् त्वा जुषामहे देव,
वनस्पते देव-यज्यायै।
देवाः त्वा, देव यज्यायै,
जुषन्ताम् विष्णवे त्वा।
ओषधे त्रायस्व स्वधिते,
मा एनम् हिंसीः॥42॥

208. द्याम् मा लेखीः,
अन्तरिक्षम् मा हिंसीः,
पृथिव्या सम्भव।
अयम् हि त्वा स्वधितिः तेतिजानः,
प्रणिनाय महते सौभगाय॥
अतः त्वम् देव वनस्पते,
शतवल्शो विरोह,
सहस्त्रवल्शा वि वयम् रुहेम॥43॥

(58) इति पञ्चमो अध्यायः

ॐ

अथ षष्ठो अध्यायः

(59) सूक्त 1

209. देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे
अश्विनोः बाहुभ्याम् पूष्णो हस्ताभ्याम्।
आददे नारि तत् असि
इदम् अहम् रक्षसाम् ग्रीवाः अपि कृन्तामि।
यवो असि यवय अस्मत् द्वेषो,
यवय अरातीः दिवे त्वा,
अन्तरिक्षाय त्वा पृथिव्यै त्वा शुन्धन्ताम्,
लोकाः पितृषदनाः पितृषदनम् असि॥1॥

210. अग्रेणीः असि स्वावेश उन्नेतृणाम्,
एतस्य वित्तात् अधि त्वा स्थास्यति,
देवः त्वा सविता मध्वा अनक्तु,
सुपिप्पलाभ्यः त्वा ओषधीभ्यः।
द्याम अग्रेण अस्पृक्ष,
आ अन्तरिक्षम् मध्येन,
अप्राः पृथिवीम् उपरेण अदृंहीः॥2॥

211. या ते धामानि उशमसि गमध्यै,

यत्र गावो भूरि-शृङ्गा अयासः।
अत्र अह तत् उरु गायस्य विष्णोः,
परमम् पदम् अव भारि भूरि।
ब्रह्म-वनि त्वा क्षत्रवनि परि ऊहामि।
ब्रह्म दृंह क्षत्रम् दृंह,
आयुः दृंह प्रजाम् दृंह॥3॥

(60) सूक्त 2

212. विष्णोः कर्माणि पश्यत,
यतो व्रतानि पस्पशे।
इन्द्रस्य युज्यः सखा॥4॥

213. तत् विष्णोः परमम् पदम्,
सदा पश्यन्ति सूरयः।
दिवि इव चक्षुः आ ततम्॥5॥

214. परि वी असि परि त्वा दैवीः विशो व्यन्ताम्,
परि इमम् यजमानम् रायो मनुष्याणाम्।
दिवः सूनुः असि एष ते
पृथिव्याम् लोक आरण्यः ते पशुः॥6॥

215. उपावीः असि उप देवान् दैवीः विशो,
प्र अगुः उशिजो बह्नि-तमान्।
देव त्वष्टः वसु रम हव्या ते स्वदन्ताम्॥7॥

216. रेवती रमध्वम् बृहस्पते धारय वसूनि।

ऋतस्य त्वा देव-हविः,
पाशेन प्रति मुञ्चामि धर्षा मानुषः॥8॥

(61) सूक्त 3

217. देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे,
अश्विनोः बाहुभ्याम् पूष्णो हस्ताभ्याम्।
अग्नीषोमाभ्याम् जुष्टम् नि युनज्मि।
अद्भ्यः त्वा ओषधीभ्यो अनु त्वा माता मन्यताम्,
अनु पिता अनु भ्राता सगर्भ्यो अनु सखा सयूथ्यः।
अग्नीषोमाभ्याम् त्वा जुष्टम् प्र उक्षामि॥9॥

218. अपाम् पेरुः असि, आपो देवीः स्वदन्तु,
स्वात्तम् चित् सत् देवहविः।
सम् ते प्राणः वातेन गच्छताम्,
सम् अङ्गानि यजत्रैः,
सम् यज्ञपतिः आशिषा॥10॥

219. घृतेन अक्तौ पशून् त्रायेथाम्,
रेवति यजमाने प्रियम् धा आ विश।
उरोः अन्तरिक्षात् सजूः,
देवेन वातेन अस्य हविषः
त्वमना यज सम् अस्य तन्वा भव।
वर्षो वर्षीयसि यज्ञे यज्ञ-पतिम् धाः स्वाहा,
देवेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा॥11॥

(62) सूक्त 4

220. मा अहिः भूः मा पृदाकुः,
नमः त आतान अनर्वा प्र इहि।
घृतस्य कुल्या उप ऋतस्य पथ्या अनु ॥12॥

221. देवीः आपः शुद्धा, वोढ्वम् सुपरिविष्टा
देवेषु सुपरिविष्टा वयम्, परिवेष्टारो भूयास्म ॥13॥

222. वाचम् ते शुन्धामि, प्राणम् ते शुन्धामि,
चक्षुः ते शुन्धामि, श्रोत्रम् ते शुन्धामि,
नाभिम् ते शुन्धामि, मेढ्रम् ते शुन्धामि,
पायुम् ते शुन्धामि, चरित्रान् ते शुन्धामि ॥14॥

223. मनः त आ प्यायताम्,
वाक् त आ प्यायताम्,
प्राणः त आप्यायताम्,
चक्षुः त आप्यायताम्,
श्रोत्रम् त आप्यायताम्।
यत् ते क्रूरम् यत् आस्थितम्,
तत् त आप्यायताम् निः त्यायताम्,
तत् त शुध्यतु शम् अहोभ्यः।
ओषधे त्रायस्व स्वधिते मा एनम् हिंसीः ॥15॥

(63) सूक्त 5

224. रक्षसाम् भागो असि निरस्तम् रक्ष,
इदम् अहम् रक्षो अभि तिष्ठामि
इदम् अहम् रक्षो अव बाध,
इदम् अहम् रक्षो अधमम् तमो नयामि।
घृतेन द्यावापृथिवी प्र ऊर्णुवाथाम्
वायो वेः स्तोकानाम् अग्निः आज्यस्य वेतु स्वाहा,
स्वाहाकृते ऊर्ध्वनभसम् मारुतम् गच्छतम् ॥16॥

225. इदम् आपः प्र वहत,
अवद्यम् च मलम् च यत्।
यत् च अभिदुद्रोह अनृतम्,
यत् च शेपे अभीरुणम्।
आपो मा तस्मात् एनसः,
पवमानः च मुञ्चतु ॥17॥

226. सम् ते मनो, मनसा सम्
प्राणः प्राणेन गच्छताम्।
रेट् असि अग्निः त्वा श्रीणातु
आपः त्वा सम् अरिणन् वातस्य त्वा,
ध्राज्यै पूष्णो रंह्या ऊष्मणो,
व्यथिषत् प्रयुतम् द्वेषः ॥18॥

227. घृतम् घृत-पावानः पिबत,
वसाम् वसा-पावानः पिबत,
अन्तरिक्षस्य हविः असि स्वाहा।
दिशः प्रदिश आदिशो विदिश,
उत् दिशो दिग्भ्यः स्वाहा॥19॥

228. ऐन्द्रः प्राणो अङ्गे अङ्गे नि दीध्यत्,
ऐन्द्र उत् दानो अङ्गे अङ्गे नि-धीतः।
देव त्वष्टः भूरि ते सम् सम् एतु
सलक्ष्म आ यत् विषु-रूपम् भवाति।
देवत्रा यन्तम् अवसे सखायो
अनु त्वा माता पितरो मदन्तु॥20॥

229. समुद्रम् गच्छ स्वाहा,

अन्तरिक्षम् गच्छ स्वाहा,
देवम् सवितारम् गच्छ स्वाहा,
मित्रावरुणौ गच्छ स्वाहा,
अहोरात्रे गच्छ स्वाहा,
छन्दांसि गच्छ स्वाहा,
द्यावापृथिवी गच्छ स्वाहा,
यज्ञम् गच्छ स्वाहा,
सोमम् गच्छ स्वाहा,
दिव्यम् नभो गच्छ स्वाहा,
अग्निम् वैश्वानरम् गच्छ स्वाहा।
मनो मे हार्दि यच्छ दिवम्,
ते धूमो गच्छतु स्वः ज्योतिः,
पृथिवीम् भस्मना आ पृण स्वाहा॥21॥

(64) सूक्त 6

230. मा अपो मा ओषधीः हिंसीः,
धाम्नोः धाम्नो राजन् ततो वरुण नो मुञ्च।
यत् आहुः अघ्न्या इति वरुण
इति शपामहे ततो वरुण नो मुञ्च।
सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु,
दुर्मित्रियाः तस्मै सन्तु,
यो अस्मान् द्वेष्टि यम् च वयम् द्विष्मः॥22॥

231. हविष्मतीः इमा आपो,

हविष्मान् आ विवासति।
हविष्मान् देवो अध्वरो,
हविष्मान् अस्तु सूर्यः ॥23॥

232. अग्नेः वो अपन्नगृहस्य सदसि सादयामि,
इन्द्राग्न्योः भागधेयी स्थ मित्रावरुणयोः भागधेयी स्थ,
विश्वेषाम् देवानाम् भागधेयी स्थ।
अमूः या उप सूर्ये, याभिः वा सूर्यः सह।
ता नो हिन्वन्तु अध्वरम् ॥24॥

233. हृदे त्वा मनसे त्वा,
दिवे त्वा सूर्य्याय त्वा।
ऊर्ध्वम् इमम् अध्वरम्,
दिवि देवेषु होत्रा यच्छ ॥25॥

(65) सूक्त 7

234. सोम राजन् विश्वाः त्वम् प्रजा उपावरोह,
विश्वाः त्वाम् प्रजा उपावरोहन्तु।
शृणोतु अग्निः समिधा हवम् मे शृण्वन्तु,
आपो धिषणाः च देवीः।
श्रोता ग्रावाणो विदुषो न यज्ञम् शृणोतु,
देवः सविता हवम् मे स्वाहा ॥26॥

235. देवीः आपो अपाम् नपात् यो व ऊर्मिः,
हविष्य इन्द्रियावान् मदिन्तमः।
तम् देवेभ्यो देवत्रा दत्त,
शुक्रपेभ्यो येषाम् भाग स्थ स्वाहा ॥27॥

236. कार्षिः असि समुद्रस्य,
त्वा अक्षित्या उत् नयामि।
सम् आपो अद्भिः अग्मत,
सम् ओषधीभिः ओषधीः ॥28॥

237. यम् अग्ने पृत्सु मर्त्यम्,
अवा वाजेषु यम् जुनाः।
स यन्ता शश्वतीः इषः स्वाहा ॥29॥

238. देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे,
अश्विनोः बाहुभ्याम्, पूष्णो हस्ताभ्याम्।
आददे रावा असि, गभीरम् इमम् अध्वरम्,
कृधि इन्द्राय सुषूतमम्।
उत्तमेन पविना, ऊर्जस्वन्तम् मधुमन्तम्,
पयस्वन्तम् निग्राभ्या स्थ, देवश्रुतः तर्पयत मा ॥30॥

(66) सूक्त 8

239. मनो मे तर्पयत वाचम् मे तर्पयत,
प्राणम् मे तर्पयत चक्षुः मे तर्पयत,
श्रोत्रम् मे तर्पयत आत्मानम् मे तर्पयत,
प्रजाम् मे तर्पयत पशून् मे तर्पयत,
गणान् मे तर्पयत गणा मे मा वि तृषन् ॥31॥

240. इन्द्राय त्वा वसुमते रुद्रवत,
इन्द्राय त्वा आदित्यवत,
इन्द्राय त्वा अभिमातिघ्ने।
श्येनाय त्वा सोमभृते,
अग्नये त्वा रायस्पोषदे ॥32॥

241. यत् ते सोम दिवि ज्योतिः,
यत् पृथिव्याम् यत् उरौ अन्तरिक्षे।
तेन अस्मै यजमानाय,
उरु राये कृधि अधि दात्रे वोचः ॥33॥

242. श्वात्रा स्थ वृत्रतुरो,
राधोगूर्ता अमृतस्य पत्नीः।
ता देवीः देवत्रा इमम् यज्ञम् नयत,
उपहूताः सोमस्य पिबत ॥34॥

243. मा भेः मा सम् विक्था ऊर्जम्,

धत्स्व धिषणे वीड्वी सती,
वीडयेथाम् ऊर्जम् दधाथाम्।
पाप्मा हतो न सोमः ॥35॥

244. प्राक् अपाक् उदक् अधराक्,
सर्वतः त्वा दिश आ धावन्तु।
अम्ब निः पर सम् अरीः विदाम् ॥36॥

245. त्वम् अङ्ग प्र शंसिषो,
देवः शविष्ठ मर्त्यम्।
न त्वत् अन्यो मघवन् अस्ति,
मर्डिता इन्द्र ब्रवीमि ते वचः ॥37॥

इति षष्ठो अध्यायः

ॐ

अथ सप्तमो अध्यायः

(67) सूक्त 1

246. वाचः पतये पवस्व वृष्णो,
अंशुभ्याम् गभस्तिपूतः।
देवो देवेभ्यः पवस्व,
येषाम् भागो असि॥1॥

247. मधुमतीः न इषः कृधि,
यत् ते सोम अदाभ्यम् नाम जागृवि,
तस्मै ते सोम सोमाय स्वाहा,
स्वाहा उरु अन्तरिक्षम् अनु एमि॥2॥

248. स्वाङ्कृतो असि विश्वेभ्य इन्द्रियेभ्यो,
दिव्येभ्यः पार्थिवेभ्यो मनः त्वा अष्टु स्वाहा,
त्वा सुभव सूर्य्याय देवेभ्यः,
त्वा मरीचिपेभ्यो देव अंशो यस्मै,
त्वा ईडे तत् सत्यम्,
उपरिप्रुता भङ्गेन हतो असौ,
फट् प्राणाय त्वा वि आनाय त्वा॥3॥

(68) सूक्त 2

249. उपयामगृहीतो असि अन्तः,
यच्छ मघवन् पाहि सोमम्।
उरुष्य राय आ इषो यजस्व॥4॥

250. अन्तः ते द्यावा-पृथिवी दधामि,
अन्तः दधामि उरु अन्तरिक्षम्।
सजूः देवेभिः अवरैः परैः च,
अन्तः यामे मघ-वन् मादयस्व॥5॥

251. स्वाङ्कृतो असि विश्वेभ्य इन्द्रियेभ्यो,
दिव्येभ्यः पार्थिवेभ्यो मनः त्वा अष्टु स्वाहा,
त्वा सुभव सूर्याय देवेभ्यः,
त्वा मारीचिपेभ्य उदानाय त्वा॥6॥

252. आ वायो भूष शुचिपा उप नः,
सहस्रम् ते नियुतो विश्व-वार।
उपो ते अन्धो मद्यम् अयामि,
यस्य देव दधिषे पूर्व-पेयम् वायवे त्वा॥7॥

253. इन्द्रवायू इमे सुता,
उप प्रयोभिः आ गतम्।
इन्दवो वाम् उशन्ति हि।
उपयाम गृहीतो असि,
वायव इन्द्रवायुभ्याम्,
त्वा एष ते योनिः,
सजोषोभ्याम् त्वा ॥8॥

254. अयम् वाम् मित्रावरुणा,
सुतः सोम ऋतावृधा।
मम इत् इह श्रुतम् हवम्।
उपयाम गृहीतो असि,
मित्रावरुणाभ्याम् त्वा ॥9॥

255. राया वयम् ससवांसो मदेम,
हव्येन देवा यवसेन गावः।
ताम् धेनुम् मित्रावरुणा युवम् नो,
विश्वाहा धत्तम् अनपस्फुरन्तीम्,
एष ते योनिः ऋतायुभ्याम् त्वा ॥10॥

256. या वाम् कशा मधुमती,
अश्विना सूनृतावती।
तया यज्ञम् मिमिक्षतम्।
उपयाम गृहीतो असि अश्विभ्याम् त्वा,
एष ते योनिः माध्वीभ्याम् त्वा ॥11।

(69) सूक्त 3

257. तम् प्रत्नथा पूर्वथा विश्वथा इमथा,
ज्येष्ठ-तातिम् बर्हि-सदम् स्वः विदम्।
प्रतीचीनम् वृजनम् दोहसे धुनिम्,
आशुम् जयन्तम् अनु यासु वर्द्धसे।
उपयाम गृहीतो असि शण्डाय त्वा,
एष ते योनिः वीरताम् पाहि,
अपमृष्टः शण्डो देवाः त्वा,
शुक्रपाः प्र नयन्तु अनाधृष्टा असि ॥12॥

258. सुवीरो वीरान् प्रजनयन् परि इहि,
अभि रायः पोषेण यजमानम्।
सम् जग्मानो दिवा पृथिव्या शुक्रः,
शुक्र शोचिषा निरस्तः शण्डः,
शुक्रस्य अधिष्ठानम् असि ॥13॥

259. अच्छिन्नस्य ते देव सोम सुवीर्यस्य,
रायः पोषस्य ददितारः स्याम।
सा प्रथमा संस्कृतिः विश्व-वारा,
स प्रथमो वरुणो मित्रो अग्निः ॥14॥

260. स प्रथमो बृहस्पतिः,
चिकित्वान् तस्मा इन्द्राय,
सुतम् आ जुहोत स्वाहा।
तृम्पन्तु होत्रा मध्वो याः,
स्विष्टा याः सु-प्रीताः सु-हुता,
यत् स्वाहा अयाट् अग्नीत्॥15॥

261. अयम् वेनः चोदयत् पृश्नि-गर्भा,
ज्योतिः जरायू रजसो विमाने।
इमम् अपाम् सङ्गमे सूर्यस्य,
शिशुम् न विप्रा मतिभिः रिहन्ति।
उपयाम गृहीतो असि मर्काय त्वा॥16॥

(70) सूक्त 4

262. मनो न येषु हवनेषु तिग्मम्,
विपः शच्या वनुथो द्रवन्ता।
आ यः शर्याभिः तुवि-नृम्णो अस्य,
अश्रीणीत आ-दिशम् गभस्तौ।
एष ते योनिः प्रजाः पाहि अपमृष्टो,
मर्को देवाः त्वा मन्थिपाः,
प्र नयन्तु अनाधृष्टा असि॥17॥

263. सुप्रजाः प्रजाः प्र-जनयन् परि इहि,
अभि रायः पोषेण यजमानम्।
सम् जग्मानो दिवा पृथिव्या,
मन्थी मन्थि-शोचिषा निः अस्तो,
मर्को मन्थिनो अधिष्ठानम् असि॥18॥

264. ये देवासो दिवि एकादश स्थ,
पृथिव्याम् अधि एकादश स्थ।
अप्सु-क्षितो महिना एकादश स्थ,
ते देवासो यज्ञम् इमम् जुषध्वम्॥19॥

265. उपयामगृहीतो असि आग्रयणः असि स्वग्रयणः।
पाहि यज्ञम् पाहि यज्ञपतिम्,
विष्णुः त्वाम् इन्द्रियेण पातु विष्णुम्,
त्वम् पाहि अभि सवनानि पाहि॥20॥

(71) सूक्त 5

266. सोमः पवते सोमः पवते अस्मै,
ब्रह्मणे अस्मै क्षत्राय अस्मै,
सुन्वते यजमानाय पवत इष,
ऊर्ज्जे पवते अद्भ्यः ओषधीभ्यः पवते,
द्यावापृथिवीभ्याम् पवते सु-भूताय,
पवते विश्वेभ्यः त्वा देवेभ्यः,
एष ते योनिः विश्वेभ्यः त्वा देवेभ्यः॥21॥

267. उपयाम गृहीतो असि इन्द्राय त्वा,
बृहत् वते वयस्वते उक्थाव्यम् गृह्णामि।
यत् ते इन्द्र बृहत् वयः,
तस्मै त्वा विष्णवे त्वा,
एष ते योनिः उक्तेभ्यः त्वा,
देवेभ्यः त्वा देवाव्यम् गृह्णामि,
यज्ञस्य आयुषे गृह्णामि ॥22॥

268. मित्रा-वरुणाभ्याम् त्वा देवाव्यम्,
यज्ञस्य आयुषे गृह्णामि,
इन्द्राय त्वा देवाव्यम्,
यज्ञस्य आयुषे गृह्णामि,
इन्द्राग्निभ्याम् त्वा देवाव्यम्,
यज्ञस्य आयुषे गृह्णामि,
इन्द्रावरुणाभ्याम् त्वा देवाव्यम्,
यज्ञस्य आयुषे गृह्णामि,
इन्द्राबृहस्पतिभ्याम् त्वा देवाव्यम्,
यज्ञस्य आयुषे गृह्णामि,
इन्द्राविष्णुभ्याम् त्वा देवाव्यम्,
यज्ञस्य आयुषे गृह्णामि ॥23॥

(72) सूक्त 6

269. मूर्द्धानम् दिवो अरतिम् पृथिव्या,
वैश्वानरम् ऋते आ जातम् अग्निम्।
कविम् सम्राजम् अतिथिम् जनानाम्,
आसन् आ पात्रम् जनयन्त देवाः ॥24॥

270. उपयाम गृहीतो असि,
ध्रुवो असि ध्रुवक्षितिः,
ध्रुवाणाम् ध्रुवतमो,
अच्युतानाम् अच्युतक्षित्तम,
एष ते योनिः वैश्वानराय त्वा।
ध्रुवम् ध्रुवेण मनसा,
वाचा सोमम् अव नयामि।
अथ न इन्द्र इत् विशो,
असपत्नाः समनसः करत् ॥25॥

271. यः ते द्रप्स स्कन्दति,
यः ते अंशुः ग्रावच्युतो,
धिषणयोः उपस्थात्।
अध्वर्य्योः वा परि वा,
यः पवित्रात् तम् ते जुहोमि,
मनसा वषट्कृतम् स्वाहा,
देवानाम् उत् क्रमणम् असि ॥26॥

272. प्राणाय मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व,
वि आनाय मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व,
उत् आनाय मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व,
वाचे मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व,
क्रतूदक्षाभ्याम् मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व,
श्रोत्राय मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व,
चक्षुर्भ्याम् मे वर्चोदसौ वर्चसे पवेथाम् ॥27॥

273. आत्मने मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व,
ओजसे मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व,
आयुषे मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व,
विश्वाभ्यो मे प्र-जाभ्यो,
वर्चोदसौ वर्चसे पवेथाम् ॥28॥

(73) सूक्त 7

274. को असि कतमो असि,
कस्य असि को नाम असि।
यस्य ते नाम अमन्महि,
यम् त्वा सोमेन अतीतृपाम्।
भूः भुवः स्वः सुप्रजाः,
प्रजाभिः स्याम् सुवीरो,
वीरैः सुपोषः पोषैः ॥29॥

275. उपयाम गृहीतो असि मधवे त्वा,
उपयाम गृहीतो असि माधवाय त्वा,
उपयाम गृहीतो असि शुक्राय त्वा,
उपयाम गृहीतो असि शुचये त्वा,
उपयाम गृहीतो असि नभसे त्वा,
उपयाम गृहीतो असि नभस्याय त्वा,
उपयाम गृहीतो असि इषे त्वा,
उपयाम गृहीतो असि ऊर्ज्जे त्वा,
उपयाम गृहीतो असि सहसे त्वा,
उपयाम गहीतो असि सहस्याय त्वा,
उपयाम गृहीतो असि तपसे त्वा,
उपयामगृहीतो असि तपस्याय त्वा,
उपयाम गृहीतो असि अंहसः पतये त्वा ॥30॥

(74) सूक्त 8

276. इन्द्राग्नी आ गतम् सुतम्,
गीर्भिः नभो वरेण्यम्।
अस्य पातम् धिया इषिता।
उपयाम गृहीतो असि इन्द्राग्निभ्याम् त्वा,
एष ते योनिः इन्द्राग्निभ्याम् त्वा ॥31॥

277. आ घा ये अग्निम् इन्धते,
स्तृणन्ति बर्हिः आनुषक्।
येषाम् इन्द्रो युवा सखा।
उपयाम गृहीतो असि अग्नीन्द्राभ्याम् त्वा,
एष ते योनिः अग्नीन्द्राभ्याम् त्वा ॥32॥

278. ओमासः चर्षणी-धृतो,
विश्वे देवास आ गत।
दाश्वांसो दाशुषः सुतम्।
उपयाम गृहीतो असि, विश्वेभ्यः त्वा देवेभ्य,
एष ते योनिः विश्वेभ्यः त्वा देवेभ्यः ॥33॥

279. विश्वे देवास आ गत,
शृणुता म इमम् हवम्।
आ इदम् बर्हिः नि सीदत।
उपयाम गृहीतो असि,
विश्वेभ्यः त्वा देवेभ्य,
एष ते योनिः विश्वेभ्यः त्वा देवेभ्यः ॥34॥

(75) सूक्त 9

280. इन्द्र मरुत्व इह पाहि सोमम्,
यथा शार्याते अपिबः सुतस्य।
तव प्रणीती तव शूर शर्म्मन्,
आ विवासन्ति कवयः सुयज्ञाः।
उपयाम गृहीतो असि,
इन्द्राय त्वा मरुत्वत,
एष ते योनिः इन्द्राय त्वा मरुत्वते॥35॥

281. मरुत्वन्तम् वृषभम् वावृधानम्
अकवारिम् दिव्यम् शासम् इन्द्रम्।
विश्वा-साहम् अवसे नूतनाय,
उग्रम् सहो-दाम् इह तम् हुवेम।
उपयाम गृहीतो असि,
इन्द्राय त्वा मरुत्वत,
एष ते योनिः इन्द्राय त्वा मरुत्वते।
उपयाम गृहीतो असि, मरुताम् त्वा ओजसे॥36॥

282. सजोषा इन्द्र स-गणो मरुद्भिः,
सोमम् पिब वृत्र-हा शूर विद्वान्।
जहि शत्रून् अप मृधो नुदस्व,
अथ अभयम् कृणुहि विश्वतो नः।
उपयाम गृहीतो असि, इन्द्राय त्वा मरुत्वत,
एष ते योनिः इन्द्राय मरुत्वते॥37॥

283. मरुत्वान् इन्द्र वृषभो रणाय,
पिबा सोमम् अनु स्वधम् मदाय।
आ सिञ्चस्व जठरे मध्व ऊर्मिम्,
त्वम् राजा असि प्रति-पत् सुतानाम्।
उपयाम गृहीतो असि, इन्द्राय त्वा मरुत्वत,
एष ते योनिः इन्द्राय त्वा मरुत्वते॥38॥

284. महान् इन्द्रो नृवत् आ चर्षणिप्रा,
उत द्विबर्हो अमिनः सहोभिः।
अस्मद्यक् वावृधे वीर्याय उरुः,
पृथुः सुकृतः कर्तृभिः भूत्।
उपयाम गृहीतो असि महेन्द्राय त्वा,
एष ते योनिः महेन्द्राय त्वा ॥39॥

(76) सूक्त 10

285. महान् इन्द्रो य ओजसा,
पर्जन्यो वृष्टिमाँ इव।
स्तोमैः वत्सस्य वावृधे।
उपयाम गृहीतो असि महेन्द्राय त्वा,
एष ते योनिः महेन्द्राय त्वा ॥40॥

286. उत् उ त्यम् जात वेदसम्,
देवम् वहन्ति केतवः।
दृशे विश्वाय सूर्यम् ॥41॥

287. चित्रम् देवानाम् उत् अगात् अनीकम्,
चक्षुः मित्रस्य वरुणस्य अग्नेः।
आ अप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षम्,
सूर्य आत्मा जगतः तस्थुषः च ॥42॥

288. अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्,
विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोधि अस्मत् जुहुराणम् एनो,
भूयिष्ठाम् ते नम उक्तिम् विधेम ॥43॥

289. अयम् नो अग्निः वरिवः कृणोतु,
अयम् मृधः पुर एतु प्रभिन्दन्।
अयम् वाजान् जयतु वाजसातौ,
अयम् शत्रून् जयतु जर्हृषाणः ॥44॥

290. रुपेण वो रुपम् अभि आ अगाम्,
तुथो वो विश्ववेदा वि भजतु।
ऋतस्य पथा प्र इत चन्द्रदक्षिणा,
वि स्वः पश्य वि अन्तरिक्षम्, यतस्व सदस्यैः ॥45॥

291. ब्राह्मणम् अद्य विदेयम् पितृमन्तम्,
पैतृमत्यम् ऋषिम्, आर्षेयम् सुधातुदक्षिणम्।
अस्मत् राता देवत्रा गच्छत, प्रदातारम् आ विशत ॥46॥

(77) सूक्त 11

292. अग्नये त्वा मह्यम् वरुणो ददातु,
सो अमृत त्वम् अशीय आयुः दात्र,
एधि मयो मह्यम् प्रति-ग्रहीत्रे,
रुद्राय त्वा मह्यम् वरुणो ददातु,
सो अमृत त्वम् अशीय प्राणो दात्र,
एधि वयो मह्यम् प्रति ग्रहीत्रे,
बृहस्पतये त्वा मह्यम् वरुणो ददातु,
सो अमृत त्वम् अशीय त्वक् दात्र,
एधि मयो मह्यम् प्रति-ग्रहीत्रे,
यमाय त्वा मह्यम् वरुणो ददातु,
सो अमृत त्वम् अशय हयो दात्रे,
एधि वयो मह्यम् प्रति-ग्रहीत्रे ॥ 47 ॥

293. को अदात् कस्मा अदात्,
कामो अदात् कामाय अदात्।
कामो दाता कामः,
प्रतिग्रहीता काम एतत् ते ॥ 48 ॥

इति सप्तमो अध्यायः

ॐ

अथ अष्टमो अध्यायः

(78) सूक्त 1

294. उपयाम गृहीतो असि आदित्येभ्यः त्वा।
विष्ण उरुगाय एष ते सोमः,
तम् रक्षस्व मा त्वा दभन् ॥ 1 ॥

295. कदा चन स्तरीः असि,
न इन्द्र सश्चसि दाशुषे।
उप उप इत् नु मघवन्,
भूय इत् नु ते दानम् देवस्य,
पृच्यत आदित्येभ्यः त्वा ॥ 2 ॥

296. कदा चन प्र युच्छसि,
उभे नि पासि जन्मनी।
तुरीय आदित्य सवनम्,
त इन्द्रियम् आ तस्थौ,
अमृतम् दिवि आदित्येभ्यः त्वा ॥ 3 ॥

297. यज्ञो देवानाम् प्रति एति सुम्नम्,
आदित्या सो भवता मृडयन्तः।
आ वो अर्वाची सु-मतिः,
ववृत्यात् अंहोः चित् या,
वरिवोवित्तरा असत् आदित्येभ्यः त्वा॥4॥

298. विवस्वन् आदित्य एष ते,
सोम-पीथः तस्मिन् मत्स्व।
श्रत् अस्मै नरो वचसे दधातन,
यत् आशीर्दा दम्पती वामम् अश्नुतः।
पुमान् पुत्रो जायते विन्दते वसु,
अधा विश्वाहा अरप एधते गृहे॥5॥

299. वामम् अद्य सवितः वामम् उ श्वो,
दिवे-दिवे वामम् अस्मभ्यम् सावीः।
वामस्य हि क्षयस्य देव भूरेः,
अया धिया वाम-भाजः स्याम॥6॥

(79) सूक्त 2

300. उपयाम गृहीतो असि,
सावित्रो असि चनोधाः,
चनोधा असि चनो मयि धेहि।
जिन्व यज्ञम् जिन्व यज्ञपतिम्,
भगाय देवाय त्वा सवित्रे॥7॥

301. उपयाम गृहीतो असि, सुशर्मा असि,
सुप्रतिष्ठानो बृहदुक्षाय नमः।
विश्वेभ्यः त्वा देवेभ्य,
एष ते योनिः विश्वेभ्यः त्वा देवेभ्यः॥8॥

302. उपयाम गृहीतो असि, बृहस्पति सुतस्य,
देव सोम त इन्दोः इन्द्रियावतः,
पत्नीवतो ग्रहान् ऋध्यासम्।
अहम् परस्तात् अहम् अवस्तात्,
यत् अन्तरिक्षम् तत् उ मे पिता अभूत्।
अहम् सूर्य्यम् उभयतो ददर्श,
अहम् देवानाम् परमम् गुहा यत्॥9॥

303. अग्ना इ पत्नीवन् सजूः,
देवेन त्वष्ट्रा सोमम् पिब स्वाहा।
प्रजापतिः वृषा असि,
रेतो-धा रेतो मयि धेहि,
प्रजापतेः ते वृष्णो,
रेतोधसो रेतोधाम् अशीय॥10॥

304. उपयाम गृहीतो असि, हरिः असि,
हारियोजनो हरिभ्याम् त्वा।
हर्योः धाना स्थ सहसोमा इन्द्राय।11॥

(80) सूक्त 3

305. यः ते अश्वसनिः भक्षो,
यो गोसनिः तस्य ते,
इष्टयजुष स्तुतस्तोमस्य,
शस्तोक्थस्य उपहूतस्य,
उपहूतो भक्षयामि ॥12॥

306. देव-कृतस्य एनसो, अवयजनम् असि,
मनुष्य-कृतस्य एनसो, अव-यजनम् असि,
पितृ-कृतस्य एनसो, अव-यजनम् असि,
आत्म-कृतस्य एनसो, अव-यजनम् असि,
एनसा एनसो अवयजनम् असि।
यत् च अहम् एनो विद्वान्, चकार यत् च अविद्वान्,
तस्य सर्वस्य एनसो, अव-यजनम् असि॥13॥

307. सम् वर्चसा पयसा सम् तनूभिः,
अगन्महि मनसा सम् शिवेन।
त्वष्टा सुदत्रो वि दधातु रायो,
अनु मार्ष्टु तन्वो यत् विलिष्टम्॥14॥

308. सम् इन्द्र णो मनसा नेषि गोभिः,
सम् सूरिभिः मघवन् सम् स्वस्त्या।
सम् ब्रह्मणा देव-कृतम् यत् अस्ति,
सम् देवानाम् सुमतौ यज्ञियानाम् स्वाहा॥15॥

309. सम् वर्चसा पयसा सम् तनूभिः,
अगन्महि मनसा सम् शिवेन।
त्वष्टा सुदत्रो विदधातु रायो,
अनु मार्ष्टु तन्वो यत् विलिष्टम्॥16॥

(81) सूक्त 4

310. धाता रातिः सविता इदम् जुषन्ताम्,
प्रजापतिः निधिपा देवो अग्निः।
त्वष्टा विष्णुः प्रजया सम् रराणा,
यजमानाय द्रविणम् दधात स्वाहा॥17॥

311. सुगा वो देवाः सदना अकर्म य,
आजग्म इदम् सवनम् जुषाणाः।
भरमाणा वहमाना हवींषि,
अस्मे धत्त वसवो वसूनि स्वाहा॥18॥

312. यान् आ अवह उशतो देव देवान्,
तान् प्र ईरय स्वे अग्ने सधस्थे।
जक्षिवांस पपिवांस च विश्वे असुम्,
घर्म्मम् स्वः आ तिष्ठत अनु स्वाहा॥19॥

313. वयम् हि त्वा प्रयति यज्ञे अस्मिन्,
अग्ने होतारम् अवृणीमहि इह।
ऋधक् अया ऋधक् उत अशमिष्ठाः,
प्रजानन् यज्ञम् उप याहि विद्वान् स्वाहा॥20॥

314. देवा गातुविदो,
गातुम् वित्वा गातुम् इत।
मनसस्पत इमम् देव,
यज्ञम् स्वाहा वाते धाः ॥21॥

315. यज्ञ यज्ञम् गच्छ, यज्ञपतिम् गच्छ,
स्वाम् योनिम् गच्छ स्वाहा।
एष ते यज्ञो यज्ञपते,
सहसूक्तवाकः सर्ववीरः,
तम् जुषस्व स्वाहा ॥22॥

(82) सूक्त 5

316. मा अहिः भूः मा पृदाकुः।
उरुम् हि राजा वरुणः चकार,
सूर्याय पन्थाम् अनु एतवै उ।
अपदे पादा प्रतिधातवे अकः,
उत अपवक्ता हृदयाविधः चित्।
नमो वरुणाय अभिष्ठितो, वरुणस्य पाशः ॥23॥

317. अग्नेः अनीकम् अप आ विवेश,
अपाम् नपात् प्रति रक्षन् असुर्यम्।
दमे-दमे सम् इधम् यक्षि अग्ने,
प्रति ते जिह्वा घृतम् उत् चरण्यत् स्वाहा ॥24॥

318. समुद्रे ते हृदयम् अप्सु,
अन्तः सम् त्वा विशन्तु,
ओषधीः उत आपः।
यज्ञस्य त्वा यज्ञपते,
सूक्तोक्तौ नमोवाके, विधेम यत् स्वाहा ॥25॥

319. देवीः आप एष वो गर्भः,
तम् सु-प्रीतम् सु-भृतम् बिभृत।
देव सोम एष ते लोकः,
तस्मिन् शम् च वक्ष्व परि च वक्ष्व ॥26॥

320. अवभृथ निचुम्पुण, निचेरु असि निचुम्पुणः।
अव देवैः देवकृतम्, एनो अयासिषम् अव,
मर्त्यैः मर्त्यकृतम् पुरुराव्णो देव रिषः पाहि।
देवानाम् समित् असि ॥27॥

321. एजतु दशमास्यो,
गर्भो जरायुणा सह।
यथा अयम् वायुः एजति,
यथा समुद्र एजति।
एव अयम् दशमास्यो,
अस्त्रत् जरायुणा सह ॥28॥

(83) सूक्त 6

322. यस्यै ते यज्ञियो गर्भो,
यस्यै योनिः हिरण्ययी।
अङ्गानि अह्रुता यस्य,
तम् मात्रा सम् अजीगमम् स्वाहा ॥29॥

323. पुरुदस्मो विषुरूप इन्दुः,
अन्तः महिमानम् आनञ्ज धीरः।
एकपदीम् द्विपदीम् त्रिपदीम् चतुष्पदीम्,
अष्टापदीम् भुवना अनु प्रथन्ताम् स्वाहा ॥30॥

324. मरुतो यस्य हि क्षये,
पाथ दिवो विमहसः।
स सुगोपातमो जनः ॥31॥

325. मही द्यौः पृथिवी च न,
इमम् यज्ञम् मिमिक्षताम्।
पिपृताम् नो भरीमभिः ॥32॥

(84) सूक्त 7

326. आ तिष्ठ वृत्र-हन् रथम्,
युक्ता ते ब्रह्मणा हरी।
अर्वाचीनम् सु ते मनो,
ग्रावा कृणोतु वग्नुना।
उपयाम-गृहीतो असि, इन्द्राय त्वा षोडशिने,
एष ते योनिः इन्द्राय त्वा षोडशिने ॥33॥

327. युक्ष्व आ हि केशिना, हरी वृषणा कक्ष्यप्रा।
अथा न इन्द्र सोमपा, गिराम् उप-श्रुतिम् चर।
उपयाम गृहीतो असि, इन्द्राय त्वा षोडशिने,
एष ते योनिः इन्द्राय त्वा षोडशिने ॥34॥

328. इन्द्रम् इत् हरी वहतो, अप्रतिधृष्ट-शवसम्।
ऋषीणाम् च स्तुतीः, उप यज्ञम् च मानुषाणाम्।
उपयाम गृहीतो असि, इन्द्राय त्वा षोडशिन,
एष ते योनिः इन्द्राय त्वा षोडशिने ॥35॥

329. यस्मात् न जातः परो अन्यो अस्ति,
य आ-विवेश भुवनानि विश्वा।
प्रजापतिः प्रजया संरराणः,
त्रीणि ज्योतींषि सचते स षोडशी ॥36॥

(85) सूक्त 8

330. इन्द्रः च सम्राट् वरुणः च राजा,
तौ ते भक्षम् चक्रतुः अग्र एतम्।
तयोः अहम् अनु भक्षम् भक्षयामि,
वाक् देवी जुषाणा सोमस्य,
तृप्यतु सह प्राणेन स्वाहा॥37॥

331. अग्ने पवस्व सु-अपा,
अस्मे वर्चः सुवीर्यम्।
दधत् रयिम् मयि पोषम्।
उपयाम गृहीतो असि,
अग्नये त्वा वर्चसे,
एष ते योनिः अग्नये त्वा वर्चसे।
अग्ने वर्चस्विन् वर्चस्वान्,
त्वम् देवेषु असि वर्चस्वान्,
अहम् मनुष्येषु भूयासम्॥38॥

332. उत् तिष्ठन् ओजसा,
सह पीत्वी शिप्रे अवेपयः।
सोमम् इन्द्र चमू सुतम्।
उपयाम गृहीतो असि,
इन्द्राय त्वा ओजस,
एष ते योनिः इन्द्राय त्वा ओजसे।
इन्द्र ओजिष्ठ ओजिष्ठः,
त्वम् देवेषु असि ओजिष्ठो,
अहम् मनुष्येषु भूयासम्॥39॥

333. अदृश्रम् अस्य केतवो,
वि रश्मयो जनान् अनु।
भ्राजन्तो अग्नयो यथा।
उपयाम गृहीतो असि,
सूर्याय त्वा भ्राजाय,
एष ते योनिः सूर्याय त्वा भ्राजाय।
सूर्य भ्राजिष्ठ भ्राजिष्ठः,
त्वम् देवेषु असि भ्राजिष्ठो,
अहम् मनुष्येषु भूयासम्॥40॥

(86) सूक्त 9

334. उत् उ त्यम् जातवेदसम्,
देवम् वहन्ति केतवः।
दृशे विश्वाय सूर्यम्।
उपयाम गृहीतो असि,
सूर्याय त्वा भ्राजाय,
एष ते योनिः सूर्याय त्वा भ्राजाय॥41॥

335. आ जिघ्र कलशम् महि,
आ त्वा विशन्तु इन्दवः।
पुनः ऊर्जा नि वर्त्तस्व,
सा नः सहस्रम् धुक्ष्व,
उरु-धारा पयस्वती,
पुनः मा आ विशतात् रयिः॥42॥

336. इडे रन्ते हव्ये काम्ये,
चन्द्रे ज्योति अदिते,
सरस्वति महि विश्रुति।
एता ते अघ्न्ये नामानि,
देवेभ्यो मा सुकृतम् ब्रूतात्॥43॥

337. वि न इन्द्र मृधो जहि,
नीचा यच्छ पृतन्यतः।
यो अस्मान् अभिदासति,
अधरम् गमया तमः।
उपयाम गृहीतो असि,
इन्द्राय त्वा विमृध,
एष ते योनिः इन्द्राय त्वा विमृधे॥44॥

338.वाचः पतिम् विश्वकर्म्माणम् ऊतये,
मनो-जुवम् वाजे अद्य हुवेम।
स नो विश्वानि हवनानि जोषत्,
विश्व-शम्भूः अवसे साधुकर्मा।
उपयाम-गृहीतो असि इन्द्राय त्वा विश्व-कर्मण,
एष ते योनिः इन्द्राय त्वा विश्वकर्म्मणे॥45॥

339. विश्व-कर्म्मन् हविषा वर्द्धनेन,
त्रातारम् इन्द्रम् अकृणोः अवध्यम्।
तस्मै विशः सम् अनमन्त पूर्वीः,
अयम् उग्रो वि-हव्यो यथा असत्।
उपयाम गृहीतो असि, इन्द्राय त्वा विश्व-कर्म्मण,
एष ते योनिः इन्द्राय त्वा विश्वकर्मणे॥46॥

(87) सूक्त 10

340. उपयाम गृहीतो असि,
अग्नये त्वा गायत्र छन्दसम्,
गृह्णामि इन्द्राय त्वा त्रिष्टुप् छन्दसम्,
गृह्णामि विश्वेभ्यः त्वा, देवेभ्यो जगत् छन्दसम्,
गृह्णामि अनुष्टुप् ते अभिगरः ॥47॥

341. व्रेशीनाम् त्वा पत्मन् आ धूनोमि,
कुकूननानाम् त्वा पत्मन् आ धूनोमि,
भन्दनानाम् त्वा पत्मन् आ धूनोमि,
मदिन् तमानाम् त्वा पत्मन् आ धूनोमि,
मधुन् तमानाम् त्वा पत्मन् आ धूनोमि,
शुक्रम् त्वा शुक्र आ धूनोमि,
अह्नो रुपे सूर्य रश्मिषु ॥48॥

342. ककुभम् रूपम्,
वृषभस्य रोचते बृहत्,
शुक्रः शुक्रस्य पुरो-गाः,
सोमः सोमस्य पुरो-गाः।
यत् ते सोम अदाभ्यम्,
नाम जागृवि तस्मै त्वा,
गृह्णामि तस्मै ते सोम सोमाय स्वाहा ॥49॥

343. उशिक् त्वम् देव सोम अग्नेः,
प्रियम् पाथो अपि इहि,
वशी त्वम् देव सोम इन्द्रस्य,
प्रियम् पाथो अपि इहि,
अस्मत् सखा त्वम् देव,
सोम विश्वेषाम् देवानाम्,
प्रियम् पाथो अपि इहि ॥50॥

(88) सूक्त 11

344. इह रतिः इह रमध्वम्,
इह धृतिः इह स्वधृतिः स्वाहा।
उप-सृजन् धरुणम् मात्रे,
धरुणो मातरम् धयन्।
रायः पोषम् अस्मासु दीधरत् स्वाहा ॥51॥

345. सत्रस्य ऋद्धिः असि अगन्म,
ज्योतिः अमृता अभूम।
दिवम् पृथिव्या अधि आ अरुहाम,
अविदाम देवान् स्वः ज्योतिः ॥52॥

346. युवम् तम् इन्द्रापर्वता,
पुरो-युधा यो नः पृतन्यात्,
अप तन्तम् इत् हतम्,
वज्रेण तन्तम् इत् हतम्।
दूरे चत्ताय छन्त्सत्,
गहनम् यत् इनक्षत्।
अस्माकम् शत्रून् परि शूर,
विश्वतो दर्मा दर्षीष्ट विश्वतः।
भूः भुवः स्वः सुप्रजा प्रजाभिः,
स्याम सुवीरा वीरैः सुपोषाः पोषैः ॥53॥

(89) सूक्त 12

347. परमेष्ठी अभिधीतः,
प्रजापतिः वाचि वि,
आहृतायाम् अन्धो अच्छेतः।
सविता सन्याम् विश्व-कर्मा,
दीक्षायाम् पूषा सोम-क्रयण्याम्।॥54॥

348. इन्द्रः च मरुतः च क्रयाय,
उप उत्थितो असुरः,
पण्यमानो मित्रः क्रीतो,
विष्णुः शिपि-विष्ट ऊरौ,
आसन्नो विष्णुः नरन्धिषः ॥55॥

349. प्रोह्यमाणः सोम आगतो,
वरुण आ-सन्द्याम् आ-सन्नो,
अग्निः आग्नीध्र इन्द्रो हविर्द्धाने,
अथर्वा उप-अवह्रियमाणः ॥56॥

350. विश्वे देवाः अंशुषु,
न्युप्तो विष्णुः आप्रीतपा,
आप्यायमानो यमः सूयमानो,
विष्णुः सम्भ्रियमाणो वायुः पूयमानः,
शुक्रः पूतः शुक्रः क्षीरश्रीः, मन्थी सक्तुश्रीः ॥57॥

351. विश्वे देवा चमसेषु उन्नीत असुः,
होमाय उद्यतो रुद्रो हूयमानो,
वातो अभि आवृत्तो नृचक्षाः प्रति-ख्यातो,
भक्षो भक्ष्यमाणः पितरो नाराशंसाः ॥58॥

(90) सूक्त 13

352. सन्नः सिन्धुः अव-भृथाय उद्यतः,
समुद्रो अभ्यवह्रियमाणः,
सलिलः प्रप्लुतो ययोः,
ओजसा स्कभिता रजांसि,
वीर्येभिः वीर-तमा शविष्ठा।
या पत्येते अप्रति, इता सहोभिः विष्णू,
अगन् वरुणा पूर्वहूतौ ॥59॥

353. देवान् दिवम् अगन् यज्ञः,
ततो मा द्रविणम् अष्टु मनुष्यान्,
अन्तरिक्षम् अगन् यज्ञः,
ततो मा द्रविणम् अष्टु,
पितॄन् पृथिवीम् अगन् यज्ञः,
ततो मा द्रविणम् अष्टु,
यम् कम् च लोकम् अगन् यज्ञः,
ततो मे भद्रम् अभूत्॥60॥

354. चतुः त्रिंशत् तन्तवो ये,
वितत्निरे य इमम्,
यज्ञम् स्वधया ददन्ते।
तेषाम् छिन्नम् सम् उ एतत्,
दधामि स्वाहा घर्मो अपि एतु देवान्॥61॥

355. यज्ञस्य दोहो वि-ततः पुरुत्रा,
सो अष्टधा दिवम् अनु आततान।
स यज्ञ धुक्ष्व महि मे प्रजायाम्,
रायः पोषम् विश्वम् आयुः अशीय स्वाहा॥62॥

356. आ पवस्व हिरण्यवत्,
अश्ववत् सोम वीरवत्।
वाजम् गोमन्तम् आ भर स्वाहा॥63॥

इति अष्टमो अध्यायः

ॐ

अथ नवमो अध्यायः

(91) सूक्त 1

357. देव सवितः प्र सुव यज्ञम्,
प्र सुव यज्ञ-पतिम् भगाय।
दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतम् नः पुनातु,
वाचस्पतिः वाजम् नः स्वदतु स्वाहा॥1॥

358. ध्रुवसदम् त्वा नृसदम्, मनः सदम्,
उपयाम गृहीतो असि इन्द्राय त्वा जुष्टम् गृह्णामि,
एष ते योनिः इन्द्राय त्वा जुष्टतमम्।
अप्सुसदम् त्वा घृतसदम्, व्योमसदम्,
उपयाम गृहीतो असि इन्द्राय त्वा जुष्टम् गृह्णामि,
एष ते योनिः इन्द्राय त्वा जुष्टमम्।
पृथिविसदम् त्वा अन्तरिक्षसदम्,
दिविसदम् देवसदम्, नाकसदम्,
उपयाम गृहीतो असि इन्द्राय त्वा जुष्टम् गृह्णामि
एष ते योनिः, इन्द्राय त्वा जुष्टतमम्॥2॥

359. अपाम् रसम् उत् वयसम्, सूर्ये सन्तम् समाहितम्।
अपाम् रसस्य यो रसः तम्, वो गृह्णामि उत्तमम्,
उपयाम गृहीतो असि इन्द्राय त्वा जुष्टम्,
गृह्णामि एष ते योनिः, इन्द्राय त्वा जुष्टमम्॥3॥

360. ग्रहा ऊर्जा अहुतयो, व्यन्तो विप्राय मतिम्।
तेषाम् विशिप्रियाणाम् वो अहम्,
इषम् ऊर्जम् सम् अग्रभम्,
उपयाम गृहीतो, असि इन्द्राय त्वा जुष्टम्,
गृह्णामि एष ते योनिः, इन्द्राय त्वा जुष्टतमम्।
सम्पृचौ स्थः सम् मा भद्रेण पृङ्कम्,
विपृचौ स्थो वि मा पाप्मना पृङ्कम्॥4॥

(92) सूक्त 2

361. इन्द्रस्य वज्रो असि वाजसाः,
त्वया अयम् वाजम् सेत्।
वाजस्य नु प्रसवे मातरम् महीम्,
अदितिम् नाम वचसा करामहे।
यस्याम् इदम् विश्वम् भुवनम् आविवेश,
तस्याम् नो देवः सविता धर्म साविषत्॥5॥

362. अप्सु अन्तः अमृतम् अप्सु भेषजम् अपाम्,
उत प्रशस्तिषु अश्वा भवत वाजिनः।
देवीः आपो यो व ऊर्मिः प्रतूर्तिः,
ककुन्मान् वाजसाः तेन अयम् वाजम् सेत्॥6॥

363. वातो वा मनो वा,
गन्धर्वाः सप्तविंशतिः।
ते अग्रे अश्वरम् अयुञ्जन्,
ते अस्मिन् जवम् आ अदधुः॥7॥

364. वातरंहा भव वाजिन् युज्यमान,
इन्द्रस्येव दक्षिणः श्रिया एधि।
युञ्जन्तु त्वा मरुतो विश्व-वेदस,
आ ते त्वष्टा पत्सु जवम् दधातु॥8॥

365. जवो यः ते वाजिन् निहितो गुहा,
यः श्येने परीत्तो अचरत् च वाते।
तेन नो वाजिन् बलवान्,
बलेन वाजजित् च भव,
समने च पारयिष्णुः।
वाजिनो वाजजितो वाजम् सरिष्यन्तो,
बृहस्पतेः भागम् अव जिघ्रत॥9॥

366. देवस्य अहम् सवितुः सवे,
सत्यसवसो बृहस्पतेः,
उत्तमम् नाकम् रुहेयम्।
देवस्य अहम् सवितुः सवे,
सत्यसवस इन्द्रस्य,
उत्तमम् नाकम् रुहेयम्।
देवस्य अहम् सवितुः सवे,
सत्यप्रसवसो बृहस्पतेः,
उत्तमम् नाकम् अरुहम्।
देवस्य अहम् सवितुः सवे,
सत्यप्रसवस इन्द्रस्य,
उत्तमम् नाकम् अरुहम्॥10॥

(93) सूक्त 3

367. बृहस्पते वाजम् जय बृहस्पतये वाचम्,
वदत बृहस्पतिम् वाजम् जापयत।
इन्द्र वाजम् जय इन्द्राय वाचम्,
वदत इन्द्रम् वाजम् जापयत॥11॥

368. एषा वः सा सत्या संवाक् अभूत् यया,
बृहस्पतिम् वाजम् अजीजपत अजीजपत,
बृहस्पतिम् वाजम् वनस्पतयो वि मुच्यध्वम्।
एषा वः सा सत्या संवाक् अभूत् यया,
इन्द्रम् वाजम् अजीजपत अजीजपत,
इन्द्रम् वाजम् वनस्पतयो वि मुच्यध्वम्॥12॥

369. देवस्य अहम् सवितुः सवे,
सत्यप्रसवसो बृहस्पतेः,
वाजजितो वाजम् जेषम्।
वाजिनो वाजजितो, अध्वन स्कभ्नुवन्तो,
योजना मिमानाः काष्ठाम् गच्छत॥13॥

370. एष स्य वाजी क्षिपणिम् तुरण्यति,
ग्रीवायाम् बद्धो अपिकक्ष आसनि।
क्रतुम् दधिक्रा अनु सम् सनिष्यदत्,
पथाम् अङ्कासि अनु आपनीफणत्॥14॥

371. उत स्म अस्य द्रवतः तुरण्यतः,
पर्णम् न वेः अनु वाति प्र-गर्द्धिनः।
श्येनस्य इव ध्रजतो अङ्कसम्,
परि दधि-क्राव्णः सह ऊर्जा तरित्रतः॥15॥

(94) सूक्त 4

372. शम् नो भवन्तु वाजिनो,
हवेषु देवताता मितद्रवः स्वर्काः।
जम्भयन्तो अहिम् वृकम् रक्षांसि,
सनेमि अस्मत् युयवन् अमीवाः॥16॥

373. ते नो अर्वन्तो हवनश्रुतो हवम्,
विश्वे शृण्वन्तु वाजिनो मितद्रवः।
सहस्रसाः मेधसाता सनिष्यवो,
महो ये धनम् समिथेषु जभ्रिरे॥17॥

374. वाजेवाजे अवत वाजिनो नो,
धनेषु विप्रा अमृता ऋतज्ञाः।
अस्य मध्वः पिबत मादयध्वम्,
तृप्ता यात पथिभिः देवयानैः ॥18॥

375. आ मा वाजस्य प्रसवो जगम्यात्,
आ इमे द्यावापृथिवी विश्वरुपे।
आ मा गन्ताम् पितरा मातरा च,
आ मा सोमो अमृत-त्वेन गम्यात्।
वाजिनो वाजजितो वाजम् ससृवांसो,
बृहस्पतेः भागम् अव जिघ्रत निमृजानाः ॥19॥

(95) सूक्त 5

376. आपये स्वाहा स्वापये स्वाहा,
अपिजाय स्वाहा क्रतवे स्वाहा,
वसवे स्वाहा अहर्पतये स्वाहा,
अह्ने मुग्धाय स्वाहा,
मुग्धाय वैनंशिनाय स्वाहा,
विनंशिन आन्त्यायनाय स्वाहा,
आन्त्याय भौवनाय स्वाहा,
भुवनस्य पतये स्वाहा,
अधिपतये स्वाहा ॥20॥

377. आयुः यज्ञेन कल्पताम्,
प्राणो यज्ञेन कल्पताम्,
चक्षुः यज्ञेन कल्पताम्,
श्रोत्रम् यज्ञेन कल्पताम्,
पृष्ठम् यज्ञेन कल्पताम्,
यज्ञो यज्ञेन कल्पताम्।
प्रजापतेः प्रजा अभूम,
स्वः देवा अगन्म अमृता अभूम ॥21॥

378. अस्मे वो अस्तु इन्द्रियम्,
अस्मे नृम्णम् उत क्रतुः,
अस्मे वर्चांसि सन्तु वः।
नमो मात्रे पृथिव्यै,
नमो मात्रे पृथिव्या,
इयम् ते राट् यन्ता असि,
यमनो ध्रुवो असि धरुणः।
कृष्यै त्वा क्षेमाय त्वा,
रय्यै त्वा पोषाय त्वा ॥22॥

(96) सूक्त 6

379. वाजस्य इमम् प्रसवः सुषुवे अग्रे,
सोमम् राजानम् ओषधीषु अप्सु।
ता अस्मभ्यम् मधुमतीः भवन्तु,
वयम् राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः।23॥

380. वाजस्य इमाम् प्रसवः शिश्रिये दिवम्,
इमा च विश्वा भुवनानि सम्राट्।
अदित्सन्तम् दापयति प्रजानन्,
स नो रयिम् सर्व वीरम् नि यच्छतु ॥24॥

381. वाजस्य नु प्रसव आ बभूव,
इमा च विश्वा भुवनानि सर्वतः।
सनेमि राजा परि याति विद्वान्,
प्रजाम् पुष्टिम् वर्धयमानो अस्मे ॥25॥

382. सोमम् राजानम् अवसे,
अग्निम् अन्वारभामहे।
आदित्यान् विष्णुम् सूर्य्यम्,
ब्राह्मणम् च बृहस्पतिम् ॥26॥

383. अर्यमणम् बृहस्पतिम्,
इन्द्रम् दानाय चोदय।
वाचम् विष्णुम् सरस्वतीम्,
सवितारम् च वाजिनम् ॥27॥

384. अग्ने अच्छा वद् इह नः,
प्रति नः सुमना भव।
प्र नो यच्छ सहस्रजित्,
त्वम् हि धनदा असि ॥28॥

385. प्र नो यच्छतु अर्य्यमा,
प्र पूषा प्र बृहस्पतिः।
प्र वाक् देवी ददातु नः स्वाहा ॥29॥

386. देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे,
अश्विनोः बाहुभ्याम् पूष्णो हस्ताभ्याम्।
सरस्वत्यै वाचो यन्तुः यन्त्रिये दधामि,
बृहस्पतेः त्वा साम्राज्येन अभि सिञ्चामि असौ ॥30॥

(97) सूक्त 7

387. अग्निः एक अक्षरेण प्राणम्,
उत् अजयत् तम् उत् जेषम्,
अश्विनौ द्वि अक्षरेण द्विपदो मनुष्यान्,
उत् अजयताम् तान् उत् जेषम्,
विष्णुः त्रि अक्षरेण त्रीन् लोकान्,
उत् अजयत् तान् उत् जेषम्,
सोमः चतुरक्षेण चतुष्पदः पशून्,
उत् अजयत् तान् उत् जेषम् ॥31॥

388. पूषा पञ्च अक्षरेण पञ्च दिश,
उत् अजयत् ता जेषम्,
सविता षड् अक्षरेण षड् ऋतून्,
उत् अजयत् तान् उत् जेषम्,
मरुतः सप्त अक्षरेण सप्त ग्राम्यान् पशून्,
उत् अजयन् तान् उत् जेषम्,
बृहस्पतिः अष्ट अक्षरेण गायत्रीम्,
उत् अजयत् ताम् उत् जेषम्॥32॥

389. मित्रो नव अक्षरेण त्रिवृतम् स्तोमम्,
उत् अजयत् तम् उत् जेषम्
वरुणो दश अक्षरेण विराजम्
उत् अजयत् ताम् उत् जेषम्
इन्द्र एकादश अक्षरेण त्रिष्टुभम्,
उत् अजयत् ताम् उत् जेषम्,
विश्वे देवा द्वादश अक्षरेण जगतीम्,
उत् अजयन् ताम् उत् जेषम्॥33॥

390. वसवः त्रयोदश अक्षरेण त्रयोदशम् स्तोमम्
उत् अजयन् तम् उत् जेषम्,
रुद्राः चतुर्दश अक्षरेण चतुर्दशम् स्तोमम्,
उत् अजयन् तम् उत् जेषम्।
आदित्याः पञ्चदश अक्षरेण पञ्चदशम् स्तोमम्,
उत् अजयन् तम् उत् जेषम्,
अदितिः षोडश अक्षरेण षोडशम् स्तोमम्,
उत् अजयत् तम् उत् जेषम्,
प्रजापतिः सप्तदश अक्षरेण सप्तदशम् स्तोमम्,
उत् अजयत् तम् उत् जेषम्॥34॥

391. एष ते निः ऋते भागः तम् जुषस्व स्वाहा,
अग्नि नेत्रेभ्यो देवेभ्यः पुरः-सद्भ्यः स्वाहा,
यम नेत्रेभ्यो देवेभ्यः दक्षिणासद्भ्यः स्वाहा,
विश्वदेव नेत्रेभ्यो देवेभ्यः पश्चातसद्भ्यः स्वाहा,
मित्रावरुण नेत्रेभ्यो वा मरुत्,
नेत्रेभ्यो वा देवेभ्य उत्तरासद्भ्यः स्वाहा,
सोम नेत्रेभ्यो देवेभ्य,
उपरिसद्भ्यो दुवस्वद्भ्यः स्वाहा॥35॥

392. ये देवा अग्नि नेत्राः पुरः-सदः तेभ्यः स्वाहा,
ये देवा यमनेत्रा दक्षिणा-सदः तेभ्यः स्वाहा,
ये देवाः विश्वदेव नेत्राः पश्चात् सदः तेभ्यः स्वाहा,
ये देवाः मित्रावरुण नेत्रा वा मरुत्,
नेत्रा वा उत्तरा-सदः तेभ्यः स्वाहा,
ये देवाः सोम नेत्रा,
उपरि-सदो दुवस्वन्तः तेभ्यः स्वाहा ॥36॥

(98) सूक्त 8

393. अग्ने सहस्व पृतना,
अभिमातीः अप अस्य।
दुष्टरः तरन् अरातीः,
वर्चो धा यज्ञवाहसि ॥37॥

394. देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे,
अश्विनोः बाहुभ्याम् पूष्णो हस्ताभ्याम्।
उप अंशोः वीर्येण, जुहोमि हृतम् रक्षः स्वाहा,
रक्षसाम् त्वा वधाय अवधिष्म रक्षो,
अवधिष्म अमुम् असौ हतः ॥38॥

395. सविता त्वा सवानाम् सुवताम्,
अग्निः गृह-पतीनाम् सोमो वनस्पतीनाम्।
बृहस्पतिः वाच इन्द्रो ज्यैष्ठ्याय रुद्रः,
पशुभ्यो मित्रः सत्यो वरुणो धर्म-पतीनाम् ॥39॥

396. इमम् देवा असपत्नम् सुवध्वम्,
महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय,
महते जानराज्याय इन्द्रस्य इन्द्रियाय।
इमम् अमुष्य पत्रम् अमुष्यै,
पुत्रम् अस्यै विश एष वो अमी राजा,
सोमो अस्माकम् ब्राह्मणानाम् राजा ॥40॥

इति नवमो अध्यायः

ॐ

अथ दशमो अध्यायः

(99) सूक्त 1

397. अपो देवा मधुमतीः अगृम्णन्,
ऊर्जस्वती राजस्वः चितानाः।
याभिः मित्रावरुणौ अभि असिञ्चन्,
याभिः इन्द्रम् अनयन् अति अरातीः ॥1॥

398. वृष्ण ऊर्मिः असि राष्ट्रदा,
राष्ट्रम् मे देहि स्वाहा,
वृष्ण ऊर्मिः असि राष्ट्रदा,
राष्ट्रम् अमुष्मै देहि,
वृष-सेनो असि राष्ट्रदा,
राष्ट्रम् मे देहि स्वाहा,
वृष-सेनो असि राष्ट्रदा,
राष्ट्रम् अमुष्मै देहि ॥2॥

399. अर्थेत स्थ राष्ट्रदा,
राष्ट्रम् मे दत्त स्वाहा,
अर्थेत स्थ राष्ट्रदा,
राष्ट्रम् अमुष्मै दत्त,
ओजस्वती स्थ राष्ट्रदा,
राष्ट्रम् मे दत्त स्वाहा,
ओजस्वती स्थ राष्ट्रदा,
राष्ट्रम् अमुष्मै दत्त,
आपः परिवाहिणी स्थ राष्ट्रदा,
राष्ट्रम् मे दत्त स्वाहा,
आपः परिवाहिणी स्थ राष्ट्रदा,
राष्ट्रम् अमुष्मै दत्त,
अपाम् पतिः असि राष्ट्रदा,
राष्ट्रम् मे देहि स्वाहा,
अपाम् पतिः असि राष्ट्रदा,
राष्ट्रम् अमुष्मै देहि,
अपाम् गर्भो असि राष्ट्रदा,
राष्ट्रम् मे देहि स्वाहा,
अपाम् गर्भो असि राष्ट्रदा,
राष्ट्रम् अमुष्मै देहि ॥3॥

400. सूर्य्यत्वचस स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रम् मे दत्त स्वाहा,
सूर्य्यत्वचस स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रम् अमुष्मै दत्त,
सूर्य्यवर्चस स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रम् मे दत्त स्वाहा,
सूर्य्यवर्चस स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रम् अमुष्मै मे दत्त,
मान्दा स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रम् मे दत्त स्वाहा,
मान्दा स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रम् अमुष्मै दत्त,
व्रजक्षित स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रम् मे दत्त स्वाहा,
व्रज-क्षित स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रम् अमुष्मै दत्त,
वाशा स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रम् मे दत्त स्वाहा,
वाशा स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रम् अमुष्मै दत्त,
शविष्ठा स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रम् मे दत्त स्वाहा,
शविष्ठा स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रम् अमुष्मै दत्त,
शक्वरी स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रम् मे दत्त स्वाहा,
शक्वरी स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रम् अमुष्मै दत्त,
जनभृत स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रम् मे दत्त स्वाहा,
जनभृतः स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रम् अमुष्मै दत्त,
विश्वभृत स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रम् मे दत्त स्वाहा,
विश्वभृत स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रम् अमुष्मै दत्त।
आप स्वराज स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रम् अमुष्मै दत्त।
मधुमतीः मधुमतीभिः पृच्यन्ताम्,
महि क्षत्रम् क्षत्रियाय वन्वाना,
अनाधृष्टाः सीदत सह ओजसो,
महि क्षत्रम् क्षत्रियाय दधतीः ॥4॥

(100) सूक्त 2

401. सोमस्य त्विषिः असि,
तव इव मे त्विषिः भूयात्।
अग्नये स्वाहा सोमाय स्वाहा,
सवित्रे स्वाहा सरस्वत्यै स्वाहा,
पूष्णे स्वाहा बृहस्पतये स्वाहा,
इन्द्राय स्वाहा घोषाय स्वाहा,
श्लोकाय स्वाहा अंशाय स्वाहा,
भगाय स्वाहा अर्य्यम्णे स्वाहा ॥5॥

402. पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ,
सवितुः वः प्रसव,
उत् पुनामि अच्छिद्रेण,
पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः।
अनिभृष्टम् असि वाचो बन्धुः तपोजाः,
सोमस्य दात्रम् असि स्वाहा राजस्वः ॥6॥

403. सध-मादो द्युम्निनीः आप एता,
अनाधृष्टा अपस्यो वसानाः।
परस्त्यासु चक्रे वरुणः सधस्थम्,
अपाम् शिशुः मातृतमासु अन्तः ॥7॥

404. क्षत्रस्य उल्बम् असि, क्षत्रस्य जरायु असि,
क्षत्रस्य योनिः असि, क्षत्रस्य नाभिः असि,
इन्द्रस्य वार्त्रघ्नम् असि,
मित्रस्य असि वरुणस्य असि,
त्वया अयम् वृत्रम् वधेत्।
दृवा असि रुजा असि क्षुमा असि,
पात एनम् प्राञ्चम्, पात एनम् प्रत्यञ्चम्,
पात एनम् तिर्यञ्चम् दिग्भ्यः पात॥8॥

405. आविः मर्या आवित्तो,
अग्निः गृहपतिः आवित्त,
इन्द्रो वृद्धश्रवा आवित्तौ,
मित्रावरुणौ धृतव्रतौ आवित्तः,
पूषा विश्ववेदा आवित्ते,
द्यावापृथिवी विश्वशम्भुवौ,
आवित्ता अदितिः उरुशर्मा॥9॥

(101) सूक्त 3

406. अवेष्टा दन्दशूकाः प्राचीम्,
आ रोह गायत्री त्वा अवतु,
रथन्तरम् साम त्रिवृत् स्तोमो,
वसन्त ऋतः ब्रह्म द्रविणम्॥10॥

407. दक्षिणाम् आ रोह त्रिष्टुम् त्वा,
अवतु बृहत् साम पञ्चदश स्तोमो,
ग्रीष्म ऋतुः क्षत्रम् द्रविणम्॥11॥

408. प्रतीचीम् आ रोह जगती,
त्वा अवतु वैरूपम्,
साम सप्तदश स्तोमो,
वर्षा ऋतुः विड् द्रविणम्॥12॥

409. उदीचीम् आ रोह अनुष्टुप्
त्वा अवतु वैराजम्,
साम एकविंश स्तोमः,
शरत् ऋतुः फलम् द्रविणम्॥13॥

410. ऊर्ध्वाम् आ रोह पङ्किः त्वा अवतु,
शाक्वर-रैवते सामनी त्रिणाव-त्रयस्त्रिशौ
स्तोमौ हेमन्त-शिशिरौ ऋतू,
वर्चो द्रविणम् प्रति अस्तम् नमुचेः शिर॥14॥

411. सोमस्य त्विषिः असि,
तव इव मे त्विषिः भूयात्।
मृत्योः पाहि ओजो असि,
सहो असि अमृतम् असि॥15॥

(102) सूक्त 4

412. हिरण्यरूपा उषसो विरोक
उभौ इन्द्रा उत् इथः सूर्यः च।
आ रोहतम् वरुण मित्र गर्तम्,
ततः चाक्षाथाम् अदितिम् दितिम्,
च मित्रो असि वरुणो असि ॥16॥

413. सोमस्य त्वा द्युम्नेन अभि,
सिञ्चामि अग्नेः भ्राजसा,
सूर्यस्य वर्चसा इन्द्रस्य इन्द्रियेण।
क्षत्राणाम् क्षत्रपतिः,
एधि अति दिद्यून् पाहि ॥17॥

414. इमम् देवा असपत्नम् सुवध्वम्,
महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय,
महते जानराज्याय इन्द्रस्य इन्द्रियाय।
इमम् अमुष्य पुत्रम् अमुष्यै,
पुत्रम् अस्यै विश एष वो अमी राजा,
सोमो अस्माकम् ब्राह्मणानाम् राजा ॥18॥

415. प्र पर्वतस्य वृषभस्य पृष्ठात्,
नावः चरन्ति स्वसिच इयानाः,
ता आ अववृत्रन् अधराक् उदक्ता,
अहिम् बुध्न्यम् अनु रीयमाणाः।
विष्णोः विक्रमणम् असि,
विष्णोः विक्रान्तम् असि,
विष्णोः क्रान्तम् असि ॥19॥

416. प्रजापते न त्वत् एतानि अन्यो,
विश्वा रूपाणि परि ता बभूव।
यत्कामाः ते जुहुमः तत् नो,
अस्तु अयम् अमुष्य पिता असौ,
अस्य पिता वयम् स्याम,
पतयो रयीणाम् स्वाहा।
रुद्र यत् ते क्रिवि परम् नाम तस्मिन्,
हुतम् असि अमेष्टम् असि स्वाहा ॥20॥

417. इन्द्रस्य वज्रो असि मित्रावरुणयोः,
त्वा प्रशास्त्रोः प्र-शिषा युनज्मि।
अव्यथायै त्वा स्वधायै त्वा,
अरिष्टो अर्जुनो मरुताम्,
प्र-सवेन जय आपाम,
मनसा सम् इन्द्रियेण ॥21॥

(103) सूक्त 5

418. मा त इन्द्र ते वयम् तुराषाट्,
अयुक्तासो अब्रह्मता वि दसाम।
तिष्ठ रथम् अधि यम् वज्रहस्त,
आ रश्मीन् देव यमसे स्वश्वान् ॥22॥

419. अग्नये गृह-पतये स्वाहा,
सोमाय वनस्पतये स्वाहा,
मरुताम् ओजसे स्वाहा,
इन्द्रस्य इन्द्रियाय स्वाहा।
पृथिवि मातः मा मा हिंसीः मो अहम् त्वाम् ॥23॥

420. हंसः शुचिषत् वसुः अन्तरिक्षसद्,
होता वेदिषत् अतिथिः दुरोणसत्।
नृषत् वरसत् ऋतसत् व्योमसत्,
अब्जा गोजा ऋतजा, अद्रिजा ऋतम् बृहत् ॥24॥

(104) सूक्त 6

421. इयत् असि आयुः असि आयुः मयि धेहि,
युङ् असि वर्चो असि वर्चो मयि धेहि,
ऊर्क असि ऊर्जम् मयि धेहि।
इन्द्रस्य वाम् वीर्यकृतो,
बाहू अभि उपावहरामि ॥25॥

422. स्योना असि सुषदा असि,
क्षत्रस्य योनिः असि।
स्योनाम् आ सीद सुषदाम् आ सीद,
क्षत्रस्य योनिम् आ सीद ॥26॥

423. नि षसाद धृतव्रतो,
वरुणः पस्त्यासु आ।
साम्राज्याय सुक्रतुः ॥27॥

424. अभिभूः असि एताः ते पञ्च दिशः,
कल्पन्ताम् ब्रह्मन् त्वम् ब्रह्मा असि,
सविता असि सत्यप्रसवो वरुणो असि,
सत्यौजा इन्द्रो असि, विशौजा रुद्रो असि सुशेवः।
बहुकार श्रेयस्कर भूयस्कर,
इन्द्रस्य वजो असि तेन मे रध्य ॥28॥

425. अग्निः पृथुः धर्मणः पतिः जुषाणो,
अग्निः पृथुः धर्मणः पतिः आज्यस्य वेतु स्वाहा,
स्वाहाकृता सूर्यस्य रश्मिभिः
यतध्वम् सजातानाम् मध्यमेष्ठ्याय ॥29॥

(105) सूक्त 7

426. सवित्रा प्र-सवित्रा सरस्वत्या,
वाचा त्वष्ट्रा रुपैः पूष्णा पशुभिः,
इन्द्रेण अस्मे बृहस्पतिना ब्रह्मणा,
वरुणेन ओजसा अग्निना तेजसा,
सोमेन राज्ञा विष्णुना दशम्या,
देवतया प्र-सूतः प्र सर्पामि ॥30॥

427. अश्विभ्याम् पच्यस्व,
सरस्वत्यै पच्यस्व,
इन्द्राय सु-त्राम्णे पच्यस्व।
वायुः पूतः पवित्रेण,
प्रत्यङ् सोमो अतिस्रुतः।
इन्द्रस्य युज्यः सखा ॥31॥

428. कुवित् अङ्ग यव-मन्तो यवम् चित्,
यथा दान्ति अनुपूर्वम् वि-यूय।
इह इह एषाम् कृणुहि भोजनानि,
ये बर्हिषो नम-उक्तिम् यजन्ति।
उपयाम गृहीतो असि अश्विभ्याम्,
त्वा सरस्वत्यै त्वा इन्द्राय त्वा सु-त्राम्णे ॥32॥

429. युवम् सुरामम् अश्विना,
नमुचौ आसुरे सचा।
विपिपाना शुभः पती,
इन्द्रम् कर्मसु आवतम् ॥33॥

430. पुत्रम् इव पितरौ अश्विना उभा,
इन्द्र आवथुः काव्यैः दंसनाभिः।
यत् सुरामम् व्यपिबः शचीभिः,
सरस्वती त्वा मघ-वन् अभिष्णक् ॥34॥

इति दशमो अध्यायः

ॐ

अथ एकादशो अध्यायः

(106) सूक्त 1

431. युञ्जानः प्रथमम् मनः,
तत्त्वाय सविता धियः।
अग्नेः ज्योतिः निचाय्य,
पृथिव्या अधि आ अभरत्॥1॥

432. युक्तेन मनसा वयम्,
देवस्य सवितुः सवे।
स्वर्ग्याय शक्त्या॥2॥

433. युक्त्वाय सविता देवान्,
स्वः यतो धिया दिवम्।
बृहत् ज्योतिः करिष्यतः,
सविता प्र सुवाति तान्॥3॥

434. युञ्जते मन उत युञ्जते धियो,
विप्रा विप्रस्य बृहतो विपश्चितः।
वि होत्रा दधे वयुनावित् एक इत्,
मही देवस्य सवितुः परिष्टुतिः॥4॥

435. युजे वाम् ब्रह्म पूर्व्यम् नमोभिः,
वि श्लोक एतुः पथ्येव सूरेः।
शृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्रा,
आ ये धामानि दिव्यानि तस्थुः॥5॥

436. यस्य प्रयाणम् अनु अन्य इत् ययुः,
देवा देवस्य महिमानम् ओजसा।
यः पार्थिवानि वि-ममे स एतशो,
रजांसि देवः सविता महित्वना॥6॥

437. देव सवितः प्र सुव यज्ञम्,
प्र सुव यज्ञपतिम् भगाय।
दिव्यः गन्धर्वः केतपूः, केतम् नः पुनातु,
वाचः पतिः वाचम् नः स्वदतु॥7॥

(107) सूक्त 2

438. इमम् नो देव सवितः,
यज्ञम् प्रणय देव अव्यम्,
सखि-विदम् सत्रा-जितम्,
धन-जितम् स्वः जितम्।
ऋचा स्तोमम् सम् अर्ध्य,
गायत्रेण रथन्तरम् बृहत्,
गायत्र-वर्त्तनि स्वाहा॥8॥

439. देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे,
अश्विनोः बाहुभ्याम् पूष्णो हस्ताभ्याम्।
आ ददे गायत्रेण छन्दसा अङ्गिरस्वत्,
पृथिव्याः सधस्थात् अग्निम् पुरीष्यम् अङ्गिरस्वत्,
आ भर त्रैष्टुभेन छन्दसा अङ्गिरस्वत्॥9॥

440. अभ्रिः असि नारी असि,
त्वया वयम् अग्निम् शकेम,
खनितुम् सधस्थ आ।
जागतेन छन्दसा अङ्गिरस्वत्॥10॥

441. हस्त आधाय सविता,
बिभ्रत् अभ्रिम् हिरण्ययीम्।
अग्नेः ज्योतिः नि-चाय्य,
पृथिव्या अधि आ अभरत्,
आनुष्टुभेन छन्दसा अङ्गिरस्वत्॥11॥

442. प्रतूर्तम् वाजिन् आ द्रव,
वरिष्ठाम् अनु सम्वतम्।
दिवि ते जन्म परमम् अन्तरिक्षे,
तव नाभिः पृथिव्याम् अधि योनिः इत्॥12॥

443. युञ्जाथाम् रासभम् युवम्,
अस्मिन् यामे वृषण्वसू।
अग्निम् भरन्तम् अस्म-युम्॥13॥

444. योगेयोगे तवस्तरम्,
वाजे-वाजे हवामहे।
सखाय इन्द्रम् ऊतये॥14॥

(108) सूक्त 3

445. प्रतूर्वन् आ इहि अव-क्रामन् अशस्ती,
रुद्रस्य गाण-पत्यम् मयोभूः आ इहि।
उरु अन्तरिक्षम् वि इहि स्वस्ति गव्यूतिः,
अभयानि कृण्वन् पूष्णा सयुजा सह॥15॥

446. पृथिव्याः सधस्थात् अग्निम् पुरीष्यम्,
अङ्गिरस्वत् आ भर अग्निम् पुरीष्यम्,
अङ्गिरस्वत् अच्छ इम अग्निम् पुरीष्यम्,
अङ्गनिरस्वत् भरिष्यामः॥16॥

447. अनु अग्निः उषसाम् अग्रम् अख्यत्,
अनु अहानि प्रथमो जात-वेदा।
अनु सूर्यस्य पुरुत्रा च रश्मीन्,
अनु द्यावापृथिवी आ ततन्थ॥17॥

(109) सूक्त 4

448. आगत्य वाजी अध्वानम्,
सर्वा मृधो वि धूनुते।
अग्निम् सधस्थे महति,
चक्षुषा नि चिकीषते॥18॥

449. आक्रम्य वाजिन् पृथिवीम्,
अग्निम् इच्छ रुचा त्वम्।
भूम्या वृत्वाय नो ब्रूहि,
यतः खनेम तम् वयम्॥19॥

450. द्यौः ते पृष्ठम् पृथिवी सधस्थम,
आत्मा अन्तरिक्षम् समुद्रो योनिः।
विख्याय चक्षुषा त्वम्,
अभि तिष्ठ पृतन्यतः॥20॥

451. उत् क्राम महते सौभगाय,
अस्मात् आस्थानात् द्रविणोदा वाजिन्।
वयम् स्याम सु-मतौ पृथिव्या,
अग्निम् खनन्त उपस्थे अस्याः॥21॥

सूक्त 5

452. उत् अक्रमीत् द्रविणोदाः वाजी अर्व,
अकः सु लोकम् सु-कृतम् पृथिव्याम्।
ततः खनेम सुप्रतीकम् अग्निम्,
स्वो रुहाणा अधि नाकम् उत्तमम्॥22॥

453. आ त्वा जिघर्मि मनसा घृतेन,
प्रतिक्षियन्तम् भुवनानि विश्वा।
पृथुम् तिरश्चा वयसा बृहन्तम्,
व्यचिष्ठम् अन्नै रभसम् दृशानम्॥23॥

454. आ विश्वतः प्रत्यञ्चम् जिघर्मि,
अरक्षसा मनसा तत् जुषेत।
मर्यश्रीः स्पृहयद्वर्णो अग्निः न,
अभिमृशे तन्वा जर्भुराणः॥24॥

(110) सूक्त 6

455. परि वाज-पतिः कविः,
अग्निः हव्यानि अक्रमीत्।
दधत् रत्नानि दाशुषे॥25॥

456. परि त्वा अग्ने पुरम् वयम्,
विप्रम् सहस्य धीमहि,
धृषत् वर्णम् दिवे-दिवे,
हन्तारम् भङ्गुर आ वताम्॥26॥

457. त्वम् अग्ने द्युभिः त्वम् आशुशुक्षणिः,
त्वम् अद्भ्यः त्वम् अश्मनः परि।
त्वम् वनेभ्यः त्वम् ओषधीभ्यः,
त्वम् नृणाम् नृपते जायसे शुचिः॥27॥

458. देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे,
अश्विनोः बाहुभ्याम् पूष्णो हस्ताभ्याम्।
पृथिव्या सधस्थात् अग्निम्,
पुरीष्यम् अङ्गिरस्वत् खनामि।
ज्योतिष्मन्तम् त्वा अग्ने सु-प्रतीकम्,
अजस्रेण भानुना दीद्यतम्।
शिवम् प्रजाभ्यः अहिंसन्तम् पृथिव्याः सधस्थात्,
अग्निम् पुरीष्यम् अङ्गिरस्वत् खनामः ॥28॥

(111) सूक्त 7

459. अपाम् पृष्ठम् असि योनिः अग्नेः,
समुद्रम् अभितः पिन्वमानम्।
वर्धमानो महान् आ च पुष्करे,
दिवो मात्रया वरिम्णा ॥29॥

460. शर्म च स्थो वर्म च स्थो,
अच्छिद्रे बहुले उभे।
व्यचस्वती सम् वसाथाम्,
भृतम् अग्निम् पुरीष्यम् ॥30॥

461. सम् वसाथाम् स्वर्विदा,
समीची उरसा त्मना।
अग्निम् अन्तः भरिष्यन्ती,
ज्योतिष्मन्तम् अजस्रम् इत् ॥31॥

462. पुरीष्यो असि विश्वभरा अथर्वा,
त्वा प्रथमो निः अमन्थत् अग्ने।
त्वाम् अग्ने पुष्करात् अधि,
अथर्वा निः अमन्थत।
मूर्ध्नो विश्वस्य वाघतः ॥32॥

(112) सूक्त 8

463. तम् उ त्वा दध्यङ् ऋषिः,
पुत्र ईधे अथर्वणः।
वृत्रहणम् पुरन्दरम् ॥33॥

464. तम् उ त्वा पाथ्यो वृषा,
सम् ईधे दस्युहन्तमम्।
धनञ्जयम् रणे-रणे ॥34॥

465. सीद होतः स्व उ लोके चिकित्वान्,
सादय यज्ञाम् सुकृतस्य योनौ।
देवावीः देवान् हविषा यजासि,
अग्ने बृहत् यजमाने वयो धाः ॥35॥

466. नि होता होतृषदने विदानः,
त्वेषो दीदिवान् असदत् सुदक्षः।
अदब्धव्रतप्रमतिः वसिष्ठः,
सहस्रम्भरः शुचिजिह्वो अग्निः ॥36॥

(113) सूक्त 9

467. सम् सीदस्व महान् असि,
शोचस्व देववीतमः।
विधूमम् अग्ने अरुषम् मियेध्य,
सृज प्रशस्त दर्शतम्॥37॥

468. अपो देवीः उप सृज मधुमतीः,
अयक्ष्माय प्रजाभ्यः।
तासाम् आस्थानात् उत् जिहताम्,
ओषधयः सुपिप्पलाः॥38॥

469. सम् ते वायुः मातरिश्वा दधातु,
उत्तानाया हृदयम् यत् विकस्तम्।
यो देवानाम् चरसि प्राणथेन,
कस्मै देव वषट् अस्तु तुभ्यम्॥39॥

470. सुजातो ज्योतिषा सह शर्म,
वरूथम् आ असदत् स्वः।
वासो अग्ने विश्वरुपम्,
सम् व्ययस्व विभावसो॥40॥

(114) सूक्त 10

471. उत् तिष्ठ स्वध्वर,
अवा नो देव्या धिया।
दृशे च भासा बृहता सुशुक्वनिः,
आ अग्ने याहि सुशस्तिभिः॥41॥

472. ऊर्ध्व उ षु ण ऊतये,
तिष्ठा देवो न सविता।
ऊर्ध्वो वाजस्य सनिता यत,
अञ्जिभिः वाघद्भिः विह्वयामहे॥42॥

473. स जातो गर्भो असि रोदस्योः,
अग्ने चारुः विभृत ओषधीषु।
चित्रः शिशुः परि तमांसि अक्तून्,
प्र मातृभ्यो अधि कनिक्रदत् गाः॥43॥

474. स्थिरो भव वीड्ड अङ्गः,
आशुः भव वाजी अर्वन्।
पृथुः भव सुषदः त्वम्,
अग्नेः पुरीषवाहणः॥44॥

475. शिवो भव प्रजाभ्यो,
मानुषीभ्यः त्वम् अङ्गिरः।
मा द्यावापृथिवी अभि शोचीः,
मा अन्तरिक्षम् मा वनस्पतीन्॥45॥

(115) सूक्त 11

476. प्र एतु वाजी कनिक्रदत्,
नानदत् रासभः पत्वा।
भरन् अग्निम् पुरीष्यम्,
मा पादि आयुषः पुरा।
वृषा अग्निम् वृषणम् भरन्,
अपाम् गर्भम् समुद्रियम्।
अग्ने आ याहि वीतये॥46॥

477. ऋतम् सत्यम् ऋतम् सत्यम् अग्निम्,
पुरीष्यम् अङ्गिरस्वत्ः भरामः।
ओषधयः प्रति मोदध्वम् अग्निम्,
एतम् शिवम् आयन्तम् अभि अत्र युष्माः।
व्यस्यन् विश्वा अनिरा अमीवा,
निषीदन् नो अप दुर्मतिम् जहि॥47॥

478. ओषधयः प्रति गृभ्णीत,
पुष्पवतीः सुपिप्पलाः।
अयम् वो गर्भ ऋत्वियः,
प्रत्नम् सधस्थम् आ असदत्॥48॥

479. वि पाजसा पृथुना शोशुचानो,
बाधस्व द्विषो रक्षसो अमीवाः।
सुशर्मणो बृहतः शर्मणि स्याम्,
अग्नेः अहम् सुहवस्य प्रणीतौ॥49॥

(116) सूक्त 12

480. आपो हि ष्ठा मयोभुवः,
ता न ऊर्जे दधातन।
महे रणाय चक्षसे॥50॥

481. यो वः शिवतमो रसः,
तस्य भाजयत इह नः।
उशतीरिव मातरः॥51॥

482. तस्मा अरम् गमाम,
वो यस्य क्षयाय जिन्वथ।
आपो जनयथा च नः॥52॥

(117) सूक्त 13

483. मित्रः संसृज्य पृथिवीम्,
भूमिम् च ज्योतिषा सह।
सुजातम् जातवेदसम् अयक्ष्माय,
त्वा सम् सृजामि प्रजाभ्यः॥53॥

484. रुद्राः संसृज्य पृथिवीम्,
बृहत् ज्योतिः सम् ईधिरे।
तेषाम् भानुः अजस्त्र इत्,
शुक्रो देवेषु रोचते॥54॥

485. संसृष्टाम् वसुभी रुद्रैः,
धीरैः कर्मण्याम् मृदम्।
हस्ताभ्याम् मृद्वीम् कृत्वा,
सिनीवाली कृणोतु ताम्॥55॥

486. सिनीवाली सुकपर्दा,
सुकुरीरा स्वौपशा।
सा तुभ्यम् अदिते महि,
आ उखाम् दधातु हस्तयोः॥56॥

487. उखाम् कृणोतु शक्त्या,
बाहुभ्याम् अदितिः धिया।
माता पुत्रम् यथा उपस्थे,
सा अग्निम् बिभर्न्तु गर्भे आ।
मखस्य शिरो असि॥57॥

(118) सूक्त 14

488. वसवः त्वा कृण्वन्तु,
गायत्रेण छन्दसा अङ्गिरस्वत्,
ध्रुवा असि पृथिवी असि,
धारया मयि प्रजाम् रायः,
पोषम् गौपत्यम् सुवीर्य्यम्,
सजातान् यजमानाय,
रुद्राः त्वा कृणवन्तु,
त्रैष्टुभेन छन्दसा अङ्गिरस्वत्,
ध्रुवा असि अन्तरिक्षम् असि,
धारय मयि प्रजाम् रायः,
पोषम् गौपत्यम् सुवीर्य्यम्,
सजातान् यजमानाय,
आदित्याः त्वा कृण्वन्तु,
जागतेन छन्दसा अङ्गिरस्वत्।
ध्रुवा असि द्यौः असि,
धारय मयि प्रजाम् रायः,
पोषम् गौपत्यम् सुवीर्य्यम्,
सजातान् यजमानाय।
विश्वे त्वा देवा वैश्वानराः कृण्वन्तु,
आनुष्टुभेन छन्दसा अङ्गिरस्वत्।
ध्रुवा असि दिशो असि,
धारय मयि प्रजाम् रायः,
पोषम् गौपत्यम् सुवीर्य्यम्,
सजातान् यजमानाय॥58॥

489. वअदित्यै रास्ना असि,
अदितिः ते बिलम् गृभ्णातु।
कृत्वाय सा महीम् उखाम्,
मृन्मयीम् योनिम् अग्नये।
पुत्रेभ्यः प्र अयच्छत्,
अदितिः श्रपयान् इति ॥59॥

490. वसवः त्वा धूपयन्तु,
गायत्रेण छन्दसा अङ्गिरस्वत्,
रुद्राः त्वा धूपयन्तु,
त्रैष्टुभेन छन्दसा अङ्गिरस्वत्,
आदित्याः त्वा धूपयन्तु,
जागतेन छन्दसा अङ्गिरस्वत्,
विश्वे त्वा देवा वैश्वानरा धूपयन्तु,
आनुष्टुभेन छन्दसा अङ्गिरस्वत्,
इन्द्रः त्वा धूपयतु,
वरुणः त्वा धूपयतु,
विष्णुः त्वा धूपयतु ॥60॥

491. अदितिः त्वा देवी विश्वदेव्यावती,
पृथिव्याः सधस्थे अङ्गिरस्वत्,
खनतु अवट देवानाम्,
त्वा पत्नीः देवीः विश्वदेव्यावतीः,
पृथिव्याः सधस्थे अङ्गिरस्वत् दधतु उखे।
धिषणाः त्वा देवीः विश्वदेव्यावतीः,
पृथिव्याः सधस्थे अङ्गिरस्वत्,
अभि इन्धताम् उखे वरुत्रीः,
त्वा देवीः विश्वदेव्यावतीः,
पृथिव्याः सधस्थे अङ्गिरस्वत्,
श्रपयन्तु उखे ग्नाः,
त्वा देवीः विश्वदेव्यावतीः,
पृथिव्याः सधस्थे अङ्गिरस्वत्,
पचन्तु उखे जनयः,
त्वा अच्छिन्नपत्रा देवीः विश्वदेव्यावतीः,
पृथिव्याः सधस्थे अङ्गिरस्वत पचन्तु उखे ॥61॥

(119) सूक्त 15

492. मित्रस्य चर्षणीधृतो,
अवो देवस्य सानसि।
द्युम्नम् चित्रश्रवस्तमम् ॥62॥

493. देवः त्वा सविता उत् वपतु सुपाणिः,
स्वङ्गुरिः सुबाहुः उत शक्त्या।
अव्यथमाना पृथिव्याम्,
आशा दिश आ पृण ॥63॥

494. उत्थाय बृहती भव,
उत् उ तिष्ठ ध्रुवा त्वम्।
मित्र एताम् त उखाम् परि,
ददामि अभित्या एषा मा भेदि ॥64॥

495. वसवः त्वा आ छृन्दन्तु,
गायत्रेण छन्दसा अङ्गिरस्वत,
रुद्राः त्वा आ छृन्दन्तु,
त्रैष्टुभेन छन्दसा अङ्गिरस्वत्,
आदित्याः त्वा आ छृन्दन्तु,
जागतेन छन्दसा अङ्गिरस्वत,
विश्वे त्वा देवा वैश्वानराः आ छृन्दन्तु,
आनुष्टुभेन छन्दसा अङ्गिरस्वत् ॥65॥

496. आकूतिम् अग्निम् प्रयुजम् स्वाहा,
मनो मेधाम् अग्निम् प्रयुजम् स्वाहा,
चित्तम् विज्ञातम् अग्निम प्रयुजम् स्वाहा,
वाचो विधृतम् अग्निम् प्रयुजम् स्वाहा,
प्रजापतये मनवे स्वाहा,
अग्नये वैश्वानराय स्वाहा ॥66॥

(120) सूक्त 16

497. विश्वो देवस्य नेतुः,
मर्तो वुरीत सख्यम्।
विश्वो राय इषुध्यति,
द्युम्नम् वृणीत पुष्यसे स्वाहा ॥67॥

498. मा सु भित्था मा सु रिषो,
अम्ब धृष्णु वीरयस्व सु।
अग्निः च इदम् करिष्यथः ॥68॥

499. दृंहस्व देवि पृथिवि स्वस्तये,
आसुरी माया स्वधया कृता असि।
जुष्टम् देवेभ्य इदम् अस्तु हव्यम्,
अरिष्टा त्वम् उत् इहि यज्ञे अस्मिन् ॥69॥

500. द्रु अन्नः सर्पिरासुतिः,
प्रत्नो होता वरेण्यः।
सहसः पुत्रो अद्‌भुतः ॥70॥

501. परस्याः अधि संवतो,
यत्र अहम् अस्मि तान् अव ॥71॥

(121) सूक्त 17

502. परमस्याः परावतो,
रोहिदश्व इह आ गहि।
पुरीष्यः पुरुप्रियो,
अग्ने त्वम् तरा मृधः ॥72॥

503. यत् अग्ने कानि कानि,
चित् आ ते दारुणि दध्मसि।
सर्वम् तत् अस्तु ते घृतम्,
तत् जुषस्व यविष्ठ्य ॥73॥

504. यत् अति उपजिह्विका,
यत् वम्रो अति-सर्पति।
सर्वम् तत् अस्तु ते घृतम्,
तत् जुषस्व यविष्ठ्य ॥74॥

(122) सूक्त 18

505. अहः अहः अप्रयावम् भरन्तो,
अश्वायेव तिष्ठते घासम् अस्मै।
रायः पोषेण सम् इषा मदन्तो,
अग्ने मा ते प्रतिवेशा रिषाम ॥75॥

506. नाभा पृथिव्याः समिधाने अग्नौ,
रायः पोषाय बृहते हवामहे।
इरम् मदम् बृहत् उक्थम् यजत्रम्,
जेतारम् अग्निम् पृतनासु सासहिम् ॥76॥

507. याः सेना अभि इत्वरीः,
आव्याधिनीः उगणा उत।
ये स्तेना ये च तस्कराः तान्,
ते अग्ने अपि दधामि आस्ये ॥77॥

508. दंष्ट्राभ्याम् मलिम्लून्,
जम्भ्यैः तस्करान् उत।
हनुभ्याम् स्तेनान् भगवः तान्,
त्वम् खाद सु-खादितान् ॥78॥

(123) सूक्त 19

509. ये जनेषु मलिम्लव,
स्तेनासः तस्करा वने।
ये कक्षेषु अघायवः,
तान् ते दधामि जम्भयोः ।।79 ।।

510. यो अस्मभ्यम् अरातीयात्,
यः च नो द्वेषते जनः।
निन्दात् यो अस्मान् धिप्सात्,
च सर्वम् तम् भस्मसा कुरु ।।80 ।।

511. सम् शितम् मे ब्रह्म,
सम् शितम् वीर्य्यम् बलम्।
सम् शितम् क्षत्रम् जिष्णु यस्य,
अहम् अस्मि पुरोहितः ।।81 ।।

512. उत् एषाम् बाहू अतिरम्,
उत् वर्चो अथो बलम्।
क्षिणोमि ब्रह्मणा अमित्रान्,
उत् नयामि स्वान् अहम् ।।82 ।।

513. अन्नपते अन्नस्य नो देहि,
अनमीवस्य शुष्मिणः।
प्रप्र दातारम् तारीष ऊर्जम् नो धेहि,
द्विपदे चतुष्पदे ।।83 ।।

इति एकादशो अध्यायः

ॐ

अथ द्वादशो अध्यायः

(124) सूक्त 1

514. दृशानो रुक्म उर्व्या वि अद्यौत्,
दुः मर्षम् आयुः श्रिये रुचानः।
अग्निः अमृतो अभवत् वयोभिः,
यत् एनम् द्यौः अजनयत् सुरेताः ॥1॥

515. नक्तोषासा समनसा विरुपे,
धापयेते शिशुम् एकम् समीची।
द्यावाक्षामा रुक्मो अन्तः वि भाति,
देवा अग्निम् धारयन् द्रविणोदाः ॥2॥

516. विश्वा रुपाणि प्रति मुञ्चते कविः,
प्र असावीत् भद्रम् द्विपदे चतुष्पदे।
वि नाकम् अख्यत् सविता वरेण्यो,
अनु प्रयाणम् उषसो वि राजति ॥3॥

(125) सूक्त 2

517. सुपणो असि गरुत्मान् त्रिवृत् ते शिरो,
गायत्रम् चक्षुः बृहद्रथन्तरे पक्षौ।
स्तोम आत्मा छन्दांसि अङ्गानि यजूंषि नाम।
साम ते तनूः वामदेव्यम्,
यज्ञायज्ञियम् पुच्छम् धिष्ण्याः शफाः।
सुपर्णो असि गरुत्मान्, दिवम् गच्छ स्वः पत ॥4॥

518. विष्णोः क्रमो असि सपत्नहा,
गायत्रम् छन्द आ रोह,
पृथिवीम् अनु वि क्रमस्व,
विष्णोः क्रमो असि अभिमातिहा,
त्रैष्टुभम् छन्द आ रोह,
अन्तरिक्षम् अनु वि क्रमस्व।
विष्णोः क्रमो असि अरातीयतो,
हन्ता जागतम् छन्द आ रोह,
दिवम् अनु वि क्रमस्व,
विष्णोः क्रमो असि शत्रूयतो हन्ता,
आनुष्टुभम् छन्द आ रोह,
दिशो अनु वि क्रमस्व ॥5॥

(126) सूक्त 3

519. अक्रन्दत् अग्नि स्तनयन् इव द्यौः,
क्षामा रेरिहत् वीरुधः समञ्जन सद्यो,
जज्ञानो वि हि ईम् इद्धो अख्यत्,
आ रोदसी भानुना भाति अन्तः ॥6॥

520. अग्ने अभि आवर्तिन् अभि,
मा नि वर्त्तस्व आयुषा,
वर्चसा प्रजया धनेन।
सन्या मेधया रय्या पोषेण॥7॥

521. अग्ने अङ्गिरः शतम् ते सन्तु,
आवृतः सहस्रम् त उपावृतः।
अधा पोषस्य पोषेण पुनः,
नो नष्टम् आ कृधि पुनः,
नो रयिम् आ कृधि कुरु॥8॥

522. पुनः ऊर्जा नि वर्त्तस्व,
पुनः अग्न इषा आयुषा।
पुनः नः पाहि अंहसः॥9॥

523. सह रय्या नि वर्त्तस्व,
अग्ने पिन्वस्व धारया।
विश्व प्स्न्या विश्वतः परि॥10॥

(127) सूक्त 4

524. आ त्वा अहार्षम् अन्तः अभूः,
ध्रुवः तिष्ठ अवि-चाचलिः।
विशः त्वा सर्वा वाञ्छन्तु,
मा त्वत् राष्ट्रम् अधि भ्रशत्॥11॥

525. उत् उत्तमम् वरुण पाशम् अस्मत्,
अव अधमम् वि मध्यमम् श्रथाय।
अथा वयम् आदित्य व्रते तव,
अनागसो अदितये स्याम॥12॥

526. अग्रे बृहन् उषसाम् ऊर्ध्वो अस्थात्,
निर्जगन्वान् तमसो ज्योतिषा आ अगात्।
अग्निः भानुना रुशता स्वङ्ग,
आ जातो विश्वा सद्मानि अप्राः॥13॥

527. हंसः शुचिषत् वसुः अन्तरिक्षसत्,
होता वेदिषत् अतिथिः दुरोणसत्।
नृषत् वरसत् ऋतसत् व्योमसत्,
अब्जा गोजा ऋतजा, अद्रिजा ऋतम् बृहत्॥14॥

528. सीद त्वम् मातुः अस्या उपस्थे,
विश्वानि अग्ने वयुनानि विद्वान्।
मा एनाम् तपसा मा अर्चिषा,
अभि शोचीः अन्तः अस्याम्,
शुक्रज्योतिः वि भाहि॥15॥

(128) सूक्त 5

529. अन्तः अग्ने रुचा त्वम्,
उखायाः सदने स्वे।
तस्याः त्वम् हरसा तपन्,
जातवेदः शिवो भव॥16॥

530. शिवो भूत्वा मह्यम् अग्ने,
अथो सीद शिवः त्वम्।
शिवाः कृत्वा दिशः सर्वाः,
स्वम् योनिम् इह आ असदः॥17॥

531. दिवः परि प्रथमम् जज्ञे अग्निः,
अस्मत् द्वितीयम् परि जात-वेदाः।
तृतीयम् अप्सु नृमणा अजस्त्रम्,
इन्धान एनम् जरते स्वाधीः॥18॥

532. विद्मा ते अग्ने त्रेधा त्रयाणि,
विद्मा ते धाम विभृता पुरुत्रा।
विद्मा ते नाम परमम् गुहा यत्,
विद्मा तम् उत्सम् यत आजगन्थ॥19॥

533. समुद्रे त्वा नृमणा अप्सु अन्तः,
नृचक्षा ईधे दिवो अग्न ऊधन्।
तृतीये त्वा रजसि तस्थिवांसम्,
अपाम् उपस्थे महिषा अवर्धन्॥20॥

(129) सूक्त 6

534. अक्रन्दत् अग्नि स्तनयन्निव द्यौः,
क्षामा रेरिहत् वीरुधः समञ्जन्।
सद्यो जज्ञानो वि हि ईम् इद्धो अख्यत्,
आ रोदसी भानुना भाति अन्तः॥21॥

535. श्रीणाम् उदारो धरुणो रयीणाम्,
मनीषाणाम् प्रार्पणः सोमगोपाः।
वसुः सूनुः सहसो अप्सु राजा,
वि भाति अग्र उषसाम् इधानः॥22॥

536. विश्वस्य केतुः भुवनस्य गर्भ,
आ रोदसी अपृणात् जायमानः।
वीडुम् चित् अद्रिम् अभिनत् परायन्,
जना यत् अग्निम् अयजन्त पञ्च॥23॥

537. उशिक् पावको अरतिः सुमेधा,
मर्त्येषु अग्निः अमृतो नि धायि।
इयर्त्ति धूमम् अरुषम् भरिभ्रत्,
उत् शुक्रेण शोचिषा द्याम् इनक्षन् ॥24॥

538. दृशानो रुक्म उर्व्या वि अद्यौत्,
दुर्मर्षम् आयुः श्रिये रुचानः।
अग्निः अमृतो अभवत् वयोभिः,
यत् एनम् द्यौः अजनयत् सुरेताः ॥25॥

(130) सूक्त 7

539. यः ते अद्य कृणवत् भद्रशोचे,
अपूपम् देव घृतवन्तम् अग्ने।
प्र तम् नय प्रतरम् वस्यो अच्छ,
अभि सुम्नम् देवभक्तम् यविष्ठ ॥26॥

540. आ तम् भज सौश्रवसेषु अग्न,
उक्थ-उक्थ आ भज शस्यमाने।
प्रियः सूर्य्ये प्रियो अग्ना भवाति,
उत् जातेन भिनदत् उत् जनित्वैः ॥27॥

541. त्वाम् अग्ने यजमाना अनु द्यून्,
विश्वा वसु दधिरे वार्याणि।
त्वया सह द्रविणम् इच्छमाना,
व्रजम् गोमन्तम् उशिजो वि वव्रुः ॥28॥

542. अस्तावि अग्नि नराम् सुशेवो,
वैश्वानर ऋषिभिः सोमगोपाः।
अद्वेषे द्यावापृथिवी हुवेम देवा,
धत्त रयिम् अस्मे सुवीरम् ॥29॥

(131) सूक्त 8

543. समिधा अग्निम् दुवस्यत,
घृतैः बोधयत अतिथिम्।
आ अस्मिन् हव्या जुहोतन ॥30॥

544. उत् उ त्वा विश्वे देवा,
अग्ने भरन्तु चित्तिभिः।
स नो भव शिवः त्वम्,
सु-प्रतीको विभा-वसुः ॥31॥

545. प्र इत् अग्ने ज्योतिष्मान् याहि,
शिवेभिः अर्चिभिः त्वम्।
बृहद्भिः भानुभिः भासन्,
आ हिंसीः तन्वा प्रजाः ॥32॥

546. अक्रन्दत् अग्नि स्तनयन्निव द्यौः,
क्षामा रेरिहत् वीरुधः समञ्जन्।
सद्यो जज्ञानो वि हि ईम् इद्धो अख्यत्,
आ रोदसी भानुना भाति अन्तः ॥33॥

547. प्रप्र अयम् अग्निः भरतस्य शृण्वे,
वि यत् सूर्यो न रोचते बृहद्भाः।
अभि यः पूरुम् पृतनासु तस्थौ,
दीदाय दैव्यो अतिथिः शिवो नः ॥34॥

548. आपो देवीः प्रति गृभ्णीत भस्म,
एतत् स्योने कृणुध्वम् सुरभा उ लोके।
तस्मै नमन्ताम् जनयः सुपत्नीः,
मातेव पुत्रम् बिभृत अप्सु एनत् ॥35॥

(132) सूक्त 9

549. अप्सु अग्ने सधिः तव,
स ओषधीः अनु रुध्यसे।
गर्भे सन् जायसे पुनः ॥36॥

550. गर्भो असि ओषधीनाम्,
गर्भो वनस्पतीनाम्।
गर्भो विश्वस्य भूतस्य,
अग्ने गर्भो अपाम् असि ॥37॥

551. प्रसद्य भस्मना योनिम्,
अपः च पृथिवीम् अग्ने।
संसृज्य मातृभिः त्वम्,
ज्योतिष्मान् पुनः आ असदः ॥38॥

552. पुनः आसद्य सदनम्,
अपः च पृथिवीम् अग्ने।
शेषे मातुः यथा उपस्थे,
अन्तः अस्याम् शिवतमः ॥39॥

553. पुनः ऊर्जा नि वर्त्तस्व,
पुनः अग्न इषा आयुषा।
पुनः नः पाहि अंहसः ॥40॥

554. सह रय्या नि वर्त्तस्व,
अग्ने पिन्वस्व धारया।
विश्व-प्स्न्या विश्वतः परि ॥41॥

555. बोधा मे अस्य वचसो यविष्ठ,
मंहिष्ठस्य प्र-भृतस्य स्वधावः।
पीयति त्वो अनु त्वो गृणाति,
वन्दारुः ते तन्वम् वन्दे अग्ने ॥42॥

(133) सूक्त 10

556. स बोधि सूरिः मघवा,
वसु-पते वसु-दावन्।
युयोधि अस्मत् द्वेषांसि,
विश्व-कर्मणे स्वाहा ॥43॥

557. पुनः त्वा आदित्या रुद्रा वसवः,
सम् इन्धताम् पुनः ब्रह्माणो वसुनीथ यज्ञैः।
घृतेन त्वम् तन्वम् वर्धयस्व,
सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः ॥44॥

558. अप इत वि इत वि च सर्पत अतो,
ये अत्र स्थ पुराणा ये च नूतनाः।
अदात् यमो अवसानम् पृथिव्या,
अक्रन् इमम् पितरो लोकम् अस्मै ॥45॥

559. संज्ञानम् असि कामधरणम्,
मयि ते कामधरणम् भूयात्।
अग्नेः भस्म असि अग्नेः पुरीषम् असि,
चित स्थ परिचित ऊर्ध्वचितः श्रयध्वम् ॥46॥

560. अयम् सो अग्निः यस्मिन् सोमम्,
इन्द्रः सुतम् दधे जठरे वावशानः।
सहस्त्रियम् वाजम् अत्यम् न सप्तिम्,
ससवान् सन् स्तूयसे जातवेदः ॥47॥

561. अग्ने यत् ते दिवि वर्चः पृथिव्याम्,
यत् ओषधीषु अप्सु आ यजत्र।
येन अन्तरिक्षम् उरु आ ततन्थ,
त्वेषः स भानुः अर्णवो नृचक्षाः ॥48॥

562. अग्ने दिवो अर्णम् अच्छ जिगासि,
अच्छ देवान् ऊचिषे धिष्ण्या ये।
या रोचने परस्तात् सूर्स्य,
याः च अवस्तात् उप-तिष्ठन्त आपः ॥49॥

(134) सूक्त 11

563. पुरीष्यासो अग्नयः,
प्रावणेभिः सजोषसः।
जुषन्ताम् यज्ञम् अद्रुहो,
अनमीवा इषो महीः ॥50॥

564. इडाम् अग्ने पुरुदंसम् सनिम्,
गोः वाचः शश्वत्तमम् हवमानाय साध।
स्यात् नः सूनुः तनयो विजावा,
अग्ने सा ते सुमतिः भूतु अस्मै ॥51॥

565. अयम् ते योनिः ऋत्वियो,
यतो जातो अरोचथाः।
तम् जानन् अग्न आ रोह,
अथ नो वर्धया रयिम् ॥52॥

566. चित् असि तया देवतया,
अङ्गिरस्वत् ध्रुवा सीद।
परिचित् असि तया देवतया,
अङ्गिरस्वत् ध्रुवा सीद ॥53॥

567. लोकम् पृण छिद्रम् पृण,
अथो सीद ध्रुवा त्वम्।
इन्द्राग्नी त्वा बृहस्पतिः,
अस्मिन् योनौ असीषदन्॥54॥

(135) सूक्त 12

568. ता अस्य सूददोहसः,
सोमम् श्रीणन्ति पृश्नयः।
जन्मन् देवानाम् विश,
त्रिषु आ रोचने दिवः॥55॥

569. इन्द्रम् विश्वा अवीवृधन्,
समुद्रव्यचसम् गिरः।
रथीतमम् रथीनाम्,
वाजानाम् सत्पतिम् पतिम्॥56॥

570. सम् इतम् सम् कल्पेथाम्,
संप्रियौ रोचिष्णू सुमनस्यमानौ।
इषम् ऊर्जम् अभि संवसानौ॥57॥

571. सम् वाम् मनांसि सम् व्रता,
सम् उ चित्तानि आ अकरम्।
अग्ने पुरीष्य अधिपा भव त्वम्,
न इषम् ऊर्जम् यजमानाय धेहि॥58॥

572. अग्ने त्वम् पुरीष्यो,
रयिमान् पुष्टिमान् असि।
शिवाः कृत्वा दिशः सर्वाः,
स्वम् योनिम् इह आ असदः॥59॥

573. भवतम् नः समनसौ,
सचेतसौ अरेपसौ।
मा यज्ञम् हिंसिष्टम् मा यज्ञपतिम्,
जातवेदसौ शिवौ भवतम् अद्य नः॥60॥

(136) सूक्त 13

574. मातेव पुत्रम् पृथिवी पुरीष्यम्,
अग्निम् स्वे योनौ अभाः उखा।
ताम् विश्वैः देवैः ऋतुभिः संविदानः,
प्रजापतिः विश्वकर्मा वि मुञ्चतु॥61॥

575. असुन्वन्तम् अयजमानम् इच्छ,
स्तेनस्य इत्याम् अनु इहि तस्करस्य।
अन्यम् अस्मत् इच्छ सा त इत्या,
नमो देवि निर्ऋते तुभ्यम् अस्तु॥62॥

576. नमः सु ते निर्ऋते तिग्म तेजो,
अयस्मयम् वि चृता बन्धम् एतम्।
यमेन त्वम् यम्या सम् विदाना,
उत् तमे नाके अधि रोहय एनम्॥63॥

577. यस्याः ते घोर आसन् जुहोमि,
एषाम् बन्धानाम् अवसः जनाय।
याम् त्वा जनो भूमिः इति प्रमन्दते,
निः ऋतिम् त्वा अहम् परि वेद विश्वतः॥64॥

578. यम् ते देवी निः ऋतिः आबबन्ध,
पाशम् ग्रीवासु अविचृत्यम्।
तम् ते वि ष्यामि आयुषो न मध्यात्,
अथ एतम् पितुम् अद्धि प्रसूतः।
नमो भूत्यै या इदम् चकार॥65॥

579. निवेशनः सङ्गमनो वसूनाम्,
विश्वा रूपा अभि चष्टे शचीभिः।
देवे इव सविता सत्य-धर्मा,
इन्द्रो न तस्थौ समरे पथीनाम्॥66॥

(137) सूक्त 14

580. सीरा युञ्जन्ति कवयो,
युगा वि तन्वते पृथक्।
धीरा देवेषु सुम्नया॥67॥

581. युनक्त सीरा वि युगा तनुध्वम्,
कृते योनौ वपत इह बीजम्।
गिरा च श्रुष्टिः सभरा असत् नो,
नेदीय इत् सृण्यः पक्वम् इयात्॥68॥

582. शुनम् सु फाला वि कृषन्तु भूमिम्,
शुनम् कीनाशा अभि यन्तु वाहैः।
शुनासीरा हविषा तोशमाना,
सुपिप्पला ओषधीः कर्त्तन अस्मे॥69॥

583. घृतेन सीता मधुना सम् अज्यताम्,
विश्वैः देवैः अनु मता मरुद्भिः।
ऊर्जस्वती पयसा पिन्वमानाः अस्मान्,
अत् सीते पयसा अभि आ ववृत्स्व॥70॥

(138) सूक्त 15

584. लाङ्गलम् पवीरवत्,
सुशेवम् सोमपित्सरु।
तत् उत् वपति गाम् अविम्,
प्रफर्व्यं च पीवरीम् प्रस्थावत् रथवाहणम्॥71॥

585. कामम् कामदुघे धुक्ष्व,
मित्राय वरुणाय च।
इन्द्राय अश्विभ्याम् पूष्णे,
प्रजाभ्य ओषधीभ्यः॥72॥

586. वि मुच् अध्वम् अघ्न्या देवयाना,
अगन्म् तमसः पारम् अस्य।
ज्योतिः अपाम॥73॥

587. सजूः अब्दो अयवो अभिः,
सजूः उषा अरुणीभिः।
सजोषसौ अश्विना दंसो अभिः,
सजूः सूर एतशेन,
सजूः वैश्वानर इडया घृतेन स्वाहा॥74॥

(139) सूक्त 16

588. या ओषधीः पूर्वा जाता,
देवेभ्यः त्रियुगम् पुरा।
मनै नु बभ्रूणाम् अहम्,
शतम् धामानि सप्त च॥75॥

589. शतम् वो अम्ब धामानि,
सहस्रम् उत वो रुहः।
अधा शतक्रत्वो यूयम्,
इमम् मे अगदम् कृत॥76॥

590. ओषधीः प्रति मोदध्वम्,
पुष्पवतीः प्र-सूवरीः।
अश्वा इव सजित्वरी,
वीरुधः पारयिष्ण्वः॥77॥

591. ओषधीः इति मातरः,
तत् वो देवीः उप ब्रुव,
सनेयम् अश्वम् गाम् वास,
आत्मानम् तव पूरुष॥78॥

(140) सूक्त 17

592. अश्वत्थे वो निषदनम्,
पर्णे वो वसतिः कृता।
गोभाज इत् किल असथ,
यत् सनवथ पूरुषम्॥79॥

593. यत्र ओषधीः सम् अग्मत,
राजानः समितौ इव।
विप्रः स उच्यते भिषक्,
रक्षोहा अमीवचातनः॥80॥

594. अश्वा-वतीम् सोमा-वतीम्,
ऊर्जयन्तीम् उत् ओजसम्।
आ अवित्सि सर्वा ओषधीः,
अस्मा अरिष्ट-तातये॥81॥

595. उत् शुष्मा ओषधीनाम्,
गावो गोष्ठात् इव ईरते।
धनम् सनिष्यन्तीनाम्,
आत्मानम् तव पूरुष॥82॥

596. इष्कृतिः नाम वो माता,
अथो यूयम् स्थ निष्कृतीः।
सीराः पतत्रिणीः स्थन,
यत् आमयति निः कृथ॥83॥

597. अति विश्वाः परिष्ठाः,
स्तेन इव व्रजम् अक्रमुः।
ओषधीः प्र अचुच्यवुः,
यत् किम् च तन्वो रपः॥84॥

598. यत् इमा वाजयन् अहम्,
ओषधीः हस्ते आदधे।
आत्मा यक्ष्मस्य नश्यति,
पुरा जीवगृभो यथा॥85॥

(141) सूक्त 18

599. यस्य ओषधीः प्र-सर्पथ,
अङ्गम् अङ्गम् परुः परुः।
ततो यक्ष्म् वि बाधध्व,
उग्रो मध्यमशीः इव॥86॥

600. साकम् यक्ष्म प्र पत,
चाषेण किकिदीविना।
साकम् वातस्य ध्राज्या,
साकम् नश्य निहाकया॥87॥

601. अन्या वो अन्याम् अवतु,
अन्या अन्यस्या उप अवत।
ताः सर्वाः संविदाना इदम्,
मे प्र अवता वचः॥88॥

602. याः फलिनीः या अफला,
अपुष्पा याः च पुष्पिणीः।
बृहस्पति-प्रसूताः ता,
नो मुञ्चन्तु अहंसः॥89॥

603. मुञ्चन्तु मा शपथ्यात्,
अथो वरुण्यात् उत।
अथो यमस्य पड्वीशात्,
सर्वस्मात् देवकिल्विषात्॥90॥

604. अवपतन्तीः अवदन्,
दिव ओषधयः परि।
यम् जीवम् अश्नवामहै,
न स रिष्याति पूरुषः॥91॥

605. या ओषधीः सोमराज्ञीः,
बह्वीः शतविचक्षणाः।
तासाम् असि त्वम् उत्तमा,
अरम् कामाय शम् हृदे॥92॥

(142) सूक्त 19

606. या ओषधीः सोमराज्ञीः,
विष्ठिताः पृथिवीम् अनु।
बृहस्पति-प्रसूता अस्यै,
सम् दत्त वीर्य्यम्॥93॥

607.याः च इदम् उप-शृण्वन्ति,
याः च दूरम् परागताः।
सर्वाः सङ्गत्य वीरुधो,
अस्यै सम् दत्त वीर्य्यम्॥94॥

608. मा वो रिषत् खनिता यस्मै,
च अहम् खनामि वः।
द्विपात् चतुष्पात् अस्माकम्,
सर्वम् अस्तु अनातुरम्॥95॥

609. ओषधयः सम् अवदन्त,
सोमेन सह राज्ञा।
यस्मै कृणोति ब्रह्मणः,
तम् राजन् पारयामसि॥96॥

(143) सूक्त 20

610. नाशयित्री बलासस्य,
अर्शस उप-चिताम् असि।
अथो शतस्य यक्ष्माणाम्,
पाकारोः असि नाशनी॥97॥

611. त्वाम् गन्धर्वा अखनन्,
त्वाम् इन्द्रः त्वाम् बृहस्पतिः।
त्वाम् ओषधे सोमो राजा,
विद्वान् यक्ष्मात् अमुच्यत॥98॥

612. सहस्व मे अरातीः,
सहस्व पृतनायतः।
सहस्व सर्वम् पाप्मानम्,
सहमाना असि ओषधे॥99॥

613. दीर्घ आयुः ते ओषधे खनिता,
यस्मै च त्वा खनामि अहम्।
अथो त्वम् दीर्घायुः भूत्वा,
शतवल्शा वि रोहतात्॥100॥

614. त्वम् उत् तमा असि ओषधे,
तव वृक्षा उपस्तयः।
उपस्तिः अस्तु सो अस्माकम्,
यो अस्मान् अभि-दासति॥101॥

(144) सूक्त 21

615. मा मा हिंसीत् जनिता यः पृथिव्या,
यो वा दिवम् सत्यधर्मा वि आनट्।
यः च अपः चन्द्राः प्रथमो जजान,
कस्मै देवाय हविषा विधेम॥102॥

616. अभि आ वर्त्तस्व पृथिवि,
यज्ञेन पयसा सह।
वपाम् ते अग्निः,
इषितो अरोहत्॥103॥

617. अग्ने यत् ते शुक्रम् यत् चन्द्रम्,
यत् पूतम् यत् च यज्ञियम्।
तत् देवेभ्यो भरामसि॥104॥

(145) सूक्त 22

618. इषम् ऊर्जम् अहम् इत आदम्,
ऋतस्य योनिम् महिषस्य धाराम्।
आ मा गोषु विशतु आ तनूषु जहामि,
सेदिम् अनिराम् अमीवाम्॥105॥

619. अग्ने तव श्रवो वयो महि,
भ्राजन्ते अर्चयो विभावसो।
बृहद्भानो शवसा वाजम्,
उक्थ्यम् दधासि दाशुषे कवे॥106॥

620. पावकवर्चाः शुक्रवर्चाः,
अनून-वर्चाः उत् इयर्षि भानुना।
पुत्रो मातरा विचरन् उप अवसि,
पृणक्षि रोदसी उभे॥107॥

621. ऊर्जो नपात् जातवेद सुशस्तिभिः,
मन्दस्व धीतिभिः हितः।
त्वे इषः सम् दधुः भूरिवर्पसः,
चित्रोतयो वामजाताः॥108॥

622. इरज्यन् अग्ने प्रथयस्व,
जन्तुभिः अस्मे राया अमर्त्य।
स दर्शतस्य वपुषो वि राजसि,
पृणक्षि सानसिम् क्रतुम्॥109॥

623. इष्कर्त्तारम् अध्वरस्य,
प्रचेतसम् क्षयन्तम् राधसो महः।
रातिम् वामस्य सुभगाम् महीम्,
इषम् दधासि सानसिम् रयिम्॥110॥

624. ऋतावानम् महिषम् विश्वदर्शतम्,
अग्निम् सुम्नाय दधिरे पुरो जनाः।
श्रुत्कर्णम् सप्रथस्तमम्,
त्वा गिरा दैव्यम् मानुषा युगा॥111॥

(146) सूक्त 23

625. आ प्यायस्व सम् एतु,
ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्।
भव वाजस्य सङ्गथे॥112॥

626. सम् ते पयांसि सम् उ यन्तु वाजाः,
सम् वृष्ण्यानि अभिमातिषाहः।
आप्यायमानो अमृताय सोम दिवि,
श्रवांसि उत् तमानि धिष्व॥113॥

627. आ प्यायस्व मदिन्तम,
सोम विश्वेभिः अंशुभिः।
भवा नो सप्रथस्तमः सखा वृधे॥114॥

628. आ ते वत्सो मनो यमत्,
परमात् चित् सधस्थात्।
अग्ने त्वाम् कामया गिरा॥115॥

629. तुभ्यम् ता अङ्गिरस्तम,
विश्वाः सुक्षितयः पृथक्।
अग्ने कामाय येमिरे॥116॥

630. अग्निः प्रियेषु धामसु,
कामो भूतस्य भव्यस्य।
सम्राट् एको वि राजति॥117॥

इति द्वादशो अध्यायः

ॐ

अथ त्रयोदशो अध्यायः

(147) सूक्त 1

631. मयि गृह्णामि अग्ने अग्निम्
रायस्पोषाय सुप्रजाः त्वाय सुवीर्याय।
माम् उ देवताः सचन्ताम्॥1॥

632. अपाम् पृष्ठम् असि योनिः अग्नेः,
समुद्रम् अभितः पिन्वमानम्।
वर्धमानो महान् आ च पुष्करे,
दिवो मात्रया वरिम्णा प्रथस्व॥2॥

633. ब्रह्म जज्ञानम् प्रथमम् पुरस्तात्,
वि सीमतः सुरुचो वेन आवः।
स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः,
सतः च योनिम् असतः च वि वः॥3॥

634. हिरण्यगर्भः सम् अवर्त्तत अग्रे,
भूतस्य जातः पतिः एक आसीत्।
स दाधार पृथिवीम् द्याम् उत इमाम्,
कस्मै देवाय हविषा विधेम॥4॥

635. द्रप्सः चस्कन्द पृथिवीम् अनु द्याम्,
इमम् च योनिम् अनु यः च पूर्वः।
समानम् योनिम् अनु संचरन्तम्,
द्रप्सम् जुहोमि अनु सप्त होत्राः ॥5॥

(148) सूक्त 2

636. नमो अस्तु सर्पेभ्यो,
ये के च पृथिवीम् अनु।
ये अन्तरिक्षे ये दिवि,
तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥6॥

637. या इषवो यातु-धानानाम्,
ये वा वनस्पतीन् अनु।
ये वा अवटेषु शेरते, तेभ्यः
सर्पेभ्यो नमः ॥7॥

638. ये वा अमी रोचने दिवो,
ये वा सूर्य्यस्य रश्मिषु।
येषाम् अप्सु सदः कृतम्,
तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥8॥

(149) सूक्त 3

639. कृणुष्व पाजः प्रसितिम् न पृथिवीम्,
याहि राजेव अमवान् इभेन।
तृष्वीम् अनु प्रसितिम् द्रूणानो,
अस्ता असि विध्य रक्षसः तपिष्ठैः ॥9॥

640. तव भ्रमास आशुया पतन्ति,
अनु स्पृश धृषता शोशुचानः।
तपूंषि अग्ने जुह्वा पतङ्गान्,
असन्दितो वि सृज विष्वक् उल्काः ॥10॥

641. प्रति स्पशो वि सृज तूर्णितमो,
भवा पायुः विशो अस्या अदब्धः।
यो ना दूरे अघशंसो यो अन्ति,
अग्ने माकिः ते व्यथिः आ दधर्षीत् ॥11॥

642. उत् अग्ने तिष्ठ प्रति आ तनुष्व,
नि अमित्रान् ओषतात् तिग्महेते।
यो नो अरातिम् समिधान चक्रे नीचा,
तम् धक्षि अतसम् न शुष्कम् ॥12॥

643. ऊर्ध्वो भव प्रति विध्य अधि अस्मत्,
आविः कृणुष्व दैव्यानि अग्ने।
अव स्थिरा तनुहि यातुजूनाम्,
जामिम् अजामिम् प्र मृणीहि शत्रून।
अग्नेः त्वा तेजसा सादयामि ॥13॥

(150) सूक्त 4

644. अग्निः मूर्द्धा दिवः ककुत्,
पतिः पृथिव्या अयम्।
अपाम् रेतांसि जिन्वति।
इन्द्रस्य त्वा ओजसा सादयामि ॥14॥

645. भुवो यज्ञस्य रजसः च नेता,
यत्रा नियुद्भिः सचसे शिवाभिः।
दिवि मूर्द्धानम् दधिषे स्वर्षाम्,
जिह्वाम् अग्ने चकृषे हव्यवाहम् ॥15॥

646. ध्रुवा असि धरुणा,
आस्तृता विश्वकर्मणा।
मा त्वा समुद्र उत् वधीत्,
मा सुपर्णो अव्यथमाना पृथिवीम् दृंह ॥16॥

647. प्रजापतिः त्वा सादयतु,
अपाम् पृष्ठे समुद्रस्य एमन्।
व्यचस्वतीम् प्रथस्वतीम्,
प्रथस्व पृथिवी असि ॥17॥

648. भूः असि भूमिः असि अदितिः असि,
विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री।
पृथिवीम् यच्छ पृथिवीम्,
दृंह पृथिवीम् मा हिंसीः ॥18॥

649. विश्वस्मै प्राणाय अपानाय व्यानाय,
उदानाय प्रतिष्ठायै चरित्राय।
अग्निः त्वा अभि पातु मह्या,
स्वस्त्या छर्दिषा शन्तमेन तया,
देवतया अङ्गिरस्वत् ध्रुवा सीद ॥19॥

(151) सूक्त 5

650. काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती,
परुषः परुषः परि।
एवा नो दूर्वे प्र तनु,
सहस्रेण शतेन च ॥20॥

651. या शतेन प्रतनोषि,
सहस्रेण विरोहसि।
तस्या ते देवि इष्टके,
विधेम हविषा वयम् ॥21॥

652. याः ते अग्ने सूर्ये रुचो दिवम्,
आतन्वन्ति रश्मिभिः।
ताभिः नो अद्य सर्वाभी,
रुचे जनाय नः कृधि ॥22॥

653. या वो देवाः सूर्य्ये रुचो,
गोषु अश्वेषु या रुचः।
इन्द्राग्नी ताभिः सर्वाभी,
रुचम् नो धत्त बृहस्पते ॥23॥

(152) सूक्त 6

654. विराट् ज्योतिः अधारयत्,
स्वराड् ज्योतिः अधारयत्।
प्रजापतिः त्वा सादयतु,
पृष्ठे पृथिव्या ज्योतिष्मतीम्।
विश्वस्मै प्राणाय अपानाय,
व्यानाय विश्वम् ज्योतिः यच्छ।
अग्निः ते अधिपतिः तया,
देवतया अङ्गिरस्वत् ध्रुवा सीद ॥24॥

655. मधुः च माधवः च वासन्तिकौ ऋतू,
अग्नेः अन्तः श्लेषो असि कल्पेताम्,
द्यावापृथिवी कल्पन्ताम्,
आप ओषधयः कल्पन्ताम्,
अग्नयः पृथङ् मम ज्यैष्ठ्याय सव्रताः॥
ये अग्नयः समनसो,
अन्तरा द्यावापृथिवी इमे।
वासन्तिकौ ऋतू अभि कल्पमाना,
इन्द्रम् इव देवा अभिसंविशन्तु तया,
देवतया अङ्गिरस्वत् ध्रुवे सीदतम् ॥25॥

(153) सूक्त 7

656. अषाढा असि सहमाना सहस्व,
अरातीः सहस्व पृतनायतः।
सहस्त्रवीर्य्या असि सा मा जिन्व ॥26॥

657. मधु वाता ऋतायते,
मधु क्षरन्ति सिन्धवः।
माध्वीः नः सन्तु ओषधीः ॥27॥

658. मधु नक्तम् उत उषसो,
मधुमत् पार्थिवम् रजः।
मधु द्यौः अस्तु नः पिता ॥28॥

659. मधुमान् नो वनस्पतिः,
मधुमान् अस्तु सूर्य्यः।
माध्वीः गावो भवन्तु नः ॥29॥

660. अपाम् गम्भन् सीद मा त्वा सूर्य्यो,
अभि ताप्सीत् मा अग्निः वैश्वानरः।
अच्छिन्नपत्राः प्रजा अनुवीक्षस्व,
अनु त्वा दिव्या वृष्टिः सचताम् ॥30॥

661. त्रीन् समुद्रान् सम् असृपत् स्वर्गान्,
अपाम् पतिः वृषभ इष्टकानाम्।
पुरीषम् वसानः सुकृतस्य लोके,
तत्र गच्छ यत्राम् पूर्वे परेताः ॥31॥

(154) सूक्त 8

662. मही द्यौः पृथिवी च न इमम्,
यज्ञम् मिमिक्षताम्,
पितृताम् नो भरीमभिः ॥32॥

663. विष्णोः कर्माणि पश्यत,
यतो व्रतानि पस्पशे।
इन्द्रस्य युज्यः सखा ॥33॥

664. ध्रुवा असि धरुणा इतो जज्ञे प्रथमम्,
एभ्यो योनिभ्यो अधि जातवेदाः।
स गायत्र्या त्रिष्टुभा अनुष्टुभा,
च देवेभ्यो हव्यम् वहतु प्रजानन् ॥34॥

665. इषे राये रमस्व सहसे,
द्युम्न ऊर्जे अपत्याय।
सम्राट् असि स्वराट् असि,
सारस्वतौ त्वा उत्सौ प्र अवताम् ॥35॥

(155) सूक्त 9

666. अग्ने युक्ष्वा हि ये तव,
अश्वासो देव साधवः।
अरम् वहतिन्त मन्यवे ॥36॥

667. युक्ष्वा हि देव-हूतमान्,
अश्वान् अग्ने रथीः इव।
नि होता पूर्व्यः सदः ॥37॥

668. सम्यक् स्रवन्ति सरितो न धेना,
अन्तः हृदा मनसा पूयमानाः।
घृतस्य धारा अभि चाकशीमि,
हिरण्ययो वेतसो मध्ये अग्नेः ॥38॥

669. ऋचे त्वा रुचे त्वा,
भासे त्वा ज्योतिषे त्वा।
अभूत् इदम् विश्वस्य भुवनस्य,
वाजिनम् अग्नेः वैश्वानरस्य च ॥39॥

(156) सूक्त 10

670. अग्निः ज्योतिषा ज्योतिष्मान्,
रुक्मो वर्चसा वर्चस्वान्।
सहस्रदा असि सहस्राय त्वा ॥40॥

671. आदित्यम् गर्भम् पयसा सम् अङ्ग्धि,
सहस्रस्य प्रतिमाम् विश्वरूपम्।
परि वृङ्धि हरसा मा अभि मंस्थाः,
शतायुषम् कृणुहि चीयमानः ॥41॥

672. वातस्य जूतिम् वरुणस्य नाभिम्,
अश्वम् जज्ञानम् सरिरस्य मध्ये।
शिशुम् नदीनाम् हरिम् अद्रि-बुध्नम्,
अग्ने मा हिंसीः परमे व्योमन् ॥42॥

673. अजस्रम् इन्दुम् अरुषम् भुरण्युम्,
अग्निम् ईडे पूर्वचितिम् नमोभिः।
स पर्वभिः ऋतुशः कल्पमानो गाम्,
मा हिंसीः अदितिम् विराजम् ॥43॥

674. वरूत्रीम् त्वष्टुः वरुणस्य नाभिम्,
अविम् जज्ञानाम् रजसः परस्मात्।
महीम् साहस्रीम् असुरस्य मायाम्,
अग्ने मा हिंसीः परमे व्योमन् ॥44॥

675. यो अग्निः अग्नेः अधि अजायत,
शोकात् पृथिव्या उत वा दिवः परि।
येन प्रजा विश्वकर्मा जजान तम्,
अग्ने हेडः परि ते वृणक्तु ॥45॥

676. चित्रम् देवानाम् उत् अगात् अनीकम्,
चक्षुः मित्रस्य वरुणस्य अग्नेः।
आ प्रा द्यावा पृथिवी अन्तरिक्षम्,
सूर्य्य आत्मा जगतः तस्थुषः च ॥46॥

(157) सूक्त 11

677. इमम् मा हिंसीः द्विपादम् पशुम्,
सहस्राक्षो मेधाय चीयमानः।
मयुम् पशुम् मेधम् अग्ने जुषस्व,
तेन चिन्वानः तन्वो नि षीद।
मयुम् ते शुक् इच्छतु यम् द्विष्मः,
तम् ते शुक् ऋच्छतु ॥47॥

678. इमम् मा हिंसीः एकशफम् पशुम्,
कनिक्रदम् वाजिनम् वाजिनेषु।
गौरम् आरण्यम् अनु ते दिशामि,
तेन चिन्वानः तन्वो नि षीद।
गौरम् ते शुक् इच्छतु यम् द्विष्मः,
तम् ते शुक् ऋच्छतु ॥48॥

679. इमम् साहस्त्रम् शतधारम् उत्सम्,
व्यच्यमानम् सरिरस्य मध्ये।
घृतं दुहानाम् अदितिम् जनाय,
अग्ने मा हिंसीः परमे व्योमन्।
गवयम् आरण्यम् अनु ते दिशामि,
तेन चिन्वानः तन्वो नि षीद।
गवयम् ते शुक् ऋच्छतु यम् द्विष्मः,
तम् ते शुक् ऋच्छतु ॥ 49 ॥

680. इमम् ऊर्णायुम् वरुणस्य नाभिम्,
त्वचम् द्विपदाम् चतुष्पदाम्।
त्वष्टुः प्रजानाम् प्रथमम् जनित्रम्,
अग्ने मा हिंसीः परमे व्योमन्।
उष्ट्रम् आरण्यम् अनु ते दिशामि,
तेन चिन्वानः तन्वो नि षीद।
उष्ट्रम् ते शुक् ऋच्छतु यम् द्विष्मः,
तम् ते शुक् ऋच्छतु ॥ 50 ॥

681. अजो हि अग्नेः अजनिष्ट शोकात्,
सो अपश्यत् जनितारम् अग्रे।
तेन देवा देवताम् अग्रम् आयन्,
तेन रोहम् आयन् उप मेध्यासः।
शरभम् आरण्यम् अनु ते दिशामि,
तेन चिन्वानः तन्वो नि षीद।
शरभम् ते शुक् ऋच्छतु यम् द्विष्मः,
तम् ते शुक् ऋच्छतु ॥ 51 ॥

(158) सूक्त 12

682. त्वम् यविष्ठ दाशुषो,
नृन् पाहि शृणुधी गिरः।
रक्षा तोकम् उत त्मना ॥ 52 ॥

683. अपाम् त्वा एमन् सादयामि,
अपाम् त्वा ओद्मन् सादयामि,
अपाम् त्वा भस्मन् सादयामि,
अपाम् त्वा ज्योतिषि सादयामि,
अपाम् त्वा अयने सादयामि,
अर्णवे त्वा सदने सादयामि,
समुद्रे त्वा सदने सादयामि,
सरिरे त्वा सदने सादयामि,
अपाम् त्वा क्षये सादयामि,
अपाम् त्वा सधिषि सादयामि,
अपाम् त्वा सदने सादयामि,
अपाम् त्वा सधस्थे सादयामि,
अपाम् त्वा योनौ सादयामि,
अपाम् त्वा पुरीषे सादयामि,
अपाम् त्वा पाथसि सादयामि,
गायत्रेण त्वा छन्दसा सादयामि,
त्रैष्टुभेन त्वा छन्दसा सादयामि,
जागतेन त्वा छन्दसा सादयामि,
आनुष्टुभेन त्वा छन्दसा सादयामि,
पाङ्क्तेन त्वा छन्दसा सादयामि ॥53॥

(159) सूक्त 13

684. अयम् पुरो भुवः तस्य प्राणो,
भौव-आयनो वसन्तः प्राणायनो,
गायत्री वासन्ती गायत्र्यै गायत्रम् गायत्रात्,
उपांशुः उपांशोः त्रिवृत् त्रिवृतो रथन्तरम्,
वसिष्ठ ऋषिः प्रजापति-गृहीतया,
त्वया प्राणम् गृह्णामि प्रजाभ्यः ॥54॥

685. अयम् दक्षिणा विश्वकर्मा,
तस्य मनो वैश्वकर्मणम्,
ग्रीष्मो मानसः त्रिष्टुप्, ग्रैष्मौ त्रिष्टुभः,
स्वारम् स्वारात् अन्तर्यामो अन्तर्यामात्,
पञ्चदशः पञ्चदशात्, बृहत् भरद्वाज ऋषिः,
प्रजापति-गृहीतया, त्वया मनो गृह्णामि प्रजाभ्यः ॥55॥

686. अयम् पश्चात् विश्व-व्यचाः
तस्य चक्षुः वैश्व-व्यचसम्,
वर्षाः चाक्षुष्यो जगती वार्षी,
जगत्या ऋक्समम् ऋक्समात्,
शुक्रः शुक्रात् सप्तदशः सप्तदशात्,
वैरूपम् जमत् अग्निः ऋषिः,
प्रजापति-गृहीतया, त्वया चक्षुः गृह्णामि प्रजाभ्यः ॥56॥

687. इदम् उत्तरात् स्वः तस्य श्रोत्रम्,
सौवम् शरत् श्रौत्री अनुष्टुप् शारदी,
अनुष्टुभ ऐडम् ऐडान् मन्थी मन्थिन,
एकविंशः एकविंशाद्,
वैराजम् विश्वामित्र ऋषिः,
प्रजापति-गृहीतया, त्वया श्रोत्रम् गृह्णामि प्रजाभ्यः ।।57 ।।

688. इयम् उपरि मतिः तस्यै वाक् मात्या,
हेमन्तो वाच्यः पङ्क्तः हैमन्ती पङ्क्त्यै,
निधनवत् निधनवत, आग्रयणः आग्रयणात्,
त्रिणव-त्रयस्त्रिंशौ त्रिणव-त्रयस्त्रिंशाभ्याम्,
शाक्वर-रैवते विश्वकर्म ऋषिः,
प्रजापति-गृहीतया, त्वया वाचम् गृह्णामि प्रजाभ्यः ।।58 ।।

इति त्रयोदशो अध्यायः

ॐ

अथ चतुर्दशो अध्यायः

(160) सूक्त 1

689. ध्रुवक्षितिः ध्रुवयोनिः ध्रुवा असि,
ध्रुवम् योनिम् आ सीद साधुया।
उख्यस्य केतुम् प्रथमम् जुषाणा,
अश्विना अध्वर्यू सादयताम् इह त्वा ।।1 ।।

690. कुलायिनी घृतवती पुरन्धिः,
स्योने सीद सदने पृथिव्याः ।
अभि त्वा रुद्रा वसवो गृणन्तु इमा,
ब्रह्म पीपिहि सौभगाय,
अश्विना अध्वर्यू सादयताम् इह त्वा ।।2 ।।

691. स्वैः दक्षैः दक्षपिता इह सीद,
देवानाम् सुम्ने बृहते रणाय।
पिता इव एधि सूनव आ सुशेवा,
सु आवेशा तन्वा सम् विशस्व,
अश्विना अध्वर्यू सादयताम् इह त्वा ।।3 ।।

692. पृथिव्याः पुरीषम् असि,
अप्सो नाम ताम् त्वा,
विश्वे अभि गृणन्तु देवाः।
स्तोमपृष्ठा धृतवती इह सीद,
प्रजावत् अस्मे द्रविणा यजस्व,
अश्विना अध्वर्यू सादयताम् इह त्वा ॥4॥

693. आदित्याः त्वा पृष्ठे सादयामि,
अन्तरिक्षस्य धर्त्रीम् विष्टम्भनीम्,
दिशाम् अधिपत्नीम् भुवनानाम्।
ऊर्मिः द्रप्सो अपाम् असि, विश्वकर्मा त ऋषिः,
अश्विना अध्वर्यू सादयताम् इह त्वा ॥5॥

(161) सूक्त 2

694. शुक्रः च शुचिः ग्रैष्मौ ऋतू,
अग्नेः अन्तःश्लेषो असि,
कल्पेताम् द्यावापृथिवी,
कल्पन्ताम् आप ओषधयः,
कल्पन्ताम् अग्नयः पृथक्,
मम ज्यैष्ठ्याय सव्रताः।
ये अग्नयः समनसो अन्तरा,
द्यावापृथिवी इमे ग्रैष्मी ऋतू,
अभिकल्पमाना इन्द्रम् इव देवाः,
अभिसंविशन्तु तया देवतया,
अङ्गिरस्वत् ध्रुवे सीदतम् ॥6॥

695. सजूः ऋतुभिः सजूः विधाभिः,
सजूः देवैः सजूः देवैः वयोनाधैः,
अग्नये त्वा वैश्वानराय,
अश्विना अध्वर्यू सादयताम् इह त्वा,
सजूः ऋतुभिः सजूः विधाभिः,
सजूः वसुभिः सजूः देवैः वयोनाधैः,
अग्नये त्वा वैश्ववानराय,
अश्विना अध्वर्यू सादयताम् इह त्वा,
सजूः ऋतुभिः सजूः विधाभिः,
सजूः रुद्रे सजूः देवैः वयोनाधैः,
अग्नये त्वा वैश्वानराय,
अश्विना अध्वर्यू सादयताम् इह त्वा,
सजूः ऋतुभिः सजूः विधाभिः,
सजूः आदित्यैः सजूः देवैः वयोनाधैः,
अग्नये त्वा वैश्वानराय,
अश्विना अध्वर्यू सादयताम् इह त्वा,
सजूः ऋतुभिः सजूः विधाभिः,
सजूः विश्वैः देवैः सजूः देवैः वयोनाधैः,
अग्नये त्वा वैश्वनराय,
अश्विना अध्वर्यू सादयताम् इह त्वा ॥7॥

(162) सूक्त 3

696. प्राणम् मे पाहि अपानम् मे पाहि,
व्यानम् मे पाहि चक्षुः म उर्व्या,
वि भाहि श्रोत्रम् मे श्लोकय।
अपः पिन्व ओषधीः जिन्व,
द्विपात् अव चतुष्पात पाहि,
दिवो वृष्टिम् आ ईरय ॥8॥

697. मूर्धा वयः प्रजापतिः छन्दः,
क्षत्रम् वयो मयन्दम् छन्दो,
विष्टम्भो वयो अधिपतिः छन्दो,
विश्वकर्मा वयः परमेष्ठी छन्दो,
बस्तो वयो विबलम् छन्दो,
वृष्णिः वयो विशालम् छन्दः,
पुरुषो वयः तन्द्रम् छन्दो,
व्याघ्रो वयो ना ध्रष्टम् छन्दः,
सिंहो वयः छदिः छन्दः,
पृष्ठवाट् वयो बृहती छन्द,
उक्षा वयः ककुप् छन्द,
ऋषभो वयः सतोबृहती छन्दः ॥9॥

698. अनड्वान् वयः पङ्क्तिः छन्दो,
धेनुः वयो जगती छन्दः,
त्र्यविः वयः त्रिष्टुप् छन्दो,
दित्यवाड् वयो विराट् छन्दः,
पञ्चाविः वयो गायत्री छन्दः,
त्रिवत्सो वय उष्णिक् छन्दः,
तुर्य्यवाड् वयो अनुष्टुप् छन्दः ॥10॥

699. इन्द्राग्नी अव्यथामानाम्,
इष्टकाम् दृंहतम् युवम्।
पृष्ठेन द्यावापृथिवी,
अन्तरिक्षम् च वि बाधसे ॥11॥

700. विश्वकर्मा त्वा सादयतु,
अन्तरिक्षस्य पृष्ठे, व्यचस्वतीम् प्रथस्वतीम्,
अन्तरिक्षम् यच्छ अन्तरिक्षम्
दृंह अन्तरिक्षम् मा हिंसीः।
विश्वस्मै प्राणाय अपानाय व्यानाय,
उदानाय प्रतिष्ठायै चरित्राय।
वायुः त्वा अभि पातु मह्या स्वस्त्या,
छर्दिषा शन्तमेन तया,
देवतया अङ्गिरस्वत् ध्रुवा सीद ॥12॥

(163) सूक्त 4

701. राज्ञी असि प्राची दिक्,
विराट् असि दक्षिणा दिक्,
सम्राट् असि, प्रतीची दिक्,
स्वराट् असि उदीची दिक्,
अधिपत्नी असि बृहती दिक् ॥13॥

702. विश्वकर्मा त्वा सादयतु,
अन्तरिक्षस्य पृष्ठे ज्योतिष्मतीम्।
विश्वस्मै प्राणाय अपानायत,
व्यानाय विश्वम् ज्योतिः यच्छ।
वायुः ते अधिपतिः तया,
देवतया अङ्गिरस्वत् ध्रुवा सीद ॥14॥

703. नभः च नभस्यः च वार्षिकौ ऋतू,
अग्नेः अन्तः श्लेषो असि,
कल्पेताम द्यावापृथिवी, कल्पन्ताम् आप ओषधयः,
कल्पन्ताम् अग्नयः पृथक्, मम ज्यैष्ठ्याय सव्रताः।
ये अग्नयः समनसो, अन्तरा द्यावापृथिवी इमे।
वार्षिकौ ऋतू अभिकल्पमाना इन्द्रम् इव,
देवा अभिसंविशन्तु तया,
देवतया अङ्गिरस्वत् ध्रुवे सीदतम् ॥15॥

704. इषः च ऊर्जः च शारदौ ऋतू,
अग्नेः अन्तः श्लेषो असि,
कल्पेताम् द्यावापृथिवी,
कल्पन्ताम् आप ओषधयः,
कल्पन्ताम् अग्नयः पृथक्,
मम ज्यैष्ठ्याय सव्रताः।
य अग्नयः समनसो,
अन्तरा द्यावापृथिवी इमे।
शारदौ ऋतू अभिकल्पमाना इन्द्रम् इव,
देवा अभिसंविशन्तु तया,
देवतया अङ्गिरस्वत् ध्रुवे सीदतम् ॥16॥

(164) सूक्त 5

705. आयुः मे पाहि प्राणम् मे पाहि,
अपानम् मे पाहि व्यानम् मे पाहि,
चक्षुः मे पाहि श्रोतम् मे पाहि,
वाचम् मे पिन्व मनो मे जिन्व,
आत्मानम् मे पाहि ज्योतिः मे यच्छ ॥17॥

706. मा छन्दः प्रमा छन्दः,
प्रतिमा छन्दो अस्त्रीवयः छन्दः,
पङ्क्तिः छन्द उष्णिक् छन्दो,
बृहती छन्दो अनुष्टुप् छन्दो,
विराट् छन्दो गायत्री छन्दः,
त्रिष्टुप् छन्दो जगती छन्दः ॥18॥

707. पृथिवी छन्दो अन्तरिक्षम् छन्दो,
द्यौः छन्दः समाः छन्दो,
नक्षत्राणि छन्दो वाक् छन्दो,
मनः छन्दः कृषिः छन्दो,
हिरण्यम् छन्दो गौः छन्दो,
अजा छन्दो अश्वः छन्दः ॥19॥

708. अग्निः देवता वातो देवता,
सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता,
वसवो देवता रुद्रा देवता,
आदित्या देवता मरुतो देवता,
विश्वे देवा देवता बृहस्पतिः देवता,
इन्द्रो देवता वरुणो देवता ॥20॥

(165) सूक्त 6

709. मूर्द्धा असि राड् ध्रुवा असि,
धरुणा धत्री असि धरणी।
आयुषे त्वा वर्चसे त्वा,
कृष्यै त्वा क्षेमाय त्वा ॥21॥

710. यन्त्री राड् यन्त्री असि,
यमनी ध्रुवा असि धरित्री।
इषे त्वा ऊर्जे त्वा,
रय्यै त्वा पोषाय त्वा ॥22॥

711. आशुः त्रिवृत् भान्तः पञ्चदशो,
व्योमा सप्तदशो धरुण एकविंशः,
प्रतूर्त्तिः अष्टादशः तपो नवदशो,
अभीवर्त्तः सविंशो वर्चो द्वाविंशः,
सम्भरणः त्रयोविंशो योनिः चतुर्विंशः।
गर्भाः पञ्चविंशः ओजः त्रिणवः,
क्रतुः एकत्रिंशः प्रतिष्ठा त्रयस्त्रिंशो,
ब्रध्नस्य विष्टपम् चतुस्त्रिंशो,
नाकः षट्त्रिंशो विवर्त्तो,
अष्टाचत्वारिंशो धर्त्रम् चतुष्टोमः ॥23॥

712. अग्नेः भागो असि दीक्षाया आधिपत्यम्,
ब्रह्म स्पृतम् त्रिवृत् स्तोमः,
इन्द्रस्य भागो असि विष्णोः आधिपत्यम्,
क्षत्रम् स्पृतम् पञ्चदश स्तोमः।
नृचक्षसाम् भागो असि धातुः आधिपत्यम्,
जनित्रम् स्पृतम् सप्तदशः स्तोमो।
मित्रस्य भागो असि वरुणस्य आधिपत्यम्,
दिवो वृष्टिः वातः स्पृत एकविंशः स्तोमः ॥24॥

(166) सूक्त 7

713. वसूनाम् भागो असि,
रुद्राणाम् आधिपत्यम्,
चतुष्पात् स्पृतम् चतुर्विंशः स्तोम।
आदित्यानाम् भागो असि,
मरुताम् आधिपत्यम्,
गर्भाः स्पृताः पञ्चविंशः स्तोमो।
अदित्यै भागो असि,
पूष्ण आधिपत्यम्,
ओज स्पृतम् त्रिणव स्तोमः।
देवस्य सवितुः भागो असि,
बृहस्पतेः आधिपत्यम्,
समीचीः दिश स्पृताः चतुष्टोम स्तोमः ॥25॥

714. यवानाम् भागो असि,
अयवानाम् आधिपत्यम्,
प्रजा स्पृताः चतुश्चत्वारिंशः स्तोमः।
ऋभूणाम् भागो असि,
विश्वेषाम् देवानाम् आधिपत्यम्,
भूतम् स्पृतम् त्रयस्त्रिंशः स्तोमः ॥26॥

715. सहः च सहस्यः च,
हैमन्तिक आवृत ऊ,
अग्नेः अन्तः श्लेषो असि,
कल्पेताम् द्यावापृथिवी,
कल्पन्ताम आप ओषधयः,
कल्पन्ताम अग्नयः पृथङ्,
मम् ज्यैष्ठ्याय सव्रताः।
ये अग्नयः समनसो,
अन्तरा द्यावापृथिवी इमे
हैमन्तिक आवृत ऊ,
अभिकल्पमाना इन्द्रम् इव,
देवा अभिसंविशन्तु तया,
देवतया अङ्गिरस्वद् ध्रुवे सीदतम् ॥27॥

(167) सूक्त 8

716. एकया अस्तुवत, प्रजा अधीयन्त,
प्रजापतिः अधिपतिः आसीत्,
तिसृभिः अस्तुवत, ब्रह्म असृज्यत,
ब्रह्मणस्पतिः अधिपतिः आसीत्,
पञ्चभिः अस्तुवत, भूतानि असृज्यन्त,
भूतानाम् पतिः अधिपतिः आसीत्,
सप्तभिः अस्तुवत, सप्त ऋषयो असृज्यन्त,
धाता अधिपतिः आसीत् ॥28॥

717. नवभिः अस्तुवत, पितरो असृज्यन्त,
अदितिः अधिपत्नी आसीत्,
एकादशभिः अस्तुवत, ऋतवो असृज्यन्त,
आर्त्तवा अधिपतय आसन्,
त्रयोदशभिः अस्तुवत, मासा असृज्यन्त,
सम्वत्सरो अधिपतिः आसीत्,
पञ्चदशभिः अस्तुवत, क्षत्रम् असृज्यत,
इन्द्रो अधिपतिः आसीत्,
सप्तदशभिः अस्तुवत, ग्राम्याः पशवो असृज्यन्त,
बृहस्पति अधिपतिः आसीत्॥29॥

718. नवदशभिः अस्तुवत, शूद्रार्यौ असृज्येताम्,
अहोरात्रे अधिपत्नी आस्ताम्।
एकविंशत्या अस्तुवत, एकशफाः पशवो असृज्यन्त,
वरुणो अधिपतिः आसीत्।
त्रयोविंशत्या अस्तुवत, क्षुद्राः पशवो असृज्यन्त,
पूषा अधिपतिः आसीत्।
पञ्चविंशत्या अस्तुवत, आरण्याः पशवो असृज्यन्त,
वायुः अधिपतिः आसीत्।
सप्तविंशत्या अस्तुवत, द्यावापृथिवी वि ऐताम्,
वसवो रुद्रो आदित्याः अनुव्यायन्,
त एव अधिपतय आसन्॥30॥

719. नवविंशत्या अस्तुवत, वनस्पतयो असृज्यन्त,
सोमो अधिपतिः आसीत्,
एकत्रिंशता अस्तुवत, प्रजा असृज्यन्त,
यवाः च अयवा च अधिपतय आसन्।
त्रयस्त्रिंशता अस्तुवत, भूतानि अशाम्यन्,
प्रजापतिः परमेष्ठी अधिपतिः आसीत्॥31॥

इति चतुर्दशो अध्यायः

ॐ

अथ पञ्चदशो अध्यायः

(168) सूक्त 1

720. अग्ने जातान् प्र णुदा नः सपत्नान्,
प्रति अजातान् नुद जातवेदः।
अधिः नो ब्रूहि सुमना अहेडन्,
तव स्याम शर्मन् त्रिवरूथ उद्भौ॥1॥

721. सहसा जातान् प्र णुदा नः सपत्नान्,
प्रति अजातान् जातवेदो नुदस्व।
अधि नो ब्रूहि सुमनस्यमानो,
वयम् स्याम प्र णुदा नः सपत्नान्॥2

722. षोडशी स्तोम ओजो द्रविणम्,
चतुश्चत्वारिंश स्तोमो वर्चो द्रविणम्।
अग्नेः पुरीषम् असि अप्सो नाम,
ताम् त्वा विश्वे अभि गृणन्तु देवाः।
स्तोमपृष्ठा घृतवतीह सीद,
प्रजावत् अस्मे द्रविणा यजस्व॥3॥

723. एवः छन्दो वरिवः छन्दः,
शम्भूः छन्दः परिभूः छन्द,
आ छत् छन्दो मनः छन्दो,
व्यचः छन्दः सिन्धुः छन्दः,
समुद्र छन्दः सरिरम् छन्दः,
ककुप् छन्दः त्रिककुप् छन्दः,
काव्यम् छन्दो अङ्कुपम् छन्दो,
अक्षरपङ्क्तिः छन्दः पदपङ्क्तिः छन्दो,
विष्टारपङ्क्तिः छन्दः ऋक्षुरो भ्रजः छन्दः॥4॥

724. आ छत् छन्दः प्र छत् छन्दः,
संयत् छन्दो वियत् छन्दो,
बृहत् छन्दो रथन्तरम् छन्दो,
निकायः छन्दो विवधः छन्दो,
गिरः छन्दो भ्रजः छन्दः,
संस्तुप् छन्दो अनुष्टुप् छन्द,
एवः छन्दो वरिवः छन्दो,
वयः छन्दो वयस्कृत् छन्दो,
विष्पर्द्धाः छन्दो विशालम् छन्दः,
छदिः छन्दो दूरोहणम् छन्दः,
तन्द्रम् छन्दो अङ्क अङ्कम् छन्दः॥5॥

ळ725. रश्मिना सत्याय सत्यम् जिन्व,
प्रेतिना धर्म्मणा धर्मम् जिन्व,
अन्वित्या दिवा दिवम् जिन्व,
संधिना अन्तरिक्षेण अन्तरिक्षम् जिन्व,
प्रतिधिना पृथिव्या पृथिवीम् जिन्व,
विष्टम्भेन वृष्ट्या वृष्टिम् जिन्व,
प्रवया अह्ना अहः जिन्व,
अनुया रात्र्या रात्रीम् जिन्व,
उशिजा वसुभ्यो वसून् जिन्व,
प्रकेतेन आदित्येभ्यः आदित्यान् जिन्व ॥6॥

726. तन्तुना रायः पोषेण रायः पोषम्,
जिन्व संसर्पेण श्रुताय श्रुतम्,
जिन्व ऐडेन ओषधीभिः ओषधीः,
जिन्व उत्तमेन तनूभिः तनूः,
जिन्व वयोधसा आधीतेन आधीतम्,
जिन्व अभिजिता तेजसा तेजो ॥7॥

(169) सूक्त 2

727. प्रतिपत् असि प्रतिपदे त्वा,
अनुपत् असि अनुपदे त्वा,
सम्पत् असि सम्पदे त्वा,
तेजो असि तेजसे त्वा ॥8॥

728. त्रिवृत् असि त्रिवृते त्वा,
प्रवृत् असि प्रवृते त्वा,
विवृत् असि विवृते त्वा,
सवृत् असि सवृते त्वा,
आक्रमो असि आक्रमाय त्वा,
संक्रमो असि संक्रमाय त्वा,
उत्क्रमो असि उत्क्रमाय त्वा,
उत्क्रान्तिः असि उत्क्रान्त्यै त्वा,
अधिपतिना ऊर्जा ऊर्जम् जिन्व ॥9॥

729. राज्ञी असि प्राची दिक् वसवः,
ते देवा अधिपतयो अग्निः,
हेतीनाम् प्रतिधर्त्ता त्रिवृत् त्वा,
स्तोमः पृथिव्याम् श्रयतु आज्यम्,
उक्थम् अव्यथायै स्तभ्नातु रथन्तरम्,
साम प्रतिष्ठित्या अन्तरिक्ष ऋषयः त्वा,
प्रथमजा देवेषु दिवो मात्रया,
वरिम्णा प्रथन्तु विधर्त्ता च,
अयम् अधिपतिः च ते त्वा,
सर्वे संविदाना नाकस्य पृष्ठे,
स्वर्गे लोके यजमानम् च सादयन्तु ॥10॥
730. विराट् असि दक्षिणा दिग्रुद्राः,
ते देवा अधिपतय इन्द्रो,
हेतीनाम् प्रतिधर्त्ता पञ्चदशः त्वा,
स्तोमः पृथिव्याम् श्रयतु प्र उगम्,

उक्थम् अव्यथायै स्तभ्नातु बृहत्,
साम प्रतिष्ठित्या अन्तरिक्ष ऋतयः त्वा,
प्रथमजा देवेषु दिवो मात्रया,
वरिम्णा प्रथन्तु विधर्त्ता च,
अयम् अधिपतिः च ते त्वा,
सर्वे संविदाना नाकस्य पृष्ठे,
स्वर्ग लोके यजमानम् च सादयन्तु ॥11॥

731. सम्राट् असि प्रतीची दिक् आदित्याः,
ते देवा अधिपतय वरुणो,
हेतीनाम् प्रतिधर्त्ता सप्तदशः त्वा,
स्तोमः पृथिव्याम् श्रयतु मरुत्वतीयम्,
उक्थम् अव्यथायै स्तभ्नातु वैरुपम्,
साम प्रतिष्ठित्या अन्तरिक्ष ऋषयः त्वा,
प्रथमजा देवेषु दिवो मात्रया,
वरिम्णा प्रथन्तु विधर्त्ता च,
अयम् अधिपतिः च ते त्वा,
सर्वे संविदाना नाकस्य पृष्ठे,
स्वर्गे लोके यजमानम् च सादयन्तु ॥12॥

(170) सूक्त 3

732. स्वराट् असि उदीची दिङ् मरुतः,
ते देवा अधिपतयः सोमो,
हेतीनाम् प्रतिधर्त्ताः एकविंशः त्वा,
स्तोमः पृथिव्याम् श्रयतु निष्केवल्यम्,
उक्थम् अव्यथायै स्तभ्नातु वैराजम्,
साम प्रतिष्ठित्या अन्तरिक्ष ऋषयः त्वा,
प्रथमजा देवेषु दिवो मात्रया,
वरिम्णा प्रथन्तु विधर्त्ता च,
अयम् अधिपतिः च ते त्वा,
सर्वे संविदाना नाकस्य पृष्ठे,
स्वर्गे लोके यजमानम् च सादयन्तु ॥13॥

733. अधिपत्नी असि बृहती दिक् विश्वे,
ते देवा अधिपतयो बृहस्पतिः,
हेतीनाम् प्रतिधर्त्ता त्रिणवत्रयस्त्रिंशौ त्वा,
स्तोमौ पृथिव्याम् श्रयताम् वैश्वदेवाग्निमारुते,
उक्थे अव्यथायै स्तभ्नीताम् शाक्वररैवते,
सामनी प्रतिष्ठित्या अन्तरिक्ष ऋषयः त्वा,
प्रथमजा देवेषु दिवो मात्रया,
वरिम्णा प्रथन्तु विधर्त्ता च,
अयम् अधिपतिः च ते त्वा,
सर्वे संविदाना नाकस्य पृष्ठे,
स्वर्गे लोके यजमानम् च सादयन्तु ॥14॥

(171) सूक्त 4

734. अयम् पुरो हरिकेशः सूर्यरश्मिः तस्य,
रथगृत्सः च रथौजाः च सेनानीग्रामण्यौ।
पुञ्जिकस्थला च क्रतुस्थला च अप्सरसौ,
दङ्क्ष्णवः पशवो हेतिः,
पौरुषेयो वधः प्रहेतिः, तेभ्यो नमो अस्तु,
ते नो अवन्तु ते नो मृडयन्तु,
ते यम् द्विष्मो, यः च नो द्वेष्टि,
तम् एषाम् जम्भे दध्मः ॥15॥

735. अयम् दक्षिणा विश्वकर्मा तस्य,
रथस्वनः च रथेचित्रः च सेनानीग्रामण्यौ।
मेनका च सहजन्या च अप्सरसौ,
यातुधाना हेती रक्षांसि प्रहेतिः,
तेभ्यो नमो अस्तु,
ते नो अवन्तु ते नो मृडयन्तु,
ते यम् द्विष्मो यः च नो द्वेष्टि,
तम् एषाम् जम्भे दध्मः ॥16॥

736. अयम् पश्चात् विश्वव्यचाः तस्य,
रथप्रोतः च असमरथः च सेनानीग्रामण्यौ।
प्रम्लोचन्ती च अनुम्लोचन्ती च अप्सरसौ,
व्याघ्रा हेतिः सर्पाः प्रहेतिः,
तेभ्यो नमो अस्तु,
ते नो अवन्तु ते नो मृडयन्तु,
ते यम् द्विष्मो यः च नो द्वेष्टि,
तम् एषाम् जम्भे दध्मः ॥17॥

737. अयम् उत्तरात् संयद्वसुः तस्य,
तार्क्ष्यः च अरिष्टनेमिः च सेनानीग्रामण्यौ।
विश्वाची च घृताची च अप्सरसौ,
आपो हेतिः वातः प्रहेतिः, तेभ्यो नमो अस्तु,
ते नो अवन्तु ते नो मृडयन्तु,
ते यम् द्विष्मो यः च नो द्वेष्टि,
तम् एषाम् जम्भे दध्मः ॥18॥

738. अयम् उपरि अर्वाक् वसुः तस्य,
सेनजित् च सुषेणः च सेनानीग्रामण्यौ।
उर्वशी च पूर्वचित्तिः च अप्सरसौ,
अवस्फूर्जनः हेतिः विद्युत् प्रहेतिः, तेभ्यो नमो अस्तु,
ते नो अवन्तु ते नो मृडयन्तु,
ते यम् द्विष्मो यः च नो द्वेष्टि,
तम् एषाम् जम्भे दध्मः ॥19॥

(172) सूक्त 5

739. अग्निः मूर्द्धा दिवः,
ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्।
अपाम् रेतांसि जिन्वति॥20॥

740. अयम् अग्निः सहस्त्रिणो,
वाजस्य शतिनः पतिः।
मूर्धा कवी रयीणाम्॥21॥

741. त्वाम् अग्ने पुष्करात्,
अधि अथर्वा निः अमन्थत।
मूर्ध्नो विश्वस्य वाघतः॥22॥

(173) सूक्त 6

742. भुवो यज्ञस्य रजसः च नेता,
यत्रा नियुद्भिः सचसे शिवाभिः।
दिवि मूर्द्धानम् दधिषे स्वर्षाम्,
जिह्वाम् अग्ने चकृषे हव्यवाहम्॥23॥

743. अबोधि अग्निः समिधा जनानाम्,
प्रति धेनुमिव आयतीम् उषासम्।
यह्वा इव प्र वयाम् उज्जिहानाः,
प्र भानवः सिस्त्रते नाकम् अच्छ॥24॥

744. अवोचाम कवये मेध्याय,
वचो वन्दारु वृषभाय वृष्णे।
गविष्ठिरो नमसा स्तोमम् अग्नौ,
दिवीव रुक्मम् उरुव्यञ्चम अश्रेत्॥25॥

745. अयम् इह प्रथमो धायि धातृभिः,
होता यजिष्ठो अध्वरेषु ईड्यः।
यम् अप्नवानो भृगवो विरुरुचुः,
वनेषु चित्रम् विभ्वम् विशेविशे॥26॥

746. जनस्य गोपा अजनिष्ट जागृविः,
अग्निः सुदक्षः सुविताय नव्यसे।
घृतप्रतीको बृहता दिविस्पृशा,
द्युमत् वि भाति भरतेभ्यः शुचिः॥27॥

747. त्वाम् अग्ने अङ्गिरसो गुहा हितम्,
अनु अविन्दन् शिश्रियाणम् वनेवने।
स जायसे मथ्यमानः सहो महत्,
त्वाम् आहुः सहसः पुत्रम् अङ्गिरः॥28॥

(174) सूक्त 7

748. सखायः सम् व सम्यञ्चम्,
इषम् स्तोमम् च अग्नये।
वर्षिष्ठाय क्षितीनाम्,
ऊर्जो नप्त्रे सहस्वते॥29॥

749. सम् सम् इत् युवसे वृषन्,
अग्ने विश्वानि अर्य्य आ।
इडः पदे सम् इध्यसे,
स नो वसूनि आ भर॥30॥

750. त्वाम् चित्रश्रवस्तम,
हवन्ते विक्षु जन्तवः।
शोचिष्केशम् पुरुप्रिय,
अग्ने हव्याय वोढवे॥31॥

751. एना वो अग्निम् नमसा,
ऊर्जो नपातम् आ हुवे।
प्रियम् चेतिष्ठम् अरतिम स्वध्वरम्,
विश्वस्य दूतम् अमृतम्॥32॥

752. विश्वस्य दूतम् अमृतम्,
विश्वस्य दूतम् अमृतम्।
स योजते अरुषा विश्व-भोजसा,
स दुद्रवत् स्वाहुतः॥33॥

753. स दुद्रवत् स्वाहुतः,
स दुद्रवत् स्वाहुतः,
सुब्रह्मा यज्ञः सुशमी वसूनाम्,
देवम् राधो जनानाम्॥34॥

(175) सूक्त 8

754. अग्ने वाजस्य गोमत,
ईशानः सहसो यहो।
अस्मे धेहि जातवेदो महि श्रवः॥35॥

755. स इधानो वसुः कविः,
अग्निः ईडेन्यो गिरा।
रेवत् अस्मभ्यम् पुर्वणीक दीदिहि॥36॥

756. क्षपो राजन् उत त्मना,
अग्ने वस्तोः उत उषसः।
स तिग्मजम्भ रक्षसो दह प्रति॥37॥

757. भद्रो नो अग्निः आहुतो,
भद्रा रातिः सुभग भद्रो अध्वरः।
भद्रा उत प्रशस्तयः॥38॥

758. भद्रा उत प्रशस्तयो
भद्रम् मनः कृणुष्व वृत्रतूर्य्ये।
येन समत्सु सासहः॥39॥

759. येना समत्सु सासहो अव स्थिरा
तनुहि भूरि शर्धताम्।
वनेमा ते अभिष्टिभिः॥40॥

(176) सूक्त 9

760. अग्निम् तम् मन्ये यो वसुः,
अस्तम् यम् यन्ति धेनवः।
अस्तम् अर्वन्त आशवो
अस्तम् नित्यासो वाजिन,
इषम् स्तोतृभ्य आ भर ॥41॥

761. सो अग्निः यो वसुः गृणे,
सम् यम् आयन्ति धेनवः।
सम् अर्वन्तो रघुद्रुव,
सम् सुजातासः सूरय,
इषम् स्तोतृभ्य आ भर ॥42॥

762. उभे सुश्चन्द्र सर्पिषो,
दर्वी श्रीणीष आसनि।
उतो न उत् पुपूर्या,
उक्थेषु शवसः पत,
इषम् स्तोतृभ्य आ भर ॥43॥

(177) सूक्त 10

763. अग्ने तम् अद्य अश्वम् न स्तोमैः,
क्रतुम् न भद्रम् हृदिस्पृशम्।
ऋध्यामा त ओहैः ॥44॥

764. अध आ हि अग्ने क्रतोः,
भद्रस्य दक्षस्य साधोः।
रथीः ऋतस्य बृहतो बभूथ ॥45॥

765. एभिः नो अर्कैः भवा,
नो अर्वाङ् स्वः न ज्योतिः।
अग्ने विश्वेभिः सुमना अनीकैः ॥46॥

(178) सूक्त 11

766. अग्निम् होतारम् मन्ये दास्वन्तम्,
वसुम सूनुम् सहसो जातवेदसम्,
विप्रम् न जातवेदसम्।
य ऊर्ध्वया सु अध्वरो, देवो देवाच्या कृपा।
घृतस्य विभ्राष्टिम् अनु वष्टि,
शोचिषा आजुह्वानस्य सर्पिषः ॥47॥

767. अग्ने त्वम् नो अन्तम उत,
त्राता शिवो भवा वरूथ्यः।
वसुः अग्निः वसुश्रवा अच्छा,
नक्षि द्युमत्तमम् रयिम् दाः।
तम् त्वा शोचिष्ठ दीदिवः,
सुम्नाय नूनम् ईमहे सखिभ्यः ॥48॥

(179) सूक्त 12

768. येन ऋषयः तपसा सत्रम् आयन्,
इन्धाना अग्निम् स्वः आ-भरन्तः।
तस्मिन् अहम् निदधे नाके अग्निम्,
यम् आहुः मनव स्तीर्ण-बर्हिषम्॥49॥

769. तम् पत्नीभिः अनु गच्छेम देवाः,
पुत्रैः भ्रातृभिः उत वा हिरण्यैः।
नाकम् गृभ्णानाः सुकृतस्य लोके,
तृतीये पृष्ठे अधि रोचने दिवः॥50॥

770. आ वाचो मध्यम् अरुहत् भुरण्युः,
अयम् अग्निः सत्पतिः चेकितानः।
पृष्ठे पृथिव्या निहितो दविद्युतत्,
अधरस्पदम् कृणुताम् ये पृतन्यवः॥51॥

771. अयम् अग्निः वीरतमो वयोधाः,
सहस्त्रियो द्योतताम् अप्रयुच्छन्।
विभ्राजमानः सरिरस्य मध्य उप,
प्र याहि दिव्यानि धाम॥52॥

772. सम् प्रच्यवध्वम् उप सम्प्रयात,
अग्ने पथो देवयानान् कृणुध्वम्।
पुनः कृण्वानाः पितरा युवाना,
अन्वातांसीत् त्वयि तन्तुम् एतम्॥53॥

773. उत् बुध्यस्व अग्ने प्रति जागृहि
त्वम् इष्टापूर्त्रे सम् सृजेथाम् अयम् च।
अस्मिन् सधस्थे अधि उत्तरसिन्,
विश्वे देवा यजमानः च सीदत॥54॥

(180) सूक्त 13

774. येन वहसि सहस्त्रम्,
येन अग्ने सर्व-वेदसम्।
तेन इमम् यज्ञम् नो नय,
स्वः देवेषु गन्तवे॥55॥

775. अयम् ते योनिः ऋत्वियो,
यतो जातो अरोचथाः।
तम् जानन् अग्न आ रोह,
अथ आ नो वर्धया रयिम्॥56॥

776. तपः च तपस्यः च शैशिरौ ऋतू,
अग्नेः अन्तः श्लेषो असि,
कल्पेताम् द्यावापृथिवी,
कल्पन्ताम् आप ओषधयः,
कल्पन्ताम् अग्नयः पृथक्,
मम ज्यैष्ठ्याय सव्रताः।
ये अग्नयः समनसो,
अन्तरा द्यावापृथिवी इमे।
शैशिरौ ऋतू अभिकल्पमाना इन्द्रम् इव,
देवा अभिसंविशन्तु तया,
देवतया अङ्गिरस्वत् ध्रुवे सीदतम्॥57॥

777. परमेष्ठी त्वा सादयतु,
दिवः पृष्ठे ज्योतिष्मतीम्।
विश्वस्मै प्राणाय अपानाय,
व्यानाय विश्वम् ज्योतिः यच्छ।
सूर्यः ते अधिपतिः तया,
देवतया अङ्गिरस्वद् ध्रुवा सीद॥58॥

(181) सूक्त 14

778. लोकम् पृण छिद्रम् पृण,
अथो सीद ध्रुवा त्वम्।
इन्द्राग्नी त्वा बृहस्पतिः,
अस्मिन् योनौ असीषदन्॥59॥

779. ता अस्य सूददोहसः,
सोमम् श्रीणन्ति पृश्नयः।
जन्मन् देवानाम् विशः,
त्रिषु आ रोचने दिवः॥60॥

780. इन्द्रम् विश्वा अवीवृधन्,
समुद्रव्यचसम् गिरः।
रथीतमम् रथीनाम्,
वाजानाम् सत्पतिम् पतिम्॥61॥

781. प्रोथत् अश्वो न यवसे अविष्यन्,
यदा महः संवरणात् वि अस्थात्।
आत् अस्य वातो अनु वाति शोचिः,
अध स्म ते व्रजनम् कृष्णम् अस्ति॥62॥

782. आयोः त्वा सदने सादयामि,
अवतः छायायाम् समुद्रस्य हृदये।
रश्मीवतीम् भास्वतीम् आ या द्याम् भासि,
आ पृथिवीम् उरु अन्तरिक्षम्॥63॥

(182) सूक्त 15

783. परमेष्ठी त्वा सादयतु,
दिवः पृष्ठे व्यचस्वतीम् प्रथस्वतीम्,
दिवम् यच्छ दिवम् दृंह दिवम् मा हिंसीः।
विश्वस्मै प्राणाय अपानाय,
व्यानाय उदानाय प्रतिष्ठायै चरित्राय।
सूर्यः त्वा अभि पातु मह्या,
स्वस्त्या छर्दिषा शन्तमेन तया,
देवतया अङ्गिरस्वद् ध्रुवे सीदतम्॥64॥

784. सहस्रस्य प्रमा असि,
सहस्रस्य प्रति-मा असि,
सहस्रस्य उत् मा असि,
साहस्रो असि सहस्राय त्वा॥65॥

इति पञ्चदशो अध्यायः

ॐ

अथ षोडशो अध्यायः

(183) सूक्त 1

785. नमः ते रुद्र मन्यव,
उतो त इषवे नमः।
बाहुभ्याम् उत ते नमः॥1॥

786. या ते रुद्र शिवा तनूः,
अघोरा अपापकाशिनी।
तया नः तन्वा शन्तमया,
गिरिशन्त अभि चाकशीहि॥2॥

787. याम् इषुम् गिरिशन्त,
हस्ते बिभर्षि अस्तवे।
शिवाम् गिरित्र ताम् कुरु,
मा हिंसीः पुरुषम् जगत्॥3॥

788. शिवेन वचसा त्वा,
गिरिश अच्छा वदामसि।
यथा नः सर्वम् इत् जगत्,
अयक्ष्मम् सुमनाः असत्॥4॥

789. अधि अवोचत् अधिवक्ता,
प्रथमो दैव्यो भिषक्।
अहीन् च सर्वान् जम्भयन् सर्वाः,
च यातुधान्यो अधराचीः परा सुव ॥5॥

790. असौ यः ताम्रो अरुण,
उत बभ्रुः सुमङ्गलः।
ये च एनम् रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः,
सहस्त्रशो अव एषाम् हेड ईमहे ॥6॥

791. असौ यो अवसर्पति,
नीलग्रीवो विलोहितः।
उत एनम् गोपा अदृश्रन् अदृश्रन्,
उदहार्य्यः स दृष्टो मृडयाति नः ॥7॥

(184) सूक्त 2

792. नमो अस्तु नीलग्रीवाय,
सहस्त्र अक्षाय मीढुषे।
अथो ये अस्य सत्वानो,
अहम् तेभ्यो अकरम् नमः ॥8॥

793. प्र मुञ्च धन्वनः त्वम्,
उभयोः आर्त्न्योः ज्याम्।
याः च ते हस्त इषवः,
परा ता भगवो वप ॥9॥

794. विज्यम् धनु कपर्द्दिनो,
विशल्यो बाणवान् उत।
अनेशन् अस्य या इषव,
आभुः अस्य निषङ्गधिः ॥10॥

795. या ते हेतिः मीढुष्टम,
हस्ते बभूव ते धनुः।
तया अस्मान् विश्वतः,
त्वम् अयक्ष्मया परि भुज ॥11॥

796. परि ते धन्वनो हेतिः,
अस्मान् वृणक्तु विश्वतः।
अथो य ईषुधिः तव,
आरे अस्मत् नि धेहि तम् ॥12॥

797. अवतत्य धनुः त्वम्,
सहस्त्राक्ष शतेषुधे।
निशीर्य शल्यानाम् मुखा,
शिवो नः सुमना भव ॥13॥

798. नमः त आयुधाय,
अनातताय धृष्णवे।
उभाभ्याम् उत ते नमो,
बाहुभ्याम् तव धन्वने ॥14॥

(185) सूक्त 3

799. मा नो महान्तम् उत मा नो अर्भकम्,
मा न उक्षन्तम् उत मा न उक्षितम्।
मा नो वधीः पितरम् मा उत मातरम्,
मा नः प्रियाः तन्वो रुद्र रीरिषः ॥15॥

800. मा नः तोके तनये मा न आयुषि,
मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः।
मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीः,
हविष्मन्तः सदम् इत् त्वा हवामहे ॥16॥

(186) सूक्त 4

801. नमो हिरण्य-बाहवे सेनान्ये,
दिशाम् च पतये नमो ,
नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यः,
पशूनाम् पतये नमो,
नमःशष्पिञ्जराय त्विषी-मते,
पथीनाम् पतये नमो,
नमो हरिकेशाय उपवीतने,
पुष्टानाम् पतये नमः ॥17॥

802. नमो बभ्लुशाय व्याधिने,
अन्नानाम् पतये नमो,
नमो भवस्य हेत्यै,
जगताम् पतये नमो,
नमो रुद्राय आततायिने,
क्षेत्राणाम् पतये नमो,
नमः सूताय अहन्त्यै,
वनानाम् पतये नमः ॥18॥

803. नमो रोहिताय स्थपतये,
वृक्षाणाम् पतये नमो,
नमो भुवन्तये वारिवः कृताय,
ओषधीनाम् पतये नमो,
नमो मन्त्रिणे वाणिजाय,
कक्षाणाम् पतये नमो,
नम उच्चैः घोषाय आक्रन्दयते,
पत्तीनाम् पतये नमः ॥19॥

804. नमः कृत्स्न आयतया धावते,
सत्वनाम् पतये नमो,
नमः सहमानाय नि-व्याधिन,
आ-व्याधिनीनाम् पतये नमो,
नमो निषङ्गिणे ककुभाय,
स्तेनानाम् पतये नमो,
नमो नि-चेरवे परिचराय,
अरण्यानाम् पतये नमः ॥20॥

805. नमो वञ्चते परिवञ्चते,
स्तायूनाम् पतये नमो,
नमो निषङ्गिणे इषुधि मते,
तस्कराणाम् पतये नमो,
नमः सृकायिभ्यो जिघांसद्भ्यो,
मुष्णताम् पतये नमो,
नमो असिमद्भ्यो नक्तम् चरद्भ्यो,
विकृन्तानाम् पतये नमः ॥21॥

(187) सूक्त 5

806. नम उष्णीषिणे गिरि चराय,
कुलुञ्चानाम् पतये नमो,
नम इषुमद्भ्यो धन्वायिभ्यः च वो नमो,
नम आतन्वानेभ्यः प्रतिदधानेभ्यः च वो नमो,
नम आयच्छद्भ्यो अस्यद्भ्यः च वो नमः ॥22॥

807. नमो विसृजद्भ्यो विध्यद्भ्यः च वो नमो,
नमः स्वपद्भ्यो जाग्रद्भ्यः वो नमो,
नमः शयानेभ्य आसीनेभ्यः च वो नमो,
नमः तिष्ठुद्भ्यो धावद्भ्यः वो नमः ॥23॥

808. नमः सभाभ्यः सभापतिभ्यः च वो नमो,
नमो अश्वेभ्यो अश्वपतिभ्यः च वो नमो,
नम आव्याधिनीभ्यो विविध्यन्तीभ्यः च वो नमो,
नम उगणाभ्यः तृंहतीभ्यः च वो नमः ॥24॥

809. नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यः च वो नमो,
नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यः च वो नमो,
नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यः च वो नमो,
नमो विश्व-रूपेभ्यो विश्व-रूपेभ्यः च वो नमः ॥25॥

810. नमः सेनाभ्यः सेनानिभ्यः च वो नमो,
नमो रथिभ्यो अरथेभ्यः च वो नमो,
नमः क्षत्तृभ्यः सङ्ग्रहीतृभ्यः च वो नमो,
नमो महद्भ्यो अर्भकेभ्यः च वो नमः ॥26॥

811. नमः तक्षभ्यो रथकारेभ्यः च वो नमो नमः,
कुलालेभ्यः कर्मारेभ्यः च वो नमो नमो,
निषादेभ्यः पुञ्जिष्टेभ्यः च वो नमो नमः,
श्वनिभ्यो मृगयुभ्यः च वो नमः ॥27॥

(188) सूक्त 6

812. नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यः च,
वो नमो नमो भवाय रुद्राय च,
नमः शर्वाय च पशुपतये च,
नमो नीलग्रीवाय च, शितिकण्ठाय च ॥28 ॥

813. नमः कपर्दिने च व्युप्तकेशाय च,
नमः सहस्त्र अक्षाय च शतधन्वने च,
नमो गिरिशयाय च शिपिविष्टाय च,
नमो मीढुष्टमाय च इषुमते च ॥29 ॥

814. नमो ह्रस्वाय च वामनाय च,
नमो बृहते च वर्षीयसे च,
नमो वृद्धाय च सवृधे च,
नमो अग्र्याय च प्रथमाय च ॥30 ॥

815. नम आशवे च अजिराय च,
नमः शीघ्र्याय च शीभ्याय च,
नम ऊर्म्याय च अवस्वन्याय च,
नमो नादेयाय च द्वीप्याय च ॥31 ॥

(189) सूक्त 7

816. नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च,
नमः पूर्वजाय च अपरजाय च,
नमो मध्यमाय च अपगल्भाय च,
नमो जघन्याय बुध्न्याय च ॥32 ॥

817. नमः सोभ्याय च प्रतिसर्य्याय च,
नमो याम्याय च क्षेम्याय च,
नमः श्लोक्याय च अवसान्याय च,
नम ऊर्वर्याय च खल्याय च ॥33 ॥

818. नमो वन्याय च कक्ष्याय च,
नमः श्रवाय च प्रतिश्रवाय च,
नम आशुषेणाय च आशु-रथाय च,
नमः शूराय च अवभेदिने च ॥34 ॥

819. नमो बिल्मिने च कवचिने च,
नमो वर्मिणे च वरुथिने च,
नमः श्रुताय च श्रुत-सेनाय च,
नमो दुन्दुभ्याय च आहनन्याय च ॥35 ॥

(190) सूक्त 8

820. नमो धृष्णवे च प्रमृशाय च,
नमो निषङ्गिणे च इषुधिमते च,
नमः तीक्ष्ण इषवे च आयुधिने च,
नमः स्वायुधाय च सुधन्वने च ॥36॥

821. नमः स्रुत्याय च पथ्याय च,
नमः काट्याय च नीप्याय च,
नमः कुल्याय च सरस्याय च,
नमो नादेयाय च वैशन्ताय च ॥37॥

822. नमः कूप्याय च अवट्याय च,
नमो वीध्र्याय च आ-तप्याय च,
नमो मेघ्याय च विद्युत्याय च,
नमो वर्ष्याय च अवर्ष्याय च ॥38॥

823. नमो वात्याय च रेष्म्याय च,
नमो वास्तव्याय च वास्तुपाय च,
नमः सोमाय च रुद्राय च,
नमः ताम्राय च अरुणाय च ॥39॥

824. नमः शङ्गवे च पशुपतये च,
नम उग्राय च भीमाय च,
नमो अग्रेबधाय च दूरेबधाय च,
नमो हन्त्रे च हनीयसे च,
नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यो नमः ताराय ॥40॥

(191) सूक्त 9

825. नमः शम्भवाय च मयो भवाय च,
नमः शङ्कराय च मयस्कराय च,
नमः शिवाय च शिव तराय च ॥41॥

826. नमः पार्याय च अवार्याय च,
नमः प्रतरणाय च उत् तरणाय च,
नमः तीर्थ्याय च कूल्लाय च,
नमः शष्प्याय च फेन्याय च ॥42॥

827. नमः सिकत्याय च प्रवाह्याय च,
नमः किंशिलाय च क्षयणाय च,
नमः कपर्दिने च पुलस्तये च,
नम इरिण्याय च प्रपथ्याय च ॥43॥

828. नमो व्रज्याय च गोष्ठ्याय च,
नमः तल्प्याय च गेह्याय च,
नमो हृदय्याय च निवेष्याय च,
नमः काट्याय च गह्वरेष्ठाय च ॥44॥

829. नमः शुष्क्याय च हरित्याय च,
नमः पांसव्याय च रजस्याय च,
नमो लोप्याय च उलप्याय च,
नम ऊर्व्याय च सूर्व्याय च ॥45॥

830. नमः पर्णाय च पर्णशदाय च,
नम उद्गुरमाणाय च अभिघ्नते च,
नम आखिदते च प्रखिदते च,
नम इषुकृद्भ्यो धनुष्कृद्भ्यः च वो नमो,
नमो वः किरिकेभ्यो देवानाम्,
हृदयेभ्यो नमो विचिन्वत्केभ्यो,
नमो विक्षिणत्केभ्यो नम आनिर्हतेभ्यः ॥46॥

(192) सूक्त 10

831. द्रापे अन्धसः पते,
दरिद्र नील लोहित।
आसाम् प्र जानाम् एषाम् पशूनाम्,
मा भेः मा रोङ् मो च,
नः किम् चन आममत् ॥47॥

832. इमाः रुद्राय तवसे कपर्दिने,
क्षयद्वीराय प्र भरामहे मतीः।
यथा शम् असत् द्विपदे चतुष्पदे,
विश्वम् पुष्टम् ग्रामे अस्मिन् अनातुरम् ॥48॥

833. या ते रुद्र शिवा तनूः,
शिवा विश्वाहा भेषजी ॥
शिवा रुतस्य भेषजी,
तया नो मृड जीवसे ॥49॥

834. परि नो रुद्रस्य हेतिः वृणक्तु,
परि त्वेषस्य दुः मतिः अघायोः।
अव स्थिरा मघवद्भ्यः तनुष्व,
मीढ्वः तोकाय तनयाय मृड ॥50॥

835. मीढुष्टम् शिवतम,
शिवो नः सुमना भव।
परमे वृक्ष आयुधम् निधाय,
कृत्तिम वसान आ चर,
पिनाकम् बिभ्रत् आ गहि ॥51॥

(193) सूक्त 11

836. विकिरिद्र विलोहित,
नमः ते अस्तु भगवः।
याः ते सहस्त्रम् हेतयो,
अन्यम् अस्मत् नि वपन्तु ताः ॥52॥

837. सहस्राणि सहस्रशो,
बाह्वोः तव हेतयः।
तासाम् ईशानो भग-वः,
पराचीना मुखा कृधि ॥53॥

838. असंख्याता सहस्राणि,
ये रुद्रा अधि भूम्याम्।
तेषाम् सहस्र-योजने,
अव धन्वानि तन्मसि ॥54॥

839. अस्मिन् महति अर्णवे,
अन्तरिक्षे भवा अधि।
तेषाम् सहस्र-योजने,
अव धन्वानि तन्मसि ॥55॥

(194) सूक्त 12

840. नीलग्रीवाः शितिकण्ठा,
दिवम् रुद्रा उपश्रिताः।
तेषाम् सहस्रयोजने,
अव धन्वानि तन्मसि ॥56॥

841. नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः,
शर्वा अधः क्षमाचराः।
तेषाम् सहस्रयोजने,
अव धन्वानि तन्मसि ॥57॥

842. ये वृक्षेषु शष्पिञ्जरा,
नीलग्रीवा विलोहिताः।
तेषाम् सहस्र-योजने,
अव धन्वानि तन्मसि ॥58॥

843. ये भूतानाम् अधिपतयो,
विशिखासः कपर्दिनः।
तेषाम् सहस्र-योजने,
अव धन्वानि तन्मसि ॥59॥

(195) सूक्त 13

844. ये पथाम् पथिरक्षय,
ऐलबृदा आयुः युधः।
तेषाम् सहस्र-योजने,
अव धन्वानि तन्मसि ॥60॥

845. ये तीर्थानि प्र चरन्ति,
सृकाहस्ता निषङ्गिणः।
तेषाम् सहस्र-योजने,
अव धन्वानि तन्मसि ॥61॥

846. ये अन्नेषु वि विध्यन्ति,
पात्रेषु पिबतो जनान्।
तेषाम् सहस्र-योजने,
अव धन्वानि तन्मसि ॥62॥

847. य एतावन्तः च भूयांसः च,
दिशो रुद्रा वि तस्थिरे।
तेषाम् सहस्र-योजने,
अव धन्वानि तन्मसि ॥63॥

(196) सूक्त 14

848. नमो अस्तु रुद्रेभ्यो ये दिवि,
येषाम् वर्षम् इषवः।
तेभ्यो दश प्राचीः दश दक्षिणा,
दश प्रतीचीः दशो उदीचीः दश उर्ध्वाः।
तेभ्यो नमो अस्तु,
ते नो अवन्तु ते नो मृडयन्तु,
ते यम् द्विष्मो यः च नो द्वेष्टि,
तम् एषाम् जम्भे दध्मः ॥64॥

849. नमो अस्तु रुद्रेभ्यो ये अन्तरिक्षे,
येषाम् वात इषवः।
तेभ्यो दश प्राचीः दश दक्षिणा,
दश प्रतीचीः दश उदीचीः दश उर्ध्वाः।
तेभ्यो नमो अस्तु,
ते नो अवन्तु ते नो मृडयन्तु,
ते यम् द्विष्मो यः च नो द्वेष्टि,
तम् एषाम् जम्भे दध्मः ॥65॥

850. नमो अस्तु रुद्रेभ्यो ये पृथिव्याम्,
येषाम् अन्नम् इषवः।
तेभ्यो दश प्राचीः दश दक्षिणा,
दश प्रतीचीः दश उदीचीः दश उर्ध्वाः।
तेभ्यो नमो अस्तु,
ते नो अवन्तु ते नो मृडयन्तु,
ते यम् द्विष्मो यः च नो द्वेष्टि,
तम् एषाम् जम्भे दध्मः ॥66॥

इति षोडशो अध्यायः

ॐ

सप्तदशः अध्यायः

(197) सूक्त 1

851. अश्मन् ऊर्जम् पर्वते शिश्रियाणाम् अद्भ्य,
ओषधीभ्यो वनस्पतिभ्यो अधि सम् भृतम् पयः।
ताम् न इषम् ऊर्जम् धत्त मरुतः सम् रराणा,
अश्मन् ते क्षुत् मयि त ऊर्क,
यम् द्विष्मः तम् ते शुगृच्छतु ॥1॥

852. इमा मे अग्ने इष्टका, धेनवः सन्तु एका च,
दश च दश च शतम् च शतम् च,
सहस्रम् च सहस्रम् च अयुतम् च अयुतम् च,
नियुतम् च नियुतम् च प्र-युतम् च,
अर्बुदम् च नि अर्बुदम् च,
समुद्रः च मध्यम् च अन्तः च परार्द्धः च,
एता मे अग्न इष्टका,
धेनवः सन्तु अमुत्र अमुष्मिन् लोके ॥2॥

(198) सूक्त 2

853. ऋतवः स्थ ऋतावृध,
ऋतुष्ठाः स्थ ऋता-वृधः।
घृतश्चुतो मधुश्चुतो विराजो,
नाम काम-दुघा अक्षीयमाणाः ॥3॥

854. समुद्रस्य त्वा अवकया,
अग्ने परि व्ययामसि।
पावको अस्मभ्यम् शिवो भव ॥4॥

855. हिमस्य त्वा जरायुणा,
अग्ने परि व्ययामसि।
पावको अस्मभ्यम् शिवो भव ॥5॥

856. उप ज्मन् उप वेतसे,
अव तर नदीषु आ।
अग्ने पित्तम् अपाम् असि,
मण्डूकि ताभिः आ गहि,
सा इमम् नो यज्ञम्,
पावक-वर्णम् शिवम् कृधि ॥6॥

(199) सूक्त 3

857. अपाम् इदम् नि अयनम्,
समुद्रस्य निवेशनम्।
अन्यान् ते अस्मत् तपन्तु हेतयः,
पावको अस्मभ्यम् शिवो भव ॥7॥

858. अग्ने पावक रोचिषा,
मन्द्रया देव जिह्व्या।
आ देवान् वक्षि यक्षि च ॥8॥

859. स नः पावक दीदिवो,
अग्ने देवान् इह आ वह।
उप यज्ञम् हविः च नः ॥9॥

860. पावकया यः चितयन्त्या कृपा,
क्षामन् रुरुच उषसो न भानुना।
तूर्वन् न यामन् एतशस्य नु रण,
आ यो घृणे न ततृषाणो अजरः ॥10॥

(200) सूक्त 4

861. नमः ते हरसे शोचिषे,
नमः ते अस्तु अर्चिषे।
अन्यान् ते अस्मत् तपन्तु हेतयः,
पावको अस्मभ्यम् शिवो भव ॥11॥

862. नृषदे वेट् अप्सुषदे वेट्,
बर्हिषदे वेट् वनसदे वेट् स्वर्विदे वेट् ॥12॥

863. ये देवा देवानाम् यज्ञिया यज्ञियानाम्,
संवत्सरीणम् उप भागम् आसते।
अहुत अदो हविषो यज्ञे अस्मिन्,
स्वयम् पिबन्तु मधुनो घृतस्य ॥13॥

864. ये देवा देवेषु अधि देव त्वम् आयन्,
ये ब्रह्मणः पुर एतारो अस्य।
येभ्यो न ऋते पवते धाम किम् चन,
न ते दिवो न पृथिव्या अधि स्नुषु ॥14॥

865. प्राणदा अपानदा,
व्यानदा वर्चोदा वरिवोदाः।
अन्यान् ते अस्मत् तपन्तु हेतयः,
पावको अस्मभ्यम् शिवो भव ॥15॥

(201) सूक्त 5

866. अग्निः तिग्मेन शोचिषा,
यासत् विश्वम् नि अत्रिणम्।
अग्निः नो वनते रयिम् ॥16॥

867. य इमा विश्वा भुवनानि जुह्वत्,
ऋषिः होता नि असीदत् पिता नः।
स आशिषा द्रविणम् इच्छमानः,
प्रथमच्छत् अवरान् आ विवेश ॥17॥

868. किम् स्वित् आसीत् अधिष्ठानम्,
आ-रम्भणम् कतमत् स्वित् कथा आसीत्।
यतो भूमिम् जनयन् विश्वकर्मा,
वि द्याम और्णोत् महिना विश्व चक्षाः ॥18॥

869. विश्वतः चक्षुः उत विश्वतो मुखो,
विश्वतो बाहुः उत विश्वः पात्।
सम् बाहुभ्याम् धमति सम् पतत्रैः,
द्यावाभूमी जनयन् देव एकः ॥19॥

(202) सूक्त 6

870. किम् स्वित् वनम् क उ स वृक्ष,
आस यतो द्यावापृथिवी निष्टतक्षुः।
मनीषिणो मनसा पृच्छत इत् उ तत्,
यत् अध्यतिष्ठत् भुवनानि धारयन् ॥20॥

871. या ते धामानि परमाणि या अवमा,
या मध्यमा विश्वकर्मन् उत इमा।
शिक्षा सखिभ्यो हविषि स्वधावः,
स्वयम् यजस्व तन्वम् वृधानः ॥21॥

872. विश्वकर्मन् हविषा वावृधान,
स्वयम् यजस्व पृथिवीम् उत द्याम्।
मुह्यन्तु अन्ये अभितः सपत्ना,
इह अस्माकम् मघवा सूरिः अस्तु ॥22॥

873. वाचस्पति विश्वकर्माणम् ऊतये,
मनो जुवम् वाजे अद्या हुवेम।
स नो विश्वानि हवनानि जोष,
द्विश्व शम्भूः अवसे साधुकर्मा ॥23॥

(203) सूक्त 7

874. विश्वकर्मन् हविषा वर्द्धनेन,
त्रातारम् इन्द्रम् अकृणोः अवध्यम्।
तस्मै विशः समनमन्त पूर्वीः,
अयम् उग्रो विहव्यो यथासत् ॥24॥

875. चक्षुषः पिता मनसा हि धीरो,
घृतम् एने अजनत् नम्नमाने।
यदा इत् अन्ता अददृहन्त पूर्व,
आत् इत् द्यावापृथिवी अप्रथेताम् ॥25॥

876. विश्वकर्मा विमना आत् विहाया,
धाता विधाता परमा उत सम् दृक्।
तेषाम् इष्टानि सम् इषा मदन्ति,
यत्रा सप्तऋषीन् पर एकम् आहुः ॥26॥

877. यो नः पिता जनिता यो विधाता,
धामानि वेद भुवनानि विश्वा।
यो देवानाम् नामधा एक एव तम्,
सम्-प्रश्नम् भुवना यन्ति अन्या ॥27॥

(204) सूक्त 8

878. त आ अयजन्त द्रविणम् सम् अस्मा,
ऋषयः पूर्वे जरितारो न भूना।
असूर्ते सूर्ते रजसि निषत्ते,
ये भूतानि समकृण्वन् इमानि ॥28॥

879. परो दिवा पर एना पृथिव्या,
परो देवेभिः असुरैः यत् अस्ति।
कम् स्वित् गर्भम् प्रथमम् दध्र आपो,
यत्र देवाः सम् अपश्यन्त पूर्वे ॥29॥

880. तम् इत् गर्भम् प्रथमम् दध्र आपो,
यत्र देवाः सम् अगच्छन्त विश्वे।
अजस्य नाभौ अधि एकम् अर्पितम्,
यस्मिन् विश्वानि भुवनानि तस्थुः ॥30॥

881. न तम् विदाथ य इमा जजान,
अन्यत् युष्माकम् अन्तरम् बभूव।
नीहारेण प्रावृता जल्प्या च,
असुतृप उक्थशासः चरन्ति ॥31॥

(205) सूक्त 9

882. विश्वकर्मा हि अजनिष्ट देव आत्,
इत् गन्धर्वो अभवत् द्वितीयः।
तृतीयः पिता जनिता ओषधीनाम्,
अपाम् गर्भम् वि अदधात् पुरुत्रा ॥32॥

883. आशुः शिशानो वृषभो न भीमो,
घनाघनः क्षोभणः चर्षणीनाम्।
सम् क्रन्दनो अनिमिष एकवीरः,
शतम् सेना अजयत् साकम् इन्द्रः ॥33॥

884. सम् क्रन्दनेन अनि मिषेण जिष्णुना,
युत्कारेण दुः च्यवनेन धृष्णुना।
तत् इन्द्रेण जयत तत् सहध्वम्,
युधो नर इषुहस्तेन वृष्णा ॥34॥

885. स इषु-हस्तैः स निषङ्गिभिः वशी,
सम् स्रष्टा स युध इन्द्रो गणेन।
सम् सृष्ट जित् सोम-पा बाहु-शर्धी,
उग्र-धन्वा प्रति हिताभिः अस्ता ॥35॥

(206) सूक्त 10

886. बृहस्पते परि दीया रथेन,
रक्षोहा अमित्रान् अपबाधमानः।
प्रभञ्जन् सेनाः प्रमृणो युधा जयन्,
अस्माकम् एधि अविता रथानाम् ॥36॥

887. बलविज्ञायः स्थविरः प्रवीरः,
सहस्वान् वाजी सहमान उग्रः।
अभिवीरो अभिसत्वा सहोजा जैत्रम्,
इन्द्र रथम् आ तिष्ठ गोवित् ॥37॥

888. गोत्रभिदम् गोविदम् वज्रबाहुम्,
जयन्तम् अज्म प्रमृणन्तम् ओजसा।
इमम् सजाता अनु वीरयध्वम्,
इन्द्रम् सखायो अनु सम् रभद्धम् ॥38॥

889. अभि गोत्राणि सहसा गाहमानो,
अदयो वीरः शतमन्युः इन्द्रः।
दुः च्यवनः पृतनाषाट् अयुध्यो,
अस्माकम् सेना अवतु प्र युत् सु ॥39॥

(207) सूक्त 11

890. इन्द्र आसाम् नेता बृहस्पतिः,
दक्षिणा यज्ञः पुर एतु सोमः।
देव-सेनानाम् अभि-भञ्जतीनाम्,
जयन्तीनाम् मरुतो यन्तु अग्रम् ॥40॥

891. इन्द्रस्य वृष्णो वरुणस्य राज्ञ,
आदित्यानाम् मरुताम् शर्ध उग्रम्।
महामनसाम् भुवन च्यवानाम्,
घोषो देवानाम् जयताम् उत् अस्थात् ॥41॥

892. उत् हर्षय मघवन् आयुधानि,
उत् सत्वनाम् मामकानाम् मनांसि।
उत् वृत्रहन् वाजिनाम् वाजिनानि,
उत् रथानाम् जयताम् यन्तु घोषाः ॥42॥

893. अस्माकम् इन्द्रः सम् ऋतेषु ध्वजेषु,
अस्माकम् या इषवः ता जयन्तु।
अस्माकम् वीरा उत्तरे भवन्तु,
अस्मान् उ देवा अवता हवेषु ॥43॥

894. अमीषाम् चित्तम् प्रति लोभयन्ती,
गृहाण अङ्गानि अप्वे परा इहि।
अभि प्र इहि निः दह हृत् सु शोकैः,
अन्धेन अमित्राः तमसा सचन्ताम् ॥44॥

(208) सूक्त 12

895. अवसृष्टा परा पत,
शरव्ये ब्रह्मसंशिते।
गच्छ अमित्रान् प्र पद्यस्व मा,
अमीषाम् कम् चन उत् शिषः ॥45॥

896. प्र इता जयता नर,
इन्द्रो वः शर्म्म यच्छतु।
उग्रा वः सन्तु बाहवो,
अनाधृष्या यथा असथ ॥46॥

897. असौ या सेना मरुतः परेषाम्,
अभि आ एति न ओजसा स्पर्द्धमाना।
ताम् गूहत तमसा अपव्रतेन,
यथा अमी अन्यो अन्यम् न जानन् ॥47॥

898. यत्र बाणाः सम् पतन्ति,
कुमारा विशाखा इव।
तत् न इन्द्रो बृहस्पतिः,
अदितिः शर्म्म यच्छतु,
विश्वाहा शर्म्म यच्छतु ॥48॥

899. मर्माणि ते वर्मणा छादयामि,
सोमः त्वा राजा अमृतेन अनु वस्ताम्।
उरोः वरीयो वरुणः ते कृणोतु,
जयन्तम् त्वा अनु देवा मदन्तु ॥49॥

(209) सूक्त 13

900. उत् एनम् उत्तराम्,
नय अग्ने घृतेन आहुत।
रायः पोषेण सम् सृज,
प्रजया च बहुम् कृधि ॥50॥

901. इन्द्र इमम् प्रतराम् नय,
सजातानाम् असत् वशी।
सम् एनम् वर्चसा सृज,
देवानाम् भागदा असत् ॥51॥

902. यस्य कुर्मो गृहे हविः,
तम् अग्ने वर्द्धया त्वम्।
तस्मै देवा अधि ब्रुवन्,
अयम् च ब्रह्मणः पतिः ॥52॥

903. उत् उ त्वा विश्वे देवा,
अग्ने भरन्तु चित् इत् अभिः।
स नो भव शिवः त्वम्,
सु प्रतीको विभावसुः ॥53॥

(210) सूक्त 14

904. पञ्च दिशो दैवीः यज्ञम् अवन्तु,
देवीः अप अमतिम् दुः मतिम् बाधमानाः।
रायः पोषे यञ्जपतिम् आभजन्ती,
रायः पोषे अधि यज्ञो अस्थात् ॥54॥

905. सम् इद्धे अग्नौ अधि मामहान,
उक्थ पत्र ईड्यो गृभीतः।
तप्तम् घर्मम् परिगृह्य अयजन्त,
ऊर्जा यत् यज्ञम् अयजन्त देवाः ॥55॥

906. दैव्याय धर्त्रे जोष्ट्रे देवश्रीः,
श्रीमनाः शतपयाः।
परिगृह्य देवा यज्ञम् आयन्,
देवा देवेभ्यो अर्ध्वयन्तो अस्थुः ॥56॥

907. वीतम् हविः शमितम् शमिता,
यजध्यै तुरीयो यज्ञो यत्र हव्यम् एति।
ततो वाका आशिषो नो जुषन्ताम्॥57॥

(211) सूक्त 15

908. सूर्य-रश्मिः हरिकेशः पुरस्तात्,
सविता ज्योतिः उत् अयान् अजस्त्रम्।
तस्य पूषा प्रसवे याति विद्वान्,
सम् पश्यन् विश्वा भुवनानि गोपाः॥58॥

909. विमान एष दिवो मध्य आस्त,
आपप्रिवान् रोदसी अन्तरिक्षम्।
स विश्वाचीः अभि चष्टे घृताचीः,
अन्तरा पूर्वम् अपरम् च केतुम्॥59॥

910. उक्षा समुद्रो अरुणः सुपर्णः,
पूर्वस्य योनिम् पितुः आ विवेश।
मध्ये दिवो निहितः पृश्निः अश्मा,
वि चक्रमे रजसः पाति अन्तौ॥60॥

911. इन्द्रम् विश्वा अवीवृधन्,
समुद्र व्यचसम् गिरः।
रथ इत मम् रथीनाम्,
वाजानाम् सत् पतिम् पतिम्॥61॥

912. देवहूः यज्ञ आ च वक्षत,
सुम्नहूः यज्ञ आ च वक्षत्।
यक्षत् अग्निः देवो,
देवान् आ च वक्षत्॥62॥

(212) सूक्त 16

913. वाजस्य मा प्रसव,
उद्-ग्राभेण उत् अग्रभीत्।
अधा सपत्नान् इन्द्रो मे,
निग्राभेण अधरान् अकः॥63॥

914. उद्ग्राभम् च निग्राभम्,
च ब्रह्म देवा अवीवृधन्।
अधा सपत्नान् इन्द्राग्नी मे,
विषूचीनान् वि अस्यताम्॥64॥

915. क्रमध्वम् अग्निना नाकम्,
उख्यम् हस्तेषु बिभ्रतः।
दिवः पृष्ठम् स्वः गत्वा,
मिश्रा देवेभिः आध्वम्॥65॥

(213) सूक्त 17

916. प्राचीम् अनु प्रदिशम् प्र इहि विद्वान्,
अग्नेः अग्ने पुरो अग्निः भव इह।
विश्वा आशा दीद्यानो वि भाहि,
ऊर्जम् नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे।66॥

917. पृथिव्या अहम् उत्,
अन्तरिक्षम् आ अरुहम्,
अन्तरिक्षात् दिवम् आ अरुहम्।
दिवो नाकस्य पृष्ठात्,
स्वः ज्योतिः अगाम् अहम्॥67॥

918. स्वः यन्तो न अप ईक्षन्त,
आ द्याम् रोहन्ति रोदसी।
यज्ञम् ये विश्वतो धारम्,
सुविद्वांसो वि तेनिरे॥68॥

919. अग्ने प्र इहि प्रथमो देवयताम्,
चक्षुः देवानाम् उत मर्त्यानाम्।
इयक्षमाणा भृगुभिः सजोषाः,
स्वः यन्तु यजमानाः स्वस्ति॥69॥

920. नक्त उषासा समनसा विरूपे,
धापयेते शिशुम् एकम् समीची।
द्यावाक्षामा रुक्मो अन्तः वि भाति,
देवा अग्नि धारयन् द्रविणोदाः॥70॥

921. अग्ने सहस्त्र अक्ष शतमूर्द्धन्,
शतम् ते प्राणाः सहस्त्रम् वि आनाः।
त्वम् साहस्त्रस्य राय ईशिषे,
तस्मै ते विधेम वाजाय स्वाहा॥71॥

(214) सूक्त 18

922. सुपर्णो असि गरुत्मान्,
पृष्ठे पृथिव्याः सीद।
भासा अन्तरिक्षम् आ पृण,
ज्योतिषा दिवम् उत स्तभान,
तेजसा दिश उत् दृंह॥72॥

923. आजुह्वानः सु प्रतीकः पुरस्तात्,
अग्ने स्वम् योनिम् आ सीद साधुया।
अस्मिन् सधस्थे अध्यु उत्तर अस्मिन्,
विश्वे देवा यजमानः च सीदत॥73॥

924. ताम् सवितुः वरेण्यस्य चित्राम्,
आ अहम् वृणे सु-मतिम् विश्व जन्याम्।
याम् अस्य कण्वः अदुहत् प्र-पीनाम्,
सहस्त्र-धाराम् पयसा महीम् गाम्॥74॥

925. विधेम ते परमे जन्मन् अग्ने,
विधेम स्तोमैः अवरे सधस्थे।
यस्मात् योनेः उदारिथा यजे,
तम् प्र त्वे हवींषि जुहुरे समिद्धे ॥75॥

(215) सूक्त 19

926. प्र इद्धो अग्ने दीदिहि,
पुरो नो अजस्रया सूर्म्या यविष्ठ।
त्वाम् शश्वन्त उप यन्ति वाजाः ॥76॥

927. अग्ने तम् अद्य अश्व न स्तोमैः,
क्रतुम् भद्रम् हृदि स्पृशम्।
ऋध्यामा त ओहैः ॥77॥

928. चित्तिम् जुहोमि मनसा घृतेन यथा,
देवा इह आगमन् वीतिहोत्रा ऋतावृधः।
पत्ये विश्वस्य भूमनो जुहोमि,
विश्व कर्मणे विश्वाहा अदाभ्यम् हविः ॥78॥

929. सप्त ते अग्ने समिधः सप्त जिह्वाः,
सप्त ऋषयः धाम प्रियाणि।
सप्त होत्राः सप्तधा त्वा यजन्ति,
सप्त योनीः आ पृणस्व घृतेन स्वाहा ॥79॥

(216) सूक्त 20

930. शुक्र ज्योतिः च चित्र ज्योतिः,
च सत्य ज्योतिः च ज्योतिष्मान् च।
शुक्रः च ऋतपाः च अति अंहाः ॥80॥

931. ईदृङ् च अन्यादृङ् च,
सदृङ् च प्रतिसदृङ् च।
मितः च सम् मितः च सभराः ॥81॥

932. ऋतः च सत्यः च,
ध्रुवः च धरुणः च।
धर्ता च विधर्ता च विधारयः ॥82॥

933. ऋतजित् च सत्य जित् च,
सेन जित् च सुषेणः च।
अन्तिमित्रः च दूरे अमित्रः च गणः ॥83॥

934. ईदृक्षास एतादृक्षास ऊ षु णः,
स-दृक्षासः प्रतिसदृक्षास आ इतन।
मितासः च सम्मितासो नो अद्य,
सभरसो मरुतो यज्ञे अस्मिन् ॥84॥

935. स्वतवान् च प्रघासी च,
साम तपनः च गृहमेधी च।
क्रीडी च शाकी च उत् जेषी ॥85॥

(217) सूक्त 21

936. इन्द्रम् दैवीः विशो मरुतो,
अनुवर्त्मानो अभवन्,
यथा इन्द्र दैवीः विशो मरुतो,
अनुवर्त्मानो अभवन्।
एवम् इमम् यजमानम्,
दैवीः च विशो मानुषीः च,
अनुवर्त्मानो भवन्तु ॥86॥

937. इमम् स्तनम् ऊर्जस्वन्तम् धय,
अपाम् प्रपीनम् अग्ने सरिरस्य मध्ये।
उत्सम् जुषस्व मधुमन्तम् अर्वन्,
समुद्रियम् सदनम् आ विशस्व ॥87॥

938. घृतम् मिमिक्षे घृतम् अस्य योनिः,
घृते श्रितो घृतम् ऊ अस्य धाम।
अनुष्वधम् आ वह मादयस्व,
स्वाहाकृतम् वृषभ वक्षि हव्यम् ॥88॥

939. समुद्रात् ऊर्मिः मधुमान् उत् आरत्,
उप अंशुना सम् अमृतत्वम् आनट्।
घृतस्य नाम गुह्यम् यत् अस्ति,
जिह्वा देवानाम् अमृतस्य नाभिः ॥89॥

940. वयम् नाम प्र ब्रवामा घृतस्य,
अस्मिन् यज्ञे धारयामा नमोभिः।
उप ब्रह्मा शृणवत् शस्यमानम्,
चतुः शृङ्गो अवमीत् गौर एतत् ॥90॥

(218) सूक्त 22

941. चत्वारि शृङ्गा त्रयो अस्य पादा,
द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य।
त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति,
महो देवो मर्त्यान् आ विवेश ॥91॥

942. त्रिधा हितम् पणिभिः गुह्यमानम्,
गवि देवासो घृतम् अनु अविन्दन्।
इन्द्र एकम् सूर्य एकम् जजान,
वेनात् एकम् स्वधया निः ततक्षुः ॥92॥

943. एता अर्षन्ति हृद्यात् समुद्रात्,
शतव्रजा रिपुणा न अवचक्षे।
घृतस्य धारा अभि चाकशीमि,
हिरण्ययो वेतसो मध्य आसाम् ॥93॥

944. सम्यक् स्रवन्ति सरितो न धेना,
अन्तः हृदा मनसा पूयमानाः।
एते अर्षन्ति ऊर्मयो घृतस्य,
मृगा इव क्षिपणोः ईषमाणाः ॥94॥

945. सिन्धोः इव प्राध्वने शूघनासो,
वात-प्रमियः पतयन्ति यह्वाः।
घृतस्य धारा अरुषो न वाजी,
काष्ठा भिन्दन् ऊर्मिभिः पिन्वमानः ॥95॥

(219) सूक्त 23

946. अभि प्रवन्त समना इव योषाः,
कल्याण्यः स्मयमानासो अग्निम्।
घृतस्य धाराः समिधो नसन्त,
ता जुषाणो हर्यति जातवेदाः ॥96॥

947. कन्या इव वहतुम् एतवा उ,
अञ्जि अञ्जाना अभि चाकशीभि।
यत्र सोमः सूयते यत्र यज्ञो,
घृतस्य धारा अभि तत् पवन्ते॥97॥

948. अभि अर्षत सुष्टुतिम् गव्यम् आजिम्,
अस्मासु भद्रा द्रविणानि धत्त।
इमम् यज्ञम् नयत देवता नो,
घृतस्य धारा मधुमत् पवन्ते॥98॥

49. धामन् ते विश्वम् भुवनम् अधि श्रितम्,
अन्तः समुद्रे हृदि अन्तः आयुषि।
अपाम् अनीके समिथे य आभृतः,
तम् अश्याम् मधुमन्तम् त ऊर्मिम्॥99॥

इति सप्तदशो अध्यायः

ॐ

अथ अष्टादशो अध्यायः

(220) सूक्त 1

950. वाजः च मे प्रसवः च मे,
प्रयतिः च मे प्रसितिः च मे,
धीतिः च मे क्रतुः च मे,
स्वरः च मे श्लोकः च मे,
श्रवः च मे श्रुतिः च मे,
ज्योतिः च मे स्वः च मे,
यज्ञेन कल्पन्ताम्॥1॥

951. प्राणः च मे अपानः च मे,
व्यानः च मे असुः च मे,
चितम् च म आधीतम् च मे,
वाक् च मे मनः च मे ,
चक्षुः च मे श्रोत्रम् च मे,
दक्षः च मे बलम् च मे,
यज्ञेन कल्पन्ताम्॥2॥

952. ओजः च मे सहः च म,
आत्मा च मे तनूः च मे,
शर्म च मे वर्म च मे,
अङ्गानि च मे अस्थीनि च मे,
परूंषि च मे शरीराणि च म,
आयुः च मे जरा च मे,
यज्ञेन कल्पन्ताम्॥3॥

953. ज्यैष्ठ्यम् च मे, आधिपत्यम् च मे,
मन्युः च मे भामः च मे,
अमः च मे अम्भः च मे,
जेमा च मे महिमा च मे,
वरिमा च मे प्रथिमा च मे,
वर्षिमा च मे द्राघिमा च मे,
वृद्धम् च मे वृद्धिः च मे,
यज्ञेन कल्पन्ताम्॥4॥

954. सत्यम् च मे श्रद्धा च मे,
जगत् च मे धनम् च मे,
विश्वम् च मे महः च मे,
क्रीडा च मे मोदः च मे,
जातम् च मे जनिष्यमाणम् च मे,
सूक्तम् च मे सुकृतम् च मे,
यज्ञेन कल्पन्ताम्॥5॥

(221) सूक्त 2

955. ऋतम् च मे अमृतम् च मे,
अयक्ष्म् च मे अनामयत् च मे,
जीवातुः च मे दीर्घायु त्वम् च मे,
अनमित्रम् च मे अभयम् च मे,
सुखम् च मे शयनम् च मे,
सूषाः च मे सुदिनम् च मे,
यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥6॥

956. यन्ता च मे धर्ता च मे,
क्षेमः च मे धृतिः च मे,
विश्वम् च मे महः च मे,
सम् वित् च मे ज्ञात्रम् च मे,
सूः च मे प्रसूः च मे,
सीरम् च मे लयः च मे,
यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥7॥

957. शम् च मे मयः च मे,
प्रियम् च मे अनुकामः च मे,
कामः च मे सौमनसः च मे,
भगः च मे द्रविणम् च मे,
भद्रम् च मे श्रेयः च मे,
वसीयः च मे यशः च मे,
यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥8॥

958. ऊर्क् च मे सूनृता च मे,
पयः च मे रसः च मे,
घृतम् च मे मधु च मे,
सग्धिः च मे सपीतिः च मे,
कृषिः च मे वृष्टिः च मे,
जैत्रम् च मे औद्भिद्यम् च मे,
यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥9॥

959. रयिः च मे रायः च मे,
पुष्टम् च मे पुष्टिः च मे,
विभु च मे प्रभु च मे,
पूर्णम् च मे पूर्णतरम् च मे,
कुयवम् च मे अक्षितम् च मे,
अन्नम् च मे अक्षुित् च मे,
यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥10॥

(222) सूक्त 3

960. वित्तम् च मे वेद्यम् च मे,
भूतम् च मे भविष्यत् च मे,
सुगम् च मे सुपथ्यम् च म,
ऋद्धम् च म ऋद्धिः च मे,
क्लप्तम् च मे क्लप्तिः च मे,
मतिः च मे सुमतिः च मे,
यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥11॥

961. व्रीहयः च मे यवाः च मे,
माषाः च मे तिलाः च मे,
मुद्‌गाः च मे खल्वाः च मे,
प्रियङ्‌गवः च मे अणवः च मे,
श्यामाकाः च मे नीवाराः च मे,
गोधूमाः च मे मसूराः च मे,
यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥12॥

962. अश्मा च मे मृत्तिका च मे,
गिरयः च मे पर्वताः च मे,
सिकताः च मे वनस्पतयः च मे,
हिरण्यम् च मे अयः च मे,
श्यामम् च मे लोहम् च मे,
सीसम् च मे त्रपु च मे,
यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥13॥

963. अग्निः च म आपः च मे,
वीरुधः च म ओषधयः च मे,
कृष्टुपच्याः च मे अकृष्टपच्याः च मे,
ग्राम्याः च मे पशव आरण्याः च मे,
वित्तम् च मे वित्तिः च मे,
भूतम् च मे भूतिः च मे,
यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥14॥

964. वसु च मे वसतिः च मे,
कर्म च मे शक्तिः च मे,
अर्थः च म एमः च म,
इत्या च मे गतिः च मे,
यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥15॥

(223) सूक्त 4

965. अग्निः च म इन्द्रः च मे,
सोमः च म इन्द्रः च मे,
सविता च म इन्द्रः च मे,
सरस्वती च म इन्द्रः च मे,
पूषा च म इन्द्रः च मे,
बृहस्पतिः च म इन्द्रः च मे,
यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥16॥

966. मित्रः च म इन्द्रः च मे,
वरुणः च म इन्द्रः च मे,
धाता च म इन्द्रः च मे,
त्वष्टा च म इन्द्रः च मे,
मरुतः च म इन्द्रः च मे,
विश्वे च मे देवा इन्द्रः च मे,
यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥17॥

967. पृथिवी च म इन्द्रः च मे,
अन्तरिक्षम् च म इन्द्रः च मे,
द्यौः च म इन्द्रः च मे,
समाः च म इन्द्रः च मे,
नक्षत्राणि च म इन्द्रः च मे,
दिशः च म इन्द्रः च मे,
यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥18॥

968. अंशुः च मे रश्मिः च मे,
अदाभ्यः च मे अधिपतिः च म,
उपांशुः च मे अन्तर्यामः च म,
ऐन्द्रवायवः च मे मैत्रावरुणः च म,
आश्विनः च मे प्रति प्रस्थानः च मे,
शुक्रः च मे मन्थी च मे,
यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥19॥

(224) सूक्त 5

969. आग्रयणः च मे वैश्व-देवः च मे,
ध्रुवः च मे वैश्वानरः च म,
ऐन्द्राग्नः च मे महा-वैश्व-देवः च मे,
मरुत्वतीयाः च मे निष्केवल्यः च मे,
सावित्रः च मे सारस्वतः च मे,
पात्नीवतः च मे हारियोजनः च मे,
यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥20॥

970. स्रुचः च मे चमसाः च मे,
वायव्यानि च मे द्रोणकलशः च मे,
ग्रावाणः च मे अधिषवणे च मे,
पूतभृत् च म आधवनीयः च मे,
वेदिः च मे बर्हिः च मे,
अवभृथः च मे स्वगाकारः च मे,
यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥21॥

971. अग्निः च मे घर्मः च मे,
अर्कः च मे सूर्यः च मे,
प्राणः च मे अश्वमेधः च मे,
पृथिवी च मे अदितिः च मे,
दितिः च मे द्यौः च मे,
अङ्गुलयः शक्करयो दिशः च मे,
यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥22॥

972. व्रतम् च म ऋतवः च मे,
तपः च मे संवत्सरः च मे,
अहोरात्रे ऊर्वष्ठीवे, बृहत् रथन्तरे च मे,
यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥23॥

973. एका च मे तिस्त्रः च मे,
तिस्त्रः च मे पञ्च च मे,
पञ्च च मे सप्त च मे,
सप्त च मे नव च मे,
नव च म एकादश च म,
एकादश च मे त्रयोदश च मे,
त्रयोदश च मे पञ्चदश च मे,
पञ्चदश च मे सप्तदश च मे,
सप्तदश च मे नवदश च मे,
नवदश च म एकविंशतिः च म,
एकविंशतिः च मे त्रयोविंशतिः च मे,
त्रयोविंशतिः च मे पञ्चविंशतिः च मे,
पञ्चविंशतिः च मे सप्तविंशतिः च मे,
सप्तविंशतिः च मे नवविंशतिः च मे,
नवविंशतिः च मे एकत्रिंशत् च म,
एकत्रिंशत् च मे त्रयः त्रिंशत् च मे,
यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥24॥

(225) सूक्त 6

974. चतस्त्रः च मे अष्टौ च मे,
अष्टौ च मे द्वादश च मे,
द्वादश च मे षोडश च मे,
षोडश च मे विंशतिः च मे,
विंशतिः च मे चतुः विंशतिः च मे,
चतुः विंशतिः च मे अष्टाविंशतिः च मे,
अष्टाविंशतिः च मे द्वात्रिंशत् च मे,
द्वात्रिंशत् च मे षट्त्रिंशत् च मे,
षट्त्रिंशत् च मे चत्वारिंशत् च मे,
चत्वारिंशत् च मे चतुः चत्वारिंशत् च मे,
चतुः चत्वारिंशत् च मे अष्टा चत्वारिंशत् च मे,
यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥25॥

975. त्र्यविः च मे त्र्यवी च मे,
दित्यवाट् च मे दित्यौही च मे,
पञ्च अविः च मे पञ्च अवी च मे,
त्रि वत्सः च मे त्रि-वत्सा च मे,
तुर्यवाट् च मे तुर्यौही च मे,
यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥26॥

976. षष्ठवाट् च मे पष्ठौही च मे,
उक्षा च मे वशा च म,
ऋषभः च मे वेहत् च मे,
अनड्वान् च मे धेनुः च मे,
यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥27॥

(226) सूक्त 7

977. वाजाय स्वाहा प्रसवाय स्वाहा,
पिजाय स्वाहा क्रतवे स्वाहा,
वसवे स्वाहा अहर्पतये स्वाहा,
अह्ने मुग्धाय स्वाहा,
मुग्धाय वैनम् शिनाय स्वाहा,
विनम् शिन आन्त्यायनाय स्वाहा,
आन्त्याय भौवनाय स्वाहा,
भुवनस्य पतये स्वाहा,
अधिपतये स्वाहा प्रजापतये स्वाहा ॥28॥

इयम् ते राट् मित्राय यन्ता असि,
यमन ऊर्जे त्वा वृष्ट्यै,
त्वा प्रजानाम् त्वा आधिपत्याय ॥28 क॥

(227) सूक्त 8

978. आयुः यज्ञेन कल्पताम्, प्राणो यज्ञेन कल्पताम्,
चक्षुः यज्ञेन कल्पताम्, श्रोतम् यज्ञेन कल्पताम्,
वाग् यज्ञेन कल्पताम्, मनो यज्ञेन कल्पताम्,
आत्मा यज्ञेन कल्पताम्, ब्रह्मा यज्ञेन कल्पताम्,
ज्योतिः यज्ञेन कल्पताम्, स्वः यज्ञेन कल्पताम्,
पृष्ठम् यज्ञेन कल्पताम् यज्ञो यज्ञेन कल्पताम् ॥29॥

स्तोमः च यजुः च ऋक् च,
साम च बृहत् च रथन्तरम् च।
स्वः देवा अगन्म आ अमृत आ अभूम्,
प्रजापतेः प्रजा अभूम् वेट् स्वाहा ॥29क॥

(228) सूक्त 9

979. वाजस्य नु प्रसवे मातरम् महीम्,
अदितिम् नाम वचसा करामहे।
यस्य आ मिदम् विश्वम् भुवनम् आ विवेश,
तस्य आ नो देवः सविता धर्म साविषत् ॥30॥

980. विश्वे अद्य मरुतो विश्व ऊती,
विश्वे भवन्तु अग्नयः समिद्धाः।
विश्वे नो देवा अवसा गमन्तु,
विश्वम् अस्तु द्रविणम् वाजो अस्मे ॥31॥

981. वाजो नः सप्त प्रदिशः,
चतस्रो वा परावतः।
वाजो नो विश्वैः देवैः,
धनसातौ इह अवतु॥32॥

982. वाजो नो अद्य प्र सुवाति दानम्,
वाजो देवान् ऋतुभिः कल्पयाति।
वाजो हि मा सर्ववीरम् जजान,
विश्वा आशा वाज पतिः जयेयम्॥33॥

983. वाजः पुरस्तात् उत मध्यतो,
नो वाजो देवान् हविषा वर्द्धयाति।
वाजो हि मा सर्ववीरम् चकार,
सर्वा आशा वाजपतिः भवेयम्॥34॥

(229) सूक्त 10

984. सम् मा सृजामि पयसा पृथिव्याः,
सम् मा सृजामि अद्भिः ओषधीभिः।
सो अहम् वाजम् सनेयम् अग्ने॥35॥

985. पयः पृथिव्याम् पय ओषधीषु,
पयो दिवि अन्तरिक्षे पयो धाः।
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥36॥

986. देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे अश्विनोः,
बाहुभ्याम् पूष्णो हस्ताभ्याम्।
सरस्वत्यै वाचो यन्तुः यन्त्रेण,
अग्नेः साम्राज्येन अभि सिञ्चामि॥37॥

987. ऋताषाट् ऋतधामा अग्निः गन्धर्वः,
तस्य ओषधयो अप्सरसो मुदो नाम।
स न इदम् ब्रह्म क्षत्रम् पातु,
तस्मै स्वाहा, वाट् ताभ्यः स्वाहा॥38॥

988. सम् हितो विश्वसामा सूर्यो गन्धर्वः,
तस्य मरीचयो अप्सरस आयुवो नाम।
स न इदम् ब्रह्म क्षत्रम् पातु,
तस्मै स्वाहा, वाट् ताभ्यः स्वाहा॥39॥

(230) सूक्त 11

989. सुषुम्णः सूर्यरश्मिः चन्द्रमा गन्धर्वः,
तस्य नक्षत्राणि अप्सरसः भेकुरयः नाम।
स न इदम् ब्रह्म क्षत्रम् पातु,
तस्मै स्वाहा वाट् ताभ्यः स्वाहा॥40॥

990. इषिरो विश्वव्यचाः वातः गन्धर्वः,
तस्य आपः अप्सरस ऊर्जः नाम।
स न इदम् ब्रह्म क्षत्रम् पातु,
तस्मै स्वाहा, वाट् ताभ्यः स्वाहा॥41॥

991. भुज्युः सुपर्णो यज्ञो गन्धर्वः,
तस्य दक्षिणा अप्सरस स्तावा नाम।
स न इदम् ब्रह्म क्षत्रम् पातु,
तस्मै स्वाहा, वाट् ताभ्यः स्वाहा ॥42॥

992. प्रजापतिः विश्वकर्मा मनो गन्धर्वः,
तस्य ऋक्सामान्य अप्सरस एष्टयो नाम।
स न इदम् ब्रह्म क्षत्रम् पातु,
तस्मै स्वाहा, वाट् ताभ्यः स्वाहा ॥43॥

993. स नो भुवनस्य पते,
प्रजा-पते यस्य त,
उपरि गृहा यस्य वा इह।
अस्मै ब्राह्मणे अस्मै क्षत्राय,
महि शर्म यच्छ स्वाहा ॥44॥

994. समुद्रो असि नभस्वान् आर्द्र दानुः,
शम्भूः मयो भूः अभि मा वाहि स्वाहा।
मारुतो असि मरुताम् गणः,
शम्भूः मयो भूः अभि मा वाहि स्वाहा।
अवस्यूः असि दुवस्वान्,
शम्भूः मयो भूः अभि मा वाहि स्वाहा ॥45॥

(231) सूक्त 12

995. याः ते अग्ने सूर्यो रुचो,
दिवमात् अन्वन्ति रश्मिभिः।
ता अभि नो अद्य सर्वाभी,
रुचे जनाय नः कृधि ॥46॥

996. या वो देवाः सूर्ये रुचो,
गोषु अश्वेषु या रुचः।
इन्द्राग्नी ताभिः सर्वाभी,
रुचम् नो धत्त बृहस्पते ॥47॥

997. रुचम् नो धेहि ब्राह्मणेषु,
रुचम् राजसु नः कृधि।
रुचम् विश्येषु शूद्रेषु,
मयि धेहि रुचा रुचम् ॥48॥

998. तत् त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानः,
तत् आ शास्ते यजमानो हर्विभिः।
अहेडमानो वरुण इह बोधि,
उरु-शंस मा न आयुः प्र मोषीः ॥49॥

999. स्वः ण घर्मः स्वाहा,
स्वः ण अर्कः स्वाहा,
स्वः ण शुक्रः स्वाहा,
स्वः ण ज्योतिः स्वाहा,
स्वः ण सूर्य स्वाहा ॥ 50 ॥

(232) सूक्त 13

1001. अग्निम् युनज्मि शवसा घृतेन,
दिव्यम् सुपर्णम् वयसा बृहन्तम्।
तेन वयम् गमेम ब्रध्नस्य विष्टपम्,
रुहाणा अधि नाकम् उत्तमम् ॥ 51 ॥

1001. इमौ ते पक्षौ अजरौ पतत्रिणौ,
याभ्याम् रक्षांसि अपहंसि अग्ने।
ताभ्यम् पतेम सुकृताम् लोकम् यत्र,
ऋषयः जग्मुः प्रथमजाः पुराणाः ॥ 52 ॥

1002. इन्दुः दक्षः श्येन ऋतावा,
हिरण्यपक्षः शकुनो भुरण्युः।
महान् सधस्थे ध्रुव आ निषत्तो,
नमस्ते अस्तु मा मा हिंसीः ॥ 53 ॥

1003. दिवो मूर्द्धा असि पृथिव्या,
नाभिः ऊर्क् अपाम् ओषधीनाम्।
विश्वायुः शर्म सप्रथा नमः पथे ॥ 54 ॥

(233) सूक्त 14

1004. विश्वस्य मूर्द्धन् अधि,
तिष्ठसि श्रितः समुद्रे,
ते हृदयम् अप्स आयुः,
अपो दत्त उदधिम् भिन्त।
दिवः पर्जन्यात् अन्तरिक्षात्,
पृथिव्याः ततो नो वृष्ट्या अव ॥ 55 ॥

1005. इष्टो यज्ञो भृगुभिः,
आशीर्दा वसुभिः।
तस्य न इष्टस्य प्रीतस्य,
द्रविण इह आ गमेः ॥ 56 ॥

1006. इष्टो अग्निः आहुतः,
पिपर्त्तु न इष्टम् हविः।
स्व गा इदम् देवेभ्यो नमः ॥ 57 ॥

1007. यत् आकूतात् सम् असुस्रोत्,
हृदो वा मनसो वा,
सम्भृतम् चक्षुषो वा।
तत् अनु प्रेत सुकृताम्,
उ लोकम् यत्र ऋषयो,
जग्मुः प्रथमजाः पुराणाः ॥ 58 ॥

(234) सूक्त 15

1008. एतम् सधस्थ परि ते ददामि,
यम् आवहात् शेव-धिम् जातवेदाः।
अनु आगन्ता यज्ञपतिः वो अत्र,
तम् स्म जानीत परमे व्योमन्॥59।

1009. एतम् जानाथ परमे व्योमन्,
देवाः सधस्था विद रूपम् अस्य।
यत् आगच्छात् पथिभिः देवयानैः,
इष्टापूर्ते कृणवाथ आविः अस्मै॥60॥

1010. उत् बुध्य स्व अग्ने प्रति जागृहि,
त्वम् इष्टापूर्ते सम् सृजेथामयम् च।
अस्मिन् सधस्थे अधि उत्तर अस्मिन्,
विश्वे देवा यजमानः च सीदत॥61॥

(235) सूक्त 16

1011. येन वहसि सहस्रम्,
येन अग्ने सर्ववेदसम्।
तेन इमम् यज्ञम् नो नय,
स्वः देवेषु गन्तवे॥62॥

1012. प्रस्तरेण परिधिना,
स्रुचा वेद्या च बर्हिषा।
ऋचा इमम् यज्ञम् नो नय,
स्वः देवेषु गन्तवे॥63॥

1013. यत् दत्तम् यत् परादानम्,
यत् पूर्तम् याः च दक्षिणाः।
तत् अग्निः वैश्वकर्मणः,
स्वः देवेषु नो दधत्॥64॥

1014. यत्र धारा अनप इता,
मधोः घृतस्य च याः।
तत् अग्निः वैश्वकर्मणः,
स्वः देवेषु नो दधत्॥65॥

1015. अग्निः अस्मि जन्मना जातवेदा,
घृतम् मे चक्षुः अमृतम् म आसन्।
अर्कः त्रिधातू रजसो विमानो,
अजस्रो घर्मो हविः अस्मि नाम॥66॥

1016. ऋचो नाम अस्मि,
यजूंषि नाम अस्मि,
सामानि नाम अस्मि।
ये अग्नयः पाञ्चजन्या,
अस्याम् पृथिव्याम् अधि।
तेषाम् असि त्वम् उत्तमः,
प्र नो जीवातवे सुव॥67॥

(236) सूक्त 17

1017. वार्त्रहत्याय शवसे,
पृतना-षाह्याय च।
इन्द्र त्वा आ वर्तयामसि॥68॥

1018. सहदानुम् पुरुहूत क्षियन्तम्,
अहस्तम् इन्द्र सम् पिणक् कुणारुम्।
अभि वृत्रम् वर्द्धमानम् पियारुम्,
अपादम् इन्द्र तवसा जघन्थ॥69॥

1019. वि न इन्द्र मृधो जहि,
नीचा यच्छ पृतन्यतः।
यो अस्मान् अभिदा,
सत्यधरम् गमया तमः॥70॥

1020. मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः,
परावत आ जगन्था परस्याः।
सृकम् संशाय पविम् इन्द्र तिग्मम्,
वि शत्रून् ताढि वि मृधो नुदस्व॥71॥

(237) सूक्त 18

1021. वैश्वानरो न ऊतय,
आ प्र यातु परावतः।
अग्निः नः सुष्टुतीः उप॥72॥

1022. पृष्टो दिवि पृष्टो अग्निः पृथिव्याम्,
पृष्टो विश्वा ओषधीः आ विवेश।
वैश्वानरः सहसा पृष्टो अग्निः,
स नो दिवा स रिषः पातु नक्तम्॥73॥

1023. अश्याम् तम् कामम् अग्ने तव ऊती,
अश्याम रयिम् रयिवः सुवीरम्।
अश्याम वाजम् अभि वाजयन्तो,
अश्याम द्युम्नम् अजर अजरम् ते॥74॥

1024. वयम् ते अद्य ररिमा हि कामम्,
उत्तान हस्ता नमसा उप सद्य।
यजिष्ठेन मनसा यक्षि देवान्,
अस्रेधता मन्मना विप्रो अग्ने॥75॥

1025. धामच्छत् अग्निः इन्द्रो,
ब्रह्मा देवो बृहस्पतिः।
सचेतसो विश्वे देवा यज्ञम्,
प्र अवन्तु नः शुभे॥76॥

1026. त्वम् यविष्ठ दाशुषः,
नृमः पाहि शृणुधी गिरः।

इति अष्टादशो अध्यायः

ॐ

अथ एकोनविंशो अध्यायः

(238) सूक्त 1

1027. स्वाद्वीम् त्वा स्वादुना तीव्राम्,
तीव्रेण अमृताम् अमृतेन।
मधुमतीम् मधुमता,
सृजामि सम् सोमेन।
सोमो असि अश्विभ्याम्,
पच्यस्व सरस्वत्यै पच्यस्व,
इन्द्राय सुत्राम्णे पच्यस्व॥1॥

1028. परि इतो षिञ्चता सुतम्,
सोमो य उत्तमम् हविः।
दधन्वान् यो नर्यो अप्स अन्तः,
आ सुषाव सोमम् अद्रिभिः॥2॥

1029. वायोः पूतः पवित्रेण,
प्रत्यङ् सोमो अतिद्रुतः।
इन्द्रस्य युज्यः सखा।
वायोः पूतः पवित्रेण,
प्राङ् सोमो अतिद्रुतः।
इन्द्रस्य युज्यः सखा॥3॥

1030. पुनाति ते परिस्रुतम्,
सोमम् सूर्यस्य दुहिता।
वारेण शश्वता तना॥4॥

(239) सूक्त 2

1031. ब्रह्म क्षत्रम् पवते तेज इन्द्रियम्,
सुरया सोमः सुत आसुतो मदाय।
शुक्रेण देव देवताः पिपृग्धि,
रसेन अन्नम् यजमानाय धेहि॥5॥

1032. कुवित् अङ्ग यवमन्तो यवम् चित्,
यथा दान्ति अनु पूर्वम् वियूय इहेह,
एषाम् कृणुहि भोजनानि,
ये बर्हिषो नम उक्तिम् यजन्ति।
उपयाम गृहीतो अस्य अश्विभ्याम्,
त्वा सरस्वत्यै त्वा इन्द्राय,
त्वा सुत्राम्ण एष ते योनिः,
तेजसे त्वा वीर्याया त्वा बलाय त्वा॥6॥

1033. नाना हि वाम् देव-हितम्,
सदः कृतम् मा सम्,
सृक्षाथाम् परमे व्योमन्।
सुरा त्वम् असि शुष्मिणी,
सोम एष मा मा हिंसीः,
स्वाम् योनिम् आविशन्ती॥7॥

1034. उपयाम गृहीतो अस्य अश्विनम्,
तेजः सारस्वतम् वीर्यम् ऐन्द्रम् बलम्।
एष ते योनिः मोदाय त्वा,
आनन्दाय त्वा महसे त्वा॥8॥

(240) सूक्त 3

1035. तेजो असि तेजो मयि धेहि,
वीर्यम् असि वीर्यम् मयि धेहि,
बलम् असि बलम् मयि धेहि,
ओजो असि ओजो मयि धेहि,
मन्य उरसि मन्युम् मयि धेहि,
सहो असि सहो मयि धेहि॥9॥

1036. या व्याघ्रम् विषूचिका,
उभौ वृकम् च रक्षति।
श्येनम् पतत्रिणम् सिंहम्,
सा इमम् पातम् अंहसः॥10॥

1037. यत् आपिपेष मातरम्,
पुत्रः प्रमुदितो धयन्।
एतत् तत् अग्ने अनृणो,
भवामि अहतौ पितरौ मया।
सम्पृच स्थ सम् मा भद्रेण पृङ्क्त,
विपृच स्थ वि मा पाप्मना पृङ्क्त॥11॥

(241) सूक्त 4

1038. देवा यज्ञम् अतन्वत,
भेषजम् भिषजा आश्विना।
वाचा सरस्वती भिषक्,
इन्द्राय इन्द्रियाणि दधतः ॥12॥

1039. दीक्षायै रूपम् शष्पाणि,
प्रायणीयस्य तोक्मानि।
क्रयस्य रूपम् सोमस्य,
लाजाः सोम अंशवो मधु ॥13॥

1040. आतिथ्य-रूपम् मासरम्,
महावीरस्य नग्नहुः।
रूपम् उपसदाम् एतत्,
तिस्रो रात्रीः सुरा आसुता ॥14॥

1041. सोमस्य रूपम् क्रीतस्य,
परिस्रुत् परि षिच्यते।
अश्विभ्याम् दुग्धम् भेषजम्,
इन्द्राय ऐन्द्रम् सरस्वत्या ॥15॥

(242) सूक्त 5

1042. आसन्दी रूपम् राजासन्द्यै,
वेद्यै कुम्भी सुराधानी।
अन्तर उत्तरवेद्या,
रूपम् कारोतरो भिषक् ॥16॥

1043. वेद्या वेदिः सम् आप्यते,
बर्हिषा बर्हिः इन्द्रियम्।
यूपेन यूप आप्यते,
प्रणीतो अग्निः अग्निना ॥17॥

1044. हविर्धानम् यत् अश्विना,
आग्नीध्रम् यत् सरस्वती।
इन्द्राय ऐन्द्रम् सदः कृतम्,
पत्नीशालम् गार्हपत्यः ॥18॥

1045. प्रैषेभिः प्रैषान् आप्नोति,
आप्रीभिः आप्रीः यज्ञस्य।
प्रयाजेभिः अनुयाजान्,
वषट् कारेभिः आहुतीः ॥19॥

(243) सूक्त 6

1046. पशुभिः पशून् आप्नोति,
पुरोडाशैः हवींषि आ।
छन्दोभिः साम् इधेनीः,
याज्याभिः वषट्-कारान् ॥20॥

1047. धानाः करम्भः सक्तवः,
परीवापः पयो दधि।
सोमस्य रूपम् हविष,
आमिक्षा वाजिनम् मधु ॥21॥

1048. धानानाम् रूपम् कुवलम्,
परीवापस्य गोधूमाः।
सक्तूनाम् रूपम् बदरम्,
उपवाकाः करम्भस्य॥22॥

1049. पयसो रूपम् यत् यवा,
दध्नो रूपम् कर्कन्धूनि।
सोमस्य रूपम् वाजिनम्,
सौम्यस्य रूपम् आमिक्षा॥23॥

(244) सूक्त 7

1050. आ श्रावय इति स्तोत्रियाः,
प्रत्याश्रावो अनुरूपः।
यज इति धाय्यारूपम्,
प्रगाथा ये-यजामहाः॥24॥

1051. अर्द्ध ऋचैः उक्थानाम्,
रूपम् पदैः आप्नोति निविदः।
प्रणवैः शस्त्राणाम् रूपम्,
पयसा सोम आप्यते॥25॥

1052. अश्विभ्याम् प्रातः सवनम्,
इन्द्रेण ऐन्द्रम् माध्यन्दिनम्।
वैश्वदेवम् सरस्वत्या,
तृतीयम् आप्तम् सवनम्॥26॥

1053. वायव्यैः वायव्यानि आप्नोति,
सतेन द्रोणकलशम्।
कुम्भीभ्याम् अम्भृणौ सुते,
स्थालीभिः स्थालीः आप्नोति॥27॥

(245) सूक्त 8

1054. यजुर्भिः आप्यन्ते ग्रहाः,
ग्रहैः स्तोमाः च विष्टुतीः।
छन्दोभिः उक्थाशस्त्राणि,
साम्ना अवभृथ आप्यते॥28॥

1055. इडाभिः भक्षान् आप्नोति,
सूक्तवाकेन आशिषः।
शंयुना पत्नी संयाजान्,
समिष्ट यजुषा सम् स्थाम्॥29॥

1056. व्रतेन दीक्षाम् आप्नोति,
दीक्षया आप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणा शर्द्धाम् आप्नोति,
श्रद्धया सत्यम् आप्यते॥30॥

1057. एतावत् रूपम् यज्ञस्य,
यत् देवैः ब्रह्मणा कृतम्।
तत् एतत् सर्वम् आप्नोति,
यज्ञे सौत्रामणी सुते॥31॥

(246) सूक्त 9

1058. सुरावन्तम् बर्हिषदम् सुवीरम्,
यज्ञम् हिन्वन्ति महिषा नमोभिः।
दधानाः सोमम् दिवि देवतासु,
मदेम इन्द्रम् यजमानाः स्वर्काः ॥32॥

1059. यः ते रसः सम्भृत ओषधीषु,
सोमस्य शुष्मः सुरया सुतस्य।
तेन जिन्व यजमानम् मदेन,
सरस्वतीम् अश्विनौ इन्द्रम् अग्निम् ॥33॥

1060. यम् अश्विना नमुचेः आसुरात्,
अधि सरस्वती असुनोत् इन्द्रियाय।
इमम् तत् शुक्रम् मधुमन्तम् इन्दुम्,
सोमम् राजानम् इह भक्षयामि ॥34॥

1061. यत् अत्र रिप्तम् रसिनः सुतस्य,
यत् इन्द्रो अपिबत् शचीभिः।
अहम् तत् अस्य मनसा शिवेन,
सोमम् राजानम् इह भक्षयामि ॥35॥

1062. पितृभ्यः स्वाधायिभ्यः स्वधा नमः,
पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः,
प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः।
अक्षन् पितरो अमीमदन्त पितरो,
अतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम् ॥36॥

1063. पुनन्तु मा पितरः सोम्यासः,
पुनन्तु मा पितामहाः।
पुनन्तु प्रपितामहाः,
पवित्रेण शत आयुषा।
पुनन्तु मा पितामहाः,
पुनन्तु प्रपितामहाः।
पवित्रेण शत आयुषा,
विश्वम् आयुः वि अश्नवै ॥37॥

(247) सूक्त 10

1064. अग्न आयूंषि पवस आ,
सुव ऊर्जम् इषम् च नः।
आरे बाधस्व दुच्छुनाम् ॥38॥

1065. पुनन्तु मा देवजनाः,
पुनन्तु मनसा धियः।
पुनन्तु विश्वा भूतानि,
जातवेदः पुनीहि मा ॥39॥

1066. पवित्रेण पुनीहि मा,
शुक्रेण देव दीद्यत्।
अग्ने क्रत्वा क्रतून् अनु॥40॥

1067. यत् ते पवित्रम् अर्चिषि,
अग्ने विततम् अन्तरा।
ब्रह्म् तेन पुनातु मा॥41॥

1068. पवमानः सो अद्य,
नः पवित्रेण विचर्षणिः।
यः पोता स पुनातु मा॥42॥

1069. उभाभ्याम् देव सवितः,
पवित्रेण सवेन च।
मा पुनीहि विश्वतः॥43॥

(248) सूक्त 11

1070. वैश्वदेवी पुनती देवी आ अगात्,
यस्याम् इमाः बह्व्यः तन्वो वीतपृष्ठाः।
तया मदन्तः सधमादेषु,
वयम् स्याम पतयो रयीणाम्॥44॥

1071. ये समानाः समनसः,
पितरो यमराज्ये।
तेषाम् लोकः स्वधा नमो,
यज्ञो देवेषु कल्पताम्॥45॥

1072. ये समानाः समनसो,
जीवा जीवेषु मामकाः।
तेषाम् श्रीः मयि कल्पताम्,
अस्मिन् लोके शतम् समाः॥46॥

1073. द्वे सृती अशृणवम् पितृणाम्,
अहम् देवानाम् उत् मर्त्यानाम्।
ताभ्याम् इदम् विश्वम् एजत् सम् एति,
यत् अन्तरा पितरम् मातरम् च॥47॥

1074. इदम् हविः प्रजननम् मे अस्तु,
दशवीरम् सर्वगणम् स्वस्तये।
आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि,
लोकसनि अभयसनि।
अग्निः प्रजाम् बहुलाम् मे करोतु,
अन्नम् पयो रेतो अस्मासु धत्त॥48॥

(249) सूक्त 12

1075. उत् ईरताम् अवर उत् परास,
उत् मध्यमाः पितरः सोम्यासः।
असुम् य ईयुः अवृका ऋतज्ञाः,
ते नो अवन्तु पितरो हवेषु ॥ 49 ॥

1076. अङ्गिरसो नः पितरो नवग्वा,
अथर्वाणो भृगवः सोम्यासः।
तेषाम् वयम् सुमितौ यज्ञियानाम्,
अपि भद्रे सौमनसे स्याम् ॥ 50 ॥

1077. ये नः पूर्वे पितरः सोम्यासो,
अनूहिरे सोमपीथम् वसिष्ठाः।
तेभिः यमः सम् रराणो हवींषि,
उशन् उशद्भिः प्रतिकामम् अत्तु ॥ 51 ॥

1078. त्वम् सोम प्र चिकितो मनीषा,
त्वम् रजिष्ठम् अनु नेषि पन्थाम्।
तव प्रणीती पितरो न इन्दो,
देवेषु रत्नम् अभजन्त धीराः ॥ 52 ॥

(250) सूक्त 13

1079. त्वया हि नः पितरः सोम पूर्वे,
कर्माणि चक्रुः पवमान धीराः।
वन्वन् अवातः परिधीन् अप ऊर्णु,
वीरेभिः अश्वैः मघवा भवा नः ॥ 53 ॥

1080. त्वम् सोम पितृभिः सम्विदानो,
अनु द्यावापृथिवी आ ततन्थ।
तस्मै त इन्दो हविषा विधेम,
वयम् स्याम पतयो रयीणाम् ॥ 54 ॥

1081. बर्हिषदः पितर ऊती अर्वाक्,
इमा वो हव्या चकृमा जुषध्वम्।
त आ गत अवसा शन्तमेन,
अथा नः शम् योः अरपो दधात ॥ 55 ॥

1082. आ अहम् पितृन् सुविदत्रान् अवित्सि,
नपातम् च विक्रमणम् च विष्णोः।
बर्हिषदो ये स्वधया सुतस्य,
भजन्त पित्वः त इह आगमिष्ठाः ॥ 56 ॥

(251) सूक्त 14

1083. उपहूताः पितरः सोम्यासो,
बर्हिष्येषु निधिषु प्रियेषु।
त आ गमन्तु त इह श्रुवन्तु,
अधि ब्रुवन्तु ते अवन्तु अस्मान्॥57॥

1084. आ यन्तु नः पितरः सोम्यासो,
अग्निष्वात्ताः पथिभिः देवयानैः।
अस्मिन् यज्ञे स्वधया मदन्तो,
अधि ब्रुवन्तु ते अवन्तु अस्मान्॥58॥

1085. अग्निष्वात्ताः पितर आ इह गच्छत,
सदः सदः सदत सुप्रणीतयः।
अत्ता हवींषि प्रयतानि बर्हिष,
अथा रयिम् सर्व वीरम् दधातन॥59॥

(252) सूक्त 15

1086. ये अग्निष्वात्ता ये अनग्निष्वात्ता,
मध्ये दिवः स्वधया मादयन्ते।
तेभ्यः स्वराट् असुनीतिम् एताम्,
यथावशम् तन्वम् कल्पयाति॥60॥

1087. अग्निष्वत्तान् ऋतुमतो हवामहे,
नाराशंसे सोमपीथम् य आशुः।
ते नो विप्रासः सुहवा भवन्तु,
वयम् स्याम् पतयो रयीणाम्॥61॥

1088. आच्य जानु दक्षिणतो निषद्य,
इमम् यज्ञम् अभि गृणीत विश्वे।
मा हिंसिष्ट पितरः केन चित् नो,
यत् व आगः पुरुषता कराम॥62॥

1089. आसीनासो अरुणीनाम् उपस्थे,
रयिम् धत्त दाशुषे मर्त्याय।
पुत्रेभ्यः पितरः तस्य वस्वः,
प्र यच्छत त इह ऊर्जम् दधात्॥63॥

(253) सूक्त 16

1090. यम् अग्ने कव्यवाहन,
त्वम् चित् मन्यसे रयिम्।
तम् नो गीर्भिः श्रवाय्यम्,
देवत्रा पनया युजम्॥62॥

1091. यो अग्निः कव्यवाहनः,
पितृन् यक्षत् ऋतावृधः।
प्र इत् उ हव्यानि वोचति,
देवेभ्यः च पितृभ्य आ॥65॥

1092. त्वम् अग्न ईडितः कव्यवाहन,
अवाट् हव्यानि सुरभीणि कृत्वी।
प्र अदाः पितृभ्यः स्वधया ते अक्षन्,
अद्धि त्वम् देव प्रयता हवींषि॥66॥

1093. ये च इह पितरो ये च न इह,
यान् च विद्म यान् उ च न प्रविद्मे।
त्वम् वेत्थ यति ते जातवेदः,
स्वधाभिः यज्ञम् सुकृतम् जुषस्व॥67॥

1094. इदम् पितृभ्यो नमो अस्तु अद्य,
ये पूर्वासो य उपरास ईयुः।
ये पार्थिवे रजसि आ निषत्ता,
ये वा नूनम् सुवृजनासु विक्षु॥68॥

1095. अधा यथा नः पितरः परासः,
प्रत्नासो अग्न ऋतम् आशुषाणाः।
शुचि इत् अयन् दीधितिम् उक्थशासः,
क्षामा भिन्दन्तो अरुणीः अप व्रन्॥69॥

(254) सूक्त 17

1096. उशन्तः त्वा नि धीमहि,
उशन्तः सम् इधीमहि।
उशन् उशत आ वह,
पितृन् हविषे अत्तवे॥70॥

1097. अपाम् फेनेन नमुचेः,
शिर इन्द्र उत् अवर्त्तयः।
विश्वा यत् अजयः स्पृधः॥71॥

1098. सोमो राजा अमृतम् सुत,
ऋजीषेण अजहात् मृत्युम्।
ऋृतेन सत्यम् इन्द्रियम्,
विपानम् शुक्रम् अन्धस,
इन्द्रस्य इन्द्रियम् इदम्,
पयो अमृतम् मधु॥72॥

1099अद्भ्यः क्षीरम् वि अपिबत्,
क्रुङ् आङ्गिरसो धिया।
ऋृतेन सत्यम् इन्द्रियम्,
विपानम् शुक्रम् अन्धस,
इन्द्रस्य इन्द्रियम् इदम्,
पयो अमृतम् मधु॥73॥

1100. सोमम् अद्भ्यो वि अपिबत्,
छन्दसा हंसः शुचिषत्।
ऋृतेन सत्यम् इन्द्रियम्,
विपानम् शुक्रम् अन्धस,
इन्द्रस्य इन्द्रियम् इदम्,
पयो अमृतम् मधु॥74॥

(255) सूक्त 18

1101. अन्नात् परिस्रुतो रसम् ब्रह्मणा,
वि अपिबत् क्षत्रम् पयः सोमम् प्रजापतिः।
ऋतेन सत्यम् इन्द्रियम्,
विपानम् शुक्रम् अन्धस,
इन्द्रस्य इन्द्रियम् इदम्,
पयो अमृतम् मधु॥75॥

1102. रेतो मूत्रम् वि जहाति,
योनिम् प्रविशत् इन्द्रियम्।
गर्भो जरायुणा आवृत,
उल्वम् जहाति जन्मना।
ऋतेन सत्यम् इन्द्रियम्,
विपानम् शुक्रम् अन्धस,
इन्द्रस्य इन्द्रियम् इदम्,
पयो अमृतम् मधु॥76॥

1103. दृष्ट्वा रूपे वि आ अकरोत्,
सत्यानृते प्रजापतिः।
अश्रद्धाम् अनृते अदधात्,
श्रद्धाम् सत्ये प्रजापतिः।
ऋतेन सत्यम् इन्द्रियम्,
विपानम् शुक्रम् अन्धस,
इन्द्रस्य इन्द्रियम् इदम्,
पयो अमृतम् मधु॥77॥

1104. वेदेन रूपे वि अपिबत्,
सुतासुतौ प्रजापतिः।
ऋतेन सत्यम् इन्द्रियम्,
विपानम् शुक्रम् अन्धस,
इन्द्रस्य इन्द्रियम् इदम्,
पयो अमृतम् मधु॥78॥

1105. दृष्ट्वा परिस्रुतो रसम् शुक्रेण शुक्रम्,
वि अपबित् पयः सोमम् प्रजापतिः।
ऋतेन सत्यम् इन्द्रियम्,
विपानम् शुक्रम् अन्धस,
इन्द्रस्य इन्द्रियम् इदम्,
पयो अमृतम् मधु॥79॥

(256) सूक्त 19

1106. सीसेन तन्त्रम् मनसा मनीषिण,
ऊर्णा सूत्रेण कवयो वयन्ति।
अश्विना यज्ञम् सविता सरस्वती,
इन्द्रस्य रूपम् वरुणो भिषज्यन्॥80॥

1107. तत् अस्य रूपम् अमृतम् शचीभिः,
तिस्रो दधुः देवताः सम् रराणा।
लोमानि शष्पैः बहुधा न तोक्मभिः,
त्वक् अस्य मांसम् अभवत् न लाजाः॥81॥

1108. तत् अश्विना भिजषा रुद्रवर्तनी,
सरस्वती वयति पेशो अन्तरम्।
अस्थि मज्जानम् मासरैः,
कारोतरेण दधतो गवाम् त्वचि ॥82॥

1109. सरस्वती मनसा पेशलम् वसु,
नासत्याभ्याम् वयति दर्शतम् वपुः।
रसम् परिस्रुता न रोहितम्,
नग्नहुः धीरः तसरम् न वेम ॥83॥

1110. पयसा शुक्रम् अमृतम् जनित्रम्,
सुरया मूत्रात् जनयन्त रेतः।
अप अमतिम् दुर्मतिम् बाधमाना,
ऊवध्यम् वातम् सव्वम् तत् आरात् ॥84॥

(257) सूक्त 20

1111. इन्द्रः सुत्रामा हृदयेन् सत्यम्,
पुरोडाशेन सविता जजान।
यकृत क्लोमानम् वरुणो भिषज्यन्,
मतस्ने वायव्यैः न मिनाति पित्तम् ॥85॥

1112. आन्त्राणि स्थालीः मधु पिन्वमाना,
गुदाः पात्राणि सुदुघा न धेनुः।
श्येनस्य पत्रम् न प्लीहा शचीभिः,
आसन्दी नाभिः उदरम् न माता ॥86॥

1113. कुम्भो वनिष्ठुः जनिता शचीभिः,
यस्मिन् अग्रे योन्याम् गर्भो अन्तः।
प्लाशिः व्यक्तः शतधार उत्सो,
दुहे न कुम्भी स्वधाम् पितृभ्यः ॥87॥

1114. मुखम् सत् अस्य शिरः इत् सतेन,
जिह्वा पवित्रम् अश्विना आसन् सरस्वती।
चप्यम् न पायुः भिषक् अस्य वालो,
वस्तिः न शेपो हरसा तरस्वी ॥88॥

1115. अश्विभ्याम् चक्षुः अमृतम् ग्रहाभ्याम्,
छागेन तेजो हविषा शृतेन।
पक्ष्माणि गोधूमैः कुवलैः उतानि,
पेशो न शुक्रम् असितम् वसाते ॥89॥

(258) सूक्त 21

1116. अविः न मेषो नसि वीर्याय,
प्राणस्य पन्था अमृतो ग्रहाभ्याम्।
सरस्वती उपवाकैः व्यानम्,
नस्यानि बर्हिः बदरैः जजान ॥90॥

1117. इन्द्रस्य रूपम् ऋषभो बलाय,
कर्णाभ्याम् श्रोत्रम् अमृतम् ग्रहाभ्याम।
यवा न बर्हिः भ्रुवि केसराणि,
कर्कन्धु जज्ञे मधु सारघम् मुखात् ॥91॥

1118. आत्मन् उपस्थे न वृकस्य लोम,
मुखे श्मश्रूणि न व्याघ्रलोम।
केशा न शीर्षन् यशसे श्रियै शिखा,
सिंहस्य लोम त्विषिः इन्द्रियाणि॥92॥

1119. अङ्गानि आत्मन् भिषजा तत् अश्विना,
आत्मानम् अङ्गै सम् अधात् सरस्वती।
इन्द्रस्य रूपम् शतमानम् आयुः,
चन्द्रेण ज्योतिः अमृतम् दधानाः॥93॥

1120. सरस्वती योन्याम् गर्भम् अन्तः,
अश्विभ्याम् पत्नी सुकृतम् बिभर्ति।
अपाम् रसेन वरुणो न साम्ना,
इन्द्रम् श्रियै जनयन् अप्सु राजा॥94॥

1121. तेजः पशूनाम् हविः इन्द्रियावत्,
परिस्रुता पयसा सारघम् मधु।
अश्विभ्याम् दुग्धम् भिषजा सरस्वत्या,
सुता सुताभ्याम् अमृतः सोम इन्दुः॥95॥

इति एकोनविंशो अध्यायः

ॐ

अथ विंशो अध्यायः

(259) सूक्त 1

1122. क्षत्रस्य योनिः असि,
क्षत्रस्य नाभिः असि।
मा त्वा हिंसीत् मा मा हिंसीः॥1॥

1123. नि षसाद धृतव्रतो,
वरुणः पस्त्यासु आ।
साम्राज्याय सुक्रतुः,
मृत्योः पाहि विद्योत् पाहि॥2॥

1124. देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे
अश्विनोः बाहुभ्याम् पूष्णो हस्ताभ्याम्।
अश्विनोः भैषज्येन तेजसे,
ब्रह्म वर्चसाय अभि षिञ्चामि,
सरस्वत्यै भैषज्येन वीर्याय,
अन्नाद्याय अभि षिञ्चामि,
इन्द्रस्य इन्द्रियेण बलाय,
श्रियै यशसे अभि षिञ्चामि॥3॥

(260) सूक्त 2

1125. को असि कतमो असि,
कस्मै त्वा काय त्वा सुश्लोक,
सुमङ्गल सत्यराजन्॥4॥

1126. शिरो मे श्रीः यशो मुखम्,
त्विषिः केशाः च श्मश्रूणि।
राजा मे प्राणो अमृतम्,
सम्राट् चक्षुः विराट् श्रोतम्॥5॥

1127. जिह्वा मे भद्रम् वाक् महो,
मनो मन्युः स्वराड् भामः।
मोदाः प्रमोदा अङ्गुलीः,
अङ्गानि मित्रम् मे सहः॥6॥

1128. बाहू मे बलम् इन्द्रियम्,
हस्तौ मे कर्म वीर्यम्।
आत्मा क्षत्रम् उरो मम॥7॥

(261) सूक्त 3

1129. पृष्ठीः मे राष्ट्रम् उदरम्,
अंसौ ग्रीवाः च श्रोणी।
उरू अरत्नी जानुनी,
विशो मे अङ्गानि सर्वतः॥8॥

1130. नाभिः मे चित्तम् विज्ञानम्,
पायुः मे अपचितिः भसत्।
आनन्दनन्दौ आण्डौ,
मे भगः सौभाग्यम् पसः।
जङ्घभ्याम् पद्भ्याम् धर्मो,
अस्मि विशि राजा प्रतिष्ठितः॥9॥

1131. प्रति क्षत्रे प्रति तिष्ठामि राष्ट्रे,
प्रति अश्वेषु प्रति तिष्ठामि गोषु।
प्रति अङ्गेषु प्रति तिष्ठामि आत्मन्,
प्रति प्राणेषु प्रति तिष्ठामि पुष्टे,
प्रति द्यावापृथिव्योः प्रति तिष्ठामि यज्ञे॥10॥

1132. त्रया देवा एकादश,
त्रयस्त्रिंशाः सुराधसः।
बृहस्पति पुरोहिता,
देवस्य सवितुः सवे।
देवा देवैः अवन्तु मा॥11॥

1133. प्रथमा द्वितीयैः द्वितीयाः,
तृतीयैः तृतीयाः सत्येन सत्यम्,
यज्ञेन यज्ञो यजुर्भिः यजूंषि,
सामभिः सामानि ऋग्भिः ऋचः,
पुरो अनुवाक्याभिः पुरो अनुवाक्या,
याज्याभिः याज्या वषट्कारैः वषट्कारा,
आहुतिभिः आहुतयो मे कामान्,
सम् अर्धयन्तु भूः स्वाहा ॥ 12 ॥

(262) सूक्त 4

1134. लोमानि प्रयतिः मम,
त्वक् मे आनतिः आगतिः।
मांसम् म उपनतिः वसु,
अस्थि मज्जा म आनतिः ॥ 13 ॥

1135. यत् देवा देवहेडनम्,
देवासः चकृमा वयम्।
अग्निः मा तस्मात् एनसो,
विश्वात् मुञ्चतु अंहसः ॥ 14 ॥

1136. यदि दिवा यदि नक्तम्,
एनांसि चकृमा वयम्।
वायुः मा तस्मात् एनसो,
विश्वात् मुञ्चतु अहंसः ॥ 15 ॥

1137. यदि जाग्रत् यदि स्वप्न,
एनांसि चकृमा वयम्।
सूर्यो मा तस्मात् एनसो,
विश्वात् मुञ्चतु अहंसः ॥ 16 ॥

1138. यद् ग्रामे यद् अरण्ये,
यत् सभायाम् यत् इन्द्रिये।
यत् शूद्रे यत् अर्ये,
यत् एनः चकृमा वयम्,
यद् एकस्या अधि धर्मणि,
तस्य अवयजनम् असि ॥ 17 ॥

(263) सूक्त 5

1139. यत् आपो अघ्न्या इति वरुण इति,
शपामहे ततो वरुण नो मुञ्च।
अवभृथ निचुम्पुण,
निचेरुः असि निचुम्पुणः।
अव देवैः देवकृतम्,
एनो अयक्ष्यव मर्त्यैः मत्यम् कृतम्,
पुरु राव्णो देव रिषः पाहि ॥ 18 ॥

1140. समुद्रे ते हृदयम् अप्सु अन्तः,
सम् त्वा विशन्तु ओषधीः उत आपः।
सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु,
दुर्मित्रियाः तस्मै सन्तु,
यो अस्मान् द्वेष्टि,
यम् च वयम् द्विष्मः ॥19॥

1141. द्रुपदात् इव मुमुचानः,
स्विन्नः स्नातो मलात् इव।
पूतम् पवित्रेण इव आज्यम्,
आपः शुन्धन्तु मा एनसः ॥20॥

1142. उत् वयम् तमसः परि,
स्वः पश्यन्त उत्तरम्।
देवम् देवत्रा सूर्यम्,
अगन्म ज्योतिः उत्तमम् ॥21॥

1143. अपो अद्यः अनु अचारिषम्,
रसेन सम् असृक्ष्महि।
पयस्वान् अग्न आ अगमम्,
तम् मा सम् सृज वर्चसा,
प्रजया च धनेन च ॥22॥

1144. एधो असि एधिषीमहि समित् असि,
तेजो असि तेजो मयि धेहि।
समाववर्ति पृथिवी,
सम् उषाः सम् उ सूर्य।
सम् उ विश्वम् इदम् जगत्।
वैश्वानरज्योतिः भूयासम्,
विभून् कामान् वि अश्नवै भूः स्वाहा ॥23॥

(264) सूक्त 6

1145. अभि आ दधामि समिधम्,
अग्ने व्रतपते त्वयि।
व्रतम् च श्रद्धाम् च उप एमि,
इन्धे त्वा दीक्षितो अहम् ॥24॥

1146. यत्र ब्रह्म च क्षत्रम् च,
सम्यञ्चौ चरतः सह।
तम् लोकम् पुण्यम् प्र ज्ञेषम्,
यत्र देवाः सह अग्निना ॥25॥

1147. यत् इन्द्रः च वायुः च,
सम्यञ्चौ चरतः सह।
तम् लोकम् पुण्यम् प्र ज्ञेषम्,
यत्र सेदिः न विद्यते ॥26॥

1148. अंशुना ते अंशुः,
पृच्यताम् परुषा परुः।
गन्धः ते सोमम् अवतु,
मदाय रसो अच्युतः॥27॥

1149. सिञ्चन्ति परि षिञ्चन्ति,
उत् सिञ्चन्ति पुनन्ति च।
सुरायै बभ्र्वै मदे,
किन्त्वो वदति किन्त्वः॥28॥

(265) सूक्त 7

1150. धानावन्तम् करम्भिणम्,
अपूपवन्तम् उक्थिनम्।
इन्द्र प्रातः जुषस्व नः॥29॥

1151. बृहत् इन्द्राय गायत,
मरुतो वृत्रहन्तमम्।
येन ज्योतिः अजनयन् ऋतावृधो,
देवम् देवाय जागृवि॥30॥

1152. अध्वर्यो अद्रिभिः सुतम्,
सोमम् पवित्र आ नय।
पुनाहि इन्द्राय पातवे॥31॥

1153. यो भूतानाम् अधिपतिः,
यस्मिन् लोका अधि श्रिताः।
य ईशे महतो महान्,
तेन गृह्णामि त्वाम् अहम्,
मयि गृहणामि त्वाम् अहम्॥32॥

1154. उपयाम गृहीतो अस्य अश्विभ्याम्,
त्वा सरस्वत्यै त्वा इन्द्राय त्वा सुत्राम्णे,
एष ते योनिः अश्विभ्याम्,
त्वा सरस्वत्यै त्वा इन्द्राय त्वा सुत्राम्णे॥33॥

(266) सूक्त 8

1155. प्राणपा मे अपानपाः,
चक्षुष्पाः श्रोत्रपाः च मे।
वाचो मे विश्वभेषजो,
मनसो असि विलायकः॥34॥

1156. अश्विन कृतस्य ते,
सरस्वति कृतस्य,
इन्द्रेण सुत्राम्णा कृतस्य।
उपहूत उपहूतस्य भक्षयामि॥35॥

1157. समिद्ध इन्द्र उषसाम् अनीके,
पुरो रुचा पूर्व-कृत् वावृधानः।
त्रिभिः देवैः त्रिंशता वज्रबाहुः,
जघान वृत्रम् वि दुरो ववार॥**36**॥

1158.नराशंसः प्रति शूरो मिमानः,
तनूनपात् प्रति यज्ञस्य धाम।
गोभिः वपावान् मधुना समञ्जन्,
हिरण्यैः चन्द्री यजति प्रचेताः॥**37**॥

1159. ईडितो देवैः हरिवान् अभिष्टिः,
आजुह्वानो हविषा शर्द्धमानः।
पुरन्दरो गोत्रभित् वज्रबाहुः,
आ यातु यज्ञम् उप नो जुषाणः॥**38**॥

(267) सूक्त 9

1160. जुषाणो बर्हिः हरिवान् न इन्द्रः,
प्राचीनम् सीदत् प्रदिशा पृथिव्याः।
उरुप्रथाः प्रथमानम् स्योनम्,
आदित्यैः अक्तम् वसुभिः सजोषाः॥**39**॥

1161. इन्द्रम् दुरः कवष्यो धावमाना,
वृषाणम् यन्तु जनयः सुपत्नीः।
द्वारो देवीः अभितो वि श्रयन्ताम्,
सुवीरा वीरम् प्रथमाना महोभिः॥**40**॥

1162. उषासानक्ता बृहती बृहन्तम्,
पयस्वती सुदुघे शूरम् इन्द्रम्।
तन्तुम् ततम् पेशसा सम् वयन्ती,
देवानाम् देवम् यजतः सुरुक्मे॥**41**॥

1163. दैव्या मिमाना मनुषः पुरुत्रा,
होतारौ इन्द्रम् प्रथमा सुवाचा।
मूर्द्धन् यज्ञस्य मधुना दधाना,
प्राचीनम् ज्योतिः हविषा वृधातः॥**42**॥

1164. तिस्रो देवीः हविषा वर्द्धमाना,
इन्द्रम् जुषाणा जनयो न पत्नीः।
अच्छिन्नम् तन्तुम् पयसा सरस्वती,
इडा देवी भारती विश्वतूर्त्तिः॥**43**॥

(268) सूक्त 10

1165. त्वष्टा दधत् शुष्मम् इन्द्राय वृष्णे,
अपाको अचिष्टुः यशसे पुरूणि।
वृषा यजन् वृषणम् भूरिरेता,
मूर्द्धन् यज्ञस्य सम् अनक्तु देवान्॥**44**॥

1166. वनस्पतिः अवसृष्टो न पाशैः,
त्मन्या समञ्जन् शमिता न देवः।
इन्द्रस्य हव्यैः जठरम् पृणानः,
स्वदाति यज्ञम् मधुना घृतेन॥**45**॥

1167. स्तोकानाम् इन्दुम् प्रति शूर,
इन्द्रो वृषायमाणो वृषभः तुराषाट्।
घृतप्रुषा मनसा मोदमानाः स्वाहा,
देवा अमृता मादयन्ताम्॥46॥

1168. आ यातु इन्द्रो अवस उप न,
इह स्तुतः सधमात् अस्तु शूरः।
वावृधानः तविषीः यस्य पूर्वीः,
द्यौः न क्षत्रम् अभिभूति पुष्यात्॥47॥

(269) सूक्त 11

1169. आ न इन्द्रो दुरात् आ न आसात्,
अभिष्टिकृत् अवसे यासत् उग्रः।
ओजिष्ठेभिः नृपतिः वज्रबाहुः,
सङ्गे समत्सु तुर्वणिः पृतन्यून्॥48॥

1170. आ न इन्द्रो हरिभिः यातु अच्छ,
अर्वाचीनो अवसे राधसे च।
तिष्ठाति वज्री मघवा विरप्शी,
इमम् यज्ञम् अनु नो वाजसातौ॥49॥

1171. त्रातारम् इन्द्रम् अवितारम् इन्द्रम्,
हवे हवे सुहवम् शूरम् इन्द्रम्।
ह्वयामि शक्रम् पुरुहूतम् इन्द्रम्,
स्वस्ति नो मघवा धातु इन्द्रः॥50॥

1172. इन्द्रः सुत्रामा स्ववान् अवोभिः,
सुमृडीको भवतु विश्ववेदाः।
बाधताम् द्वेषो अभयम् कृणोतु,
सुवीर्यस्य पतयः स्याम्॥51॥

(270) सूक्त 12

1173. तस्य वयम् सुमतौ यज्ञियस्य,
अपि भद्रे सौमनसे स्याम।
स सुत्रामा स्ववान् इन्द्रो अस्मे,
आरात् चित् द्वेषः सनुतः युयोतु॥52॥

1174. आ मन्द्रैः इन्द्र हरिभिः,
याहि मयूररोमभिः।
मा त्वा के चित् नि यमन् विम् न पाशिनो,
अति धन्वा इव तान् इहि॥53॥

1175. एव इत् इन्द्रम् वृषण वज्रबाहुम्,
वसिष्ठासो अभि अर्चन्ति अर्कैः।
स नः स्तुतो वीरवत् धातु गोमत्,
यूयम् पात स्वस्तिभिः सदा नः॥54॥

1176. समिद्धो अग्निः अश्विना,
तप्तो घर्मो विराट् सुतः।
दुहे धेनुः सरस्वती सोमम्,
शुक्रम् इह इन्द्रियम्॥55॥

(271) सूक्त 13

1177. तनूपा भिषजा सुतेत,
अश्विना उभा सरस्वती।
मध्वा रजांसि इन्द्रियम्,
इन्द्राय पथिभिः वहान्॥56॥

1178. इन्द्राय इन्दुम् सरस्वती,
नराशंसेन नग्नहुम्।
अधाताम् अश्विना मधु,
भेषजम् भिषजा सुते॥57॥

1179. आजुह्वाना सरस्वती,
इन्द्राय इन्द्रियाणि वीर्यम्।
इडाभिः अश्विनौ इषम् सम्,
ऊर्जम् सम् रयिम् दधुः॥58॥

1180. अश्विना नमुचेः सुतम्,
सोमम् शुक्रम् परिस्त्रुता।
सरस्वती तम् आ अभरत्
बर्हिषा इन्द्राय पातवे॥59॥

(272) सूक्त 14

1181. कवष्यो न व्यस्वतीः,
अश्विभ्याम् न दुरो दिशः।
इन्द्रो न रोदसी उभे,
दुहे कामान् सरस्वती॥60॥

1182. उषासा नक्तम् अश्विना,
दिवा इन्द्रम् सायम् इन्द्रियैः।
सम् जानाने सुपेशसा,
सम् अञ्जाते सरस्वत्या॥61॥

1183. पातम् नो अश्विना दिवा,
पाहि नक्तम् सरस्वति।
दैव्या होतारा भिषजा,
पातम् इन्द्रम् सचा सुते॥62॥

1184. तिस्त्रः त्रेधा सरस्वती,
अश्विना भारती इडा।
तीव्रम् परिस्त्रुता सोमम्,
इन्द्राय सुषुवुः मदम्॥63॥

(273) सूक्त 15

1185. अश्विना भेषजम् मधु,
भेषजम् नः सरस्वती।
इन्द्रे त्वष्टा यशः श्रियम्,
रूपम् रूपम् अधुः सुते॥64॥

1186. ऋतुथा इन्द्रो वनस्पतिः,
शशमानः परिस्त्रुता।
कीलालम् अश्विभ्याम्,
मधु दुहे धेनुः सरस्वती॥65॥

1187. गोभिः न सोमम् अश्विना,
मासरेण परिस्रुता।
सम् अधातम् सरस्वत्या,
स्वाहा इन्द्रे सुतम् मधु ॥66॥

1188. अश्विना हविः इन्द्रियम्,
नमुचे धिया सरस्वती।
आ शुक्रम् आसुरात्,
वसु मघम् इन्द्राय जभ्रिरे ॥67॥

(274) सूक्त 16

1189. यम् अश्विना सरस्वती,
हविषा इन्द्रम् अवर्द्धयन्।
स बिभेद बलम् मघम्,
नमुचौ आसुरे सचा ॥68॥

1190. तम् इन्द्रम् पशवः सचा,
अश्विना उभा सरस्वती।
दधाना अभि अनूषत,
हविषा यज्ञ इन्द्रियैः ॥69॥

1191. य इन्द्र इन्द्रियम् दधुः,
सविता वरुणो भगः।
स सुत्रामा हविष्पतिः,
यजमानाय सश्चत ॥70॥

1192. सविता वरुणो दधत्,
यजमानाय दाशुषे।
आ अदत्त नमुचेः वसु,
सुत्रामा बलम् इन्द्रियम् ॥71॥

(275) सूक्त 17

1193. वरुणः क्षत्रम् इन्द्रियम्,
भगेन सविता श्रियम्।
सुत्रामा यशसा बलम्,
दधाना यज्ञम् आशत ॥72॥

1194. अश्विना गोभिः इन्द्रियम्,
अश्वेभिः वीर्यम् बलम्।
हविषा इन्द्रम् सरस्वती,
यजमानम् अवर्द्धयन् ॥73॥

1195. ता नासत्या सुपेशसा,
हिरण्यवर्त्तनी नरा।
सरस्वती हविष्मती,
इन्द्र कर्मसु, नो अवत ॥74॥

1196. ता भिषजा सुकर्मणा,
सा सुदुघा सरस्वती।
स वृत्रहा शतक्रतुः,
इन्द्राय दधुः इन्द्रियम् ॥75॥

(276) सूक्त 18

1197. युवम् सुरामम् अश्विना,
नमुचौ आसुरे सचा।
विपिपानाः सरस्वति,
इन्द्रम् कर्मसु आवत॥76॥

1198. पुत्रम् इव पितरौ अश्विना उभा,
इन्द्र आवथुः काव्यैः दंसनाभिः।
यत् सुरामम् वि पिबः शचीभिः,
सरस्वती त्वा मघवन् अभि उष्णक्॥77॥

1199. यस्मिन् अश्वास ऋषभास उक्षणो,
वशा मेषा अवसृष्टास आहुताः।
कीलालपे सोमपृष्ठाय वेधसे,
हृदा मतिम् जनये चारुम् अग्नये॥78॥

1200. अहावि अग्ने हविः आस्ये ते,
स्रुचि इव घृतम् चम्वी इव सोमः।
वाज-सनिम् रयिम् अस्मे सुवीरम्,
प्रशस्तम् धेहि यशसम् बृहन्तम्॥79॥

(277) सूक्त 19

1201. अश्विना तेजसा चक्षुः,
प्राणेन सरस्वती वीर्यम्।
वाचा इन्द्रो बलेन,
इन्द्राय दधुः इन्द्रियम्॥80॥

1202. गोमत् ऊ षु णासत्या,
अश्वावत् यातम् अश्विना।
वर्त्ती रुद्रा नृ-पाय्यम्॥81॥

1203. न यत् परो न अन्तर,
आदधर्षत् वृषण्वसू।
दुःशंसो मर्त्यो रिपुः॥82॥

1204. ता न आ वोढम् अश्विना,
रयिम् पिशङ्ग-सन्दृशम्।
धिष्णया वरिवो-विदम्॥83॥

1205. पावका नः सरस्वती,
वाजेभिः वाजिनी वती।
यज्ञम् वष्टु धियावसुः॥84॥

(278) सूक्त 20

1206. चोदयित्री सूनृतानाम्,
चेतन्ती सुमतीनाम्।
यज्ञम् दधे सरस्वती॥85॥

1207. महो अर्णः सरस्वती,
प्र चेतयति केतुना।
धियो विश्वा वि राजति॥86॥

1208. इन्द्र आ याहि चित्र,
भानो सुता इमे त्वायवः।
अण्वीभिः तना पूतासः ॥87॥

1209. इन्द्र आ याहि धिया,
इषितो विप्रजूतः सुतावतः।
उप ब्रह्माणि वाघतः ॥88॥

1210. इन्द्र आ याहि तूतुजान,
उप ब्रह्माणि हरिवः।
सुते दधिष्व नः चनः ॥89॥

1211. अश्विना पिबताम् मधु,
सरस्वत्या सजोषसा।
इन्द्रः सुत्रामा वृत्रहा,
जुषन्ताम् सोम्यम् मधु ॥90॥

इति विंशो अध्यायः

ॐ

एकविंशो अध्यायः

(279) सूक्त 1

1212. इमम् मे वरुण श्रुधी,
हवम् अद्य आ च मृडय।
त्वाम् अवस्युः आ चके ॥1॥

1213. तत् त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानः,
तत् आ शास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेडमानो वरुण इह बोधि,
उरुशंस मा न आयुः प्रमोषीः ॥2॥

1214. त्वम् नो अग्ने वरुणस्य विद्वान्,
देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः।
यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो,
विश्वा द्वेषांसि प्र मुमुग्धि अस्मत् ॥3॥

1215. स त्वम् नो अग्ने अवमो भव ऊती,
नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ।
अव यक्ष्व नो वरुणम् रराणो,
वीहि मृडीकम् सुहवो न एधि ॥4॥

1216. महीम् ऊ षु मातरम् सुव्रतानाम्,
ऋतस्य पत्नीम् अवसे हुवेम।
तुवि क्षत्राम् अजरन्तीम् उरूचीम्,
सुशर्माणम् अदितिम् सुप्रणीतिम्॥5॥

1217. सुत्रामाणम् पृथिवीम् द्याम् अनेहसम्,
सुशर्माणम् अदितिम् सुप्रणीतिम्।
दैवीम् नावम् सु अरित्राम् अनागसम्,
अस्रवन्तीम् आ रुहेम आ स्वस्तये॥6॥

(280) सूक्त 2

1218. सुनावम् आ रुहेयम्,
अस्रवन्तीम् अनागसम्।
शत अरित्राम् स्वस्तये॥7॥

1219. आ नो मित्रावरुणा,
घृतैः गव्यूतिम् उक्षतम्।
मध्वा रजांसि सु-क्रतू॥8॥

1220. प्र बाहवा सिसृतम् जीवसे न,
आ नो गव्यूतिम् उक्षतम् घृतेन।
आ मा जने श्रवयतम् युवाना,
श्रुतम् मे मित्रावरुणा हवा इमा॥9॥

1221. शन् नो भवन्तु वाजिनो हवेषु,
देवताता मितद्रवः स्वर्काः।
जम्भयन्तो अहिम् वृकम् रक्षांसि,
सनेमि अस्मत् युयवन् अमीवाः॥10॥

1222. वाजे वाजे अवत वाजिनो,
नो धनेषु विप्रा अमृता ऋतज्ञाः।
अस्य मध्वः पिबत मादयध्वम्,
तृप्ता यात पथिभिः देवयानैः॥11॥

(281) सूक्त 3

1223. समिद्धो अग्निः समिधा,
सुसमिद्धो वरेण्यः।
गायत्री छन्द इन्द्रियम्,
त्र्यविः गौः वयो दधुः॥12॥

1224. तनूनपात् शुचिव्रतः,
तनूपाः च सरस्वती।
उष्णिहा छन्द इन्द्रियम्,
दित्यवाड् गौः वयो दधुः॥13॥

1225. इडाभिः अग्निः ईड्यः,
सोमो देवो अमर्त्यः।
अनुष्टुप् छन्द इन्द्रियम्,
पञ्चाविः गौः वयो दधुः॥14॥

1226. सुबर्हिः अग्निः पूषण्वान्,
स्तीर्णबर्हिः अमर्त्यः।
बृहती छन्द इन्द्रियम्,
त्रिवत्सो गौः वयो दधुः ॥15॥

1227. दुरो देवीः दिशो महीः,
ब्रह्मा देवो बृहस्पतिः।
पङ्क्तिः छन्द इह इन्द्रियम्,
तुर्यवाड् गौः वयो दधुः ॥16॥

(282) सूक्त 4

1228. उषे यह्वी सुपेशसा,
विश्वे देवा अमर्त्याः।
त्रिष्टुप् छन्द इह इन्द्रियम्,
पष्ठवाड् गौः वयो दधुः ॥17॥

1229. दैव्या होतारा भिषजा,
इन्द्रेण सयुजा युजा।
जगती छन्द इन्द्रियम्,
अनड्वान् गौः वयो दधुः ॥18॥

1230. तिस्त्र इडा सरस्वती,
भारती मरुतो विशः।
विराट् छन्द इह इन्द्रियम्,
धेनुः गौः न वयो दधुः ॥19॥

1231. त्वष्टा तुरीपो अद्भुत,
इन्द्राग्नी पुष्टि वर्धना।
द्विपदा छन्द इन्द्रियम्,
उक्षा गौः न वयो दधुः ॥20॥

(283) सूक्त 5

1232. शमिता नो वनस्पतिः,
सविता प्रसुवन् भगम्।
ककुप् छन्द इह इन्द्रियम्,
वशा वेहत् वयो दधुः ॥21॥

1233. स्वाहा यज्ञम् वरुणः,
सुक्षत्रो भेषजम् करत्।
अतिछन्दा इन्द्रियम् बृहत्,
ऋषभो गौः वयो दधुः ॥22॥

1234. वसन्तेन ऋतुना देवा,
वसवः त्रिवृता स्तुताः।
रथन्तरेण तेजसा,
हविः इन्द्रे वयो दधुः ॥23॥

1235. ग्रीष्मेण ऋतुना देवा,
रुद्राः पञ्च-दशे स्तुताः।
बृहता यशसा बलम्,
हविः इन्द्रे वयो दधुः ॥24॥

(284) सूक्त 6

1236. वर्षाभिः ऋतुना आदित्याः,
स्तोमे सप्तदशे स्तुताः।
वैरूपेण विशा ओजसा,
हविः इन्द्रे वयो दधुः॥25॥

1237. शारदेन ऋतुना देवा,
एकविंश ऋभवः स्तुताः।
वैराजेन श्रिया श्रियम्,
हविः इन्द्रे वयो दधुः॥26॥

1238. हेमन्तेन ऋतुना देवाः,
त्रिणवे मरुतः स्तुताः।
बलेन शक्वरीः सहो,
हविः इन्द्रे वयो दधुः॥27॥

1239. शैशिरेण ऋतुना देवाः,
त्रयस्त्रिंशे अमृताः स्तुताः।
सत्येन रेवतीः क्षत्रम्,
हविः इन्द्रे वयो दधुः॥28॥

(285) सूक्त 7

पयः सोमः परिस्रुता घृतम्
मधु व्यन्तु आज्यस्य होतः यज॥

1240. होता यक्षत् सम् इधा अग्निम्,
इडः पदे अश्विना इन्द्रम् सरस्वतीम्,
अजो धूम्रो न गोधूमैः कुवलैः भेषजम्
मधु शष्पैः न तेज इन्द्रियम्
पयः सोमः परिस्रुता घृतम्
मधु व्यन्तु आज्यस्य होतः यज॥29॥

1241. होता यक्षत् तनूनपात् सरस्वतीम्
अविः मेषो न भेषजम् पथा मधुमता,
भरन् अश्विना इन्द्राय वीर्यम् बदरैः,
उपवाकाभिः भेषजम् तोक्मभिः,
पयः सोमः परिस्रुता घृतम्
मधु व्यन्तु आज्यस्य होतः यज॥30॥

1242. होता यक्षत् नराशंसम् न नग्नहुम्,
पतिम् सुरया भेषजम् मेषः सरस्वती,
भिषक् रथो न चन्द्री,
अश्विनोः वपा इन्द्रस्य वीर्यम्,
बदरैः उपवाकाभिः भेषजम् तोक्मभिः,
पयः सोमः परिस्रुता घृतम्,
मधु व्यन्तु आज्यस्य होतः यज॥31॥

1243. होता यक्षत् इडा ईडित,
आजुह्वानः सरस्वतीम्,
इन्द्रम् बलेन वर्धयन्,
ऋषभेण गवा इन्द्रियम्,
अश्विना इन्द्राय भेषजम्,
यवैः कर्कन्धुभिः मधु लाजैः न मासरम्,
पयः सोमः परिस्रुता घृतम्,
मधु व्यन्तु आज्यस्य होतः यज ॥32॥

1244. होता यक्षत् बर्हिः ऊर्णम्रदा,
भिषक् नासत्या भिषजा,
अश्विना अश्वा शिशुमती,
भिषक् धेनुः सरस्वती,
भिषक् दुह इन्द्राय भेषजम्,
पयः सोमः परिस्रुता घृतम्,
मधु व्यन्तु आज्यस्य होतः यज ॥33॥

1245. होता यक्षत् दुरो दिशः,
कवष्यो न व्यचस्वतीः,
अश्विभ्याम् न दुरो,
दिश इन्द्रो न रोदसी,
दुघे दुहे धेनुः सरस्वती,
अश्विना इन्द्राय भेषजम्,
शुक्रम् न ज्योतिः इन्द्रियम्,
पयः सोमः परिस्रुता घृतम्,
मधु व्यन्तु आज्यस्य होतः यज ॥34॥

1246. होता यक्षत् सुपेशसा उषे नक्तम्,
दिवा अश्विना सम् अञ्जाते सरस्वत्या,
त्विषिम् इन्द्रे न भेषजम्,
श्येनो न रजसा हृदा श्रिया न मासरम्,
पयः सोमः परिस्रुता घृतम्,
मधु व्यन्तु आज्यस्य होतः यज ॥35॥

1247. होता यक्षत् दैव्या होतारा,
भिषजा अश्विना इन्द्रम्,
न जागृवि दिवा नक्तम्,
न भेषजैः शूषम् सरस्वती,
भिषक् सीसेन दुह इन्द्रियम्,
पयः सोमः परिस्रुता घृतम्,
मधु व्यन्तु आज्यस्य होतः यज ॥36॥

1248. होता यक्षत् तिस्रो देवीः न भेषजम्,
त्रयः त्रिधातवो अपसो रूपम् इन्द्रे हिरण्ययम्,
अश्विना इडा न भारती वाचा सरस्वती,
मह इन्द्राय दुहे इन्द्रियम्,
पयः सोमः परिस्रुता घृतम्,
मधु व्यन्तु आज्यस्य होतः यज ॥37॥

1249. होता यक्षत् सुरेतसम् ऋषभम्,
नर्यापसम् त्वष्टारम् इन्द्रम्,
अश्विना भिषजम् न सरस्वतीम्,
ओजो न जूतिः इन्द्रियम्,
वृको न रभसो भिषक् यशः,
सुरया भेषजम् श्रिया न मासरम्,
पयः सोमः परिस्रुता घृतम्,
मधु व्यन्तु आज्यस्य होतः यज ॥38॥

1250. होता यक्षत् वनस्पतिम् शमितारम्,
शतक्रतुम् भीमम् न मन्युम् राजानम्,
व्याघ्रम् नमसा अश्विना भामम्,
सरस्वती भिषक् इन्द्राय दुह इन्द्रियम्,
पयः सोमः परिस्रुता घृतम्,
मधु व्यन्तु आज्यस्य होतः यज ॥39॥

1251. होता यक्षत् अग्निम् स्वाहा,
आज्यस्य स्तोकानाम् स्वाहा,
मेदसाम् पृथक् स्वाहा,
छागम् अश्विभ्याम् स्वाहा,
मेषम् सरस्वत्यै स्वाहा,
ऋषभम् इन्द्राय सिंहाय,
सहस इन्द्रियम् स्वाहा,
अग्निम् न भेषजम् स्वाहा,
सोमम् इन्द्रियम् स्वाहा,
इन्द्रम् सुत्रामाणम् सवितारम्,
वरुणम् भिषजाम् पतिम् स्वाहा,
वनस्पतिम् प्रियम् पाथो न भेषजम् स्वाहा,
देवा आज्यपा जुषाणो अग्निः भेषजम्,
पयः सोमः परिस्रुता घृतम्,
मधु व्यन्तु आज्यस्य होतः यज ॥40॥

(286) सूक्त 8

जुषताम् हविः होतः यज

1252. होता यक्षत् अश्विनौ छागस्य वपाया,
मेदसो जुषेताम् हविः होतः यज।
होता यक्षत् सरस्वतीम् मेषस्य वपाया,
मेदसो जुषताम् हविः होतः यज।
होता यक्षत् इन्द्रम् ऋषभस्य वपाया मेदसो,
जुषताम् हविः होतः यज ॥41॥

1253. होता यक्षत् अश्विनौ सरस्वतीम्,
इन्द्रम् सुत्रामाणम् इमे सोमाः,
सुरामाणः छागैः न मेषैः ऋषभैः,
सुताः शष्पैः न तोक्मभिः लाजैः,
महस्वन्तो मदा मासरेण परिष्कृताः,
शुक्राः पयस्वन्तो अमृताः, प्रस्थिता वो मधुश्चुतः,
तान् अश्विना सरस्वती,
इन्द्रः सुत्रामा वृत्रहा जुषन्ताम्।
सोम्यम् मधु पिबन्तु,
मदन्तु व्यन्तु होतः यज॥42॥

1254. होता यक्षत् अश्विनौ छागस्य,
हविष आत्ताम् अद्य मध्यतो मेद,
उद्भृतम् पुरा द्वेषोभ्यः पुरा पौरुषेय्या,
गृभो घस्ताम् नूनम् घासे अज्राणाम्,
यवस प्रथमानाम् सुमत् क्षराणाम्,
शतरुद्रियाणाम् अग्निष्वातानाम्, पीव उपवसनानाम्,
पार्श्वतः श्रोणितः शितामत उत्सादतो,
अङ्गात् अवतानाम् करत एव अश्विना,
जुषेताम् हविः होतः यज॥43॥

1255. होता यक्षत् सरस्वतीम् मेषस्य हविष,
आ अवयत् अद्य मध्यतो मेद उद्भृतम्,
पुरा द्वेषोभ्यः पुरा पौरुषेय्या गृभो घसत्,
नूनम् घासे अज्राणाम् यवस प्रथमानाम्,
सुमत् क्षराणाम् शतरुद्रियाणाम्,
अग्निष्वातानाम् पीव उपवसानानाम्,
पार्श्वतः श्रोणितः शितामत उत्सादतो,
अङ्गात् अङगात् अवतानाम्,
करत् एवम् सरस्वती
जुषताम् हविः होतः यज॥44॥

1256. होता यक्षत् इन्द्रम् ऋषभस्य हविष,
आ अवयत् अद्य मध्यतो मेद उद्भृतम्,
पुरा द्वेषोभ्यः पुरा पौरुषेय्या गृभो घसत्,
नूनम् घासे अज्राणाम् यवस प्रथमानाम्,
सुमत् क्षराणाम् शतरुद्रियाणाम्,
अग्निष्वातानाम् पीव उपवसनानाम्,
पार्श्वतः श्रोणितः शितामत उत्सादतो,
अङ्गात् अङ्गात् अवतानाम् करत् एवम् इन्द्रो
जुषताम् हविः होतः यज॥45॥

1257. होता यक्षत् वनस्पतिम् अभि हि,
पिष्टतमया रभिष्ठया रशनया अधित।
यत्र अश्विनोः छागस्य हविषः,
प्रिया धामानि यत्र सरस्वत्या मेषस्य हविषः,
प्रिया धामानि यत्र इन्द्रस्य ऋषभस्य हविषः,
प्रिया धामानि यत्र अग्नेः,
प्रिया धामानि यत्र सोमस्य,
प्रिया धामानि यत्र इन्द्रस्य सुत्राम्णः,
प्रिया धामानि यत्र सवितुः,
प्रिया धामानि यत्र वरुणस्य,
प्रिया धामानि यत्र वनस्पतेः,
प्रिया पाथांसि यत्र देवानाम् आज्यपानाम्,
प्रिया धामानि यत्र अग्नेः होतुः,
प्रिया धामानि तत्र एतान्,
प्रस्तुत्य इव उपस्तुत्य इव,
उप अवस्त्रक्षत् रभीयस इव
कृत्वी करत् एवम् देवो वनस्पतिः
जुषताम् हविः होतः यज॥46॥

1258. होता यक्षत् अग्निम् स्विष्टकृतम् अयाट्,
अग्निः अश्विनोः छागस्य हविषः,
प्रिया धामानि अयाट्, सरस्वत्या मेषस्य हविषः,
प्रिया धामानि अयाट्, इन्द्रस्य ऋषभस्य हविषः,
प्रिया धामानि अयाट्, अग्नेः,
प्रिया धामानि अयाट् सोमस्य,
प्रिया धामानि अयाट् इन्द्रस्य सुत्राम्णः,
प्रिया धामानि अयाट् सवितुः,
प्रिया धामानि अयाड् वरुणस्य,
प्रिया धामानि अयाड् वनस्पतेः,
प्रिया पाथांसि अयाड् देवानाम् आज्यपानाम्,
प्रिया धामानि यक्षत् अग्नेः होतुः,
प्रिया धामानि यक्षत् स्वम् महिमानम्,
आ यजताम् एज्या इषः कृणोतु,
सो अध्वरा जातवेदा,
जुषताम् हविः होतः यज॥47॥

(287) सूक्त 9

1259. देवम् बर्हिः सरस्वती,
सु देवम् इन्द्रे अश्विना।
तेजो न चक्षुः अक्ष्योः बर्हिषा
दधुः इन्द्रियम् वसुवने,
वसुधेयस्य व्यन्तु यज॥48॥

1260. देवीः द्वारो अश्विना,
भिषजा इन्द्रे सरस्वती।
प्राणम् न वीर्यम् नसि द्वारो
दधुः इन्द्रियम् वसु-वने,
वसु-धेयस्य व्यन्तु यज॥49॥

1261. देवी उषासौ अश्विना,
सुत्रामा इन्द्रे सरस्वती।
बलम् न वाचम् आस्य उषाभ्याम्
दधुः इन्द्रियम् वसुवने,
वसुधेयस्य व्यन्तु यज॥50॥

1262. देवी जोष्ट्री सरस्वती,
अश्विना इन्द्रम् अवर्धयन्।
श्रोत्रम् न कर्णयोः यशो जोष्ट्रीभ्याम्
दधुः इन्द्रियम् वसुवने,
वसुधेयस्य व्यन्तु यज॥51॥

1263. देवी ऊर्जाहुती दुघे सुदुघा इन्द्रे,
सरस्वती अश्विना भिषजा अवतः।
शुक्रम् न ज्योतिः स्तनयोः आहुती
धत्तः इन्द्रियम् वसुवने,
वसुधेयस्य व्यन्तु यज॥52॥

1264. देवा देवानाम् भिषजा,
होतारौ इन्द्रम् अश्विना।
वषट्कारैः सरस्वती त्विषिम्,
न हृदये मतिम् होतृभ्याम्
दधुः इन्द्रियम् वसु-वने,
वसु-धेयस्य व्यन्तु यज॥53॥

1265. देवीः तिस्रः तिस्रो देवीः,
अश्विना इडा सरस्वती।
शूषम् न मध्ये नाभ्याम् इन्द्राय
दधुः इन्द्रियम् वसुवने,
वसुधेयस्य व्यन्तु यज॥54॥

(288) सूक्त 10

वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज॥

1266. देव इन्द्रो नराशंसः त्रिवरूथः,
सरस्वत्या अश्विभ्याम् ईयते रथः।
रेतो न रूपम् अमृतम् जनित्रम्,
इन्द्राय त्वष्टा दधत् इन्द्रियाणि,
वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज॥55॥

1267. देवो देवैः वनस्पतिः,
हिरण्यवर्णो अश्विभ्याम्,
सरस्वत्या सुप्पिल,
इन्द्राय पच्यते मधु।
ओजो न जूतिः ऋषभो न भामम्,
वनस्पतिः नो दधत् इन्द्रियाणि,
वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज ॥56॥

1268. देवम् बर्हिः वारितीनाम्,
अध्वरे स्तीर्णम् अश्विभ्याम्,
ऊर्णम्रदाः सरस्वत्या,
स्योनम् इन्द्र ते सदः।
ईशायै मन्युम् राजानम्,
बर्हिषा दधुः इन्द्रियम्,
वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज ॥57॥

1269. देवो अग्निः स्विष्टकृत्, देवान् यक्षत् यथायथम्,
होतारौ इन्द्रम् अश्विना, वाचा वाचम् सरस्वतीम्,
अग्निम् सोमम् स्विष्टकृत्, स्विष्ट इन्द्रः सुत्रामा,
सविता वरुणो भिषक् इष्टो, देवो वनस्पतिः स्विष्टा,
देवा आज्यपाः स्विष्टो,
अग्निः अग्निना होता होत्रे स्विष्टकृत्,
यशो न दधत् इन्द्रियम्, ऊर्जम् अपचितिम् स्वधाम्,
वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज ॥58॥

(289) सूक्त 11

1270. अग्निम् अद्य होतारम् अवृणीत अयम्,
यजमानः पचन् पक्तीः पचन्,
पुरोडाशान् बध्नन् अश्विभ्याम् छागम्,
सरस्वत्यै मेषम् इन्द्राय ऋषभम्,
सुन्वन् अश्विभ्याम् सरस्वत्या,
इन्द्राय सुत्राम्णे सुरासोमान् ॥59॥

1271. सूपस्था अद्य देवो वनस्पतिः,
अभवत् अश्विभ्याम् छागेन सरस्वत्यै,
मेषेण इन्द्राय ऋषभेण अक्षन् तान् मेदस्तः,
प्रति पचता अगृभीषत, अवीवृधन्त पुरोडाशैः,
अपुः अश्विना सरस्वती,
इन्द्रः सुत्रामा सुरासोमान् ॥60॥

1272. त्वाम् अद्य ऋष आर्षेय,
ऋषीणाम् नपात् अवृणीत,
अयम् यजमानो बहुभ्य आ सङ्गतेभ्य,
एष मे देवेषु वसु वारि आ यक्ष्यत इति,
ता या देवा देव दानानि अदुः तानि अस्मा,
आ च शास्स्व आ च गुरस्व इषितः च होतः असि,
भद्र वाच्याय प्रेषितो मानुषः,
सूक्त-वाकाय सूक्ता ब्रूहि ॥61॥

इति एकविंशो अध्यायः

ॐ

अथ द्वाविंशः अध्यायः

(290) सूक्त 1

1273. तेजो असि शुक्रम् अमृतम्,
आयुष्पा आयुः मे पाहि।
देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे अश्विनोः,
बाहुभ्याम् पूष्णो हस्ताभ्याम् आ ददे ॥1॥

1274. इमाम् अगृभ्णन् रशनाम् ऋतस्य,
पूर्वे आयुषि विदथेषु कव्या।
सा नो अस्मिन् सुते आ बभूव,
ऋतस्य सामन् सरम् आरपन्ती ॥2॥

1275. अभिधा असि भुवनम् असि,
यन्ता असि धर्ता।
स त्वम् अग्निम् वैश्वानरम्,
सप्रथसम् गच्छ स्वाहाकृतः ॥3॥

1276. स्वगा त्वा देवेभ्यः,
प्रजापतये ब्रह्मन् अश्वम्,
भन्त्स्यामि देवेभ्यः,
प्रजापतये तेन राध्यासम्।
तम् बधान देवेभ्यः,
प्रजापतये तेन राध्नुहि ॥4॥

1277. प्रजापतये त्वा जुष्टम् प्र उक्षामि,
इन्द्राग्निभ्याम् त्वा जुष्टम् प्र उक्षामि,
वायवे त्वा जुष्टम् प्र उक्षामि,
विश्वेभ्यः त्वा देवेभ्यो जुष्टम् प्र उक्षामि,
सवेभ्यः त्वा देवेभ्यो जुष्टम् प्र उक्षामि।
यो अर्वन्तम् जिघांसति,
तम् अभि अमीति वरुणः।
परो मर्तः परः श्वा ॥5॥

(291) सूक्त 2

1278. अग्नये स्वाहा सोमाय स्वाहा,
अपाम् मोदाय स्वाहा सवित्रे स्वाहा,
वायवे स्वाहा विष्णवे स्वाहा,
इन्द्राय स्वाहा बृहस्पतये स्वाहा,
मित्राय स्वाहा वरुणाय स्वाहा ॥6॥

1279. हिङ्काराय स्वाहा हिङ्कृताय स्वाहा,
क्रदन्ते स्वाहा अवक्रन्दाय स्वाहा,
प्रोथते स्वाहा प्र प्रोथाय स्वाहा,
गन्धाय स्वाहा घ्राताय स्वाहा,
निविष्टाय स्वाहा उपविष्टाय स्वाहा,
संदिताय स्वाहा वल्गते स्वाहा,
आसीनाय स्वाहा शयानाय स्वाहा,
स्वपते स्वाहा जाग्रते स्वाहा,
कूजते स्वाहा प्रबुद्धाय स्वाहा,
विजृम्भमाणाय स्वाहा विचृताय स्वाहा,
संहानाय स्वाहा उपस्थिताय स्वाहा,
आयनाय स्वाहा प्रायणाय स्वाहा ॥7॥

1280. यते स्वाहा धावते स्वाहा,
उद्द्रावाय स्वाहा उद्द्रुताय स्वाहा,
शूकराय स्वाहा शूकृताय स्वाहा,
निषण्णाय स्वाहा उत्थिताय स्वाहा,
जवाय स्वाहा बलाय स्वाहा,
विवर्तमानाय स्वाहा विवृताय स्वाहा,
विधून्वानाय स्वाहा विधूताय स्वाहा,
शुश्रूषमाणाय स्वाहा शृण्वते स्वाहा,
ईक्षमाणाय स्वाहा ईक्षिताय स्वाहा,
वीक्षिताय स्वाहा निमेषाय स्वाहा,
यत् अत्ति तस्मै स्वाहा,
यत् पिबति तस्मै स्वाहा,
यत् मूत्रम् करोति तस्मै स्वाहा,
कुर्वते स्वाहा कृताय स्वाहा ॥8॥

(292) सूक्त 3

1281. तत् सवितुः वरेण्यम्,
भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात् ॥9॥

1282. हिरण्यपाणिम् ऊतये,
सवितारम् उप ह्वये।
स चेत्ता देवता पदम् ॥10॥

1283. देवस्य चेततो महीम्,
प्र सवितुः हवामहे।
सुमतिम् सत्यराधसम्॥11॥

1284. सुष्टुतिम् सुमतीवृधो,
रातिम् सवितुः ईमहे॥
प्र देवाय मती-विदे ॥12॥

1285. रातिम् सत्पतिम् महे,
सवितारम् उप ह्वये।
आसवम् देव-वीतये॥13॥

1286. देवस्य सवितुः मतिम्,
आसवम् विश्वदेव्यम्।
धिया भगम् मनामहे॥14॥

1287. अग्निम् स्तोमेन बोधय,
समिधानो अमर्त्यम्।
हव्या देवेषु नो दधत्॥15॥

1288. स हव्यात् अमर्त्य,
उशिक् दूतः चनोहितः।
अग्निः धिया सम् ऋण्वति॥16॥

1289. अग्निम् दूतम् पुरो दधे,
हव्यवाहम् उप ब्रूवे।
देवान् आ सादयात् इह॥17॥

1290. अजीजनो हि पवमान,
सूर्यम् विधारे शक्मना पयः।
गोजीरया रंहमाणः पुरन्ध्या॥18॥

(293) सूक्त 4

1291. विभूः मात्रा प्रभूः पित्रा,
अश्वो असि, हयो असि,
अत्यो असि, मयो असि,
अर्वा असि, सप्तिः असि,
वाजी असि, वृषा असि,
नृमणा असि।
ययुः नाम असि, शिशुः नाम,
आदित्यानाम् पत्वा अन्विहि,
देवा आशापाला एतम्,
देवेभ्यो अश्वम् मेधाय,
प्र उक्षितम् रक्षत
इह रन्तिः, इह रमताम्,
इह धृतिः, इह स्वधृतिः॥19॥

1292. काय स्वाहा, कस्मै स्वाहा,
कतमस्मै स्वाहा,
स्वाहा अधिम् आधीताय,
स्वाहा मनः प्रजापतये,
स्वाहा चित्तम् विज्ञाताय अदित्यै,
स्वाहा अदित्यै मह्यै,
स्वाहा अदित्यै सुमृडीकायै
स्वाहा सरस्वत्यै,
स्वाहा सरस्वत्यै पावकायै,
स्वाहा सरस्वत्यै बृहत्यै,
स्वाहा पूष्णे,
स्वाहा पूष्णे प्र पथ्याय,
स्वाहा पूष्णे नरन्धिषाय,
स्वाहा त्वष्ट्रे,
स्वाहा त्वष्ट्रे तुरीपाय,
स्वाहा त्वष्ट्रे पुरुरूपाय,
स्वाहा विष्णवे स्वाहा,
विष्णवे निभूयपाय,
स्वाहा विष्णवे शिपिविष्टाय ॥20॥

(294) सूक्त 5

1293. विश्वो देवस्य नेतुः,
मर्त्तो वुरीत सख्यम्।
विश्वो राय इषुध्यति,
द्युम्नम् वृणीत पुष्यसे ॥21॥

1294. आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो,
ब्रह्मवर्चसी जायताम्,
आ राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्यो,
अतिव्याधी महारथो जायताम्,
दोग्ध्री धेनुः वोढा अनड्वान्,
आशुः सप्तिः पुरन्धिः योषा,
जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवा,
आ अस्य यजमानस्य वीरो जायताम्,
निकामे निकामे नः पजन्यो,
वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः,
पच्यन्ताम् योगक्षेमो नः कल्पताम् ॥22॥

1295. प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा,
व्यानाय स्वाहा,
चक्षुषे स्वाहा, श्रोत्राय स्वाहा,
वाचे स्वाहा, मनसे स्वाहा ॥23॥

1296. प्राच्यै दिशे स्वाहा अर्वाच्यै दिशे स्वाहा,
दक्षिणायै दिशे स्वाहा अर्वाच्यै दिशे स्वाहा,
प्रतीच्यै दिशे स्वाहा अर्वाच्यै दिशे स्वाहा,
उदीच्यै दिशे स्वाहा अर्वाच्यै दिशे स्वाहा,
उर्ध्वायै दिशे स्वाहा अर्वाच्यै दिशे स्वाहा,
अर्वाच्यै दिशे स्वाहा अर्वाच्यै दिशे स्वाहा ॥24॥

1297. अद्भ्यः स्वाहा वार्भ्यः स्वाहा,
उदकाय स्वाहा तिष्ठन्तीभ्यः स्वाहा,
स्रवन्तीभ्यः स्वाहा स्यन्दमानाभ्यः स्वाहा,
कूप्याभ्यः स्वाहा सूद्याभ्यः स्वाहा,
धार्याभ्यः स्वाहा अर्णवाय स्वाहा,
समुद्राय स्वाहा सरिराय स्वाहा ॥25॥

1298. वाताय स्वाहा धूमाय स्वाहा,
अभ्राय स्वाहा मेधाय स्वाहा,
विद्योतमानाय स्वाहा स्तनयते स्वाहा,
अवस्फूर्जते स्वाहा वर्षते स्वाहा,
अववर्षते स्वाहा उग्रम् वर्षते स्वाहा,
शीघ्रम् वर्षते स्वाहा उत् गृह्णते स्वाहा,
उत् गृहीताय स्वाहा प्रुष्णते स्वाहा,
शीकायते स्वाहा प्रुष्वाभ्यः स्वाहा,
ह्रादुनीभ्यः स्वाहा नीहाराय स्वाहा ॥26॥

1299. अग्नये स्वाहा सोमाय स्वाहा,
इन्द्राय स्वाहा पृथिव्यै स्वाहा,
अन्तरिक्षाय स्वाहा दिवे स्वाहा,
दिग्भ्यः स्वाहा आशाभ्यः स्वाहा,
उर्व्यै दिशे स्वाहा अर्वाच्यै दिशे स्वाहा ॥27॥

1300. नक्षत्रेभ्यः स्वाहा नक्षत्रियेभ्यः स्वाहा,
अहोरात्रेभ्यः स्वाहा अर्धमासेभ्यः स्वाहा,
मासेभ्यः स्वाहा ऋतुभ्यः स्वाहा,
आर्तवेभ्यः स्वाहा सम्वत्सराय स्वाहा,
द्यावापृथिवीभ्याम् स्वाहा चन्द्राय स्वाहा,
सूर्याय स्वाहा रश्मिभ्यः स्वाहा,
वसुभ्यः स्वाहा रुद्रेभ्यः स्वाहा,
आदित्येभ्यः स्वाहा मरुद्भ्यः स्वाहा,
विश्वेभ्यो देवेभ्यो स्वाहा,
मूलेभ्यः स्वाहा, शाखाभ्यः स्वाहा,
वनस्पतिभ्यः स्वाहा, पुष्पेभ्यः स्वाहा,
फलेभ्यः स्वाहा, औषधीभ्यः स्वाहा ॥28॥

1301. पृथिव्यै स्वाहा अन्तरिक्षाय स्वाहा,
दिवे स्वाहा सूर्याय स्वाहा,
चन्द्राय स्वाहा नक्षत्रेभ्यः स्वाहा,
अद्भ्यः स्वाहा औषधीभ्यः स्वाहा,
वनस्पतिभ्यः स्वाहा परिप्लवेभ्यः स्वाहा,
चराचरेभ्यः स्वाहा सरीसृपेभ्यः स्वाहा ॥29॥

1302. असवे स्वाहा वसवे स्वाहा,
विभुवे स्वाहा विवस्वते स्वाहा,
गणश्रिये स्वाहा गणपतये स्वाहा,
अभिभुवे स्वाहा अधिपतये स्वाहा,
शूषाय स्वाहा संसर्पाय स्वाहा,
चन्द्राय स्वाहा ज्योतिषे स्वाहा,
मलिम्लुचाय स्वाहा दिवा पतयते स्वाहा ॥30॥

1303. मधवे स्वाहा माधवाय स्वाहा,
शुक्राय स्वाहा शुचये स्वाहा,
नभसे स्वाहा नभस्याय स्वाहा,
इषाय स्वाहा ऊर्जाय स्वाहा,
सहसे स्वाहा सहस्याय स्वाहा,
तपसे स्वाहा तपस्याय स्वाहा,
अंहसस्पतये स्वाहा ॥31॥

1304. वाजाय स्वाहा प्रसवाय स्वाहा,
अपिजाय स्वाहा क्रतवे स्वाहा,
स्वः स्वाहा मूर्ध्ने स्वाहा,
व्यश्नुविने स्वाहा अन्त्याय स्वाहा,
अन्त्याय भौवनाय स्वाहा,
भुवनस्य पतये स्वाहा,
अधिपतये स्वाहा प्रजापतये स्वाहा ॥32॥

1305. आयुः यज्ञेन कल्पताम् स्वाहा,
प्राणो यज्ञेन कल्पताम् स्वाहा,
अपानो यज्ञेन कल्पताम् स्वाहा,
व्यानो यज्ञेन कल्पताम् स्वाहा,
उदानो यज्ञेन कल्पताम् स्वाहा,
समानो यज्ञेन कल्पताम् स्वाहा,
चक्षुः यज्ञेन कल्पताम् स्वाहा,
श्रोत्रम् यज्ञेन कल्पताम् स्वाहा,
वाक् यज्ञेन कल्पताम् स्वाहा,
मनो यज्ञेन कल्पताम् स्वाहा,
आत्मा यज्ञेन कल्पताम् स्वाहा,
ब्रह्मा यज्ञेन कल्पताम् स्वाहा,
ज्योतिः यज्ञेन कल्पताम् स्वाहा,
स्वः यज्ञेन कल्पताम् स्वाहा,
पृष्ठम् यज्ञेन कल्पताम् स्वाहा,
यज्ञो यज्ञेन कल्पताम् स्वाहा ॥33॥

1306. एकस्मै स्वाहा द्वाभ्याम् स्वाहा,
शताय स्वाहा एकशताय स्वाहा,
व्युष्ट्यै स्वाहा स्वर्गाय स्वाहा ॥34॥

इति द्वाविंशो अध्यायः

ॐ

अथ त्रयोविंशो अध्यायः

(295) सूक्त 1

1307. हिरण्यगर्भः सम् अवर्तत अग्रे,
भूतस्य जातः पतिः एक आसीत्।
स दाधार पृथिवीम् द्याम् उत इमाम्,
कस्मै देवाय हविषा विधेम॥1॥

1308. उपयाम गृहीतो असि,
प्रजापतये त्वा जुष्टम् गृह्णामि,
एष ते योनिः सूर्यः ते महिमा।
यः ते अहन् सम्वत्सरे महिमा सम्बभूव,
यः ते वायौ अन्तरिक्षे महिमा सम्बभूव,
यः ते दिवि सूर्ये महिमा सम्बभूव,
तस्मै ते महिम्ने प्रजापतये स्वाहा देवेभ्यः॥2॥

1309. यः प्राणतो निमिषतो महित्वा,
एक इत् राजा जगतो बभूव।
य ईशे अस्य द्विपदः चतुष्पदः,
कस्मै देवाय हविषा विधेम॥3॥

1310. उपयाम गृहीतो असि,
प्रजापतये त्वा जुष्टम् गृह्णामि,
एष ते योनिः चन्द्रमाः ते महिमा।
यः ते रात्रौ सम्वत्सरे महिमा सम्बभूव,
यः ते पृथिव्याम् अग्नौ महिमा सम्बभूव,
यः ते नक्षत्रेषु चन्द्रम् असि महिमा सम्बभूव,
तस्मै ते महिम्ने प्रजापतये देवेभ्यः स्वाहा॥4॥

(296) सूक्त 2

1311. युञ्जन्ति ब्रध्नम् अरुषम्,
चरन्तम् परि तस्थुषः।
रोचन्ते रोचना दिवि॥5॥

1312. युञ्जन्ति अस्य काम्या,
हरी विपक्षसा रथे।
शोणा धृष्णू नृवाहसा॥6॥

1313. यत् वातो अपो अगनीगन्,
प्रियाम् इन्द्रस्य तन्वम्।
एतम् स्तोतः अनेन पथा,
पुनः अश्वम् आ वर्तयासि नः॥7॥

1314. वसवः त्वा अञ्जन्तु गायत्रेण छन्दसा,
रुद्राः त्वा अञ्जन्तु त्रैष्टुभेन छन्दसा,
आदित्याः त्वा अञ्जन्तु जागतेन छन्दसा।
भूः भुवः स्वः लाजीन् शाचीन् यव्ये गव्य एतत्,
अन्नम् अत्त देवा एतत् अन्नम् अद्धि प्रजापते॥8॥

(297) सूक्त 3

1315. कः स्वित् एकाकी चरति,
क उ स्वित् जायते पुनः।
किम् स्वित् हिमस्य भेषजम्,
किम् उ आवपनम् महत्॥9॥

1316. सूर्य एकाकी चरति,
चन्द्रमा जायते पुनः।
अग्निः हिमस्य भेषजम्,
भूमिः आवपनम् महत्॥10॥

(298) सूक्त 4

1317. का स्वित् आसीत् पूर्व चित्तिः,
किम् स्वित् आसीत् बृहत् वयः।
का स्वित् आसीत् पिलिप्पिला,
का स्वित् आसीत् पिशङ्गिला॥11॥

1318. द्यौः आसीत् पूर्व चित्तिः,
अश्व आसीत् बृहत् वयः।
अविः आसीत् पिलिप्पिला,
रात्रिः आसीत् पिशङ्गिला॥12॥

(299) सूक्त 5

1319. वायुः त्वा पचतेः,
अवतु असितग्रीवः,
छागैः न्यग्रोधः चमसैः,
शल्मलिः वृद्ध्या।
एष स्य राथ्यो वृषा,
पड्भिः चतुर्भिः आ इत् अगन् ,
ब्रह्मा अकृष्णः च नो,
अवतु नमो अग्नये॥13॥

1320.सम् शितो रश्मिना रथः,
सम् शितो रश्मिना हयः।
सम् शितो अप्सु अप्सुजा,
ब्रह्मा सोम पुरोगवः॥14॥

1321. स्वयम् वाजिन् तन्वम् कल्पयस्व,
स्वयम् यजस्व स्वयम् जुषस्व।
महिमा ते अन्येन न सम् नशे॥15॥

1322. न वा उ एतत् म्रियसे न रिष्यसि,
देवान् इत् एषि पथिभिः सुगेभिः।
यत्र आसते सुकृतो यत्र ते ययुः,
तत्र त्वा देवः सविता दधातु॥16॥

(300) सूक्त 6

1323. अग्निः पशुः आसीत् तेन अयजन्त,
स एतम् लोकम् अजयत् यस्मिन् अग्निः,
स ते लोको भविष्यति,
तम् जेष्यसि पिब एता अपः।
वायुः पशुः आसीत् तेन अयजन्त,
स एतम् लोकम् अजयत् यस्मिन् वायुः,
स ते लोको भविष्यति,
तम् जेष्यसि पिब एता अपः।
सूर्यः पशुः आसीत् तेन अयजन्त,
स एतम् लोकम् अजयत् यस्मिन् सूर्यः,
स ते लोको भविष्यति,
तम् जेष्यसि पिब एता अपः ॥17॥

1324. प्राणाय स्वाहा अपानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा।
अम्बे अम्बिके अम्बालिके, न मा नयति कः चन।
ससस्ति अश्वकः सुभद्रिकाम् काम्पीलवासिनीम् ॥18॥

(301) सूक्त 7

1325. गणानाम् त्वा गणपतिम् हवामहे,
प्रियाणाम् त्वा प्रियपतिम् हवामहे,
निधीनाम् त्वा निधिपतिम् हवामहे वसो मम।
आ अहम् अजानि गर्भधम्,
आ त्वम् अजासि गर्भधम् ॥19॥

1326. ता उभौ चतुरः पदः,
सम् प्रसारयाव स्वर्गे लोके,
प्र ऊर्णुवाथाम् वृषा वाजी,
रेतोधा रेतो दधातु ॥20॥

1327. उत् सक्थ्या अव गुदम् धेहि,
सम् अञ्जिम् चारया वृषन्।
य स्त्रीणाम् जीव-भोजनः ॥21॥

1328. यका असकौ शकुन्तिका,
आहलक् इति वञ्चति।
आ हन्ति गभे पसो,
निगल्गलीति धारका ॥22॥

1329. यको असकौ शकुन्तक,
आहलक् इति वञ्चति।
विवक्षत इव ते मुखम् अध्वर्यो,
मा नः त्वम् अभि भाषथाः ॥23॥

(302) सूक्त 8

1330. माता च ते पिता च ते,
अग्रम् वृक्षस्य रोहतः।
प्र तिलामि इति ते पिता,
गभे मुष्टिम् अतंसयत् ॥24॥

1331. माता च ते पिता च ते,
अग्रे वृक्षस्य क्रीडतः।
विवक्षत इव ते मुखम्,
ब्रह्मन् मा त्वम् वदो बहु॥25॥

1332. ऊर्ध्वाम् एनाम् उत् श्रापय,
गिरौ भारम् हरन् इव।
अथ अस्यै मध्यम् एधताम्,
शीते वाते पुनन् इव॥26॥

1333. ऊर्ध्वम् एनम् उत् श्रायतात्,
गिरौ भारम् हरन् इव।
अथ अस्य मध्यम् एजतु,
शीते वाते पुनन् इव॥27॥

1334. यत् अस्या अंहुभेद्याः,
कृधु स्थूलम् उपातसत्।
मुष्कौ इत् अस्या एजतो,
गोशफे शकुलौ इव॥28॥

1335. यत् देवासो ललामगुम्,
प्र विष्टीमिनम् आविषुः।
सक्थ्ना देदिश्यते नारी,
सत्यस्य अक्षिभुवो यथा॥29॥

1336. यत् हरिणो यवम् अत्ति,
न पुष्टम् पशु मन्यते।
शूद्रा यत् अर्यजारा,
न पोषाय धनायति॥30॥

1337. यत् हरिणो यवम् अत्ति,
न पुष्टम् बहु मन्यते।
शूद्रो यत् अर्यायै जारो,
न पोषम् अनु मन्यते॥31॥

1338. दधिक्राव्णो अकारिषम्,
जिष्णोः अश्वस्य वाजिनः।
सुरभि नो मुखा करत्,
प्र ण आयूंषि तारिषत्॥32॥

(303) सूक्त 9

1339. गायत्री त्रिष्टुप् जगती,
अनुष्टुप् पङ्क्त्या सह।
बृहती उष्णिहा ककुप्,
सूचीभिः शम्यन्तु त्वा॥33॥

1340.द्विपदा याः चतुष्पदाः,
त्रिपदा याः च षट्पदाः।
विच्छन्दा याः च सच्छन्दाः,
सूचीभिः शम्यन्तु त्वा॥34॥

1341. महानाम्नयो रेवत्यो,
विश्वा आशाः प्रभूवरीः।
मैघीः विद्युतो वाचः,
सूचीभिः शम्यन्तु त्वा ॥35॥

1342. नार्य्यः ते पत्न्यो लोम,
वि चिन्वन्तु मनीषया।
देवानाम् पत्न्यो दिशः,
सूचीभिः शम्यन्तु त्वा ॥36॥

(304) सूक्त 10

1343. रजता हरिणीः सीसा,
युजो युज्यन्ते कर्मभिः।
अश्वस्य वाजिनः त्वचि,
सिमाः शम्यन्तु शम्यन्तीः ॥37॥

1344. कुवित् अङ्ग यवमन्तो यवम् चित्,
यथा दान्ति अनुपूर्वम् वियूय।
इह इह एषाम् कृणुहि भोजनानि,
ये बर्हिषो नम उक्तिम् यजन्ति ॥38॥

(305) सूक्त 11

1345. कः त्वा छ्यति,
कः त्वा वि शास्ति,
कः ते गात्राणि शम्यति।
क उ ते शमिता कविः ॥39॥

1346. ऋतवः त ऋतुथा पर्व,
शमितारो वि शासतु।
सम्वत्सरस्य तेजसा,
शमीभिः शम्यन्तु त्वा ॥40॥

1347. अर्द्ध मासाः परूंषि ते,
मासा आ छ्यन्तु शम्यन्तः।
अहोरात्राणि मरुतो,
विलिष्टम् सूदयन्तु ते ॥41॥

1348. दैव्या अध्वर्यवः त्वा,
छ्यन्तु वि च शासतु।
गात्राणि पर्वशः ते,
सिमाः कृण्वन्तु शम्यन्तीः ॥42॥

1349. द्यौः ते पृथिवी अन्तरिक्षम्,
वायुः छिद्रम् पृणातु ते।
सूर्यः ते नक्षत्रैः सह,
लोकम् कृणोतु साधुया ॥43॥

1350. शम् ते परेभ्यो गात्रेभ्यः,
शम् अस्तु अवरेभ्यः।
शम् अस्थभ्यो मज्जभ्यः,
शम् उ अस्तु तन्वै तव ॥44॥

(306) सूक्त 12

1351. कः स्वित् एकाकी चरति,
क उ स्वित् जायते पुनः।
किम् स्वित् हिमस्य अस्य भेषजम्,
किम् उ आवपनम् महत्॥45॥

1352. सूर्य एकाकी चरति,
चन्द्रमा जायते पुनः।
अग्निः हिमस्य भेषजम्,
भूमिः आवपनम् महत्॥46॥

1353. किम् स्वित् सूर्य्यसमम् ज्योतिः,
किम् समुद्रसमम् सरः।
किम् स्वित् पृथिव्यै वर्षीयः,
कस्य मात्रा न विद्यते॥47॥

1354. ब्रह्म सूर्यसमम् ज्योतिः,
द्यौः समुद्र-समम् सरः।
इन्द्रः पृथिव्यै वर्षीयान्,
गोः तु मात्रा न विद्यते॥48॥

1355. पृच्छामि त्वा चितये देवसख,
यदि त्वम् अत्र मनसा जगन्थ।
येषु विष्णुः त्रिषु पदेषु एष्टः,
तेषु विश्वम् भुवनम् आ विवेश॥49॥

1356. अपि तेषु त्रिषु पदेषु अस्मि,
येषु विश्वम् भुवनम् आ विवेश।
सद्यः परि एमि पृथिवीम् उत द्याम्,
एकेन अङ्गेन दिवो अस्य पृष्ठम्॥50॥

(307) सूक्त 13

1357. केषु अन्तः पुरुष आ विवेश,
कानि अन्तः पुरुषे अर्पितानि।
एतत् ब्रह्मन् उप वल्हामसि त्वा,
किम् स्वित् नः प्रति वोचासि अत्र॥51॥

1358. पञ्चसु अन्तः पुरुष आ विवेश,
तानि अन्तः पुरुषे अर्पितानि।
एतत् त्वा अत्र प्रतिमन्वानो अस्मि,
न मायया भवसि उत्तरो मत्॥52॥

1359. का स्वित् आसीत् पूर्व चित्तिः,
किम् स्वित् आसीत् बृहत् वयः।
का स्वित् आसीत् पिलिप्पिला,
का स्वित् आसीत् पिशङ्गिला॥53॥

1360. द्यौः आसीत् पूर्व चित्तिः,
अश्व आसीत् बृहत् वयः।
अविः आसीत् पिलिप्पिला,
रात्रिः आसीत् पिशङ्गिला॥54॥

1361. का ईम् अरे पिशङ्गिला,
का ईम् कुरु पिशङ्गिला।
क ईम् आ स्कन्दम् अर्षति,
क ईम् पन्थाम् वि सर्पति॥55॥

1362. अजा अरे पिशङ्गिला,
श्वावित् कुरु पिशङ्गिला।
शश आ स्कन्दम् अर्षति,
अहिः पन्थाम् वि सर्पति॥56॥

1363. कति अस्य विष्ठाः कति अक्षराणि,
कति होमासः कतिधा समिद्धः।
यज्ञस्य त्वा विदथा पृच्छम् अत्र,
कति होतार ऋतुशो यजन्ति॥57॥

1364. षट् अस्य विष्ठाः शतम् अक्षराणि,
अशीतिः होमाः समिधो ह तिस्त्रः।
यज्ञस्य ते विदथा प्र ब्रवीमि,
सप्त होतार ऋतुशो यजन्ति॥58॥

1365. को अस्य वेद भुवनस्य नाभिम्,
को द्यावापृथिवी अन्तरिक्षम्।
कः सूर्यस्य वेद बृहतो जनित्रम्,
को वेद चन्द्रमसम् यतोजाः॥59॥

1366. वेद अहम् अस्य भुवनस्य नाभिम्,
वेद द्यावापृथिवी अन्तरिक्षम्।
वेद सूर्यस्य बृहतो जनित्रम् अथो,
वेद चन्द्रमसम् यतोजाः॥60॥

(308) सूक्त 14

1367. पृच्छामि त्वा परम् अन्तम् पृथिव्याः,
पृच्छामि यत्र भुवनस्य नाभिः।
पृच्छामि त्वा वृष्णो अश्वस्य रेतः,
पृच्छामि वाचः परमम् व्योम॥61॥

1368. इयम् वेदिः परो अन्तः पृथिव्या,
अयम् यज्ञो भुवनस्य नाभिः।
अयम् सोमो वृष्णो अश्वस्य रेतो ब्रह्मा,
अयम् वाचः परमम् व्योम॥62॥

1369. सुभूः स्वयम्भूः प्रथमो,
अन्तः महति अर्णवे।
दधे ह गर्भम् ऋत्वियम्,
यतो जातः प्रजापतिः॥63॥

1370. होता यक्षत् प्रजापतिम्, सोमस्य महिम्नः।
जुषताम् पिबतु सोमम् होतः यज॥64॥

1371. प्रजापते न त्वत् एतानि अन्यो,
विश्वा रूपाणि परि ता बभूव।
यत् कामाः ते जुहुमः तत् नो,
अस्तु वयम् स्याम् पतयो रयीणाम्॥65॥

इति त्रयोविंशो अध्यायः

ॐ

अथ चतुर्विंशो अध्यायः

(309) सूक्त 1

1372. अश्वः तूपरो गोमृगः ते,
प्राजापत्याः कृष्णग्रीव,
आग्नेयो रराटे पुरस्तात्,
सारस्वती मेषी अधस्थात्,
हन्वोः आश्विनौ अधो रामौ बाह्वोः,
सौमापौष्णम् श्यामो नाभ्याम् सौर्ययामौ,
श्वेतः च कृष्णः च पार्श्वयोः त्वाष्ट्रौ,
लोमशसक्थौ सक्थ्योः वायव्यः,
श्वेतः पुच्छ इन्द्राय स्वपस्याय,
वेहत् वैष्णवो वामनः॥1॥

1373. रोहितो धूम्र रोहितः कर्कन्धु रोहितः ते,
सौम्या बभ्रुः अरुणबभ्रुः शुकबभ्रुः ते,
वारुणाः शितिरन्ध्रो अन्यतः,
शितिरन्ध्रः समन्तशितिरन्ध्रः ते,
सावित्राः शितिबाहुः अन्यतः,
शितिबाहुः समन्त शितिबाहुः ते,
बार्हस्पत्याः पृषती क्षुद्रपृषती,
स्थूल पृषती ता मैत्रावरुण्यः॥2॥

(310) सूक्त 2

1374. शुद्ध वालः सर्व शुद्ध वालो मणिवालः त,
आश्विनाः श्येतः श्येताक्षो अरुणः ते,
रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा,
अवलिप्ता रौद्रा नभो रूपाः पार्जन्याः ॥3॥

1375. पृश्निः तिरश्चीन, पृश्निः ऊर्ध्व, पृश्निः ते मारुताः,
फल्गूः लोहित ऊर्णी पलक्षी ताः सारस्वत्यः,
प्लीहाकर्णः शुण्ठाकर्णो अध्यालोहकर्णः ते त्वाष्ट्राः,
कृष्णग्रीवः शितिकक्षो अञ्जिसक्थः त ऐन्द्राग्नाः,
कृष्णाञ्जिः अल्पाञ्जिः महाञ्जिः त उषस्याः ॥4॥

(311) सूक्त 3

1376. शिल्पा वैश्वदेव्यो रोहिण्यः,
त्र्यवयो वाचे अविज्ञाता,
अदित्यै सरूपा धात्रे,
वत्सतर्यो देवानाम् पत्नीभ्यः ॥5॥

1377. कृष्णग्रीवा आग्नेयाः शितिभ्रवो,
वसूनाम् रोहिता रुद्राणाम्,
श्वेता अवरोकिण आदित्यानाम्,
नभो रूपाः पार्जन्याः ॥6॥

1378. उन्नत ऋषभो वामनः त ऐन्द्रात,
वैष्णवा उन्नतः शितिबाहुः शितिपृष्ठः त ऐन्द्रा,
बार्हस्पत्याः शुकरूपा वाजिनाः,
कल्माषा आग्निमारुताः श्यामाः पौष्णाः ॥7॥

1379. एता ऐन्द्राग्ना द्विरूपा,
अग्नीषोमीया वामना,
अनड्वाह आग्नावैष्णवा,
वशा मैत्रावरुण्यो अन्यत एन्यो मैत्र्यः ॥8॥

1380. कृष्णग्रीवा आग्नेया,
बभ्रवः सौम्याः श्वेता,
वायव्या अविज्ञाता,
अदित्यै सरूपा धात्रे,
वत्सतर्यो देवानाम् पत्नीभ्यः ॥9॥

(312) सूक्त 4

1381. कृष्णा भौमा धूम्रा आन्तरिक्षा,
बृहन्तो दिव्याः शबला,
वैद्युताः सिध्माः तारकाः ॥10॥

1382. धूम्रान् वसन्ताय आ लभते,
श्वेतान् ग्रीष्माय कृष्णान्,
वर्षाभ्यो अरुणान् शरदे,
पृषतो हेमन्ताय,
पिशङ्गान् शिशिराय ॥11॥

1383. त्र्यवयो गायत्र्यै, पञ्चावयः त्रिष्टुभे,
दित्यवाहो जगत्यै, त्रिवत्सा अनुष्टुभे,
तुर्यवाह उष्णिहे ॥12॥

1384. पष्ठवाहो विराज उक्षाणो,
बृहत्या ऋषभाः ककुभे,
अनड्वाहः पङ्क्त्यै,
धेनवो अतिछन्दसे ॥13॥

(313) सूक्त 5

1385. कृष्णग्रीवा आग्नेया बभ्रवः सौम्या,
उपध्वस्ताः सावित्रा वत्सतर्यः सारस्वत्यः,
श्यामाः पौष्णाः पृश्नयो मारुता बहुरूपा,
वैश्वदेवा वशा द्यावापृथिवीयाः ॥14॥

1386. उक्ताः सञ्चरा एता ऐन्द्राग्नाः,
कृष्णा वारुणाः, पृश्नयो मारुताः,
कायाः तूपराः ॥15॥

1387. अग्नये अनीकवते प्रथमजान् आ लभते,
मरुद्भ्यः सान्तपनेभ्यः सवात्यान्,
मरुद्भ्यो गृहमेधिभ्यो बष्किहान्,
मरुद्भ्यः क्रीडिभ्यः संसृष्टान्,
मरुद्भ्यः स्वतवद्भ्यो अनुसृष्टान् ॥16॥

1388. उक्ताः सञ्चरा एता ऐन्द्राग्नाः,
प्राशृङ्गा माहेन्द्रा, बहुरूपा वैश्वकर्मणाः ॥17॥

(314) सूक्त 6

1389. धूम्रा बभ्रुनीकाशा,
पितृणाम् सोमवताम्,
बभ्रवो धूम्रनीकाशाः,
पितृणाम् बर्हिषदाम्,
कृष्णा बभ्रुनीकाशाः,
पितृणाम् अग्निष्वात्तानाम्,
कृष्णाः पृषन्तः त्रैयम्बकाः ॥18॥

1390. उक्ताः सञ्चरा एताः शुनासीरीयाः,
श्वेता वायव्याः, श्वेताः सौर्याः ॥19॥

(315) सूक्त 7

1391. वसन्ताय कपिञ्जलान् आ लभते,
ग्रीष्माय कलविङ्कान्, वर्षाभ्यः तित्तिरीन्,
शरदे वर्तिका, हेमन्ताय ककरान्,
शिशिराय विककरान् ॥20॥

1392. समुद्राय शिशुमारान् आ लभते,
पर्जन्याय मण्डूकान्, अद्भ्यो मत्स्यान्,
मित्राय कुलीपयान्, वरुणाय नाक्रान्॥21॥

1393. सोमाय हंसान् आ लभते,
वायवे बलाका, इन्द्राग्निभ्याम् क्रुञ्चान्,
मित्राय मद्गून्, वरुणाय चक्रवाकान्॥22॥

1394. अग्नये कुटरून् आ लभते,
वनस्पतिभ्य उलूकान्, अग्नीषोमाभ्याम् चाषान्,
अश्विभ्याम् मयूरान्, मित्रावरुणाभ्याम् कपोतान्॥23॥

1395. सोमाय लबान् आ लभते,
त्वष्ट्रे कौलीकान्, गोषादीः देवानाम् पत्नीभ्यः,
कुलीका देवजामिभ्यो, अग्नये गृहपतये पारुष्णान्॥24॥

1396. अह्ने पारावतान् आ लभते,
रात्र्यै सीचापूः, अहोरात्रयोः सन्धिभ्यो जतूः,
मासेभ्यो दात्यौहान्, सम्वत्सराय महतः सुपर्णान्॥25॥

1397. भूम्या आखून् आ लभते,
अन्तरिक्षाय पाङ्क्तान्, दिवे कशान्,
दिग्भ्यो नकुलान्, बभ्रूकान् अवान्तर-दिशाभ्यः॥26॥

1398. वसुभ्य ऋश्यान् आ लभते,
रुद्रेभ्यो रुरून्, आदित्येभ्यो न्यूङ्कून्,
विश्वेभ्यो देवेभ्यः पृषतान्, साध्येभ्यः कुलुङ्गान्॥27॥

1399. ईशानाय त्वा परस्वत आ लभते,
मित्राय गौरान्, वरुणाय महिषान्,
बृहस्पतये गवयान्, त्वष्ट्र उष्ट्रान्॥28॥

1400. प्रजापतये पुरुषान्,
हस्तिन आ लभते, वाचे प्लुषीन्,
चक्षुषे मशकान्, श्रोत्राय भृङ्गाः॥29॥

1401. प्रजापतये च वायवे च गोमृगो,
वरुणाय आरण्यो मेषो, यमाय कृष्णो,
मनुष्यराजाय मर्कटः, शार्दूलाय रोहित्,
ऋषभाय गवयी, क्षिप्रश्येनाय वर्तिका,
नीलङ्गोः कृमिः, समुद्राय शिशुमारो,
हिमवते हस्ती॥30॥

(316) सूक्त 8

1402. मयुः प्राजापत्य उलो,
हलिक्ष्णो वृषदंशः ते धात्रे,
दिशाम् कङ्को, धुङ्क्षा आग्नेयी,
कलविङ्को लोहिताहिः पुष्करसादः ते त्वाष्ट्रा,
वाचे क्रुञ्चः॥31॥

1403. सोमाय कुलुङ्ग आरण्यो,
अजो नकुलः शका ते पौष्णाः,
क्रोष्टा मायोः, इन्द्रस्य गौरमृगः,
पिद्वो न्यङ्कुः कक्कटः ते अनुमत्यै,
प्रतिश्रुत्कायै चक्रवाकः ॥32॥

1404. सौरी बलाका शार्गः,
सृजयः शयाण्डकः ते मैत्राः,
सरस्वत्यै शारिः, पुरुषवाक् श्वावित् भौमी,
शार्दूलो वृकः पृदाकुः ते मन्यवे,
सरस्वते शुकः पुरुषवक् ॥33॥

1405. सुपर्णः पार्जन्य,
आतिः वाहसो दर्विदा ते वायवे,
बृहस्पतये वाचः पतये पैङ्गराजो,
अलज आन्तरिक्षः,
प्लवो मद्गुः मत्स्यः ते नदीपतये,
द्यावापृथिवीयः कूर्मः ॥34॥

1406. पुरुषमृगः चन्द्रमसो,
गोधा कालका दार्वाघाटः ते वनस्पतीनाम्,
कृकवाकुः सावित्रो, हंसो वातस्य,
नाक्रो मकरः कुलीपयः ते अकूपारस्य,
ह्रियै शल्यकः ॥35॥

1407. एणी अह्नो मण्डूको,
मूषिका तित्तिरिः ते सर्पाणाम्,
लोपाश आश्विनः,
कृष्णो रात्र्या ऋक्षो जतूः सुषिलीका,
ते इतरजनानाम् जहका वैष्णवी ॥36॥

1408. अन्यवापो अर्द्धमासानाम्,
ऋश्यो मयूरः सुपर्ण ते गन्धर्वाणाम्,
अपाम् उद्रो, मासान् कश्यपो,
रोहित् कुण्डृणाची गोलत्तिका,
ते अप्सरसाम् मृत्यवे असितः ॥37॥

1409. वर्षाहूः ऋतूनाम्,
आखुः कशो मान्थालः ते पितृणाम्,
बलाय अजगरो, वसूनाम् कपिञ्जलः,
कपोत उलूकः शशः ते निर्ऋत्यै,
वरुणाय आरण्यो मेषः ॥38॥

1410. श्वित्र आदित्यानाम्,
उष्ट्रो घृणीवान् वार्ध्रीनसः ते मत्या,
अरण्याय सृमरो, रुरूः रौद्रः,
क्वयिः कुटरुः दात्यौहः ते वाजिनाम्,
कामाय पिकः ॥39॥

1411. खड्गो वैश्वदेवः,
श्वा कृष्णः कर्णो गर्दभः तरक्षुः ते रक्षसाम्,
इन्द्राय सूकरः, सिंहो मारुतः,
कृकलासः पिप्पका शकुनिः ते शरव्यायै,
विश्वेषाम् देवानाम् पृषतः ॥40॥

इति चतुर्विंशो अध्यायः

ॐ

अथ पञ्चविंशो अध्यायः

(317) सूक्त 1

1412. शादम् दद्भिः,
अवकाम् दन्तमूलैः,
मृदम् बर्स्वैः,
ते गाम् दंष्ट्राभ्याम्,
सरस्वत्या अग्रजिह्वम्,
जिह्वाया उत्सादम्,
अवक्रन्देन तालु,
वाजम् हनुभ्याम्,
अप आस्येन,
वृषणम् आण्डाभ्याम्।
आदित्यान् श्मश्रुभिः,
पन्थानम् भ्रूभ्याम्,
द्यावापृथिवी वर्तोभ्याम्,
विद्युतम् कनीनकाभ्याम्,
शुक्राय स्वाहा कृष्णाय स्वाहा,
पार्याणि पक्ष्माणि अवार्या इक्षवो,
अवार्याणि पक्ष्माणि पार्या इक्षवः ॥1॥

1413. वातम् प्राणेन अपानेन नासिके,
उपयामम् अधरेण ओष्ठेन,
सत् उत्तरेण प्रकाशेन,
अन्तरम् अनूकाशेन,
बाह्यम् निवेष्यम्,
मूर्ध्ना स्तनयित्नुम्,
निर्बाधेन अशनिम् मस्तिष्केण,
विद्युतम् कनीनकाभ्याम्,
कर्णाभ्याम् श्रोत्रम्, श्रोत्राभ्याम् कर्णौ,
तेदनीम् अधरकण्ठेन, अपः शुष्ककण्ठेन,
चित्तम् मन्याभिः, अदितिम् शीर्ष्णा,
निर्ऋतिम् निर्जर्जल्पेन,
शीर्ष्णा संक्रोशैः प्राणान्,
रेष्माणम् स्तुपेन ॥2॥

1414. मशकान् केशैः, इन्द्रम् स्वपसा,
वहेन बृहस्पतिम्, शकुनिसादेन कूर्मान्,
शफैः आक्रमणम् स्थूराभ्याम्,
ऋक्षलाभिः कपिञ्जलान्,
जवम् जङ्घाभ्याम्, अध्वानम् बाहुभ्याम्,
जाम्बीलेन अरण्यम्, अग्निम् अतिरुग्भ्याम्,
पूषणम् दोर्भ्याम्, अश्विनौ अंसाभ्याम्,
रुद्रम् रोराभ्याम् ॥3॥

(318) सूक्त 2

1415. अग्नेः पक्षतिः, वायोः निपक्षतिः,
इन्द्रस्य तृतीया, सोमस्य चतुर्थी,
अदित्यै पञ्चमी, इन्द्राण्यै षष्ठी,
मरुताम् सप्तमी, बृहस्पतेः अष्टमी,
अर्यम्णो नवमी, धातुः दशमी,
इन्द्रस्य एकादशी, वरुणस्य द्वादशी,
यमस्य त्रयोदशी ॥4॥

1416. इन्द्राग्नयोः पक्षतिः, सरस्वत्यै निपक्षतिः,
मित्रस्य तृतीया, अपाम् चतुर्थी,
निर्ऋत्यै पञ्चमी, अग्नीषोमयोः षष्ठी,
सर्पाणाम् सप्तमी, विष्णोः अष्टमी,
पूष्णो नवमी, त्वष्टुः दशमी,
इन्द्रस्य एकादशी, वरुणस्य द्वादशी,
यम्यै त्रयोदशी, द्यावापृथिव्योः दक्षिणम्,
पार्श्वम् विश्वेषाम्, देवानाम् उत्तरम् ॥5॥

1417. मरुताम् स्कन्धा, विश्वेषाम् देवानाम् प्रथमा,
कीकसा रुद्राणाम् द्वितीया, आदित्यानाम् तृतीया,
वायोः पुच्छम्, अग्नीषोमयोः भासदौ,
क्रुञ्चौ श्रोणिभ्याम्, इन्द्राबृहस्पती ऊरुभ्याम्,
मित्रावरुणौ अल्गाभ्याम्, आक्रमणम् स्थूराभ्याम्,
बलम् कुष्ठाभ्याम् ॥6॥

1418. पूषणम् वनिष्ठुना,
अन्धाहीन् स्थूलगुदया सर्पान् गुदाभिः,
विह्रुत आन्त्रैः, अपो वस्तिना,
वृषणम् आण्डाभ्याम्, वाजिनम् शेपेन,
प्रजाम् रेतसा, चाषान् पित्तेन,
प्रदरान् पायुना,
कूश्मान् शकपिण्डैः ॥7॥

1419. इन्द्रस्य क्रोडो, आदित्यै पाजस्यम्,
दिशाम् जत्रवो, अदित्यै भसत्,
जीमूतान् हृदयौपशेन, अन्तरिक्षम् पुरीतता,
नभ उदर्येण, चक्रवाकौ मतस्नाभ्याम्,
दिवम् वृक्काभ्याम् गिरीन्,
प्लाशिभिः उपलान् प्लीह्ना
वल्मीकान् क्लोमभिः,ग्लौभिः गुल्मान्,
हिराभिः स्रवन्तीः, ह्दान् कुक्षिभ्याम्,
समुद्रम् उदरेण, वैश्वानरम् भस्मना ॥8॥

1420. विधृतिम् नाभ्या, घृतम् रसेन,
अपो यूष्णा, मरीचीः विप्रुड्भिः,
नीहारम् ऊष्मणा, शीनम् वसया,
प्रुष्वा अश्रुभिः, ह्रादुनीः दूषीकाभिः,
अस्ना रक्षांसि, चित्राणि अङ्गैः,
नक्षत्राणि रूपेण, पृथिवीम् त्वचा,
जुम्बकाय स्वाहा ॥9॥

(319) सूक्त 3

1421. हिरण्यगर्भः सम् अवर्त्तत अग्रे,
भूतस्य जातः पतिः एकः आसीत्।
स दाधार पृथिवीम् द्याम् उत इमाम्,
कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥10॥

1422. यः प्राणतो निमेषतो महित्वा,
एक इत् राजा जगतो बभूव।
य ईशे अस्य द्विपदः चतुः पदः,
कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥11॥

1423. यस्य इमे हिमवन्तो महित्वा,
यस्य समुद्रम् रसया सह आहुः।
यस्य इमाः प्रदिशो यस्य बाहू,
कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥12॥

1424. य आत्मदा बलदा यस्य विश्व,
उपासते प्रशिषम् यस्य देवाः।
यस्य छाया अमृतम् यस्य मृत्युः,
कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥13॥

1425. आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतो,
अदब्धासो अपरितास उद्भिदः।
देवा नो यथा सदम् इत् वृधे असन्,
अप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे ॥14॥

(320) सूक्त 4

1426. देवानाम् भद्रा सुमतिः ऋजू-यताम्,
देवानाम् रातिः अभि नो नि वर्तताम्।
देवानाम् सख्यम् उप सेदिम् आ वयम्,
देवा न आयुः प्र तिरन्तु जीवसे॥15॥

1427. तान् पूर्वया निविदा हूमहे वयम् भगम्,
मित्रम् अदितिम् दक्षम् अस्रिधम्।
अर्यमणम् वरुणम् सोमम् अश्विना,
सरस्वती नः सुभगा मयः करत्॥16॥

1428. तत् नो वातो मयोभु वातु भेषजम्,
तत् माता पृथिवी तत् पिता द्यौः।
तत् ग्रावाणः सोम-सुतो मयोभुवः,
तत् अश्विना शृणुतम् धिष्ण्या युवम्॥17॥

1429. तम् ईशानम् जगतः तस्थुषः पतिम्,
धियम् जिन्वम् अवसे हूमहे वयम्।
पूषा नो यथा वेदसाम् असत् वृधे,
रक्षिता पायुः अदब्धः स्वस्तये॥18॥

1430. स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः,
स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नः तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः,
स्वस्ति नो बृहस्पतिः दधातु॥19॥

(321) सूक्त 5

1431. पृषत् अश्वा मरुतः पृश्निमातरः,
शुभम् यावानो विदथेषु जग्मयः।
अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो,
विश्वे नो देवा अवसा गमन् इह॥20॥

1432. भद्रम् कर्णेभिः शृणुयाम देवा,
भद्रम् पश्येम अक्षिभिः यजत्राः।
स्थिरैः अङ्गैः तुष्टुवांसः तनूभिः,
वि अशेमहि देवहितम् यत् आयुः॥21॥

1433. शतम् इत् नु शरदो अन्ति देवा,
यत्रा नः चक्रा जरसम् तनूनाम्।
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति,
मा नो मध्या रीरिषत आयुः गन्तोः॥22॥

1434. अदितिः द्यौः अदितिः अन्तरिक्षम्,
अदितिः माता स पिता स पुत्रः।
विश्वे देवा अदितिः पञ्च जना,
अदितिः जातम् अदितिः जनित्वम्॥23॥

1435. मा नो मित्रो वरुणो अर्यमा आयुः,
इन्द्र ऋभुक्षा मरुतः परिख्यन्।
यत् वाजिनो देवजातस्य सप्तेः,
प्रवक्ष्यामो विदथे वीर्याणि॥24॥

(322) सूक्त 6

1436. यत् निर्णिजा रेक्णसा प्रावृतस्य,
रातिम् गृभीताम् मुखतो नयन्ति,
सुप्राङ् अजः मेम्यत् विश्वरूप,
इन्द्रापूष्णोः प्रियम् अपि एति पाथः ॥25॥

1437. एष छागो पुरो अश्वेन वाजिना,
पूष्णो भागो नीयते विश्वदेव्यः।
अभिप्रियम् यत् पुरोडाशम् अर्वता,
त्वष्टा इत् एनम् सौश्रवसाय जिन्वति ॥26॥

1438. यत् हविष्यम् ऋतुशो देवयानम्,
त्रिः मानुषाः परि अश्वम् नयन्ति।
अत्रा पूष्णः प्रथमो भाग एति,
यज्ञम् देवेभ्यः प्रतिवेदयन् अजः ॥27॥

1439. होता अध्वर्युः आवया अग्निम्,
इन्धो ग्रावग्राभ उत शंस्ता सुविप्रः।
तेन यज्ञेन स्वरङ्कृतेन,
स्विष्टेन वक्षणा आ पृणध्वम् ॥28॥

1440. यूपव्रस्का उत ये यूपवाहाः,
चषालम् ये अश्वयूपाय तक्षति।
ये च अवते पचनम् सम्भरन्ति,
उतो तेषाम् अभिगूर्तिः न इन्वतु ॥29॥

(323) सूक्त 7

1441. उप प्र अगात् सुमत् मे अधायि,
मन्म देवानाम् आशा उप वीतपृष्ठः।
अनु एनम् विप्रा ऋषयो मदन्ति,
देवानाम् पुष्टे चकृम् आ सु-बन्धुम् ॥30॥

1442. यत् वाजिनो दाम सन्दानम् अर्वतो,
या शीर्षण्या रशना रज्जुः अस्य।
यत् वा घ अस्य प्रभृतम् आस्ये,
तृणम् सर्वा ता ते अपि देवेषु अस्तु ॥31॥

1443. यत् अश्वस्य क्रविषो मक्षिका आश,
यत् वा स्वरौ स्वधितौ रिप्तम् अस्ति।
यत् हस्तयोः शमितुः यत् नखेषु,
सर्वा ता ते अपि देवेषु अस्तु ॥32॥

1444. यत् ऊवध्यम् उदरस्य अपवाती,
य आमस्य क्रविषो गन्धो अस्ति।
सुकृता तत् शमितारः कृण्वन्तु,
उत मेधम् शृतपाकम् पचन्तु ॥33॥

1445. यत् ते गात्रात् अग्निना पच्यमानात्,
अभि शूलम् निहतस्य अव-धावति।
मा तत् भूम्याम् आ श्रिषत् मा तृणेषु,
देवेभ्यः तत् उशद्भ्यो रातम् अस्तु ॥34॥

(324) सूक्त 8

1446. ये वाजिनम् परिपश्यन्ति पक्वम्,
य ईम् आहुः सुरभिः निः हर इति।
ये च अर्वतो मांसभिक्षाम् उप आसत,
उतो तेषाम् अभिगूर्तिः न इन्वतु॥35॥

1447. यत् नि ईक्षणम् माँस्पचन्या उखाया,
या पात्राणि यूष्ण आसेचनानि।
ऊष्मण्या अपिधाना चरूणाम्,
अङ्काः सूनाः परि भूषन्ति अश्वम्॥36॥

1448. मा त्वा अग्निः ध्वनयीत् धूमगन्धिः,
मा उखा भ्राजन्ती अभि विक्त जघ्रिः।
इष्टम् वीतम् अभिगूर्तम् वषट्कृतम्,
तम् देवासः प्रति गृभ्णन्ति अश्वम्॥37॥

1449. निक्रमण् निषदनम् विवर्तनम्,
यत् च पड्वीशम् अर्वतः।
यत् च पपौ यत् च घासिम् जघास,
सर्वा ता ते अपि देवेषु अस्तु॥38॥

1450. यत् अश्वाय वास उपस्तृणन्ति,
अधीवासम् या हिरण्यानि अस्मै।
सम् दानम् अर्वन्तम् पड्वीशम्,
प्रिया देवेषु आ यामयन्ति॥39॥

(325) सूक्त 9

1451. यत् ते सादे महसा शूकृतस्य,
पार्ष्ण्या वा कशया वा तुतोद।
स्रुचा इव ता हविषो अध्वरेषु,
सर्वा ता ते ब्रह्मणा सूदयामि॥40॥

1452. चतुस्त्रिंशत् वाजिनो देवबन्धोः,
वङ्क्रीः अश्वस्य स्वधितिः सम् एति।
अच्छिद्रा गात्रा वयुना कृणोतु,
परुः परुः अनुघुष्या वि शस्त॥41॥

1453. एकः त्वष्टुः अश्वस्या विशस्ता,
द्वा यन्तारा भवतः तथ ऋतुः।
या ते गात्राणाम् ऋतुथा कृणोमि,
ता ता पिण्डानाम् प्र जुहोमि अग्नौ॥42॥

1454. मा त्वा तपत् प्रिय आत्मा अपियन्तम्,
मा स्वधितिः तन्व आ तिष्ठिपत् ते।
मा ते गृध्नुः अविशस्ता अतिहाय,
छिद्रा गात्राणि असिना मिथू कः॥43॥

1455. न वा उ एतत् म्रियसे न रिष्यसि,
देवान् इत् एसि पथिभिः सुगेभिः।
हरी ते युञ्जा पृषती अभूताम्,
उप अस्थात् वाजी धुरि रासभस्य॥44॥

1456. सुगव्यम् नो वाजी सु अश्व्यम्,
पुंसः पुत्रान् उत विश्वा पुषम् रयिम्।
अनागाः त्वम् नो अदितिः कृणोतु,
क्षत्रम् नो अश्वो वनताम् हविष्मान्॥45॥

(326) सूक्त 10

1457. इमा नु कम् भुवना सीषधाम्,
इन्द्रः च विश्वे च देवाः।
आदित्यैः इन्द्रः सगणो मरुद्भिः,
अस्मभ्यम् भेषजा करत्।
यज्ञम् च नः तन्वम् च प्रजाम् च,
आदित्यैः इन्द्रः सह सीषधाति॥46॥

1458. अग्ने त्वम् नो अन्तम उत,
त्राता शिवो भवा वरूथ्यः।
वसुः अग्निः वसु श्रवा अच्छा,
नक्षि द्युमत्तमम् रयिम् दाः।
तम् त्वा शोचिष्ठ दीदिवः,
सुम्नाय नूनम् ईमहे सखिभ्यः।
स नो बोधि श्रुधी हवम् उरुष्या,
णो अघायतः सम् अस्मात्॥48॥

इति पञ्चविंशो अध्यायः

ॐ

अथ षड्विंशो अध्यायः

(327) सूक्त 1

1459. अग्निः च पृथिवी च सम् नते,
ते मे सम् नमताम् अदो,
वायुः च अन्तरिक्षम् च सम् नते,
ते मे सम् नमताम् अद,
आदित्यः च द्यौः च सम् नते,
ते मे सम् नमताम् अद,
आपः च वरुणः च सम् नते,
ते मे सम् नमताम् अदः।
सप्त सम् सदो अष्टमी भूतसाधनी।
सकामान् अध्वनः कुरु,
संज्ञानम् अस्तु मे अमुना॥1॥

1460. यथा इमाम् वाचम् कल्याणीम्,
आवदानि जनेभ्यः।
ब्रह्मराजन्याभ्याम् शूद्राय,
च अर्याय च स्वाय च अरणाय।
प्रियो देवानाम् दक्षिणायै दातुः,
इह भूयासम् अयम् मे कामः,
समृध्यताम् उप मा अदो नमतु॥2॥

1461. बृहस्पते अति यत् अर्यो अर्हात्,
द्युमत् विभाति क्रतुमत् जनेषु।
यत् दीदयत् शवस ऋतप्रजात,
तत् अस्मासु द्रविणम् धेहि चित्रम्।
उपयाम गृहीतो असि बृहतस्पतये त्वा,
एष ते योनिः बृहस्पतये त्वा॥3॥

1462. इन्द्र गोमन् इह आ याहि,
पिबा सोमम् शतक्रतो।
विद्यद्भिः ग्रावभिः सुतम्।
उपयाम गृहीतो असि इन्द्राय त्वा गोमत,
एष ते योनिः इन्द्राय त्वा गोमते॥4॥

1463. इन्द्र आ याहि वृत्रहन्,
पिबा सोमम् शतक्रतो।
गोमद्भिः ग्रावभिः सुतम्।
उपयाम गृहीतो असि इन्द्राय त्वा गोमत,
एष ते योनिः इन्द्राय त्वा गोमते॥5॥

1464. ऋतावानम् वैश्वानरम्,
ऋतस्य ज्योतिषः पतिम्।
अजस्त्रम् घर्मम् ईमहे।
उपयाम गृहीतो असि वैश्वानराय त्वा,
एष ते योनिः वैश्वानराय त्वा॥6॥

(328) सूक्त 2

1465. वैश्वानरस्य सुमतौ स्याम,
राजा हि कम् भुवनानाम् अभिश्रीः।
इतो जातो विश्वम् इदम् वि चष्टे,
वैश्वानरो यतते सूर्येण।
उपयाम गृहीतो असि वैश्वानराय त्वा,
एष ते योनिः वैश्वानराय त्वा॥7॥

1466. वैश्वानरो न ऊतय,
आ प्र यातु परावतः।
अग्निः उक्थेन वाहसा।
उपयाम गृहीतो असि वैश्वानराय त्वा,
एष ते योनिः वैश्वानराय त्वा॥8॥

1467. अग्निः ऋषिः पवमानः,
पाञ्चजन्यः पुरो हितः।
तम् ईमहे महागयम्।
उपयाम गृहीतो असि अग्नये त्वा वर्चस,
एष ते योनिः अग्नये त्वा वर्चसे॥9॥

1468. महान् इन्द्रो वज्रहस्तः,
षोडशी शर्म यच्छतु।
हन्तु पाप्मानम् यो अस्मान् द्वेष्टि।
उपयाम गृहीतो असि महेन्द्राय त्वा,
एष ते योनिः महेन्द्राय त्वा॥10॥

(329) सूक्त 3

1469. तम् वो दस्मम् ऋतीषहम्,
वसोः मन्दानम् अन्धसः।
अभि वत्सम् न स्वसरेषु धेनव,
इन्द्रम् गीर्भिः नवामहे ॥ 11 ।॥

1470. यत् वाहिष्ठम् तत् अग्नये,
बृहत् अर्च विभावसो।
महिषीव त्वत् रयिः त्वत्,
वाजा उत् ईरते ॥ 12 ॥

1471. आ इहि ऊ षु ब्रवाणि ते,
अग्न इत्था इतरा गिरः।
एभिः वर्द्धास इन्दुभिः ॥ 13 ॥

(330) सूक्त 4

1472. ऋतवः ते यज्ञम् वि तन्वन्तु,
मासा रक्षन्तु ते हविः।
संवत्सरः ते यज्ञम् दधातु,
नः प्रजाम् च परि पातु नः ॥ 14 ॥

1473. उप-ह्वरे गिरीणाम्,
सङ्गमे च नदीनाम्।
धिया विप्रो अजायत ॥ 15 ॥

1474. उच्चा ते जातम् अन्धसो,
दिवि सत् भूमि आ ददे।
उग्रम् शर्म महि श्रवः ॥ 16 ॥

1475. स न इन्द्राय यज्यवे,
वरुणाय मरुद्भ्यः।
वरिवोवित् परि स्त्रव ॥ 17 ॥

1476. एना विश्वानि अर्य,
आ द्युम्नानि मानुषाणाम्।
सिषासन्तो वनामहे ॥ 18 ॥

(331) सूक्त 5

1477. अनु वीरैः अनु पुष्यास्म गोभिः,
अनु अश्वैः अनु सर्वेण पुष्टैः।
अनु द्विपदा अनु चतुष्पदा वयम्,
देवा नो यज्ञम् ऋतुथा नयन्तु ॥ 19 ॥

1478. अग्ने पत्नीः इह आ वह,
देवानाम् उशतीः उप।
त्वष्टारम् सोम-पीतये ॥ 20 ॥

1479. अभि यज्ञम् गृणीहि नो,
ग्रावो नेष्टः पिब ऋतुना।
त्वम् हि रत्नधा असि ॥ 21 ॥

1480. द्रविणो दाः पिपीषति,
जुहोत प्र च तिष्ठत।
नेष्ट्रात् ऋतुभिः इष्यत॥22॥

(332) सूक्त 6

1481. तव अयम् सोमः त्वम् आ इहि अर्वाङ्,
शश्वतमम् सुमना अस्य पाहि।
अस्मिन् यज्ञे बर्हिषि आ निषद्या,
दधिष्व इमम् जठर इन्दुम् इन्द्र॥23॥

1482. अमेव नः सुहवा आ हि गन्तन,
नि बर्हिषि सदतना रणिष्टन्।
अथा मदस्व जुजुषाणो अन्धसः,
त्वष्टः देवेभिः जनिभिः सुमद्गणः॥24॥

1483. स्वादिष्ठया मदिष्ठया,
पवस्व सोम धारया।
इन्द्राय पातवे सुतः॥25॥

1484. रक्षोहा विश्वचर्षणिः,
अभि योनिम् अयो हते।
द्रोणे सधस्थम् आ असदत्॥26॥

इति षड्विंशो अध्यायः

ॐ

अथ सप्तविंशः अध्यायः

(333) सूक्त 1

1485. समाः त्वा अग्न ऋतवो वर्द्धयन्तु,
सम्वत्सरा ऋषयो यानि सत्या।
सम् दिव्येन दीदिहि रोचनेन,
विश्वा आ भाहि प्रदिशः चतस्त्रः॥1॥

1486. सम् च इध्यस्व अग्ने प्र च बोधय,
एनम् उत् च तिष्ठ महते सौभगाय।
मा च रिषत् उपसत्ता ते अग्ने,
ब्रह्माणः ते यशसः सन्तु मा अन्ये॥2॥

1487. त्वाम् अग्ने वृणते ब्राह्मणा इमे,
शिवो अग्ने सम् वरणे भवा नः॥
सपत्नहा नो अभिमातिजित् च,
स्वे गये जागृहि अप्रयुच्छन्॥3॥

1488. इह एव अग्ने अधि धारया रयिम्,
मा त्वा नि क्रन् पूर्वचितो निकारिणः।
क्षत्रम् अग्ने सुयमम् अस्तु तुभ्यम्,
उपसत्ता वर्द्धताम् ते अनिष्ट्टतः॥4॥

1489. क्षत्रेण अग्ने स्वायुः सम् रभस्व,
मित्रेण अग्ने मित्रधेये यतस्व।
सजातानाम् मध्यमस्था एधि,
राज्ञाम् अग्ने विहव्यो दीदिहि इह ॥5॥

1490. अति निहो अति स्त्रिधो,
अति अचितिम् अति अरातिम् अग्ने।
विश्वा हि अग्ने दुरिता सहस्व,
अथा असमभ्यम् सहवीराम् रयिम् दाः ॥6॥

1491. अनाधृष्यो जातवेदा अनिष्टृतो,
विराट् अग्ने क्षत्रभृत् दीदिहि इह।
विश्वा आशाः प्रमुञ्चन् मानुषीः भियः,
शिवेभिः अद्य परि पाहि नो वृधे ॥7॥

1492. बृहस्पते सवितः बोधय एनम्,
सम् शितम् चित् सन्तराम् सम् शिशाधि।
वर्धय एनम् महते सौभगाय,
विश्व एनम् अनु मदन्तु देवाः ॥8॥

1493. अमुत्र भूयात् अध यत् यमस्य,
बृहस्पते अभिशस्तेः अमुञ्चः।
प्रति औहताम् अश्विना मृत्युम् अस्मात्,
देवानाम् अग्ने भिषजा शचीभिः ॥9॥

(334) सूक्त 2

1494. उत् वयम् तमसः परि,
स्वः पश्यन्त उत्तरम्।
देवम् देवत्रा सूर्यम्,
अगन्म ज्योतिः उत्तमम् ॥10॥

1495. ऊर्ध्वा अस्य समिधो भवन्ति,
ऊर्ध्वा शुक्रा शोचींषि अग्नेः।
द्युमत्तमा सुप्रतीकस्य सूनोः ॥11॥

1496. तनूनपात् असुरो विश्ववेदा,
देवो देवेषु देवः।
पथो अनक्तु मध्वा घृतेन ॥12॥

1497. मध्वा यज्ञम् नक्षसे,
प्रीणानो नराशंसो अग्ने।
सुकृत् देवः सविता विश्ववारः ॥13॥

1498. अच्छ अयम् एति शवसा,
घृतेन ईडानो वह्निः नमसा।
अग्निम् स्रुचो अध्वरेषु प्रयत् सु ॥14॥

1499. स यक्षत् अस्य महिमानम्,
अग्नेः स ईम् मन्द्रा सु-प्रयसः।
वसुः चेतिष्ठो वसुधातमः च ॥15॥

1500. द्वारो देवीः अनु अस्य,
विश्वे व्रता ददन्ते अग्नेः।
उरुव्यचसो धाम्ना पत्यमानाः ॥16॥

1501. ते अस्य योषणे दिव्ये,
न योना उषासानक्ता।
इमम् यज्ञम् अवताम् अध्वरम् नः ॥17॥

(335) सूक्त 3

1502. दैव्या होतारा ऊर्ध्वम् अध्वरम्,
नो अग्नेः जिह्वाम् अभि गृणीतम्।
कृणुतम् नः स्विष्टम् ॥18॥

1503. तिस्रो देवीः बर्हिः,
आ इदम् सदन्तु
इडा सरस्वती भारती।
मही गृणाना ॥19॥

1504. तत् नः तुरीपम् अद्भुतम्,
पुरुक्षु त्वष्टा सुवीर्यम्।
रायः पोषम् विष्यतु नाभिम् अस्मे ॥20॥

1505. वनस्पते अव सृजा,
रराणः त्मना देवेषु।
अग्निः हव्यम् शमिता सूदयाति ॥21॥

1506. अग्ने स्वाहा कृणुहि,
जातवेद इन्द्राय हव्यम्।
विश्वे देवा हविः इदम् जुषन्ताम् ॥22॥

(336) सूक्त 4

1507. पीवो अन्ना रयिवृधः सुमेधाः,
श्वेतः सिषक्ति नियुताम् अभिश्रीः।
ते वायवे समनसो वि तस्थुः,
विश्वा इत् नरः सु अपत्यानि चक्रुः ॥23॥

1508. राये नु यम् जज्ञतू रोदसी इमे,
राये देवी धिषणा धाति देवम्।
अध वायुम् नियुतः सश्चत स्वा,
उत श्वेतम् वसुधितिम् निरेके ॥24॥

1509. आपो ह यत् बृहतीः विश्वम् आयन्,
गर्भम् दधाना जनयन्तीः अग्निम्।
ततो देवानाम् सम् अवर्त्तत असुः एकः,
कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ 25॥

1510. यः चित् आपो महिना पर्यपश्यत्,
दक्षम् दधाना जनयन्तीः यज्ञम्।
यो देवेषु अधि देव एक आसीत्,
कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥26॥

1511. प्र याभिः यासि दाश्वांसम् अच्छा,
नियुद्भिः वायो इष्टये दुरोणे।
नि नो रयिम् सुभोजसम् युवस्व,
नि वीरम् गव्यम् अश्व्यम् च राधः ॥27॥

1512. आ नो नियुद्भिः शतिनीभिः अध्वरम्,
सहस्त्रिणीभिः उप याहि यज्ञम्।
वायो अस्मिन् सवने मादयस्व,
यूयम् पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥28॥

(337) सूक्त 5

1513. नियुत्वान् वायवा गहि,
अयम् शुक्रो अयामि ते।
गन्ता असि सुन्वतो गृहम् ॥29॥

1514. वायो शुक्रो अयामि ते,
मध्वो अग्रम् दिविष्टिषु।
आ याहि सोमपीतये,
स्पार्हो देव नियुत्वता ॥30॥

1515. वायुः अग्रेगा यज्ञप्रीः,
साकम् गन् मनसा यज्ञम्।
शिवो नियुद्भिः शिवाभिः ॥31॥

1516. वायो ये ते सहस्त्रिणो,
रथासः तेभिः आ गहि।
नियुत्वान् सोम-पीतये ॥32॥

1517. एकया च दशभिः च स्वभूते,
द्वाभ्याम् इष्टये विंशती च।
तिसृभिः च वहसे त्रिंशता च नियुद्भिः,
वायो इह ता वि मुञ्च ॥33॥

1518. तव वायो ऋतस्पते,
त्वष्टुः जामातः अद्भुत्।
अवांसि आ वृणीमहे ॥34॥

(338) सूक्त 6

1519. अभि त्वा शूर नोनुमो,
अदुग्धा इव धेनवः।
ईशानम् अस्य जगतः स्वः दृशम्,
ईशानम् इन्द्र तस्थुषः ॥35॥

1520. न त्वावान् अन्यो दिव्यो न पार्थिवो,
न जातो न जनिष्यते।
अश्वायन्तो मघवन् इन्द्र,
वाजिनो गव्यन्तः त्वा हवामहे ॥36॥

1521. त्वाम् इत् हि हवामहे,
सातौ वाजस्य कारवः।
त्वाम् वृत्रेषु इन्द्र सत्पतिम् नरः,
त्वाम् काष्ठासु अर्वतः॥37॥

1522. स त्वम् नः चित्र वज्रहस्त,
धृष्णु या मह स्तवानो अद्रिवः।
गाम् अश्वम् रथ्यम् इन्द्र सम् किर,
सत्रा वाजम् न जिग्युषे॥38॥

(339) सूक्त 7

1523. कया नः चित्र आ भुवत्,
ऊती सदावृधः सखा।
कया शचिष्ठया वृता॥39॥

1524. कः त्वा सत्यो मदानाम्,
मंहिष्ठो मत्सत् अन्धसः।
दृढा चित् आरुजे वसु॥40॥

1525. अभि षु णः सखीनाम्,
अविता जरितॄणाम्।
शतम् भवासि ऊतये॥41॥

(340) सूक्त 8

1526. यज्ञा यज्ञा वो अग्नये,
गिरा गिरा च दक्षसे।
प्र प्र वयम् अमृतम् जातवेदसम्,
प्रियम् मित्रम् न शंसिषम्॥42॥

1527. पाहि नो अग्न एकया,
पाहि उत द्वितीयया।
पाहि गीर्भिः तिसृभिः ऊर्जाम् पते,
पाहि चतसृभिः वसो॥43॥

1528. ऊर्जो नपातम् स हिन अयम्,
अस्म युः दाशेम हव्यदातये।
भुवत् वाजेषु अविता भुवत्,
वृध उत त्राता तनूनाम्॥44॥

(341) सूक्त 9

1529क. सम्वत्सरो असि परिवत्सरो असि,
इदावत्सरो असि इद्वत्सरो असि,
बत्सरो असि।

1529ख. उषसः ते कल्पन्ताम्,
अहोरात्राः ते कल्पन्ताम्,
अर्द्धमासाः ते कल्पन्ताम्,
मासाः ते कल्पन्ताम्,
ऋतवः ते कल्पन्ताम्,
सम्वत्सरः ते कल्पताम्।

1529ग. प्रेत्या एत्यै सम् च,
अञ्च प्र च सारय।
सुपर्णचित् असि तया देवतया,
अङ्गिरस्वत् ध्रुवः सीद ॥45॥

इति सप्तविंशो अध्यायः

ॐ

अथ अष्टाविंशो अध्यायः

(342) सूक्त 1

1530. होता यक्षत् समिधा इन्द्रम्,
इडः पदे नाभा पृथिव्या अधि।
दिवो वर्ष्मन् सम् इध्यत,
ओजिष्ठः चर्षणीसहाम्,
वेतु आज्यस्य होतः यज॥1॥

1531. होता यक्षत् तनूनपातम्,
ऊतिभिः जेतारम् अपराजितम्।
इन्द्रम् देवम् स्वर्विदम्,
पथिभिः मधुमत्तमैः,
नराशंसेन तेजसा,
वेतु आज्यस्य होतः यज॥2॥

1532. होता यक्षत् इडाभिः इन्द्रम्,
ईडितम् आजुह्वानम् अमर्त्यम्।
देवो देवैः सवीर्यो,
वज्रहस्तः पुरन्दरो,
वेतु आज्यस्य होतः यज॥3॥

1533. होता यक्षत् बर्हिषि इन्द्रम्,
निषद्वरम् वृषभम् नर्यापसम्।
वसुभी रुद्रैः आदित्यैः,
सयुग्भिः बहिः आ असदत्,
वेतु आज्यस्य होतः यज॥4॥

1534. होता यक्षत् ओजो न वीर्यम्,
सहो द्वार इन्द्रम् अवर्द्धयन्।
सुप्रायणा अस्मिन् यज्ञे,
वि श्रयन्ताम् ऋतावृधो,
द्वार इन्द्राय मीढुषे,
व्यन्तु आज्यस्य होतः यज॥5॥

(343) सूक्त 2

1535. होता यक्षत् उषे इन्द्रस्य,
धेनू सुदुघे मातरा मही।
सवातरौ न तेजसा,
वत्सम् इन्द्रम् अवर्द्धताम्,
वीताम् आज्यस्य होतः यज॥6॥

1536. होता यक्षत् दैव्या होतारा भिषजा,
सखाया हविषा इन्द्रम् भिषज्यतः।
कवी देवौ प्रचेतसौ,
इन्द्राय धत्त इन्द्रियम्,
वीताम् आज्यस्य होतः यज॥7॥

1537. होता यक्षत् तिस्रो देवीः न भेषजम् त्रयः,
त्रिधातवो अपस इडा,
सरस्वती भारती महीः।
इन्द्रपत्नीः हविष्मतीः,
व्यन्तु आज्यस्य होतः यज॥8॥

1538. होता यक्षत् त्वष्टारम् इन्द्रम् देवम्,
भिषजम् सुयजम् घृतश्रियम्।
पुरुरूपम् सुरेतसम् मघोनम्,
इन्द्राय त्वष्टा दधत् इन्द्रियाणि,
वेतु आज्यस्य होतः यज॥9॥

1539. होता यक्षत् वनस्पतिम् शमितारम्,
शतक्रतुम् धियो जोष्टारम् इन्द्रियम्।
मध्वा समञ्जन् पथिभिः सुगेभिः,
स्वदाति यज्ञम् मधुना घृतेन,
वेतु आज्यस्य होतः यज॥10॥

(344) सूक्त 3

1540. होता यक्षत् इन्द्रम् स्वाहा,
आज्यस्य मेदसः स्वाहा,
स्तोकानाम् स्वाहा, स्वाहा कृतीनाम्,
स्वाहा हव्यसूक्तीनाम्।
स्वाहा देवा आज्यपा,
जुषाणा इन्द्र आज्यस्य,
व्यन्तु होतः यज॥11॥

1541. देवम् बर्हिः इन्द्ररम्,
सुदेवम् देवैः वीरवत्,
स्तीर्णम् वेद्याम् अवर्द्धयत्।
वस्तोः वृतम् प्र अक्तोः,
भृतम् राया बर्हिष्मतो,
अति अगात् वसुवने,
वसुधेयस्य वेतु यज॥12॥

1542. देवीः द्वार इन्द्रम् सङ्घाते,
वीड्वीः यामन् अवर्द्धयन्।
आ वत्सेन तरुणेन,
कुमारेण च मीवता,
अप अर्वाणम् रेणु ककाटम्,
नुदन्ताम् वसुवने,
वसुधेयस्य व्यन्तु यज॥13॥

1543. देवी उषासानक्ता इन्द्रम्,
यज्ञे प्रयति अह्वेताम्।
दैवीः विशः प्र अयासिष्टाम्,
सुप्रीते सुधिते वसुवने,
वसुधेयस्य वीताम् यज॥14॥

1544. देवी ज्योष्ट्री वसुधिती,
देवम् इन्द्रम् अवर्धताम्।
अयावि अन्या अघा,
द्वेषांसि आ अन्या वक्षत्,
वसु वार्याणि यजमानाय,
शिक्षिते वसुवने,
वसुधेयस्य वीताम् यज॥15॥

(345) सूक्त 4

1545. देवी ऊर्जाहुती दुघे सुदुघे,
पयसा इन्द्रम् अवर्द्धताम्।
इषम् ऊर्जम् अन्या वक्षत्,
सग्धिम् सपीतिम् अन्या,
नवेन पूर्वम् दयमाने,
पुराणेन नवम् अधाताम्,
ऊर्जम् ऊर्जाहुती ऊर्जयमाने,
वसु वार्याणि यजमानाय,
शिक्षिते वसुवने,
वसुधेयस्य वीताम् यज॥16॥

1546. देवा दैव्या होतारा,
देवम् इन्द्रम् अवर्द्धताम्।
हताघशंसौ आ अभार्ष्टाम्,
वसु वार्याणि यजमानाय,
शिक्षितौ वसुवने,
वसुधेयस्य वीताम् यज॥17॥

1547. देवीः तिस्त्रः तिस्त्रो देवीः,
पतिम् इन्द्रम् अवर्धयन्।
अस्पृक्षत् भारती दिवम् रुद्रैः
यज्ञम् सरस्वती इडा,
वसुमती गृहान् वसुवने,
वसुधेयस्य व्यन्तु यज॥18॥

1548. देव इन्द्रो नराशम् सः त्रिवरूथः,
त्रिबन्धुरो देवम् इन्द्रम् अवर्धयन्।
शतेन शितिपृष्ठानाम् आहितः,
सहस्त्रेण प्र वर्तते मित्रावरुणा इत् अस्य,
होत्रम् अर्हतो बृहस्पतिः स्तोत्रम्,
अश्विना अध्वर्यवम् वसुवने,
वसुधेयस्य वेतु यज॥19॥

1549. देवो देवैः वनस्पतिः,
हिरण्यपर्णो मधुशाखः सुपिप्पलो,
देवम् इन्द्रम् अवर्धयत्।
दिवम् अग्रेण अस्पृक्षत आ अन्तरिक्षम्,
पृथिवीम् अदृंहीत् वसुवने,
वसुधेयस्य वेतु यज॥20॥

(346) सूक्त 5

1550. देवम् बर्हिः वारितीनाम्,
देवम् इन्द्रम् अवर्धयत्।
स्वासस्थम् इन्द्रेण आसन्नम्,
अन्या बर्हींषि अभि अभूत् वसुवने,
वसुधेयस्य वेतु यजः॥21॥

1551. देवो अग्निः स्विष्टकृत,
देव इन्द्रम् अवर्धयत्।
स्विष्टम् कुर्वन् स्विष्टकृत् स्विष्टम्,
अद्य करोतु नो वसुवने,
वसुधेयस्य वेतु यज॥22॥

1552. अग्निम् अद्य होतारम्,
अवृणीतायम् यजमानः,
पचन् पक्तीः पचन् पुरोडाशम्,
बध्नन् इन्द्राय छागम्।
सूपस्था अद्य देवो वनस्पतिः,
अभवत् इन्द्राय छागेन।
अद्यत् तम् मेदस्तः प्रति पचत्,
अग्रभीत् अवीवृधत्,
पुरोडाशेन त्वाम् अद्य ऋषे॥23॥

(347) सूक्त 6

1553. होता यक्षत् समिधानम् महत्,
यशः सुसमिद्धम् वरेण्यम्,
अग्निम् इन्द्रम् वयोधसम्।
गायत्रीम् छन्दः इन्द्रियम्,
त्रि अविम् गाम् वयो दधत्,
वेतु आज्यस्य होतः यज ॥24॥

1554. होता यक्षत् तनूनपातम् उद्भिदम्,
यम् गर्भम् अदितिः दधे,
शुचिम् इन्द्रम् वयोधसम्।
उष्णिहम् छन्द इन्द्रियम्,
दित्यवाहम् गाम् वयो दधत्,
वेतु आज्यस्य होतः यज ॥25॥

1555. होता यक्षत् ईडेन्यम् ईडितम्,
वृत्रहन्तमम् इडाभिः ईड्यम्,
सहः सोमम् इन्द्रम् वयोधसम्।
अनुष्टुभम् छन्द इन्द्रियम्,
पञ्चाविम् गाम् वयो दधत्,
वेतु आजस्य होतः यज ॥26॥

(348) सूक्त 7

1556. होता यक्षत् सुबर्हिषम्,
पूषण्वन्तम् अमर्त्यम्,
सीदन्तम् बर्हिषि प्रिये,
अमृता इन्द्रम् वयोधसम्।
बृहतीम् छन्द इन्द्रियम्,
त्रिवत्सम् गाम् वयो दधत्,
वेतु आज्यस्य होतः यज ॥27॥

1557. होता यक्षत् व्यचस्वतीः,
सुप्रायणा ऋतावृधो,
द्वारो देवीः हिरण्ययीः,
ब्रह्माणम् इन्द्रम् वयोधसम्।
पंक्तिम् छन्द इह इन्द्रियम्,
तुर्य वाहम् गाम वयो दधत्,
व्यन्तु आज्यस्य होतः यज ॥28॥

1558. होता यक्षत् सुपेशसा,
सुशिल्पे बृहती,
उभे नक्तोषासा न दर्शते,
विश्वम् इन्द्रम् वयोधसम्।
त्रिष्टुभम् छन्द इह इन्द्रियम्,
पष्ठवाहम् गाम् वयो दधत्,
वीताम् आज्यस्य होतः यज ॥29॥

(349) सूक्त 8

1559. होता यक्षत् प्रचेतसा,
देवानाम् उत्तमम्,
यशो होतारा दैव्या कवी,
सयुजा इन्द्रम् वयोधसम्।
जगतीम् छन्द इन्द्रियम्,
अनड्वाहम् गाम् वयो दधत्,
वीताम् आज्यस्य होतः यज॥30॥

1560. होता यक्षत् पेशस्वतीः,
तिस्रो देवीः हिरण्ययीः,
भारतीः बृहतीः महीः,
पतिम् इन्द्रम् वयोधसम्।
विराजम् छन्द इह इन्द्रियम्,
धेनुम् गाम् न वयो दधत्,
व्यन्तु आज्यस्य होतः यज॥31॥

1561. होता यक्षत् सुरेतसम्,
त्वष्टारम् पुष्टिवर्द्धनम्,
रूपाणि बिभ्रतम् पृथक्,
पुष्टिम् इन्द्रम् वयोधसम्।
द्विपदम् छन्द इन्द्रियम्,
उक्षाणम् गाम् न वयो दधत्,
वेतु आज्यस्य होतः यज॥32॥

(350) सूक्त 9

1562. होता यक्षत् वनस्पतिम्,
शमितारम् शतक्रतुम्,
हिरण्यपर्णम् उक्थिनम्,
रशनाम् बिभ्रतम् वशिम्,
भगम् इन्द्रम् वयोधसम्।
ककुभम् छन्द इह इन्द्रियम्,
वशाम् वेहतम् गाम् वयो दधत्,
वेतु आज्यस्य होतः यज॥33॥

1563. होता यक्षत् स्वाहाकृतीः,
अग्निम् गृहपतिम्,
पृथक् वरुणम् भेषजम् कविम्,
क्षत्रम् इन्द्रम् वयोधसम्।
अतिछन्दसम् छन्द इन्द्रियम्,
बृहत् ऋषभम् गाम् वयो दधत्,
व्यन्तु आज्यस्य होतः यज॥34॥

1564. देवम् बर्हिः वयो धसम्,
देवम् इन्द्रम् अवर्धयत्।
गायत्र्या छन्दसा इन्द्रियम्,
चक्षुः इन्द्रे वयो दधत् वसुवने,
वसुधेयस्य वेतु यज॥35॥

(351) सूक्त 10

1565. देवीः द्वारो वयोधसम्,
शुचिम् इन्द्रम् अवर्धयत्।
उष्णिहा छन्दसा इन्द्रियम्,
प्राणम् इन्द्रे वयो दधत् वसुवने,
वसुधेयस्य व्यन्तु यज॥36॥

1566. देवी उषासानक्ता देवम् इन्द्रम्,
वयोधसम् देवी देवम् अवर्धताम्।
अनुष्टुभा छन्दसा इन्द्रियम्,
बलम् इन्द्रे वयो दधत् वसुवने,
वसुधेयस्य वीताम् यज॥37॥

1567. देवी जोष्ट्री वसुधिती,
देवम् इन्द्रम् वयोधसम्,
देवी देवम् अवर्धताम्।
बृहत्या छन्दसा इन्द्रियम्,
श्रोत्रम् इन्द्रे वयो दधत् वसुवने,
वसुधेयस्य वीताम् यज॥38॥

1568. देवी ऊर्जाहुती दुघे सुदुघे,
पयसा इन्द्रम् वयोधसम्,
देवी देवम् अवर्धताम्।
पङ्क्त्या छन्दसा इन्द्रियम्,
शुक्रम् इन्द्रे वयो दधत् वसुवने,
वसुधेयस्य वीताम् यज॥39॥

1569. देवा दैव्या होतारा,
देवम् इन्द्रम् वयोधसम्,
देवौ देवम् अवर्धताम्।
त्रिष्टुभा छन्दसा इन्द्रियम्,
त्विषिम् इन्द्रे वयो दधत् वसुवने,
वसुधेयस्य वीताम् यज॥40॥

(352) सूक्त 11

1570. देवीः तिस्रः तिस्रो देवीः
वयोधसम् पतिम् इन्द्रम् अवर्धयन्।
जगत्या छन्दसा इन्द्रियम्,
शूषम् इन्द्रे वयो दधत् वसुवने,
वसुधेयस्य व्यन्तु यज॥41॥

1571. देवो नराशंसो,
देवम् इन्द्रम् वयोधसम्,
देवो देवम् अवर्द्धयत्।
विराजा छन्दसा इन्द्रियम्,
रूपम् इन्द्रे वयो दधत् वसुवने,
वसुधेयस्य वेतु यज ॥42॥

1572. देवो वनस्पतिः,
देवम् इन्द्रम् वयोधसम्,
देवो देवम् अवर्धयत्।
द्विपदा छन्दसा इन्द्रियम्,
भगम् इन्द्रे वयो दधत् वसुवने,
वसुधेयस्य वेतु यज ॥43॥

1573. देवम् बर्हिः वारितीनाम्,
देवम् इन्द्रम् वयोधसम्,
देवम् देवम् अवर्धयत्।
ककुभा छन्दसा इन्द्रियम्,
यश इन्द्रे वयो दधत् वसुवने,
वसुधेयस्य वेतु यज ॥44।

1574. देवो अग्निः स्विष्टकृत्,
देवम् इन्द्रम् वयोधसम्,
देवो देवम् अवर्धयत्।
अति छन्दसा छन्दसा इन्द्रियम्,
क्षत्रम् इन्द्रे वयो दधत् वसुवने,
वसुधेयस्य वेतु यज ॥45॥

1575. अग्निम् अद्य होतारम्,
अवृणीत अयम् यजमानः,
पचन् पक्तीः पचन् पुरोडाशम्,
बध्नन् इन्द्राय वयोधसे छागम्।
सूपस्था अद्य देवो वनस्पतिः,
अभवत् इन्द्राय वयोधसे छागेन।
अघत्तम् मेदस्तः प्रति पचत्,
अग्रभीत् अवीवृधत्,
पुरोडाशेन त्वाम् अद्य ऋषे ॥46॥

इति अष्टाविंशो अध्यायः

ॐ

अथ एकोनत्रिंशो अध्यायः

(353) सूक्त 1

1576. समिद्धो अञ्जन् कृदरम् मतीनाम्,
घृतम् अग्ने मधुमत् पिन्वमानः।
वाजी वहन् वाजिनम् जातवेदो,
देवानाम् वक्षि प्रियम् आ सधस्थम्॥1॥

1577. घृतेन अञ्जन् सम् पथो देवयानान्,
प्रजानन् वाजी अपि एतु देवान्।
अनु त्वा सप्ते प्रदिशः सचन्ताम्,
स्वधाम् अस्मै यजमानाय धेहि॥2॥

1578. ईड्यः च असि वन्द्यः च वाजिन्,
आशुः च असि मेध्यः च सप्ते।
अग्निः त्वा देवैः वसुभिः सजोषाः,
प्रीतम् वह्निम् वहतु जातवेदाः॥3॥

1579. स्तीर्णम् बर्हिः सुष्टरीम् जुषाणा,
उरु पृथु प्रथमानम् पृथिव्याम्।
देवेभिः युक्तम् अदितिः सजोषाः,
स्योनम् कृण्वाना सुविते दधातु॥4॥

1580. एता उ वः सुभगा विश्वरूपा,
वि पक्षोभिः श्रयमाणा उत् आतैः।
ऋष्वाः सतीः कवषाः शुम्भमाना,
द्वारो देवीः सुप्रायणा भवन्तु॥5॥

(354) सूक्त 2

1581. अन्तरा मित्रावरुणा चरन्ती,
मुखम् यज्ञानाम् अभि सम् विदाने।
उषासा वाम् सुहिरण्ये सुशिल्पे,
ऋतस्य योनौ इह सादयामि॥6॥

1582. प्रथमा वाम् सरथिना सुवर्णा,
देवौ पश्यन्तौ भुवनानि विश्वा।
अपिप्रयम् चोदना वाम् मिमाना,
होतारा ज्योतिः प्रदिशा दिशन्ता॥7॥

1583. आदित्यैः नो भारती वष्टु यज्ञम्,
सरस्वती सह रुद्रैः न आवीत्।
इडा उपहूता वसुभिः सजोषा,
यज्ञम् नो देवीः अमृतेषु धत्त॥8॥

1584. त्वष्टा वीरम् देवकामम् जजान,
त्वष्टुः अर्वा जायत आशुः अश्वः।
त्वष्टा इदम् विश्वम् भुवनम् जजान,
बहोः कर्त्तारम् इह यक्षि होतः॥9॥

1585. अश्वो घृतेन त्मन्या समक्त,
उप देवान् ऋतुशः पाथ एतु।
वनस्पतिः देवलोकम् प्रजानन्,
अग्निना हव्या स्वदितानि वक्षत्॥10॥

(355) सूक्त 3

1586. प्रजापतेः तपसा वावृधानः,
सद्यो जातो दधिषे यज्ञम् अग्ने।
स्वाहाकृतेन हविषा पुरोगा,
याहि साध्या हविः अदन्तु देवाः॥11॥

1587. यत् अक्रन्दः प्रथमम् जायमान,
उद्यन् समुद्रात् उत वा पुरीषात्।
श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू,
उपस्तुत्यम् महि जातम् ते अर्वन्॥12॥

1588. यमेन दत्तम् त्रित एनम् आयुनक्,
इन्द्र एणम् प्रथमो अधि अतिष्ठत्।
गन्धर्वो अस्य रशनाम् अगृभ्णात्,
सूरात् अश्वम् वसवो निरतष्ट॥13॥

1589. असि यमो असि आदित्यो अर्वन्,
असि त्रितो गुह्येन व्रतेन।
असि सोमेन समया विपृक्त,
आहुः ते त्रीणि दिवि बन्धनानि॥14॥

1590. त्रीणि त आहुः दिवि बन्धनानि,
त्रीणि अप्सु त्रीणि अन्तः समुद्रे।
उत इव मे वरुणः छन्दसि अर्वन्,
यत्रा त आहुः परमम् जनित्रम्॥15॥

(356) सूक्त 4

1591. इमा ते वाजिन् अवमार्जनानि,
इमा शफानाम् सनितुः निधाना।
अत्रा ते भद्रा रशना अपश्यम्,
ऋतस्य या अभिरक्षन्ति गोपाः॥16॥

1592. आत्मानाम् ते मनसा आरात् अजानाम्,
अवो दिवा पतयन्तम् पतङ्गम्।
शिरो अपश्यम् पथिभिः सुगेभिः,
अरेणुभिः जेहमानम् पतत्रि॥17॥

1593. अत्रा ते रूपम् उत्तमम् अपश्यम्,
जिगीषमाणम् इष आ पदे गोः।
यदा ते मर्तो अनु भोगम् आनट्,
आत् इत् ग्रसिष्ठ ओषधीः अजीगः॥18॥

1594. अनु त्वा रथो अनु मर्यो अर्वन्,
अनु गावो अनु भगः कनीनाम्।
अनु व्रातासः तव सख्यम् ईयुः,
अनु देवा ममिरे वीर्यम् ते॥19॥

1595. हिरण्यशृङ्गो अयो अस्य पादा,
मनोजवा अवर इन्द्र आसीत्।
देवा इत् अस्य हविरद्यम् आयन्,
यो अर्वन्तम् प्रथमो अध्यतिष्ठत्॥20॥

(357) सूक्त 5

1596. ईर्मान्तासः सिलिक मध्यमासः,
सम् शूरणासो दिव्यासो अत्याः।
हंसा इव श्रेणिशो यतन्ते,
यत् आक्षिषुः दिव्यम् अज्मम् अश्वाः॥21॥

1597. तव शरीरम् पतयिष्णु अर्वन्,
तव चित्तम् वात इव ध्रजीमान्।
तव शृङ्गाणि विष्ठिता पुरुत्रा,
अरण्येषु जर्भुराणा चरन्ति॥22॥

1598. उप प्र अगात् शसनम् वाजी अर्वा,
देवद्रीचा मनसा दीध्यानः।
अजः पुरो नीयते नाभिः अस्य,
अनु पश्चात् कवयो यन्ति रेभाः॥23॥

1599. उप प्र अगात् परमम् यत् सधस्थम्,
अर्वान् अच्छा पितरम् मातरम् च।
अद्य आ देवान् जुष्टतमो हि गम्या,
अथ आ शास्ते दाशुषे वार्याणि॥24॥

1600. समिद्धो अद्य मनुषो दुरोणे,
देवो देवान् यजसि जातवेदः।
आ च वह मित्रमहः चिकित्वान्,
त्वम् दूतः कविः असि प्रचेताः॥25॥

(358) सूक्त 6

1601. तनूनपात् पथ ऋतस्य यानान्,
मध्वा समञ्जन् स्वदया सुजिह्व।
मन्मानि धीभिः उत यज्ञम् ऋन्धन्,
देवत्रा च कृणुहि अध्वरम् नः॥26॥

1602. नराशंसस्य महिमानम् एषाम्,
उप स्तोषाम यजतस्य यज्ञैः।
ये सुक्रतवः शुचयो धियन्धाः,
स्वदन्ति देवा उभयानि हव्या॥27॥

1603. आजुह्वान ईड्यो वन्द्यः च,
आ याहि अग्ने वसुभिः सजोषाः।
त्वम् देवानाम् असि यह्व होता,
स एनान् यक्षि इषितो यजीयान्॥28॥

1604. प्राचीनम् बर्हिः प्रदिशा पृथिव्या,
वस्तोः अस्या वृज्यते अग्रे अह्नाम्।
वि उ प्रथते वितरम् वरीयो,
देवेभ्यो अदितये स्योनम्॥29॥

1605. व्यचस्वतीः उर्विया वि श्रयन्ताम्,
पतिभ्यो न जनयः शुम्भमानाः।
देवीः द्वारो बृहतीः विश्वम् इन्वा,
देवेभ्यो भवत सुप्रायणाः ॥30॥

(359) सूक्त 7

1606. आ सुष्वयन्ती यजते उपाके,
उषासानक्ता सदताम् नि योनौ।
दिव्ये योषणे बृहती सुरुक्मे,
अधि श्रियम् शुक्रपिशम् दधाने ॥31॥

1607. दैव्या होतारा प्रथमा सुवाचा,
मिमाना यज्ञम् मनुषो यजध्यै।
प्रचोदयन्ता विदथेषु कारू,
प्राचीनम् ज्योतिः प्रदिशा दिशन्ता ॥32॥

1608. आ नो यज्ञम् भारती तूयम् एतु,
इडा मनुष्वत् इह चेतयन्ती।
तिस्रो देवीः बर्हिः आ इदम्,
स्योनम् सरस्वती स्वपसः सदन्तु ॥33॥

1609. य इमे द्यावापृथिवी जनित्री,
रूपैः अपिंशत् भुवनानि विश्वा।
तम् अद्य होतः इषितो यजीयान्,
देवम् त्वष्टारम् इह यक्षि विद्वान् ॥34॥

1610. उप अवसृज त्मन्या समञ्जन्,
देवानाम् पाथ ऋतुथा हवींषि।
वनस्पतिः शमिता देवो अग्निः,
स्वदन्तु हव्यम् मधुना घृतेन ॥35॥

1611. सद्यो जातो वि अमिमीत यज्ञम्,
अग्निः देवानाम् अभवत् पुरोगाः।
अस्य होतुः प्रदिशि ऋतस्य वाचि,
स्वाहाकृतम् हविः अदन्तु देवाः ॥36॥

(360) सूक्त 8

1612. केतुम् कृण्वन् अकेतवे,
पेशो मर्या अपेशसे।
सम् उषद्भिः अजायथाः ॥37॥

1613. जीमूतस्य इव भवति प्रतीकम्,
यत् वर्मी याति समदाम् उपस्थे।
अनाविद्धया तन्वा जय त्वम्,
स त्वा वर्मणो महिमा पिपर्तु ॥38॥

1614. धन्वना गा धन्वना आजिम् जयेम,
धन्वना तीव्राः समदो जयेम।
धनुः शत्रोः अपकामम् कृणोति,
धन्वना सर्वाः प्रदिशो जयेम ॥39॥

1615. वक्ष्यन्ती इव इत् आ गनीगन्ति,
कर्णम् प्रियम् सखायम् परिषस्वजाना।
योषा इव शिङ्क्ते वितता अधि,
धन्वन् ज्या इयम् समने पारयन्ती ॥40॥

1616. ते आचरन्ती समना इव योषा,
माता इव पुत्रम् बिभृताम् उपस्थे।
अप शत्रून् विध्यताम् सम्विदाने,
आर्त्नी इमे विस्फुरन्ती अमित्रान् ॥41॥

(361) सूक्त 9

1617. बह्वीनाम् पिता बहुः अस्य पुत्रः,
चिश्चा कृणोति समना अवगत्य।
इषुधिः सङ्काः पृतनाः च सर्वाः,
पृष्ठे निनद्धो जयति प्रसूतः ॥42॥

1618. रथे तिष्ठन् नयति वाजिनः पुरो,
यत्र यत्र कामयते सुषारथिः।
अभीशूनाम् महिमानम् पनायत,
मनः पश्चात् अनु यच्छन्ति रश्मयः ॥43॥

1619. तीव्रान् घोषान् कृण्वते वृषपाणयो,
अश्वा रथेभिः सह वाजयन्तः।
अवक्रामन्तः प्रपदैः अमित्रान्,
क्षिणन्ति शत्रून् अनपव्ययन्तः ॥44॥

1620. रथवाहनम् हविः अस्य नाम,
यत्र आयुधम् निहितम् अस्य वर्म।
तत्र आ रथम् उप शग्मम् सदेम,
विश्वाहा वयम् सुमनस्यमानाः ॥45।

1621. स्वादुषंसदः पितरो वयोधाः,
कृच्छ्रेश्रितः शक्तीवन्तो गभीराः।
चित्रसेना इषुबला अमृध्राः,
सतोवीरा उरवो व्रातसाहाः ॥46॥

1622. ब्राह्मणासः पितरः सोम्यासः,
शिवे नो द्यावापृथिवी अनेहसा।
पूषा नः पातु दुरितात् ऋतातवृधो,
रक्षा माकिः नो अघशंस ईशत ॥47॥

1623. सुपर्णम् वस्ते मृगो अस्या दन्तो,
गोभिः सम् नद्धा पतति प्रसूता।
यत्र नरः सम् च वि च द्रवन्ति,
तत्र अस्मभ्यम् इषवः शर्म यंसन् ॥48॥

(362) सूक्त 10

1624. ऋजीते परि वृङ्धि नो,
अश्मा भवतु नः तनूः।
सोमो अधि ब्रवीतु नो,
अदितिः शर्म यच्छतु ॥49॥

1625. आ जङ्घन्ति सानु एषाम्,
जघनान् उप जिघ्नते।
अश्वाजनि प्रचेतसो,
अश्वान् समत्सु चोदय ॥50॥

1626. अहिः इव भोगैः परि एति बाहुम्,
ज्याया हेतिम् परिबाधमानः।
हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान्,
पुमान् पुमांसम् परि पातु विश्वतः ॥51॥

1627. वनस्पते वीड्वङ्गो हि भूया,
अस्मत् सखा प्रतरणः सुवीरः।
गोभिः सम् नद्धो असि वीडयस्व,
आस्थाता ते जयतु जेत्वानि ॥52॥

(363) सूक्त 11

1628. दिवः पृथिव्याः परि ओज उद्भृतम्,
वनस्पतिभ्यः परि आभृतम् सहः।
अपाम् ओज्मानम् परि गोभिः आवृतम्,
इन्द्रस्य वज्रम् हविषा रथम् यज ॥53॥

1629. इन्द्रस्य वज्रो मरुताम् अनीकम्,
मित्रस्य गर्भो वरुणस्य नाभिः।
स इमाम् नो हव्यदातिम् जुषाणो,
देव रथ प्रति हव्या गृभाय ॥54॥

1630. उप श्वासय पृथिवीम् उत द्याम्,
पुरुत्रा ते मनुताम् विष्ठितम् जगत्।
स दुन्दुभे सजूः इन्द्रेण देवैः,
दूरात् दवीयो अप सेध शत्रून ॥55॥

1631. आ क्रन्दय बलम् ओजो न आ धा,
निष्टनिहि दुरिता बाधमानः।
अप प्रोथ दुन्दुभे दुच्छुना इत,
इन्द्रस्य मुष्टिः असि वीडयस्व ॥56॥

1632. आ अमूः अज प्रति आवर्त्तय,
इमाः केतुमत् दुन्दुभिः वावदीति।
सम् अश्वपर्णाः चरन्ति नो नरो,
अस्माकम् इन्द्र रथिनो जयन्तु ॥57॥

(364) सूक्त 12

1633. आग्नेयः कृष्णग्रीवः, सारस्वती मेषी,
बभ्रुः सौम्यः, पौष्णः श्यामः,
शितिपृष्ठो बार्हस्पत्यः, शिल्पो वैश्वदेव,
ऐन्द्रो अरुणो, मारुतः कल्माष,
ऐन्द्राग्नः सम्हितो, अधोरामः सावित्रो,
वारुणः कृष्ण, एकशितिपात् पेत्वः ॥58॥

1634. अग्नये अनीकवते रोहिताञ्जिः,
अनड्वान् अधोरामौ सावित्रौ,
पौष्णौ रजतनाभी, वैश्वदेवौ पिशङ्गौ,
तूपरौ मारुतः कल्माष, आग्नेय कृष्णो अजः,
सारस्वती मेषी, वारुणः पेत्वः ॥59॥

1635. अग्नये गायत्राय त्रिवृते,
राथन्तराय अष्टाकपाल,
इन्द्राय त्रैष्टुभाय पञ्चदशाय,
बार्हताय एकादशकपालो,
विश्वेभ्यो देवेभ्यो जागतेभ्यः सप्तदशेभ्यो,
वैरुपेभ्यो द्वादशकपालो,
मित्रावरुणाभ्याम् आनुष्टुभाभ्याम् एकविंशाभ्याम्,
वैराजाभ्याम् पयस्या,
बृहस्पतये पाङ्क्ताय त्रिणवाय शाक्वराय चरुः,
सवित्र औष्णिहाय त्रयस्त्रिंशाय, रैवताय द्वादशकपालः,
प्राजापत्यः चरुः अदित्यै विष्णुपत्न्यै चरुः,
अग्नये वैश्वानराय द्वादश कपालो,
अनुमत्या अष्टाकपालः ॥60॥

इति एकोनत्रिंशो अध्यायः

ॐ

अथ त्रिंशो अध्यायः

(365) सूक्त 1

1636. देव सवितः प्र सुव यज्ञम्,
प्र सुव यज्ञपतिम् भगाय।
दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतम् नः पुनातु,
वाचस्पतिः वाचम् नः स्वदतु ॥1॥

1637. तत् सवितुः वरेण्यम्,
भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात् ॥2॥

1638. विश्वानि देव सवितः,
दुरितानि परा सुव।
यत् भद्रम् तत् न आ सुव ॥3॥

1639. विभक्तारम् हवामहे,
वसोः चित्रस्य राधसः।
सवितारम् नृचक्षसम् ॥4॥

(366) सूक्त 2

1640. ब्रह्मणे ब्राह्मणम् क्षत्राय राजन्यम्,
मरुद्भ्यो वैश्यम् तपसे शूद्रम्,
तमसे तस्करम् नारकाय वीरहणम्,
पाप्मने क्लीबम् आक्रयाया अयोगूम्,
कामाय पुंश्चलूम् अतिक्रुष्टाय मागधम् ॥5॥

1641. नृत्ताय सूतम् गीताय शैलूषम्,
धर्माय सभाचरम् नरिष्ठायै भीमलम्,
नर्माय रेभम् हसाय कारिम्,
आनन्दाय स्त्रीषखम् प्रमदे कुमारी-पुत्रम्,
मेधायै रथकारम् धैर्याय तक्षाणम् ॥6॥

1642. तपसे कौलालम् मायायै कर्मारम्,
रूपाय मणिकारम् शुभे वपम्,
शरव्याया इषुकारम् हेत्यै धनुष्कारम्,
कर्मणे ज्याकारम् दिष्टाय रज्जुसर्जम्,
मृत्यवे मृगयुम् अन्तकाय श्वनिनम् ॥7॥

1643. नदीभ्यः पौञ्जिष्ठम् ऋक्षीकाभ्यो नैषादम्,
पुरुषव्याघ्राय दुर्मदम् गन्धर्वाप्सरोभ्यो व्रात्यम्,
प्रयुग्भ्य उन्मत्तम् सर्प देवजनेभ्यो अप्रतिपदम्,
अयेभ्यः कितवम् ईर्यताया अकितवम्,
पिशाचेभ्यो बिदलकारीम्,
यातुधानेभ्यः कण्टकीकारीम् ॥8॥

(367) सूक्त 3

1644. सन्धये जारम् गेहाय उप पतिम्,
आर्त्यै परिवित्तम् निर्ऋत्यै परिविविदानम्,
अराद्ध्या एदिधिषुः पतिम्,
निष्कृत्यै पेशस्कारीम्,
संज्ञानाय स्मरकारीम्,
प्रकामोद्याय उपसदम्,
वर्णाय अनुरुधम् बलाय उपदाम् ॥9॥

1645. उत्सादेभ्यः कुब्जम् प्रमुदे वामनम्,
द्वार्भ्यः स्रामम् स्वप्नाय अन्धम्,
अधर्माय बधिरम् पवित्राय भिषजम्,
प्रज्ञानाय नक्षत्रदर्शम् आशिक्षायै प्रश्निनम्,
उपशिक्षाया अभिप्रश्निनम्,
मर्यादायै प्रश्नविवाकम् ॥10॥

1646. अर्मेभ्यो हस्तिपम् जवाय अश्वपम्,
पुष्ट्यै गोपालम् वीर्याय अविपालम्,
तेजसे अजपालम् इरायै कीनाशम्,
कीलालाय सुराकारम् भद्राय गृहपम्,
श्रेयसे वितधम् आध्यक्ष्याय अनुक्षत्तारम् ॥11॥

(368) सूक्त 4

1647. भायै दार्वाहारम् प्रभाया अग्नि एधम्,
ब्रध्नस्य विष्टपाय अभिषेक्तारम्,
वर्षिष्ठाय नाकाय परिवेष्टारम्,
देवलोकाय पेशितारम्,
मनुष्यलोकाय प्रकरितारम्,
सर्वेभ्यो लोकेभ्य उपसेक्तारम्,
अव ऋत्यै वधाय उपमन्थितारम्,
मेधाय वासः पल्पूलीम्,
प्रकामाय रजयित्रीम् ॥12॥

1648. ऋतये स्तेन हृदयम् वैरहत्याय पिशुनम्,
विविक्त्यै क्षत्तारम् औपद्रष्ट्र्याय अनुक्षतारम्,
बलाय अनुचरम् भूम्ने परिष्कन्दम्,
प्रियाय प्रियवादिनम्, अरिष्ट्या अश्वसादम्,
स्वर्गाय लोकाय भागदुघम्,
वर्षिष्ठाय नाकाय परिवेष्टारम् ॥13॥

1649. मन्यवे अयस्तापम् क्रोधाय निसरम्,
योगाय योक्तारम् शोकाया अभिसर्तारम्,
क्षेमाय विमोक्तारम् उत्कूल निकूलेभ्यः त्रिष्ठिनम्,
वपुषे मानस्कृतम् शीलाय आञ्जनीकारीम्,
निर्ऋत्यै कोशकारीम् यमाय असूम् ॥14॥

(369) सूक्त 5

1650. यमाय यमसूम्, अथर्वभ्यो अवतोकाम्,
सम्वत्सराय पर्यायिणीम्, परिवत्सराय अविजाताम्,
इदावत्सराय अतीत्वरीम्, इद्वत्सराय अतिष्कद्वरीम्,
वत्सराय विजर्जराम्, सम्वत्सराय पलिक्नीम्,
ऋभुभ्यो अजिनसन्धम्, साध्येभ्यः चर्मम्नम् ॥15॥

1651. सरोभ्यो धैवरम्, उपस्थावराभ्यो दाशम्,
वैशन्ताभ्यो वैन्दम्, नड्वलाभ्यः शौष्कलम्,
पाराय मार्गारम्, अवाराय केवर्तम्,
तीर्थेभ्य आन्दम्, विषमेभ्यो मैनालम्,
स्वनेभ्यः पर्णकम्, गुहाभ्यः किरातम्,
सानुभ्यो जम्भकम्, पर्वतेभ्यः किम्पूरुषम् ॥16॥

1652. बीभत्सायै पौल्कसम्, वर्णाय हिरण्यकारम्,
तुलायै वाणिजम्, पश्चादोषाय ग्लाविनम्,
विश्वेभ्यो भूतेभ्यः सिध्मलम्, भूत्यै जागरणम्,
अभूत्यै स्वपनम्, आर्त्यै जनवादिनम्,
व्यृद्ध्या अपगल्भम्, सम् शराय प्रच्छिदम् ॥17॥

(370) सूक्त 6

1653. अक्षराजाय कितवम्, कृताय आदिनवदर्शम्,
त्रेतायै कल्पिनम्, द्वापराय अधिकल्पिनम्,
आस्कन्दाय सभास्थाणुम्, मृत्यवे गोव्यच्छम्,
अन्तकाय गोघातम्,
क्षुधे यो गाम् विकृन्तन्तम् भिक्षमाण उपतिष्ठति,
दुष्कृताय चरकाचार्यम्, पाप्मने सैलगम् ॥18॥

1654. प्रतिश्रुत्काया अर्तनम् घोषाय भषम्,
अन्ताय बहुवादिनम् अनन्ताय मूकम्,
शब्दाय आडम्बर आघातम् महसे वीणावादम्,
क्रोशाय तूणवध्मम् अवरस्पराय शङ्खध्मम्,
वनाय वनपम् अन्यतोरण्याय दावपम् ॥19॥

1655. नर्माय पुंश्चलूम् हसाय कारिम्,
यादसे शाबल्याम् ग्रामण्यम् गणकम्,
अभिक्रोशकम् तान् महसे वीणावादम्,
पाणिघ्नम् तूणवध्मम् तान्,
नृत्ताय आनन्दाय तलवम् ॥20॥

(371) सूक्त 7

1656. अग्नये पीवानम्, पृथिव्यै पीठसर्पिणम्,
वायवे चाण्डालम्, अन्तरिक्षाय वंशनर्त्तिनम्,
दिवे खलतिम्, सूर्याय हर्य अक्षम्,
नक्षत्रेभ्यः किर्मिरम्, चन्द्रमसे किलासम्,
अह्ने शुक्लम् पिङ्गाक्षम्,
रात्र्यै कृष्णम् पिङ्गाक्षम् ॥21॥

1657. अथ एतान् अष्टौ विरूपान्,
आ लभते अतिदीर्घम् च,
अतिह्रस्वम् च अतिस्थूलम् च,
अतिकृशम् च अतिशुक्लम् च,
अतिकृष्णम् च अतिकुल्बम् च,
अतिलोमशम् च ।
अशूद्रा अब्राह्मणाः ते प्राजापत्याः ।
मागधः पुंश्चली कितवः क्लीबो,
अशूद्रा अब्राह्मणाः ते प्राजापत्याः ॥22॥

इति त्रिंशो अध्यायः

ॐ

अथ एकत्रिंशो अध्यायः

(372) सूक्त 1

1658. सहस्त्रशीर्षा पुरुषः,
सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्।
स भूमिम् सर्वत स्पृत्वा,
अति अतिष्ठत् दशाङ्गुलम्॥1॥

1659. पुरुष एव इदम् सर्वम्,
यत् भूतम् यत् च भाव्यम्।
उत अमृतत्वस्य ईशानो,
यत् अनेन अति-रोहति॥2॥

1660. एतावान् अस्य महिमा,
अतो ज्यायान् च पूरुषः।
पादो अस्य विश्वा भूतानि,
त्रिपाद् अस्य अमृतम् दिवि॥3॥

(373) सूक्त 2

1661. त्रिपात् ऊर्ध्व उत् ऐत् पुरुषः,
पादो अस्य इह अभवत् पुनः।
ततो विष्वङ् वि अक्रामत्,
साशनानशने अभि॥4॥

1662. ततो विराट् अजायत्,
विराजो अधि पूरुषः।
स जातो अति अरिच्यत्,
पश्चात् भूमिम् अथो पुरः॥5॥

1663. तस्मात् यज्ञात् सर्वहुतः,
सम्भृतम् पृषदाज्यम्।
पशून् तान् चक्रे वायव्यान्,
आरण्या ग्राम्याः च ये॥6॥

(374) सूक्त 3

1664. तस्मात् यज्ञात् सर्वहुत,
ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दांसि जज्ञिरे तस्मात्,
यजुः तस्मात् अजायत॥7॥

1665. तस्मात् अश्वा अजायन्त,
ये के च उभयादतः।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्,
ततस्मात् जाता अजावयः॥8॥

1666. तम् यज्ञम् बर्हिषि प्र औक्षन्,
पुरुषम् जातम् अग्रतः।
तेन देवा अयजन्त,
साध्या ऋषयः च ये॥9॥

(375) सूक्त 4

1667. यत् पुरुषम् वि अदधुः,
कतिधा वि अकल्पयन्।
मुखम् किम् अस्य आसीत्,
किम् बाहू किम् ऊरू पादौ उच्येते॥10॥

1668. ब्राह्मणो अस्य मुखम् आसीत्,
बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तत् अस्य यत् वैश्यः,
पद्भ्याम् शूद्रो अजायत॥11॥

1669. चन्द्रमा मनसो जातः,
चक्षोः सूर्यो अजायत।
श्रोत्रात् वायुः च प्राणः च,
मुखात् अग्निः अजायत॥12॥

1670. नाभ्या आसीत् अन्तरिक्षम्,
शीर्ष्णो द्यौः सम् अवर्तत।
पद्भ्याम् भूमिः दिशः श्रोत्रात्,
तथा लोकान् अकल्पयन्॥13॥

(376) सूक्त 5

1671. यत् पुरुषेण हविषा,
देवा यज्ञम् अतन्वत।
वसन्तो अस्य आसीत् आज्यम्,
ग्रीष्म इध्मः शरत् हविः॥14॥

1672. सप्त अस्य आसन् परिधयः,
त्रिः सप्त समिधः कृताः।
देवा यत् यज्ञम् तन्वाना,
अबध्नन् पुरुषम् पशुम्॥15॥

1673. यज्ञेन यज्ञम् अयजन्त देवाः,
तानि धर्माणि प्रथमानि आसन्।
ते ह नाकम् महिमानः सचन्त,
यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥16॥

1674. अद्भ्यः सम्भृतः पृथिव्यै रसात्,
च विश्वकर्मणः सम् अवर्तत अग्रे।
तस्य त्वष्टा विदधत् रूपम् एति,
तत् मर्त्यस्य देवत्वम् आजानम् अग्रे॥17॥

(377) सूक्त 6

1675. वेद अहम् एतम् पुरुषम् महान्तम्,
आदित्यवर्णम् तमसः परस्तात्।
तम् एव विदित्वा अति मृत्युम् एति,
न अन्यः पन्था विद्यते अयनाय॥18॥

1676. प्रजापतिः चरति गर्भे अन्तः,
अजायमानो बहुधा वि जायते।
तस्य योनिम् परि पश्यन्ति धीराः,
तस्मिन् ह तस्थुः भुवनानि विश्वा॥19॥

1677. यो देवेभ्य आतपति,
यो देवानाम् पुरोहितः।
पूर्वो यो देवेभ्यो जातो,
नमो रुचाय ब्राह्मये॥20॥

1678. रुचम् ब्राह्मम् जनयन्तो,
देवा अग्रे तत् अब्रुवन्।
यः त्वा एवम् ब्राह्मणो विद्यात्,
तस्य देवा असन् वशे॥21॥

1679. श्रीः च ते लक्ष्मीः च,
पत्न्यौ अहोरात्रे पार्श्वे,
नक्षत्राणि रूपम् अश्विनौ व्यात्तम्।
इष्णन् इषाण अमुम् म इषाण,
सर्वलोकम् म इषाण॥22॥

इति एकत्रिंशो अध्यायः

ॐ

अथ द्वात्रिंशो अध्यायः

(378) सूक्त 1

1680. तत् एव अग्निः तत् आदित्यः,
तत् वायुः तत् उ चन्द्रमाः।
तत् एव शुक्रम् तत् ब्रह्म,
ता आपः स प्रजापतिः॥1॥

1681. सर्वे निमेषा जज्ञिरे,
विद्युतः पुरुषात् अधि।
न एनम् ऊर्ध्वम् न तिर्यञ्चम्,
न मध्ये परि जग्रभत्॥2॥

1682. न तस्य प्रतिमा अस्ति,
यस्य नाम महत् यशः।
हिरण्यगर्भ इति एष,
मा मा हिंसीत् इति एषा,
यस्मात् न जात इति एषः॥3॥

(379) सूक्त 2

1683. एषो ह देवः प्रदिशो अनु सर्वाः,
पूर्वो ह जातः स उ गर्भे अन्तः।
स एव जातः स जनिष्यमाणः,
प्रत्यङ् जनाः तिष्ठति सर्वतोमुखः॥4॥

1684. यस्मात् जातम् न पुरा किम् चन एव,
य आबभूव भुवनानि विश्वा।
प्रजापतिः प्रजया सम् रराणः,
त्रीणि ज्योतींषि सचते स षोडशी ॥5॥

1685. येन द्यौः उग्रा पृथिवी च दृढा,
येन स्वः स्तभितम् येन नाकः।
यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः,
कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥6॥

1686. यम् क्रन्दसी अवसा तस्तभाने,
अभि ऐक्षेताम् मनसा रेजमाने।
यत्र अधि सूर उदितो विभाति,
कस्मै देवाय हविषा विधेम।
आपो ह यत् बृहतीः यः चित् अपः ॥7॥

(380) सूक्त 3

1687. वेनः तत् पश्यत् निहितम् गुहा सत्,
यत्र विश्वम् भवति एकनीडम् ॥
तस्मिन् इदम् सम् च वि च एति सर्वम्,
स ओतः प्रोतः च विभूः प्रजासु ॥8॥

1688. प्र तत् वोचेत् अमृतम् नु विद्वान्,
गन्धर्वो धाम विभृतम् गुहा सत्।
त्रीणि पदानि निहिता गुहा अस्य,
यः तानि वेद स पितुः पिता असत् ॥9॥

1689. स नो बन्धुः जनिता स विधाता,
धामानि वेद भुवनानि विश्वा।
यत्र देवा अमृतम् आनशानाः,
तृतीये धामन् अध्यैरयन्त ॥10॥

1690. परीत्य भूतानि परीत्य लोकान्,
परीत्य सर्वाः प्रदिशो दिशः च।
उपस्थाय प्रथमजाम् ऋतस्य आत्मना,
आत्मानम् अभि सम् विवेश ॥11॥

1691. परि द्यावापृथिवी सद्य इत्वा,
परि लोकान् परि दिशः परि स्वः।
ऋतस्य तन्तुम् विततम् विचृत्य,
तत् अपश्यत् तत् अभवत् तत् आसीत् ॥12॥

(381) सूक्त 4

1692. सदसः पतिम् अद्भुतम्,
प्रियम् इन्द्रस्य काम्यम्।
सनिम् मेधाम् अयाषिम् स्वाहा ॥13॥

1693. याम् मेधाम् देवगणाः,
पितरः च उपासते।
तया माम् अद्य मेधया,
अग्ने मेधाविनम् कुरु स्वाहा ॥14॥

1694. मेधाम् मे वरुणो ददातु,
मेधाम् अग्निः प्रजापतिः।
मेधाम् इन्द्रः च वायुः च,
मेधाम् धाता ददातु मे स्वाहा॥15॥

1695. इदम् मे ब्रह्म च क्षत्रम्,
च उभे श्रियम् अश्नुताम्।
मयि देवा दधतु,
श्रियम् उत्तमाम् तस्यै ते स्वाहा॥16॥

इति द्वात्रिंशो अध्यायः

ॐ

अथ त्रयस्त्रिंशो अध्यायः

(382) सूक्त 1

1696. अस्य अजरासो दमाम् अरित्रा,
अर्चत् धूमासो अग्नयः पावकाः।
श्वितीचयः श्वात्रासो भुरण्यवो,
वनर्षदो वायवो न सोमाः॥1॥

1697. हरयो धूमकेतवो,
वातजूता उप द्यवि।
यतन्ते वृथक् अग्नयः॥2॥

1698. यजा नो मित्रावरुणा,
यजा देवान् ऋतम् बृहत्।
अग्ने यक्षि स्वम् दमम्॥3॥

1699. युक्ष्वा हि देवहूतमान्,
अश्वान् अग्ने रथीरिव।
नि होता पूर्व्यः सदः॥4॥

(383) सूक्त 2

1700. द्वे विरूपे चरतः स्वर्थे,
अन्यान्या वत्सम् उप धापयेते।
हरिः अन्यस्याम् भवति स्वधावान्,
शुक्रो अन्यस्याम् ददृशे सुवर्चाः॥5॥

1701. अयम् इह प्रथमो धायि धातृभिः,
होता यजिष्ठो अध्वरः वीड्यः।
यम् अप्नवानो भृगवो विरुरुचुः,
वनेषु चित्रम् विभ्वम् विशेविशे॥6॥

1702. त्रीणि शता त्री सहस्राणि अग्निम्,
त्रिंशत् च देवा नव च असपर्यन्।
औक्षन् घृतैः अस्तृणन् बर्हिः अस्मा,
आत् इत् होतारम् नि असादयन्त॥7॥

1703. मूर्द्धानम् दिवो अरतिम् पृथिव्या,
वैश्वानरम् ऋत आ जातम् अग्निम्।
कविम् सम्राजम् अतिथिम् जनानाम्,
आसन् आ पात्रम् जनयन्त देवाः॥8॥

(384) सूक्त 3

1704. अग्निः वृत्राणि जङ्घनत्,
द्रविणस्युः विपन्यया।
समिद्धः शुक्र आहुतः॥9॥

1705. विश्वेभिः सोम्यम् मधु,
अग्न इन्द्रेण वायुना।
पिबा मित्रस्य धामभिः॥10॥

1706. आ यत् इषे नृपतिम् तेज आनट्,
शुचि रेतो निषिक्तम् द्यौः अभीके।
अग्निः शर्द्धम् अनवद्यम् युवानम्,
स्वाध्यम् जनयत् सूदयत् च॥11॥

1707. अग्ने शर्द्ध महते सौभगाय,
तव द्युम्नानि उत्तमानि सन्तु।
सम् जास्पत्यम् सुयमम् आ कृणुष्व,
शत्रूयताम् अभि तिष्ठा महांसि॥12॥

1708. त्वाम् हि मन्द्रतमम् अर्कशोकैः,
ववृमहे महि नः श्रोषि अग्ने।
इन्द्रम् न त्वा शवसा देवता,
वायुम् पृणन्ति राधसा नृतमाः॥13॥

(385) सूक्त 4

1709. त्वे अग्ने स्वाहुत,
प्रियासः सन्तु सूरयः।
यन्तारो ये मघवानो जनानाम्,
ऊर्वान् दयन्त गोनाम्॥14॥

1710. श्रुधि श्रुत्कर्ण वह्निभिः,
देवैः अग्ने सयावभिः।
आ सीदन्तु बर्हिषि मित्रो,
अर्यमा प्रातर्यावाणो अध्वरम्॥15॥

1711. विश्वेषाम् अदितिः यज्ञियानाम्,
विश्वेषाम् अतिथिः मानुषाणाम्।
अग्निः देवानाम् अव आवृणानः,
सुमृडीको भवतु जातवेदाः ॥16॥

1712. महो अग्नेः समिधानस्य शर्मणि,
अनागा मित्रे वरुणे स्वस्तये।
श्रेष्ठे स्याम सवितुः सवीमनि,
तत् देवानाम् अवो अद्या वृणीमहे॥17॥

1713. आपः चित् पिप्युः तर्यो न गावो,
नक्षन् ऋतम् जरितारः त इन्द्र।
याहि वायुः न नियुतो नो अच्छा,
त्वम् हि धीभिः दयसे वि वाजान्॥18॥

(386) सूक्त 5

1714. गाव उप अवत अवतम्,
मही यज्ञस्य रप्सुदा।
उभा कर्णा हिरण्यया॥19॥

1715. यत् अद्य सूर उदिते,
अनागा मित्रो अर्यमा।
सुवाति सविता भगः॥20॥

1716. आ सुते सिञ्चत श्रियम्,
रोदस्योः अभिश्रियम्।
रसा दधीत वृषभम्।
तम् प्रत्नथा अयम् वेनः॥21॥

1717. आतिष्ठन्तम् परि विश्वे अभूषन्,
श्रियो वसानः चरति स्वरोचिः।
महत् तत् वृष्णो असुरस्य नाम,
आ विश्वरूपो अमृतानि तस्थौ॥22॥

1718. प्र वो महे मन्दमानाय अन्धसो,
अर्चा विश्वानराय विश्वाभुवे।
इन्द्रस्य यस्य सुमखम् सहो महि,
श्रवो नृम्णम् च रोदसी सपर्यतः॥23॥

(387) सूक्त 6

1719. बृहन् इत् इध्म एषाम्,
भूरि शस्तम् पृथुः स्वरुः।
येषाम् इन्द्रो युवा सखा॥24॥

1720. इन्द्र आ इहि मत्सि अन्धसो,
विश्वेभिः सोमपर्वभिः।
महान् अभिष्टिः ओजसा॥25॥

1721. इन्द्रो वृत्रम् अवृणोत् शर्द्धनीतिः,
प्र मायिनाम् अमिनात् वर्पणीतिः।
अहन् वि असम् उशधक् वनेषु,
आविः धेना अकृणोत् राम्याणाम्॥26॥

1722. कुतः त्वम् इन्द्र माहिनः सन् एको,
यासि सत्पते किम् त इत्था।
सम् पृच्छसे समराणः शुभानैः वोचेः,
तत् नो हरिवो यत् ते अस्मे।
महान् इन्द्रो य ओजसा।
कदा चन स्तरीरसि।
कदा चन प्रयुच्छसि॥ 27॥

(388) सूक्त 7

1723. आ तत् त इन्द्र आयवः,
पनन्त अभि य ऊर्वम्,
गोमन्तम् तितृत्सान्।
सुकृत् स्वम् ये पुरुपुत्राम् महीम्,
सहस्त्रधाराम् बृहतीम् दुदुक्षन्॥28॥

1724. इमाम् ते धियम् प्र भरे महो महीम्,
अस्य स्तोत्रे धिषणा यत् त आनजे।
तम् उत्सवे च प्रसवे च सासहिम्,
इन्द्रम् देवासः शवसा अमदन् अनु॥29॥

1725. विभ्राड् बृहत् पिबतु सोम्यम् मधु,
आयुः दधत् यज्ञपतौ अविह्रुतम्।
वातजूतो यो अभिरक्षति त्मना,
प्रजाः पुपोष पुरुधा वि राजति॥30॥

(389) सूक्त 8

1726. उत् उ त्यम् जातवेदसम्,
देवम् वहन्ति केतवः।
दृशे विश्वाय सूर्यम्॥31॥

1727. येना पावक चक्षसा,
भुरण्यन्तम् जनान् अनु।
त्वम् वरुण पश्यसि॥32॥

1728. दैव्यो अध्वर्यू आ गतम्,
रथेन सूर्य त्वचा।
मध्वा यज्ञम् सम् अञ्जाथे।
तम् प्रत्नथा अयम् वेनः,
चित्रम् देवानाम्॥33॥

1729. आ न इडाभिः विदथे सुशस्ति,
विश्वानरः सविता देव एतु।
अपि यथा युवानो मत्सथा नो,
विश्वम् जगत् अभिपित्वे मनीषा॥34॥

(390) सूक्त 9

1730. यत् अद्य कत् च वृत्रहन्,
उत् अगा अभि सूर्य।
सर्वम् तत् इन्द्र ते वशे॥35॥

1731. तरणिः विश्व दर्शतो,
ज्योतिष्कृत् असि सूर्य।
विश्वम् आ भासि रोचनम्॥36॥

1732. तत् सूर्यस्य देवत्वम् तत् महित्वम्
मध्या कर्तोः विततम् सम् जभार।
यदा इत् अयुक्त हरितः सधस्थात्,
आत् रात्री वासः तनुते सिमस्मै॥37॥

1733. तत् मित्रस्य वरुणस्य अभिचक्षे,
सूर्यो रूपम् कृणुते द्योः उपस्थे।
अनन्तम् अन्यत् रुशत् अस्य पाजः,
कृष्णम् अन्यत् हरितः सम् भरन्ति॥38॥

(391) सूक्त 10

1734. बट् महान् असि सूर्य,
बट् आदित्य महान् असि।
महः ते सतो महिमा पनस्यते,
अद्धा देव महान् असि॥39॥

1735. बट् सूर्य श्रवसा महान् असि,
सत्रा देव महान् असि।
मह्ना देवानाम् असुर्यः पुरोहितो,
विभु ज्योतिः अदाभ्यम्॥40॥

1736. श्रायन्त इव सूर्यम् विश्वा,
इत् इन्द्रस्य भक्षत।
वसूनि जाते जनमान ओजसा,
प्रति भागम् न दीधिम्॥41॥

(392) सूक्त 11

1737. अद्या देवा उदिता सूर्यस्य,
निः अंहसः पिपृता निः अवद्यात्।
तत् नो मित्रो वरुणो मामहन्ताम्,
अदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः॥42॥

1738. आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो,
निवेशयन् अमृतम् मर्त्यम् च।
हिरण्येन सविता रथेन आ देवो,
याति भुवनानि पश्यन्॥43॥

1739. प्र वावृजे सुप्रया बर्हिः एषाम्,
आ विश्पती इव बीरिट इयाते।
विशाम् अक्तोः उषसः पूर्व हूतौ,
वायुः पूषा स्वस्तये नियुत्वान्॥44॥

(393) सूक्त 12

1740. इन्द्रवायू बृहस्पतिम् मित्रा,
अग्निम् पूषणम् भगम्।
आदित्यान् मारुतम् गणम्॥45॥

1741. वरुणः प्राविता भुवत्,
मित्रो विश्वाभिः ऊतिभिः।
करताम् नः सु-राधसः॥46॥

1742. अधि न इन्द्र एषाम्,
विष्णो सजात्यानाम्।
इता मारुतो अश्विना।
तम् प्रत्नथा अयम् वेनो।
ये देवास आ न इडाभिः,
विश्वेभिः सोम्यम् मधु,
ओमासः चर्षणीधृतः॥47॥

(394) सूक्त 13

1743. अग्न इन्द्र वरुण मित्र देवाः,
शर्द्धः प्र यन्त मारुत उत विष्णो।
उभा नासत्या रुद्रो अध ग्नाः,
पूषा भगः सरस्वती जुषन्त॥48॥

1744. इन्द्राग्नी मित्रावरुणा अदितिम् स्वः,
पृथिवीम् द्याम् मरुतः पर्वतान् अपः।
हुवे विष्णुम् पूषणम् ब्रह्मणः पतिम्,
भगम् नु शंसम् सवितारम् ऊतये॥49॥

1745. अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो,
वृत्र हत्ये भरहूतौ सजोषाः।
यः शंसते स्तुवते धायि पज्र,
इन्द्र ज्येष्ठा अस्मान् अवन्तु देवाः॥50॥

(395) सूक्त 14

1746. अर्वाञ्चो अद्या भवत आ यजत्रा,
आ वो हार्दि भयमानो व्ययेयम्।
त्राध्वम् नो देवा निजुरो वृकस्य,
त्राध्वम् कर्तात् अवपदो यजत्राः॥51॥

1747. विश्वे अद्य मरुतो विश्व ऊती,
विश्वे भवन्तु अग्नयः समिद्धाः।
विश्वे नो देवा अवसा गमन्तु,
विश्वम् अस्तु द्रविणम् वाजो अस्मे॥52॥

1748. विश्वे देवाः शृणुत इमम् हवम्,
मे ये अन्तरिक्षे य उप द्यवि ष्ठ।
ये अग्निजिह्वा उत वा यजत्रा,
आसद्य अस्मिन् बर्हिषि मादयध्वम्॥53॥

1749. देवेभ्यो हि प्रथमम् यज्ञियेभ्यो,
अमृतत्वम् सुवसि भागम् उत्तमम्।
आत् इत् दामानम् सवितः वि ऊर्णुषे,
अनूचीना जीविता मानुषेभ्यः ॥54॥

1750. प्र वायुम् अच्छा बृहती मनीषा,
बृहद्रयिम् विश्ववारम् रथप्राम्।
द्युतद्यामा नियुतः पत्यमानः,
कविः कविम् इयक्षसि प्रयज्यो ॥55॥

(396) सूक्त 15

1751. इन्द्र वायू इमे सुता,
उप प्रयोभिः आ गतम्।
इन्दवो वामुशन्ति हि ॥56॥

1752. मित्रम् हुवे पूतदक्षम्,
वरुणम् च रिशादसम्।
धियम् घृताचीम् साधन्ता ॥57॥

1753. दस्रा युवाकवः सुता,
नासत्या वृक्त बर्हिषः।
आ यातम् रुद्रवर्त्तनी।
तम् प्रत्नथा अयम् वेनः ॥58॥

1754. विदत् यदि सरमा रुग्णम् अद्रेः,
महि पाथः पूर्व्यम् सध्र्यक्कः।
अग्रम् नयत् सुपदि अक्षराणाम्,
अच्छा रवम् प्रथमा जानती गात् ॥59॥

1755. नहि स्पशम् अविदन् अन्यम् अस्मात्,
वैश्वानरात् पुर एतारम् अग्नेः।
आ ईम् एनम् अवृधन् अमृता अमर्त्यम्,
वैश्वानरम् क्षैत्र-जित्याय देवाः ॥60॥

(397) सूक्त 16

1756. उग्रा विघनिना मृध,
इन्द्राग्नी हवामहे।
ता नो मृडात ईदृशे ॥61॥

1757. उप अस्मै गायता,
नरः पवमानाय इन्दवे।
अभि देवान् इयक्षते ॥62॥

1758. ये त्वा अहि हत्ये मघवन् अवर्द्धन्,
ये शाम्बरे हरिवो ये गविष्टौ।
ये त्वा नूनम् अनु मदन्ति विप्राः,
पिब इन्द्र सोमम् सगणो मरुद्भिः ॥63॥

1759. जनिष्ठा उग्रः सहसे तुराय,
मन्द्र ओजिष्ठो बहुलाभिमानः।
अवर्द्धन् इन्द्रम् मरुतः चित् अत्र,
माता यत् वीरम् दधनत् धनिष्ठा ॥64॥

(398) सूक्त 17

1760. आ तु न इन्द्र वृत्रहन्,
अस्माकम् अर्द्धम् आ गहि।
महान् महीभिः ऊतिभिः ॥65॥

1761. त्वम् इन्द्र प्रतूर्तिषु,
अभि विश्वा असि स्पृधः।
अशस्तिहा जनिता विश्वतूः,
असि त्वम् तूर्य्य तरुष्यतः ॥66॥

1762. अनु ते शुष्मम् तुरयन्तम्,
ईयतुः क्षोणी शिशुम् न मातरा।
विश्वाः ते स्पृधः श्नथयन्त,
मन्यवे वृत्रम् यत् इन्द्र तूर्वसि ॥67॥

1763. यज्ञो देवानाम् प्रत्येति सुम्नम्,
आदित्यासो भवता मृडयन्तः।
आ वो अर्वाची सुमतिः ववृत्यात् अंहोः,
चित् या वरिवोवित्तरा असत् ॥68॥

1764. अदब्धेभिः सवितः पायुभिः त्वम्,
शिवेभिः अद्य परि पाहि नो गयम्।
हिरण्य जिह्वः सुविताय नव्यसे,
रक्षा माकिः नो अघशंस ईशत ॥69॥

1765. प्र वीरया शुचयो दद्रिरे वाम्,
अध्वर्युभिः मधुमन्तः सुतासः।
वह वायो नियुतो याहि अच्छा,
पिबा सुतस्य अन्धसो मदाय ॥70॥

(399) सूक्त 18

1766. गाव उप अवत अवतम्,
मही यज्ञस्य रप्सुदा।
उभा कर्णा हिरण्यया ॥71॥

1767. काव्ययोः आजानेषु,
क्रत्वा दक्षस्य दुरोणे।
रिशादसा सधस्थ आ ॥72॥

1768. दैव्यौ अध्वर्यू आ गतम्,
रथेन सूर्यत्वचा।
मध्वा यज्ञम् सम् अञ्जाथे।
तम् प्रत्नथा अयम् वेनः ॥73॥

1769. तिरश्चीनो विततो रश्मिः एषाम्,
अधः स्वित् आसीत् उपरि स्वित् आसीत्।
रेतोधा आसन् महिमान आसन्,
स्वधा अवस्तात् प्रयतिः परस्तात्॥74॥

1770. आ रोदसी अपृणत् आ स्वः महत्,
जातम् यत् एनम् अपसो अधारयन्।
सो अध्वराय परि णीयते कविः,
अत्यो न वाजसातये चनोहितः॥75॥

(400) सूक्त 19

1771. उक्थेभिः वृत्रहन्तमा,
या मन्दाना चित् आ गिरा।
आङ्गूषैः आविवासतः॥76॥

1772. उप नः सूनवो गिरः,
शृण्वन्तु अमृतस्य ये।
सुमृडीका भवन्तु नः॥77॥

1773. ब्रह्माणि मे मतयः शम् सुतासः,
शुष्म इयर्त्ति प्रभृतो मे अद्रिः।
आ शासते प्रति हर्यन्ति उक्था,
इमा हरी वहतः ता नो अच्छ॥78॥

1774. अनुत्तम् आ ते मघवन् नकिः नु,
न त्वावान् अस्ति देवता विदानः।
न जायमानो नशते न जातो,
यानि करिष्या कृणुहि प्रवृद्ध॥79॥

1775. तत् इत् आस भुवनेषु ज्येष्ठम्,
यतो जज्ञे उग्रः त्वेषनृम्णः।
सद्यो जज्ञानो निरिणाति शत्रून्,
अनु यम् विश्वे मदन्ति ऊमाः॥80॥

(401) सूक्त 20

1776. इमा उ त्वा पुरूवसो,
गिरो वर्द्धन्तु या मम्।
पावक वर्णाः शुचयो विपः,
चितो अभि स्तोमैः अनूषत॥81॥

1777. यस्य अयम् विश्व आर्यो,
दासः शेवधिपा अरिः।
तिरः चित् अर्ये रुशमे पवीरवि,
तुभ्य इत् सो अज्यते रयिः॥82॥

1778. अयम् सहस्रम् ऋषिभिः,
सहस्कृतः समुद्र इव पप्रथे।
सत्यः सो अस्य महिमा गृणे,
शवो यज्ञेषु विप्रराज्ये॥83॥

1779. अदब्धेभिः सवितः पायुभिः त्वम्,
शिवेभिः अद्य परि पाहि नो गयम्।
हिरण्यजिह्वः सुविताय नव्यसे,
रक्षा माकिः नो अघशंस ईशत॥84॥

(402) सूक्त 21

1780. आ नो यज्ञम् दिविस्पृशम्,
वायो याहि सुमन्मभिः।
अन्तः पवित्र उपरि श्रीणानो,
अयम् शुक्रो अयामि ते॥85॥

1781. इन्द्रवायू सुसन्दृशा,
सुहवा इह हवामहे।
यथा नः सर्व इत् जनो अनमीवः,
सङ्गमे सुमना असत्॥86॥

1782. ऋधक् इत्था स मर्त्यः,
शशमे देवतातये।
यो नूनम् मित्रावरुणौ,
अभिष्टये आचक्रे हव्यदातये॥87॥

1783. आ यातम् उप भूषतम्,
मध्वः पिबतम् अश्विना।
दुग्धम् पयो वृषणा जेन्यावसू,
मा नो मर्धिष्टम् आ गतम्॥88॥

1784. प्र एतु ब्रह्मणः पतिः,
प्र देवी एतु सूनृता।
अच्छा वीरम् नर्य्यम् पङ्क्तिराधसम्,
देवा यज्ञम् नयन्तु नः॥89॥

(403) सूक्त 22

1785. चन्द्रमा अप्सु अन्तः,
आ सुपर्णो धावते दिवि।
रयिम् पिशङ्गम् बहुलम् पुरुस्पृहम्,
हरिः एति कनिक्रदत्॥90॥

1786. देवम् देवम् वो अवसे,
देवम् देवम् अभिष्टये।
देवम् देवम् हुवेम् वाजसातये,
गृणन्तो देव्या धिया॥91॥

1787. दिवि पुष्टो अरोचत,
अग्निः वैश्वानरो बृहत्।
क्ष्मया वृधान ओजसा चनोहितो,
ज्योतिषा बाधते तमः॥92॥

1788. इन्द्राग्नी अपात् इयम्,
पूर्वागात् पद्वतीभ्यः।
हित्वी शिरो जिह्वया वावदत्,
चरत् त्रिंशत् पदा नि अक्रमीत्॥93॥

1789. देवासो हि ष्मा मनवे समन्यवो,
विश्वे साकम् सरातयः।
ते नो अद्य ते अपरम् तुचे,
तु नो भवन्तु वरिवोविदः ॥94॥

(404) सूक्त 23

1790. अप अधमत् अभि शस्तीः अशस्तिहा,
अथ इन्द्रो द्युम्नी आ अभवत्।
देवाः त इन्द्र सख्याय येमिरे,
बृहद्भानो मरुद्गण ॥95॥

1791. प्र व इन्द्राय बृहते,
मरुतो ब्रह्म अर्चत।
वृत्रम् हनति वृत्रहा शतक्रतुः,
वज्रेण शतपर्वणा ॥96॥

1792. अस्य इत् इन्द्रो वावृधे वृष्ण्यम्,
शवो मदे सुतस्य विष्णवि।
अद्या तम् अस्य महिमानम्,
आयवो अनु स्तुवन्ति पूर्वथा॥
इमा उ त्वा यस्य अयम्,
अयम् सहस्रम्, ऊर्ध्वम् ऊ षु णः ॥97॥

इति त्रयस्त्रिंशो अध्यायः

ॐ

अथ चतुस्त्रिंशो अध्यायः

(405) सूक्त - 1 (शिवसंकल्पसूक्त)

1793. यत् जाग्रतो दूरम् उत् एति दैवम्,
तत् उ सुप्तस्य तथा एव एति।
दूरम् गमम् ज्योतिषाम् ज्योतिः एकम्,
तत् मे मनः शिव-संकल्पमस्तु ॥1॥

1794. येन कर्माणि अपसो मनीषिणो,
यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः।
यत् अपूर्वम् यक्षम् अन्तः प्रजानाम्,
तत् मे मनः शिव-संकल्पमस्तु ॥2॥

1795. यत् प्रज्ञानम् उत चेतो धृतिः च,
यत् ज्योतिः अन्तः अमृतम् प्रजासु।
यस्मात् न ऋते किञ्चन कर्म क्रियते,
तत् मे मनः शिव-संकल्पमस्तु ॥3॥

1796. येन इदम् भूतम् भुवनम् भविष्यत्,
परिगृहीतम् अमृतेन सर्वम्।
येन यज्ञः तायते सप्तहोता,
तत् मे मनः शिव-संकल्पमस्तु ॥4॥

1797. यस्मिन् ऋचः साम यजूंषि यस्मिन्,
प्रतिष्ठिता रथनाभौ इव अराः।
यस्मिन् चित्तम् सर्वम् ओतम् प्रजानाम्,
तत् मे मनः शिव-संकल्पमस्तु ॥5॥

1798. सुषारथिः अश्वान् इव यत् मनुष्यान्,
नेनीयते अभीशुभिः वाजिनः इव।
हृत् प्रतिष्ठम् यत् अजिरम् जविष्ठम्,
तत् मे मनः शिव-संकल्पमस्तु ॥6॥

(406) सूक्त - 2

1799. पितुम् नु स्तोषम् महो,
धर्माणम् तविषीम्।
यस्य त्रितो वि ओजसा,
वृत्रम् विपर्वम् अर्दयत् ॥7॥

1800. अनु इत् अनुमते त्वम्,
मन्यासै शम् च नः कृधि।
क्रत्वे दक्षाय नो हिनु,
प्र ण आयूंषि तारिषः ॥8॥

1801. अनु नो अद्य अनुमतिः,
यज्ञम् देवेषु मन्यताम्।
अग्निः च हव्यवाहनो,
भवतम् दाशुषे मयः ॥9॥

1802. सिनीवालि पृथुष्टुके,
या देवानाम् असि स्वसा।
जुषस्व हव्यम् आहुतम्,
प्रजाम् देवि दिदिड्ढि नः ॥10॥

1803. पञ्च नद्यः सरस्वतीम्,
अपि यन्ति सस्रोतसः।
सरस्वती तु पञ्चधा,
सो देशे अभवत् सरित् ॥11॥

(407) सूक्त - 3

1804. त्वम् अग्ने प्रथमो अङ्गिरा ऋषिः,
देवो देवानाम् अभवः शिवः सखा।
तव व्रते कवयो विद्मना अपसो,
अजायन्त मरुतो भ्राजदृष्टयः ॥12॥

1805. त्वम् नो अग्ने तव देव पायुभिः,
मघोनो रक्ष तन्वः च वन्द्य।
त्राता तोकस्य तनये गवाम् असि,
अनिमेषम् रक्षमाणः तव व्रते ॥13॥

1806. उत्तानायाम् अव भरा चिकित्वान्,
सद्यः प्रवीता वृषणम् जजान।
अरुषस्तूपो रुशदस्य पाज,
इडायाः पुत्रो वयुने अजनिष्ट ॥14॥

1807. इडायाः त्वा पदे वयम्,
नाभा पृथिव्या अधि।
जातवेदो नि धीमहि,
अग्ने हव्याय वोढवे॥15॥

(408) सूक्त - 4

1808. प्र मन्महे शवसानाय शूषम्,
आङ्गूषम् गिर्वणसे अङ्गिरस्वत्।
सुवृक्तिभिः स्तुवत ऋग्मियाय,
अर्चाम् अर्कम् नरे विश्रुताय॥16॥

1809. प्र वो महे महि नमो भरध्वम्,
आङ्गूष्यम् शवसानाय साम।
येना नः पूर्वे पितरः पदज्ञा,
अर्चन्तो अङ्गिरसो गा अविन्दन्॥17॥

1810. इच्छन्ति त्वा सोम्यासः सखायः,
सुन्वन्ति सोमम् दधति प्रयांसि।
तितिक्षन्ते अभिशस्तिम् जनानाम्,
इन्द्र त्वत् आ कश्चन हि प्र केतः॥18॥

1811. न ते दूरे परमा चित् रजांसि,
आ तु प्र याहि हरिवो हरिभ्याम्।
स्थिराय वृष्णे सवना कृता इमा,
युक्ता ग्रावाणः समिधाने अग्नौ॥19॥

1812. अषाढम् युत्सु पृतनासु पप्रिम्,
स्वर्षाम् अप्साम् वृजनस्य गोपाम्।
भरेषुजाम् सुक्षितिम् सुश्रवसम्,
जयन्तम् त्वाम् अनु मदेम सोम॥20॥

1813. सोमो धेनुम् सोमो अर्वन्तम्,
आशुम् सोमो वीरम् कर्मण्यम् ददाति।
सादन्यम् विदथ्यम् सभेयम्,
पितृश्रवणम् यो ददाशत् अस्मै॥21॥

1814. त्वम् इमा ओषधीः सोम विश्वाः,
त्वम् अपो अजनयः त्वम् गाः।
त्वम् आ ततन्थ उरु अन्तरिक्षम्,
त्वम् ज्योतिषा वि तमो ववर्थ॥22॥

1815. देवेन नो मनसा देव सोम,
रायो भागम् सहसावन् अभि युध्य।
मा त्वा तनत् ईशिषे वीर्यस्य,
उभयेभ्यः प्र चिकित्स गविष्टौ॥23॥

(409) सूक्त - 5

1816. अष्टौ वि अख्यत् ककुभः पृथिव्याः,
त्री धन्व योजना सप्त सिन्धून्।
हिरण्याक्षः सविता देव आगात्,
दधत् रत्ना दाशुषे वार्याणि॥24॥

1817. हिरण्यपाणिः सविता विचर्षणिः,
उभे द्यावापृथिवी अन्तः ईयते।
अप अमीवाम् बाधते वेति सूर्यम्,
अभि कृष्णेन रजसा द्याम् ऋणोति ॥25॥

1818. हिरण्यहस्तो असुरः सुनीथः,
सुमृडीकः स्ववान् यातु अर्वाङ्।
अप सेधन् रक्षसो यातुधानान्,
अस्थात् देवः प्रतिदोषम् गृणानः ॥26॥

1819. ये ते पन्थाः सवितः पूर्व्यासो,
अरेणवः सुकृता अन्तरिक्षे।
तेभिः नो अद्य पथिभिः सुगेभी,
रक्षा च नो अधि च ब्रूहि देव ॥27॥

(410) सूक्त - 6

1820. उभा पिबतम् अश्विना,
उभा नः शर्म यच्छतम्।
अविद्रियाभिः ऊतिभिः ॥28॥

1821. अप्नस्वतीम् अश्विना वाचम् अस्मे,
कृतम् नो दस्रा वृषणा मनीषाम्।
अद्यूत्ये अवसे नि ह्वये वाम्,
वृधे च नो भवतम् वाजसातौ ॥29॥

1822. द्युभिः अक्तुभिः परि पातम् अस्मान्,
अरिष्टेभिः अश्विना सौभगेभिः।
तत् नो मित्रो वरुणो माम् अहन्ताम्,
अदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ॥30॥

1823. आ कृष्णेन रजसा वर्त्तमानो
निवेशयन् अमृतम् मर्त्यम् च।
हिरण्ययेन सविता रथेना,
देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥31॥

1824. आ रात्रि पार्थिवम् रजः,
पितुः अप्रायि धामभिः।
दिवः सदांसि बृहती वि तिष्ठस,
आ त्वेषम् वर्त्तते तमः ॥32॥

1825. उषः तत् चित्रम् आ भर,
अस्मभ्यम् वाजिनीवति।
येन तोकम् च तनयम् च धामहे ॥33॥

(411) सूक्त - 7

1826. प्रातः अग्निम् प्रातः इन्द्रम् हवामहे,
प्रातः मित्रवरुणा प्रातः अश्विना।
प्रातः भगम् पूषणम् ब्रह्मणः पतिम्,
प्रातः सोमम् उत् रुद्रम् हुवेम ॥34॥

1827. प्रातः जितम् भगम् उग्रम् हुवेम,
वयम् पुत्रम् अदितेः यो विधर्त्ता।
आध्रः चित् यम् मन्यमानः तुरः चित्,
राजा चित् यम् भगम् भक्षि इति आह॥

1828. भग प्रणेतः भग सत्यराधो,
भग इमाम् धियम् उत् अव आ ददत् नः।
भग प्र नो जनय गोभिः अश्वैः,
भग प्र नृभिः नृवन्तः स्याम॥36॥

1829. उत इदानीम् भगवन्तः स्याम,
उत प्रपित्व उत मध्ये अह्नाम्।
उत उदिता मघवन् सूर्यस्य,
वयम् देवानाम् सुमतौ स्याम॥37॥

1830. भग एव भगवान् अस्तु देवाः,
तेन वयम् भगवन्तः स्याम।
तम् त्वा भग सर्व इत् जोहवीति,
स नो भग पुर एता भव इह॥38॥

(412) सूक्त - 8

1831. समध्वराय उषसो नमन्त,
दधि क्रावा इव शुचये पदाय।
अर्वाचीनम् वसुविदम् भगम् नो,
रथम् इव अश्वा वाजिन आ वहन्तु॥॥

1832. अश्वावतीः गोमतीः न उषासो,
वीरवतीः सदम् उच्छन्तु भद्राः।
घृतम् दुहाना विश्वतः प्रपीता,
यूयम् पात स्वस्तिभिः सदा नः॥40॥

1833. पूषन् तव व्रते वयम्,
न रिष्येम कदा चन।
स्तोतारः त इह स्मसि॥41॥

1834. पथः पथः परिपतिम् वचस्या,
कामेन कृतो अभि आनट् अर्कम्।
स नो रासत् शुरुधः चन्द्राग्रा,
धियम् धियम् सीषधाति प्र पूषा॥42॥

1835. त्रीणि पदा वि चक्रमे,
विष्णुः गोपा अदाभ्यः।
अतो धर्माणि धारयन्॥43॥

1836. मतत् विप्रासो विपन्यवो,
जागृवांसः समिन्धते।
विष्णोः यत् परमम् पदम्॥44॥

(413) सूक्त - 9

1837. घृतवती भुवनानाम् अभि श्रिया,
उर्वी पृथ्वी मधुदुघे सुपेशसा।
द्यावापृथिवी वरुणस्य धर्मणा,
विष्कभिते अजरे भूरि रेतसा ।।45 ।।

1838. ये नः सप्तना अप ते भवन्तु,
इन्द्राग्निभ्याम् अव बाधामहे तान्।
वसवो रुद्रा आदित्या उपरि स्पृशम्,
मा उग्रम् चेत्तारम्, अधिराजम् अक्रन् ।।46 ।।

1839. आ नासत्या त्रिभिः एकादशैः इह,
देवेभिः यातम् मधुपेयम् अश्विना।
प्र आयुः तारिष्टम् नी रपांसि मृक्षतम्,
सेधतम् द्वेषो भवतम् सचाभुवा ।।47 ।।

1840. एष वः स्तोमो मरुत इयम् गीः,
मान्दार्यस्य मान्यस्य कारोः।
एषा यासीष्ट तन्वे वयाम् विद्याम्,
एषम् वृजनम् जीरदानुम् ।।48 ।।

1841. सह स्तोमाः सह छन्दस आवृतः,
सह प्रमा ऋषयः सप्त दैव्याः।
पूर्वेषाम् पन्थाम् अनुदृश्य धीरा,
अनु आ लेभिरे रथ्यो न रश्मीन् ।।49 ।।

(414) सूक्त 10

1842. आयुष्यम् वर्चस्यम्,
रायः पोषम् औद्भिदम्।
इदम् हिरण्यम् वर्चस्वत्,
जैत्राय आ विशतात् उ माम् ।।50 ।।

1843. न तद् रक्षांसि न पिशाचाः तरन्ति,
देवानाम् ओजः प्रथमजम् हि एतत्।
यो बिभर्ति दाक्षायणम् हिरण्यम्,
स देवेषु कृणुते दीर्घम् आयुः।
स मनुष्येषु कृणुते दीर्घम् आयुः ।।51 ।।

1844. यत् आ अबध्नन् दाक्षायणा हिरण्यम्,
शतानीकाय सुमनस्यमानाः।
तत् मे आ बध्नामि शतशारदाय,
आयुष्मान् जरदष्टिः यथा सम् ।।52 ।।

1845. उत नो अहिः बुध्न्यः शृणोतु,
अज एकपात् पृथिवी समुद्रः।
विश्वे देवा ऋतावृधो हुवानाः,
स्तुता मन्त्राः कविशस्ता अवन्तु ।।53 ।।

1846. इमा गिर आदितेभ्यो घृतस्नूः,
सनात् राजभ्यो जुह्वा जुहोमि।
शृणोतु मित्रो अर्यमा भगो नः
तु विजातो वरुणो दक्षो अंशः ॥54॥

(415) सूक्त 11

1847. सप्त ऋषयः प्रतिहिताः शरीरे,
सप्त रक्षन्ति सदम् अप्रमादम्।
सप्त आपः स्वपतो लोकम् ईयुः,
तत्र जागृतो अस्वप्नजौ, सत्रसदौ च देवौ ॥55॥

1848. उत्तिष्ठ ब्रह्मणः पते,
देवयन्तः त्वा ईमहे।
उप प्र यन्तु मरुतः सुदानव,
इन्द्र प्राशूः भवा सचा ॥56॥

1849. प्र नूनम् ब्रह्मणः पतिः,
मन्त्रम् वदति उक्थ्यम्।
यस्मिन् इन्द्रो वरुणो मित्रो,
अर्यमा देवा ओकांसि चक्रिरे ॥57॥

1850. ब्रह्मणः पते त्वम् अस्य यन्ता,
सूक्तस्य बोधि तनयम् च जिन्व।
विश्वम् तत् भद्रम् यत् अवन्ति देवा,
बृहत् वदेम विदथे सुवीराः।
य इमा विश्वा।
विश्वकर्मा।
यो नः पिता।
अन्नपते अन्नस्य नो देहि ॥58॥

इति चतुस्त्रिंशो अध्यायः

ॐ

अथ पञ्चत्रिंशा अध्यायः

(416) सूक्त - 1

1851. अप इतो यन्तु पणयो,
असुम्ना देवपीयवः।
अस्य लोकः सुतावतः।
द्युभिः अहोभिः अक्तुभिः व्यक्तम्,
यमो ददातु अवसानम् अस्मै॥1॥

1852. सविता ते शरीरेभ्यः,
पृथिव्याम् लोकम् इच्छतु।
तस्मै युज्यन्ताम् उस्त्रियाः॥2॥

1853. वायुः पुनातु सविता पुनातु,
अग्नेः भ्राजसा सूर्यस्य वर्चसा।
वि मुच्यन्ताम् उस्त्रियाः॥3॥

1854. अश्वत्थे वो निषदनम्,
पर्णे वो वसतिः कृता।
गोभाज इत् किल असथ,
यत् सनवथ पुरुषम्॥4॥

1855. सविता ते शरीराणि,
मातुः उपस्थ आ वपतु।
तस्मै पृथिवि शम् भव॥5॥

1856. प्रजापतौ त्वा देवतायाम्,
उप उदके लोके निदधामि असौ।
अपः न शोशुचत् अघम्॥6॥

1857. परम् मृत्यो अनु परा इहि पन्थाम्,
यः ते अन्य इतरो देवयानात्।
चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि,
मा नः प्रजाम् रीरिषो,
मा उत वीरान्॥7॥

(417) सूक्त - 2

1858. शम् वातः शम् हि ते घृणिः,
शम् ते भवन्तु इष्टकाः।
शम् ते भवन्तु अग्नयः,
पार्थिवासो मा त्वा अभि शूशुचन्॥8॥

1859. कल्पन्ताम् ते दिशः तुभ्यम् आपः,
शिवतमाः तुभ्यम् भवन्तु सिन्धवः।
अन्तरिक्षम् शिवम् तुभ्यम्,
कल्पन्ताम् ते दिशः सर्वाः॥9॥

1860. अश्मन्वती रीयते सम् रभध्वम्,
उत् तिष्ठत प्र तरता सखायः।
अत्र आ जहीमो अशिवा ये असन्,
शिवान् वयम् उत् तरेम,
अभि वाजान्॥10॥

1861. अप अघम् अप किल्विषम्,
अप कृत्याम् अपो रपः।
अपामार्ग त्वम् अस्मत्
अप दुःष्वप्न्यम् सुव॥11॥

1862. सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु,
दुर्मित्रियाः तस्मै सन्तु।
यो अस्मान् द्वेष्टि, यम् च वयम् द्विष्मः॥12॥

1863. अनड्वाहम् अनु आरभामहे,
सौरभेयम् स्वस्तये।
स न इन्द्र इव देवेभ्यो,
वह्निः सन्तरणो भव॥13॥

1864. उत् वयम् तमसः परि,
स्वः पश्यन्त उत्तरम्।
देवम् देवत्रा सूर्यम्,
अगन्म ज्योतिः उत्तमम्॥14॥

(418) सूक्त - 3

1865. इमम् जीवेभ्यः परिधिम् दधामि,
मा एषाम् नु गात् अपरो अर्थम् एतम्।
शतम् जीवन्तु शरदः पुरूचीः,
अन्तः मृत्युम् दधताम् पर्वतेन॥15॥

1866. अग्न आयूंषि पवस,
आ सुव ऊर्जम् इषम् च नः।
आ रे बाधस्व दुच्छुनाम्॥16॥

1867. आयुष्मान् अग्ने हविषा वृधानो,
घृतप्रतीको घृतयोनिः एधि।
घृतम् पीत्वा मधु चारु गव्यम्,
पिता इव पुत्रम् अभि रक्षतात् इमाम् स्वाहा॥17॥

(419) सूक्त 4

1868. परि इमे गाम् अनेषत,
परि अग्निम् अह्षत।
देवेषु अक्रत श्रवः,
क इमाम् आ दधर्षति॥18॥

1869. क्रव्यादम् अग्निम् प्र हिणोमि दूरम्,
यमराज्यम् गच्छतु रिप्रवाहः।
इह एव अयम् इतरो जातवेदा,
देवेभ्यो हव्यम् वहतु प्रजानन्॥19॥

1870. वह वपाम् जातवेदः पितृभ्यो,
यत्र एनान् वेत्थ निहितान् पराके।
मेदसः कुल्या उप तान् स्रवन्तु सत्या,
एषाम् आशिषः सम् नमन्ताम् स्वाहा ॥20॥

1871. स्योना पृथिवि नो भव,
अनृक्षरा निवेशनी।
यच्छ आ नः शर्म सप्रथाः,
अप नः शोशुचत् अघम् ॥21॥

1872. अस्मात् त्वम् अधि जातो असि,
त्वत् अयम् जायताम् पुनः।
असौ स्वर्गाय लोकाय स्वाहा ॥22॥

इति पञ्चत्रिंशा अध्यायः

ॐ

अथ षट्त्रिंशो अध्यायः

(420) सूक्त - 1

1873. ऋचम् वाचम् प्र पद्ये,
मनो यजुः प्र पद्ये।
साम प्राणम् प्र पद्ये,
चक्षुः श्रोत्रम् प्र पद्ये।
वाक् ओजः सह ओजो,
मयि प्राणापानौ ॥1॥

1874. यत् मे छिद्रम् चक्षुषो,
हृदयस्य मनसो वा अति तृण्णम्,
बृहस्पति मे तत् दधातु,
शम् नो भवतु भुवनस्य यः पतिः ॥2॥

1875. भूः भुवः स्वः।
तत् सवितुः वरेण्यम्,
भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात् ॥3॥

(421) सूक्त 2

1876. कया नः चित्र आ भुवत्,
ऊती सदा वृधः सखा।
कया शचिष्ठया वृता ॥4॥

1877. कः त्वा सत्यो मदानाम्,
मंहिष्ठो मत् सत् अन्धसः।
दृढा चित् आरुचे वसु ॥5॥

1878. अभी षु णः सखीनाम्,
अविता जरितृणाम्।
शतम् भवासि ऊतिभिः ॥6॥

1879. कया त्वम् न ऊत्या,
अभि प्र मन्दसे वृषन्।
कया स्तोतृभ्य आ भर ॥7॥

1880. इन्द्रो विश्वस्य राजति।
शम् नो अस्तु द्विपदे,
शम् चतुष्पदे ॥8॥

(422) सूक्त 3

1881. शम् नो मित्रः शम् वरुणः,
शम् नो भवतु अर्यमा।
शम् न इन्द्रो बृहस्पतिः,
शम् नो विष्णुः उरुक्रमः ॥9॥

1882. शम् नो वातः पवताम्,
शम् नः तपतु सूर्यः।
शम् नः कनिक्रदत् देवः,
पर्जन्यो अभि वर्षतु ॥10॥

1883. अहानि शम् भवन्तु नः,
शम् रात्रीः प्रति धीयताम्।
शम् न इन्द्राग्नी भवताम् अवोभिः,
शम् न इन्द्रा वरुणा रातहव्या।
शम् न इन्द्रापूषणा वाजसातौ,
शम् इन्द्रासोमा सुविताय शम् योः ॥11॥

(423) सूक्त 4

1884. शम् नो देवीः अभिष्टय,
आपो भवन्तु पीतये।
शम् योः अभि स्रवन्तु नः ॥12॥

1885. स्योना पृथिवि नो भव,
अनृक्षरा निवेशनी।
यच्छा न शर्म सप्रथाः ॥13॥

1886. आपो हि ष्ठा मयोभुवः,
ता न ऊर्जे दधातन।
महे रणाय चक्षसे ॥14॥

1887. यो वः शिवतमो रसः,
तस्य भाजयत इह नः।
उशतीः इव मातरः ॥15॥

1888. तस्मा अरम् गमाम वो,
यस्य क्षयाय जिन्वथ।
आपो जनयथा च नः ॥16॥

(424) सूक्त 5

1889. द्यौः शान्तिः, अन्तरिक्षम् शान्तिः, पृथिवी शान्तिः,
आपः शान्तिः, ओषधयः शान्तिः।
वनस्पतयः शान्तिः, विश्वे देवाः शान्तिः, ब्रह्म शान्तिः,
सर्वम् शान्तिः शान्तिः एव शान्तिः, सा मा शान्तिः एधि॥17॥

1890. दृते दृंह मा मित्रस्य मा चक्षुसा,
सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।
मित्रस्य अहम् चक्षुषा,
सर्वाणि भूतानि समीक्षे।
मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे॥18॥

1891. दृते दृहं मा,
ज्योक् ते सन्दृशि जीव्यासम्।
ज्योक् ते सन्दृशि जीव्यासम्॥19॥

1892. नमः ते हरसे शोचिषे,
नमः ते अस्तु अर्चिषे।
अन्यान् ते अस्मत् तपन्तु हेतयः,
पावको अस्मभ्यम् शिवो भव॥20॥

1893. नमः ते अस्तु विद्युते,
नमः ते स्तनयित्नवे,
नमः ते भगवन् अस्तु,
यतः स्वः समीहषे॥21॥

1894. यतो यतः समीहसे,
ततो नो अभयम् कुरु।
शम् नः कुरु प्रजाभ्यो,
अभयम् नः पशुभ्यः॥22॥

1895. सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु,
दुर्मित्रियाः तस्मै सन्तु।
यो अस्मान् द्वेष्टि, यम् च वयम् द्विष्मः॥23॥

1896. तत् चक्षुः देवहितम्,
पुरस्तात् शुक्रम् उत् चरत्।
पश्येम शरदः शतम्,
जीवेम शरदः शतम्।
शृणुयाम शरदः शतम्,
प्र ब्रवाम शरदः शतम्।
अदीनाः स्याम शरदः शतम्,
भूयः च शरदः शतात्॥24॥

इति षट्त्रिंशा अध्यायः

ॐ

अथ सप्तत्रिंशा अध्यायः

(425) सूक्त - 1

1897. देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे,
अश्विनोः बाहुभ्याम्,
पूष्णो हस्ताभ्याम्।
आ ददे नारिः असि॥1॥

1898. युञ्जते मन उत युञ्जते धियो,
विप्रा विप्रस्य बृहतो विपश्चितः।
वि होत्रा दधे वयुनावित् एक इत्,
मही देवस्य सवितुः परिष्टुतिः॥2॥

(426) सूक्त 2

1899. देवी द्यावापृथिवी मखस्य वाम्,
अद्य शिरो राध्यासम्,
देवयजने पृथिव्याः।
मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे॥3॥

1900. देव्यो वम्र्यो भूतस्य प्रथमजा मखस्य,
वो अद्य शिरो राध्यासम्,
देवयजने पृथिव्याः।
मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे॥4॥

1901. इयति अग्रे आसीत् मखस्य ते,
अद्य शिरो राध्यासम्,
देव यजने पृथिव्याः।
मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे॥5॥

1902. इन्द्रस्य ओजः स्थ मखस्य वो,
अद्य शिरो राध्यासम्,
देव यजने पृथिव्याः।
मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे॥6॥

1903. प्रैतु ब्रह्मणस्पतिः प्र देव्येतु सूनृता।
अच्छा वीरम् नर्यम् पंक्तिराधसम्,
देवा यज्ञम् नयन्तु नः,
मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे॥7॥

1904. मखस्य शिरो असि,
मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे,
मखस्य शिरो असि,
मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे॥8॥

1905. अश्वस्य त्वा वृष्णः शक्ना,
धूपयामि देवयजने पृथिव्याः।
मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे॥9॥

1906. ऋजवे त्वा साधवे त्वा सुक्षित्यै त्वा,
मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे ॥10॥

(427) सूक्त - 3

1907. यमाय त्वा मखाय त्वा,
सूर्यस्य त्वा तपसे।
देवः त्वा सविता मध्वा अनक्तु,
पृथिव्याः सम् स्पृशः पाहि।
अर्चिः असि शोचिः असिः तपो असि ॥11॥

1908. अनाधृष्टा पुरस्तात् अग्नेः,
आधिपत्य आयुः मे दाः।
पुत्रवती दक्षिणत इन्द्रस्य,
आधिपत्ये प्रजाम् मे दाः।
सुषदा पश्चात् देवस्य सवितुः,
आधिपत्ये चक्षुः मे दाः।
आश्रुतिः उत्तरतो धातुः,
आधिपत्ये रायस्पोषम् मे दाः।
विधृतिः उपरिष्टात् बृहस्पतेः,
आधिपत्य ओजो मे दाः।
विश्वाभ्यो मा नाष्ट्राभ्यः,
पाहि मनोः अश्व असि ॥12॥

(428) सूक्त 4

1909. स्वाहा मरुद्भिः परि श्रीयस्व दिवः,
सम् स्पृशः पाहि, मधु मधु मधु ॥13॥

1910. गर्भो देवानाम्, पिता मतीनाम्, पतिः प्रजानाम्।
सम् देवो देवेन सवित्रा, गत सम् सूर्येण रोचते ॥14॥

1911. सम् अग्निः अग्निना गत,
सम् दैवेन सवित्रा, सम् सूर्येण अरोचिष्ट।
सम् अग्निः तपसा गत, सम् दैव्येन सवित्रा,
सम् सूर्येण अरूरुचत ॥15॥

1912. धर्त्ता दिवो वि भाति तपसः पृथिव्याम्,
धर्त्ता देवो देवानाम् अमर्त्यः तपोजाः,
वाचम् अस्मे नि यच्छ देवायुवम् ॥16॥

(429) सूक्त - 3

1913. अपश्यम् गोपाम् अनिपद्यमानम्,
आ च परा च पथिभिः चरन्तम्।
स सध्रीचीः विषूचीः वसान,
आ वरीवर्त्ति भुवनेषु अन्तः ॥17॥

1914. विश्वासाम् भुवाम् पते,
विश्वस्य मनसः पते,
विश्वस्य वचसः पते
सर्वस्य वचसः पते।
देवश्रुत् त्वम् देव घर्म देवो देवान् पाहि,
अत्र प्र अवीः अनु वाम् देववीतये।
मधु माध्वीभ्याम् मधु माधूचीभ्याम् ॥18॥

(430) सूक्त 4

1915. हृदे त्वा मनसे त्वा,
दिवे त्वा सूर्याय त्वा।
ऊर्ध्वो अध्वरम् दिवि देवेषु धेहि॥19॥

1916. पिता नो असि पिता नो बोधि,
नमः ते अस्तु मा मा हिंसीः।
त्वष्टमन्तः त्वा सपेम,
पुत्रान् पशून् मयि धेहि,
प्रजाम् अस्मासु धेहि,
अरिष्टा अहम् सहपत्या भूयासम्॥20॥

1917. अहः केतुना जुषताम्,
सुज्योतिः ज्योतिषा स्वाहा।
रात्रिः केतुना जुषताम्,
सुज्योतिः ज्योतिषा स्वाहा॥21॥

इति सप्तत्रिंशा अध्यायः

ॐ

अथ अष्टात्रिंशो अध्यायः

(431) सूक्त - 1

1918. देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे,
अश्विनोः बाहुभ्याम् पूष्णो हस्ताभ्याम्।
आ ददे अदित्यै रास्ना असि॥1॥

1919. इड एहि अदित एहि, सरस्वति एहि।
असौ एहि असौ एहि असौ एहि॥2॥

1920. अदित्यै रास्ना असि,
इन्द्राण्या उष्णीषः।
पूषा असि घर्माय दीष्व॥3॥

1921. अश्विभ्याम् पिन्वस्व,
सरस्वत्यै पिन्वस्व,
इन्द्राय पिन्वस्व।
स्वाहा इन्द्रवत्, स्वाहा इन्द्रवत्,
स्वाहा इन्द्रवत्॥4॥

(432) सूक्त 2

1922. यः ते स्तनः शशयो यो मयोभूः,
यो रत्नधा वसुवित् यः सुदत्रः ॥
येन विश्वा पुष्यसि वार्याणि,
सरस्वति तम् इह धातवे अकः।
उरु अन्तरिक्षम् अन्वेमि ॥5॥

1923. गायत्रम् छन्दो असि,
त्रैष्टुभम् छन्दो असि,
द्यावापृथिवीभ्याम् त्वा परिगृह्णामि,
अन्तरिक्षेण उप यच्छामि।
इन्द्र अश्विना मधुनः सारघस्य,
घर्मम् पात वसवो यजत वाट्।
स्वाहा सूर्यस्य रश्मये वृष्टिवनये ॥6॥

1924. समुद्राय त्वा वाताय स्वाहा।
सरिराय त्वा वाताय स्वाहा।
अनाधृष्याय त्वा वाताय स्वाहा।
अप्रतिधृष्याय त्वा वाताय स्वाहा।
अवस्यवे त्वा वाताय स्वाहा।
अशिमिदाय त्वा वाताय स्वाहा ॥7॥

1925. इन्द्राय त्वा वसुमते रुद्रवते स्वाहा,
इन्द्राय त्वा आदित्यवते स्वाहा,
इन्द्राय त्वा अभिमातिघ्ने स्वाहा।
सवित्रे त्वा ऋभुमते,
विभुमते वाजवते स्वाहा,
बृहस्पतये त्वा
विश्वदेव्यावते स्वाहा ॥8॥

1926. यमाय त्वा अङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा।
स्वाहा घर्माय, स्वाहा घर्मः पित्रे ॥9॥

(433) सूक्त - 3

1927. विश्वा आशा दक्षिणसत्,
विश्वान् देवान् अयाट् इह।
स्वाहा कृतस्य घर्मस्य,
मधोः पिबतम् अश्विना ॥10॥

1928. दिवि धा इमम् यज्ञम्,
इमम् यज्ञम् दिवि धाः।
स्वाहा अग्नये यज्ञियाय शम् यजुर्भ्यः ॥

1929. अश्विना घर्मम् पातम् हार्द्वानम्,
अहर्दिवाभिः ऊतिभिः।
तन्त्रायिणे नमो द्यावापृथिवीभ्याम् ॥12॥

1930. अपाताम् अश्विना घर्मम्,
अनु द्यावापृथिवी अमंसाताम्।
इह एव रातयः सन्तु ॥13॥

1931. इषे पिन्वस्व ऊर्जे पिन्वस्व,
ब्रह्मणे पिन्वस्व क्षत्राय पिन्वस्व,
द्यावापृथिवीभ्याम् पिन्वस्व।
धर्मासि सुधर्म अमेनि अस्मे, नृम्णानि धारय।
ब्रह्म धारय क्षत्रम् धारय विशम् धारय ॥14॥

(434) सूक्त 4

1932. स्वाहा पूष्णे शरसे, स्वाहा ग्रावभ्यः,
स्वाहा प्रतिरवेभ्यः।
स्वाहा पितृभ्यः ऊर्द्ध्वबर्हिभ्यो घर्म पावभ्यः,
स्वाहा द्यावापृथिवीभ्याम्,
स्वाहा विश्वेभ्यो देवेभ्यः ॥15॥

1933. स्वाहा रुद्राय रुद्रहूतये,
स्वाहा सम् ज्योतिषा ज्योतिः।
अहः केतुना जुषताम्,
सुज्योतिः ज्योतिषा स्वाहा।
रात्रिः केतुना जुषताम्,
सुज्योतिः ज्योतिषा स्वाहा।
मधु हुतम् इन्द्रतमे अग्नौ,
अश्याम ते देव घर्म,
नमस्ते अस्तु मा मा हिंसी ॥16॥

1934. अभि इमम् महिमा दिवम्,
विप्रो बभूव स प्रथाः।
उत श्रवसा पृथिवीम् सम् सीदस्व,
महान् असि रोचस्व देववीतमः।
वि धूमम् अग्ने अरुषम् मियेध्य,
सृज प्रशस्त दर्शतम्। ॥17॥

1935. या ते घर्म दिव्या शुक्,
या गायत्र्याम् हविर्धाने।
सा त आ प्यायताम् नि स्त्यायताम्,
तस्यै ते स्वाहा।
या ते घर्म अन्तरिक्षे शुक्,
या त्रिष्टुभ्य अग्नीध्रे।
सा त आ प्यायताम् नि स्त्यायताम्।
तस्यै ते स्वाहा।
या ते घर्म पृथिव्याम् शुक्,
या जगत्याम् सदस्या।
सा त आ प्यायताम् नि स्त्यायताम्
तस्यै ते स्वाहा ॥18॥

(435) सूक्त - 5

1936. क्षत्रस्य त्वा परस्पाय,
ब्रह्मणः तन्वम् पाहि।
विशः त्वा धर्मणा वयम्,
अनु क्रामाम सुविताय नव्यसे ॥19॥

1937. चतुः स्त्रक्तिः नाभिः ऋतस्य सप्रथाः,
स नो विश्वायुः सप्रथाः,
स नः सर्वायुः सप्रथाः।
अप द्वेषो अप ह्वरो
अन्यव्रतस्य सश्चिम॥20॥

1938. घर्म एतत् ते पुरीषम् तेन,
वर्द्धस्व च आ च प्यायस्व।
वर्द्धिषीमहि च वयम्,
आ च प्यासिषीमहि॥21॥

1939. अचिक्रदत् वृषा हरिः,
महान् मित्रो न दर्शतः।
सम् सूर्येण दिद्युतत्,
उदधिः निधिः॥22॥

(436) सूक्त 6

1940. सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु,
दुर्मित्रियाः तस्मै सन्तु,
यो अस्मान् द्वेष्टि,
यम् च वयम् द्विष्मः॥23॥

1941. उत् वयम् तमसः परि,
स्वः पश्यन्त उत्तरम्।
देवम् देवत्रा सूर्यम् अगन्म
ज्योतिः उत्तमम् ॥24॥

1942. एधो असि एधिषीमहि समित् असि,
तेजो असि तेजो मयि धेहि॥25॥

(437) सूक्त 7

1943. यावती द्यावापृथिवी यावत्,
च सप्त सिन्धवो वितस्थिरे।
तावन्तम् इन्द्र ते ग्रहम्,
ऊर्जा गृह्णामि अक्षितम्,
मयि गृह्णामि अक्षितम्॥26॥

1944. मयि त्यत् इन्द्रियम् बृहत्,
मयि दक्षो मयि क्रतुः।
घर्मः त्रिशुक् विराजति,
विराज ज्योतिषा सह,
ब्रह्मणा तेजसा सह॥27॥

1945. पयसो रेत आभृतम्,
तस्य दोहम् अशीमहि,
उत्तराम् उत्तराम् समाम्।
त्विषः सम्वृक् क्रत्वे,
दक्षस्य ते सुषुम्णस्य ते सुषुम्णा अग्निहुतः।
इन्द्रपीतस्य प्रजापति भक्षितस्य मधुमत
उपहूत उपहूतस्य भक्षयामि॥28॥

इति अष्टात्रिंशो अध्यायः

ॐ

अथ एकोनचत्वारिंशो अध्यायः

(438) सूक्त - 1

1946. स्वाहा प्राणेभ्यः साधिपतिकेभ्यः।
पृथिव्यै स्वाहा अग्नये स्वाहा,
अन्तरिक्षाय स्वाहा वायवे स्वाहा,
दिवे स्वाहा सूर्याय स्वाहा॥1॥

1947. दिग्भ्यः स्वाहा चन्द्राय,
स्वाहा, नक्षत्रेभ्यः स्वाहा
अद्भ्यः स्वाहा वरुणाय स्वाहा।
नाभ्यै स्वाहा पूताय स्वाहा॥2॥

1948. वाचे स्वाहा प्राणाय स्वाहा,
प्राणाय स्वाहा।
चक्षुषे स्वाहा चक्षुषे स्वाहा,
श्रोत्राय स्वाहा श्रोत्राय स्वाहा॥3॥

1949. मनसः कामम् आकूतिम्,
वाचः सत्यम् अशीय।
पशूनाम् रूपम् अन्नस्य रसो,
यशः श्रीः श्रयताम् मयि स्वाहा॥4॥

(439) सूक्त - 2

1950. प्रजापतिः सम् भ्रियमाणः,
सम्राट सम्भृतो,
वैश्वदेवः सम् सम् नो घर्मः,
प्रवृक्तः तेज उद्यतः,
आश्विनः पयसि आनीयमाने,
पौष्णो विष्पन्दमाने मारुतः क्लथन्।
मैत्रः शरसि सन्तायमाने,
वायव्यो ह्रियमाण,
आग्नेयो हूयमानो वाक् हुतः॥5॥

1951. सविता प्रथमे अहन् अग्निः द्वितीये,
वायुः तृतीये आदित्यः चतुर्थे,
चन्द्रमाः पञ्चम ऋतुः षष्ठे,
मरुतः सप्तमे बृहस्पतिः अष्टमे,
मित्रो नवमे वरुणो दशम,
इन्द्र एकादशे विश्वे देवा द्वादशे॥6॥

1952. उग्रः च भीमः च ध्वान्तः च धुनिः च।
सासह्वान् च अभि युग्वा च, विक्षिपः स्वाहा॥7॥।

(440) सूक्त 3

1953. अग्निम् हृदयेन अशनिम् हृदयाग्रेण,
पशुपतिम् कृत्स्न हृदयेन भवम् यक्ना।
शर्वम् मतस्नाभ्याम् ईशानम् मन्युना,
महादेवम् अन्तः पर्शव्येन,
उग्रम् देवम् वनिष्ठुना,
वसिष्ठहनुः शिङ्गीनि कोश्याभ्याम्॥8॥।

1954. उग्रम् लोहितेन मित्रम् सौव्रत्येन,
रुद्रम् दौर्व्रत्येन इन्द्रम् प्रक्रीडेन,
मरुतो बलेन साध्यान् प्रमुदा।
भवस्य कण्ठ्यम् रुद्रस्य अन्तः,
पाश्र्व्यम् महादेवस्य यकृत् शर्वस्य,
वनिष्ठुः पशुपतेः पुरीतत्॥9॥।

(441) सूक्त - 4

1955. लोमभ्यः स्वाहा लोमभ्यः स्वाहा,
त्वचे स्वाहा त्वचे स्वाहा,
लोहिताय स्वाहा लोहिताय स्वाहा,
मेदोभ्यः स्वाहा मेदोभ्यः स्वाहा,
मांसेभ्यः स्वाहा, मांसेभ्यः स्वाहा,
स्नावभ्यः स्वाहा स्नावभ्यः स्वाहा,
अस्थभ्यः स्वाहा, अस्थभ्यः स्वाहा,
मज्जभ्यः स्वाहा मज्जभ्यः स्वाहा।
रेतसे स्वाहा पायवे स्वाहा॥10॥

1956. आयासाय स्वाहा प्रायासाय स्वाहा,
संयासाय स्वाहा वियासाय स्वाहा,
उद्यासाय स्वाहा।
शुचे स्वाहा शोचते स्वाहा,
शोचमानाय स्वाहा शोकाय स्वाहा॥11॥

1957. तपसे स्वाहा तप्यते स्वाहा,
तप्यमानाय स्वाहा तप्ताय स्वाहा घर्माय स्वाहा।
निष्कृत्यै स्वाहा प्रायश्चित्यै स्वाहा,
भेषजाय स्वाहा॥12॥

1958. यमाय स्वाहा अन्तकाय स्वाहा,
मृत्यवे स्वाहा ब्रह्मणे स्वाहा ब्रह्महत्यायै स्वाहा,
विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा,
द्यावापृथिवीभ्याम् स्वाहा॥13॥

इति एकोनचत्वारिंशो अध्यायः

ॐ

अथ चत्वारिंशो अध्यायः

(442) सूक्त - 1

1959. ईशा वास्यम् इदम् सर्वम्,
यत् किम् च जगत्याम् जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा,
मा गृधः कस्य स्वित् धनम्॥1॥

1960. कुर्वन् एव इह कर्माणि,
जिजीविषेत् शतम् समाः।
एवम् त्वयि न अन्यथा अतो अस्ति,
कर्म लिप्यते नरे॥2॥।

1961. असुर्या नाम ते लोका,
अन्धेन तमसावृताः।
तान् ते प्रेत्य अपि गच्छन्ति,
ये के च आत्महनो जनाः॥3॥

1962. अनेजत् एकम् मनसो जवीयो,
न एनत् देवा आप्नुवन् पूर्वम् अर्शत्।
तत् धावतो अन्यान् अति एति तिष्ठत्,
तस्मिन् अपो मातरिश्वा दधाति॥4॥।

(443) सूक्त - 2

1963. तत् एजति तत् न एजति,
तत् दूरे तत् उ अन्तिके।
तत् अन्तः अस्य सर्वस्य,
तत् उ सर्वस्य अस्य बाह्यतः॥5॥।

1964. यः तु सर्वाणि भूतानि,
आत्मन् एव अनुपश्यति।
सर्व भूतेषु च आत्मानम्,
ततो न वि चिकित्सति॥6॥।

1965. यस्मिन् सर्वाणि भूतानि,
आत्म एव अभूत् विजानतः।
तत्र को मोहः कः शोक,
एकत्वम् अनुपश्यतः॥7॥।

1966. स परि अगात् शुक्रम्, अकायम् अव्रणम्,
अस्नाविरम् शुद्धम् अपाप-विद्धम्।
कविः मनीषी परिभूः स्वयम्भूः,
याथातथ्यतो अर्थान् व्यदधात्,
शाश्वतीभ्यः समाभ्यः॥8॥।

(444) सूक्त - 3

1967. अन्धम् तमः प्र विशन्ति,
ये असम्भूतिम् उपासते।
ततो भूय इव ते तमो,
य उ सम्भूत्याम् रताः ।।9।।

1968. अन्यत् एव आहुः सम्भवात्,
अन्यत् आहुः असम्भवात्।
इति शुश्रुम धीराणाम्,
ये नः तत् वि चचक्षिरे।।10।।

1969. सम्भूतिम् च विनाशम् च,
यः तत् वेद उभयम् सह।
विनाशेन मृत्युम् तीर्त्वा,
सम्भूत्या अमृतम् अश्नुते।।11।।

(445) सूक्त - 4

1970. अन्धम् तमः प्र विशन्ति,
ये अविद्याम् उपासते।
ततो भूय इव ते तमो,
य उ विद्यायाम् रताः।।12।।

1971. अन्यत् एव आहुः विद्याया,
अन्यत् आहुः अविद्यायाः।
इति शुश्रुम धीराणाम्,
ये नः तत् वि चचक्षिरे।।13।।

1972. विद्याम् च अविद्याम् च,
यः तत् वेद उभयम् सह।
अविद्यया मृत्युम् तीर्त्वा,
विद्यया अमृतम् अश्नुते।।14।।

(446) सूक्त - 5

1973. वायुः अनिलम् अमृतम्,
अथ इदम् भस्मान्तम् शरीरम्,
ओ3म् क्रतो स्मर,
क्लिबे स्मर, कृतम् स्मर।।15।।

1974. अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्,
विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोधि अस्मत् जुहुराणम् एनो,
भूयिष्ठाम् ते नम उक्तिम् विधेम।।16।।

1975. हिरण्मयेन पात्रेण,
सत्यस्य अपिहितम् मुखम्।
ओ3म् खम् ब्रह्म।।17।।

1976. यो असौ आदित्ये पुरुषः,
सो असौ अहम्, ओ3म् खम् ब्रह्म।
ओ3म् खम् ब्रह्म।।18।।

इति चत्वारिंशो अध्यायः

इति यजुर्वेद सम्पूर्ण

ॐ

स्वामी शरण कृत साहित्य

मो. 9839105629, 8687849004

1. ऋग्वेद भाष्य :- **ऋग्वेद भाष्य के इस सार-संक्षेप संस्करण में सन्धियों से मुक्त सरल पाठ के साथ ही मन्त्रार्थ, भावार्थ तथा पदार्थ भी प्रस्तुत किया गया है। मन्त्रों के सरल पाठ के साथ ही प्रत्येक शब्द का प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत किया गया है। वेद को वैदिक भाषा के अनुसार समझने का यह इतिहास में सर्वप्रथम प्रयास है। व्याकरण-सम्मत, पदार्थ (शब्दार्थ) एवम् भावार्थ-व्याख्या सहित सरल प्रामाणिक अनुवाद। मूल मन्त्र के किसी शब्द को छोड़ा नहीं गया है, कोई भी शब्द अपनी ओर से जोड़ा नहीं गया है। जन सामान्य तथा शोधकर्ताओं-अध्येताओं के लिए अत्यन्त उपयोगी संस्करण। (बृहद् आकार)** रु. 2000.00

2. सामवेद भाष्य :- **सामवेद भाष्य के इस सम्पूर्ण संस्करण में सन्धियों से मुक्त सरल पाठ के साथ ही मन्त्रार्थ, भावार्थ तथा पदार्थ भी प्रस्तुत किया गया है। मन्त्रों के सरल पाठ के साथ ही प्रत्येक शब्द का प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत किया गया है। वेद को वैदिक भाषा के अनुसार समझने का यह इतिहास में सर्वप्रथम प्रयास है। व्याकरण-सम्मत पदार्थ (शब्दार्थ) एवम् भावार्थ-व्याख्या सहित सरल प्रामाणिक अनुवाद। मूल मन्त्र के किसी शब्द को छोड़ा नहीं गया है, कोई भी शब्द अपनी ओर से जोड़ा नहीं गया है। अध्येताओं के लिए अत्यन्त उपयोगी संस्करण।**

(बृहद् आकार) रु. 2000.00

3. अथर्ववेद भाष्य :- **अथर्ववेद भाष्य के इस सार-संक्षेप संस्करण में सन्धियों से मुक्त सरल पाठ के साथ ही मन्त्रार्थ, भावार्थ तथा पदार्थ भी प्रस्तुत किया गया है। मन्त्रों के सरल पाठ के साथ ही प्रत्येक शब्द का प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत किया गया है। वेद को वैदिक भाषा के अनुसार समझने का यह इतिहास में सर्वप्रथम प्रयास है। व्याकरण-सम्मत पदार्थ (शब्दार्थ) एवम् भावार्थ-व्याख्या सहित सरल प्रामाणिक अनुवाद। मूल मन्त्र के किसी शब्द को छोड़ा नहीं गया है, कोई भी शब्द अपनी ओर से जोड़ा नहीं गया है। अध्येताओं के लिए अत्यन्त उपयोगी संस्करण।**

(बृहद् आकार) रु. 2000.00

4. यजुर्वेद भाष्य :- **यजुर्वेद भाष्य के इस सम्पूर्ण संस्करण में सन्धियों से मुक्त सरल पाठ के साथ ही मन्त्रार्थ, भावार्थ तथा पदार्थ भी प्रस्तुत किया गया है। मन्त्रों के सरल पाठ के साथ ही प्रत्येक शब्द का प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत किया गया है। वेद को वैदिक भाषा के अनुसार समझने का यह इतिहास में सर्वप्रथम प्रयास है। व्याकरण-सम्मत पदार्थ (शब्दार्थ) एवम् भावार्थ-व्याख्या सहित सरल प्रामाणिक अनुवाद। मूल मन्त्र के किसी शब्द को छोड़ा नहीं गया है, कोई भी शब्द अपनी ओर से जोड़ा नहीं गया है। अध्येताओं के लिए अत्यन्त उपयोगी संस्करण।**

(बृहद् आकार) रु. 2000.00

5. वेदायन भाष्य :- **चारो वेदों से चुने हुए प्रमुख वेद सूक्तों का मन्त्रार्थ, पदार्थ, भावार्थ तथा सरस गेय पद्यानुवाद भी दिया गया है। सन्धियों-संयुक्ताक्षरों से मुक्त सरल सरल पाठ के साथ ही प्रत्येक शब्द**

का प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत किया गया है। वेद को वैदिक भाषा के अनुसार समझने का इतिहास में सर्वप्रथम प्रयास है। व्याकरण-सम्मत, पदार्थ (शब्दार्थ) एवम् भावार्थ-व्याख्या सहित सरल प्रामाणिक अनुवाद। मूल मन्त्र के किसी शब्द को छोड़ा नहीं गया है, कोई भी शब्द अपनी ओर से जोड़ा नहीं गया है। जन सामान्य तथा शोधकर्ताओं-अध्येताओं के लिए उपयोगी संस्करण।

रु. 500.00

6. वेदायन प्रवचन :- **चारो वेदों से चुने हुए प्रमुख वेद सूक्तों का मन्त्रार्थ, पदार्थ, भावार्थ तथा सरस गेय पद्यानुवाद भी दिया गया है। इसके साथ ही इन मन्त्रों पर विस्तृत प्रवचन भी इस पुस्तक में संकलित हैं। सन्धियों-संयुक्ताक्षरों से मुक्त सरल सरल पाठ के साथ ही प्रत्येक शब्द का प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत किया गया है। वेद को वैदिक भाषा के अनुसार समझने का इतिहास में सर्वप्रथम प्रयास है। व्याकरण-सम्मत, पदार्थ (शब्दार्थ) एवम् भावार्थ-व्याख्या सहित सरल प्रामाणिक अनुवाद। मूल मन्त्र के किसी शब्द को छोड़ा नहीं गया है। सभी के लिए उपयोगी संस्करण।**

रु. 500.00

7. वेदायन (सरल पाठ, काव्यानुवाद, भावार्थ सहित):- **चारो वेदों से चुने हुए प्रमुख वेदसूक्तों का सन्धियों से मुक्त सरल पाठ, काव्यानुवाद एवम् भावार्थ।** रु. 100.00

8. वेदायन (सरल पाठ, काव्यानुवाद) :- **चारो वेदों से चुने हुए प्रमुख वेदसूक्तों का सन्धियों से मुक्त सरल पाठ, काव्यानुवाद एवम् भावार्थ। वेदपाठ तथा उपासना के लिए।** रु. 100.00

9. वेद सूक्तायन :- **चारो वेदों से चुने हुए 15 प्रमुख वेदसूक्तों का**

सन्धियों से मुक्त सरल पाठ (छन्द पाठ), मन्त्रार्थ, विशेष भावार्थ-व्याख्या, व्याकरण-सम्मत पदार्थ (शब्दार्थ) सहित सरल प्रामाणिक अनुवाद। रु. 100.00

10. एकादशोपनिषद् :- **यजुर्वेद के अन्तिम 11 अध्यायों का मन्त्रार्थ, पदार्थ, भावार्थ दिया गया है। सन्धियों-संयुक्ताक्षरों से मुक्त सरल सरल पाठ के साथ ही प्रत्येक शब्द का प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत किया गया है। वेद को वैदिक भाषा के अनुसार समझने का इतिहास में सर्वप्रथम प्रयास है। व्याकरण-सम्मत, पदार्थ (शब्दार्थ) एवम् भावार्थ-व्याख्या सहित सरल प्रामाणिक अनुवाद। मूल मन्त्र के किसी शब्द को छोड़ा नहीं गया है, कोई भी शब्द अपनी ओर से जोड़ा नहीं गया है। जन सामान्य तथा शोधकर्ताओं-अध्येताओं के लिए उपयोगी संस्करण।** रु. 500.00

11. चतुर्वेद सरल पाठ :- **प्रथम बार प्रस्तुत सन्धियों से मुक्त चारों वेदों का सरल पाठ जन साधारण के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ है। (बृहद् आकार)** रु. 2500.00

12. ऋग्वेद सरल पाठ :- **ऋग्वेद का सम्पूर्ण सरल पाठ प्रथम बार प्रस्तुत किया जा रहा है।**

(बृहद आकार) रु. 900.00

13. सामवेद सरल पाठ :- **सामवेद का सम्पूर्ण सरल पाठ प्रथम बार प्रस्तुत किया जा रहा है।** रु. 500.00

14. अथर्ववेद सरल पाठ :- **अथर्ववेद का सम्पूर्ण सरल पाठ प्रथम बार प्रस्तुत किया जा रहा है। (बृहद आकार)** रु. 700.00

15. यजुर्वेद सरल पाठ :- **यजुर्वेद का सम्पूर्ण सरल पाठ प्रथम**

बार प्रस्तुत किया जा रहा है। रु. 700.00

16. वैदिक धात्वादि कोश :- **पाणिनि तथा काशकृत्स्न प्रोक्त धातुपाठों को समाहित कर सम्पूर्ण धातुकोश तैयार किया गया है। उपसर्ग, अव्यय, संख्या, सर्वनाम शब्द भी दिये गये हैं। इसकी सहायता से वेद सहित सम्पूर्ण संस्कृत साहित्य का अर्थ किया जा सकता है।अत्यन्त उपयोगी संस्करण।** रु. 500.00

17. वैदिक शब्दकोश :- **वैदिक पदों (शब्दों) का धातुज, व्याकरण-सम्मत प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ।इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत वैदिक शब्दकोश।(वृहद आकार)** रु. 900.00

18. वैदिक शब्दकोश (लघु संस्करण) :- **वैदिक पदों (शब्दों) का धातुज, व्याकरण-सम्मत प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ।इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत वैदिक शब्दकोश।** रु. 200.00

19. सरल संस्कृत व्याकरण :- **व्याकरण के मूल तत्वों पर आधारित इस पद्धति से शब्द रूप, धातु रूप, पाणिनीय सूत्र रटे बिना एक मास में संस्कृत पढ़ना, लिखना, बोलना सीख सकते हैं। दशकों के अनुभव के बाद प्रस्तुत चमत्कारिक व्याकरण प्रणाली।** रु. 95.00

20. वैदिक इतिहास :- **ब्रह्मा व मनु से आरम्भ कर बुद्ध तक का सम्पूर्ण क्रमबद्ध इतिहास एक पुस्तक में सर्वप्रथम प्रस्तुत किया गया है। सूर्यवंश की 128 पीढ़ियों का इतिहास प्रथम बार प्रस्तुत किया है। सूर्यवंश, चन्द्रवंश की शाखाओं सहित मनु से भोज तक सम्पूर्ण वंशावली भी दी गयी है।** रु . 200.00

21. ओम् साधना :- **ओम् साधना, वैदिक संस्कृति, वैदिक**

आध्यात्मिक चिकित्सा, वैदिक योग साधना।
रु. 200.00

22. चिन्तन प्रवाह :- **वैदिक संस्कृति तथा जीवन दर्शन सम्बन्धी चिन्तन।** रु. 500.00

23. वैदिक विज्ञान :- **वैदिक संस्कृति, आध्यात्मिक चिकित्सा, वैदिक योग साधना।** रु. 50.00

24. युगबोध :- **प्रबन्ध काव्य।** रु. 300.00

25. चेतना :- **काव्य संकलन।** रु. 100.00

26. नवांकुर :- **काव्य संकलन।** रु. 20.00

❖❖ ❖ ❖❖

ॐ यो असौ आदित्ये पुरुषः, सो असौ अहम्, ओम् खम् ब्रह्म॥

आगामी प्रकाशन योजना

1. वैदिक व्याकरण : पंचपाठी व्याकरण का समयानुकूल प्रस्तुतीकरण। अष्टाध्यायी सूत्रों का अनुवृत्ति सहित प्रस्तुतीकरण, जिससे प्रत्येक सूत्र स्वयम् ही सम्पूर्ण अर्थ स्पष्ट कर सके। व्यापक प्रभाव वाले सूत्रों को महत्व देते हुए, अपवादों को स्पष्ट करना तथा उनकी सीमाओं का स्पष्टीकरण करना। पंचपाठी की अन्य पुस्तकों का भी इसी भाँति सम्पादन तथा उणादि कोष आदि का अकारादि क्रम से प्रस्तुतीकरण।

2. वैदिक महापुराण : पुराण विद्या का व्यापक शोधपरक अध्ययन कर पंच-लक्षणों के आधार पर सम्पादन।

3. वैदिक जीवन : वैदिक संस्कृति तथा जीवन दर्शन के साथ ही वैदिक साहित्य का सम्पूर्ण परिचय।

❖❖ ❖ ❖❖

ॐ यो असौ आदित्ये पुरुषः, सो असौ अहम्, ओम् खम् ब्रह्म॥

यजुर्वेद सरल पाठ स्वामीशरण